এএজগদীশ্বরায় নমঃ।

मात्रकोशूमी।

वर्षा ।



চিকিৎসাদৰ্পণ নামক বৈভাশাত্ৰ।

গ্ৰীযুক্ত আনন্দচন্দ্ৰ বৰ্মণ কৰ্ত্তৃক অনুবাদিত

কলিকাতা।



যোড়ার্নাকো বলরাম দে ফ্রীটে ৩০ নম্বর ভবলে শ্রীরামকানাই দাসের স্থানিস্কু যন্ত্রে মুজিত।

नम ১२१८ मान छार व खार्यन।

সচীপত্র।

গ্রার্ড	>	বায়ু পরম দেবতা স্বৰুৎ	152
निमान	2	পিত্ত লক্ষণ	66
রোগীর পরিচারকেরলম	F48	কফ লক্ষণ	30
উত্তম রোগীর লকণ	"	সায়িপাতিক লক্ষণ	66
বৈত্য আনি ধার টুতেরজা	€-	বায়ু দমন প্রকর্ণ	"
ভেদ এবং নিষিদ্ধ লক্ষণ	66	পিত্ত দমন প্রকরণ	28
বৈদ্যের নিকট উপস্থিত	66	क्क नम्न श्रेक्द्र	"
ছুতের নিবেদন প্রকার	66	শারীরিক মানসিক ব্য	† -
দিবারাত্তিতে কফ পিত্ত		ধির বিশেষ কথন	20
বায়ুর সময় নিৰূপণ	9	শারীরিক বিষয় কথন	66
শরীরে কফ পিত্ত বায়ুর		পুনঃ কফপিত লক্ষণ	30
অধিকার প্রকরণ	"	বায়ুর বাহ্য লক্ষণ	66
পঞ্চ প্রাণের অবস্থান	٢	পিত্তস্থ বাহ্ছ লক্ষ্	. 66
পঞ্চ প্রাণের কার্য্য	"	কফন্স বাহ্য লক্ষণ	•4
পিত্তশ্লেষ্মার স্থিতি কথন	2	বায়ু হৃদ্ধি প্রকংণ	>9
শ্লেষা প্রকরণ	"	পিত্ত রুদ্ধি প্রকরণ	•6
পঞ্চনাম	66	রোগীর মূত্র পরিকা	36
পঞ্চ কাৰ্য্য	66	জিহা পরীক্ষা	かわ
অবলয়ক কফ শরীর নাশ	t	নাসিকা পরিকা	२•
এবং রক্ষার কারণ	۶,	নাড়ী পরিকা	66
শরীর নাশের কারণ	"	বাতাত্মিকা নাড়ী গতি	
পিতৃক্ফ বায়ুর অধিকার		প্রকর্ণ	5.
কথন	>>	পিত্তাত্মিকা নাড়ী গভি	,
মধু শোধন বিধি	"	প্রকর্প	66
কক রুদ্ধি প্রকরণ	46	কফাত্মিকা নাড়ী গতি	
ৰাষ্রোগ প্রকরণ	66	প্রকরণ	25

,	• '			
प्रमाज न	াড়ী প্রকরণ ব	۲2	নংসর্গি জ্বর লক্ষণ	२१
জ্ঞায়ক ন	াড়ী প্রকার	"	আমজার লক্ষ্	२५ ं
সান্তি পা	তক রাড়ীপ্রকরণ	166	জর্ম্য দশ উপ দ্র্য	66
	ন ভুল প্রকার		না দাজ্বর লক্ষণ	66
	ৰূপ নাড়ীর হন্দ		জ্বর ত্যাগ লক্ষ্	"
শীতল		•6	নৰজ্বর ত্যাগ বিষয়	₹ 3
	ত্তি কথন	¢	জরে লংঘনে প্রকরণ	• 6
	হরোৎপত্তি		ষ্ডুঙ্গ পানীর	90
কারণ	deal . II.	20	লাজমণ্ড প্রকার	66
	প্রকাশ কথন	66	লাজমণ্ড গুণ	66
	ञ्जू क्यू	"	সাম'ন্য জর চিকিৎসা	44
		२8	নাগরাদি পাচন	"
পিত্জ		66	ক্ষেড়াদি পাচন	66.
কফ জ্বর	তিক ভার লক্ষণ	२७	বাতজ্ব চিকিৎসা	65
		66	इहर शक्षयूजी शाहन	"
	আ জয় লকণ	66	বাতারি বটিকা	46
পিউটো	ন্মক জ্বর লকণ	> n	পিতজ্ব চিকিৎদা	46
সামপ	তিক জর লকণ	-, -	যব পটোল	66
	ণ প্রকার সালি-	২৩	ক্ষেত্ৰ পৰ্ণটী	66
	क् कर्थन .	4 %	ধান্য শৰ্কত্বা	66
	ত জর লক্ষ্ণ	66	घनहन्त्रां मि शीहन	66
	রু জর লক্ষণ	"	धनामि हुर्न	66
जीर्व व र	कथन		ক্ষুত্র চিকিৎসা	50
বিষ্ম ব	দরোৎপত্তি করণ	66	তিফলাদি পাচন	65
সম্ভত ব	কুর ভাকাণ		शिश्वामि शीवन	65
ছোকাৰ	तिनं खत्र नक्ष	29		*6
ঐকাহি	ক জন্ত লক্ষ্ণ	66	ৰিয়াদি পাচন চতুত অ চুৰ্ণ	. 44
চাতৃথি	क खंद्र लक्ष	66	. •	. 066
বিপ্য	य ठाक्षिक अत		মধু পিপুল	
ল্যাকণ		34	পিত্তশ্লেমাজর চিকিৎন	اد و
		3		

কণ্টকাৰ্য্যদি পাচন	66	নাগ্রিপাত জর চিকিনা	المان
या পটোলকং	ċ¢	निर्छि वंनर	ċs
অমৃতাটক পাচন	60	च वर न श	66
ঘননিয়াদি পাচন	"	অঞ্জন	66
রহৎগুড়চ্যাদি পাচন	".	নবাঞ্চ পাচন	46
মৃত সঞ্জীবনী বটিকা	66	ভৈরবেশ্বর	66
জ্বরাপনি রস	66	তিদোষ নিহার রস	७त्रं
বাতপৈত্তিক জ্বর্ফিকিৎ	শ া	বেতাল রস	66
নবাঙ্গ পাচন	66	অমৃতেশ্বর বটিকা	66
গুড়্চ্যাদি পাচন	98	श्रुष्कुन्न रेख्युव	66
মধুকাদি পাচন	•6	পঞ্পিত যথা	66
नियामि शांहन	66	দান্নিপাত ভৈর্ব	66
রুহৎ পঞ্মূল পাচন	46	যোড়াচড়ি র স	8.
इङ्भक्षय्नि	46	দারুত্রকা রস	"
क्छोपणाञ्च शोहन	46	অ†নন্দ তৈর্ব র্স	"
সুথভেদি বটিকা	00	জিকাগ নাম সালিপাতি	
জ্বর কেশরী রস	"	বিনাশক হয় মহে যিধি	66
রোগির অপাক দোষ		বেতাল রুস	66
নারিকেল জল	. 46	কালানল রস	82
শীতগুঞ্জী রস	৩৩	মহাজরাঙ্কুশ বটিকা	46
कड़ानी क्रिवात्र श्रेक	1व्रब ्ध	ক্রমোণেভিয়োলকণ.	66
কাঁচাপারা শোধন	66	সিকুশোষক রস	66
हिक् टल श्रेत	03	রজান্ধি সান্নিপাতিক	
नको विनाम तम	"	नामिर्कश् रिका	66
ত্রকাপ কণ্ড	46	প্রতাপ লক্ষেশ্বর রস	6
বা তল্পেন্সা জর চিকিৎ	.माद्	প্রলাপ নায়িপাত নিং	खान'
পঞ্কোল পাচন	۲٤,	10 - 111.	85
হণপু সরা কশ	66	অভরনু সংক্রা ন	6

নূসিংহ কালানল বটিকা	66	প্লীহাজিত জীৰ্জুর	46
মৃত দায়িপাত	64	চিকিৎসা '	66
উলুন চিকিৎসা	"	िं विकासि की व्रक	66
দশমুল পিপুলনিকর্য	46	ভাযুকুতী জারক	66
ধান্যচতুমুখ	"	मकाबाद रदानीर	44
डेलुटन ठर्च थ श्रद्धांश		মান গুড়িকা	84
क दिएवन	80	নস্থ গ গুড়িকা	66
ৱসম†পিক	• 6	ক্ষার অঙ্গাবক তৈল	46
হিজুলেশ্বর	66	গুড পিপুল	85
চতুৰ্দেশাক পাচন	66	যমানী জারক	66
রদ্দিন্তু রুদ	"	ष ष्ठे । इं चित्रम	66
দিনাহরে উলুদাধি		মহাচিত্ৰক লবণ	66
কারে	88	মহাদ্রাবক	G.
হথা অটাদশাঙ্গ	66	জর কলীয়াবটি	66
পূর্ণ ভব্ত রুসায়ন	66	(सधनाम त्रम	66
জীবজর চিকিৎসা	84	শীতভ ঞিত তৈল	46
নি দিশ্বিকা	66	জরকুলান্তক লৌহ	42
धा ळीरमां क	.66	ক্রোধজর সৎপ্রসঙ্গাদ	66
हांगांपि शां ठन	66	ভৌতিক জবে	16
इ:जिख्दा इश्चवाक	"	ঐকাহিকজর চিকিৎসা	64
उ खकां पि शाहन	80	মন্ত্ৰ^	95
धनरामि शांहन	66	জরতপণ মন্ত্রং	eç
ভূমিনিয়াদি চুৰ	14	সমূতভোত্তরে তীরে	66
की द्रकामि लोह हुनै	"	विविद्या नाम वानद	44
অটাক ধুম	"	চাতুর্থিক জার চিকিৎসা	66
সহেশ্বর মন্ত্রং	"	সন্তজর চিকিৎসা	46
গাতী মোদক	89	कम्मखत	¢Þ
অঙ্গারকঃ তৈল	"	वाशस्क बद्र हिक्टिश	64

ভৌতিক্ষ্যহিক জ্বর	46	কানাচার লে।ছ	"
· শশু মন্ত্	60	মাহেশ্বর ধ্প	6
कीर्वशहिक कर्त्र किक्ना	54	नाकानि टेंडन	65
কারব্যাদি পাচন	89	জর নাগময়ূর চূর্	46
ত্রাহিকাগন্তকজর চিকিৎ	मा'	বঙ্গেশ্বর মোদক	66
রুহন্নবাঞ্চ পাচন	66	জরাতিসার চিকিৎসা	@ >
করমুরারি চূর্ব	66	অ ভ্ৰবটিকা	66
চাতুর্থিগন্ত জর্চিকিৎসা	"	দ ধিবটিকা	"
ব্রমুরারি বটি	DD	জরাতিদারবিশেষপাথ	700
मगञ्जानि अधिनभाक		পিপুলাদি তৈল	6
পাচন	6	বিষম্ভর রশায়ন	68
মধু পাঠাদি পাচন	6	নব জরাক্ষুশ	6
বিষমজর চিকিৎসা	6	মহাজরাক্ত্রী	6
यूनर्गन हुर्न	6	धाना छ छी	6
অঙ্গারক তৈল	ØD.	হীবেগ়াদি পাচন	6
खण्णनाकामि देवन	6	श्रीद्वामि हुन	৬৫
রুহলাকাদি তৈল	•	खेविवामि शाहन	. 6
मार्कामि भावन	6	নাগরাদি পাচন	4
स्मर्गन हुन	69	মুথাদি পাচন	6
রুহৎ স্থদর্শন চুর্	4	मगयूनामि शांठन	4
শশ্বসন্ধা তৈল	6	खर्थानि भारत	6
কিরাতাদি তৈল	BA	গুডুচ্যাদি পাচন	•
ব্দর ভৈরব চূর্ন	6	शक्षम्मामि शाहन	60
ठन्मनामि जोङ्	6	পায়নাদি পাচন	6
इश्लोकां पि रेटन	65	व्यायामि हुन	6
রহৎজর সংহারিণী চূর্ব	6	গঙ্গাধর বটি	•
मार्च्यत्री ह्र्न	` .6	অ ণতিফ ন্যান্তাৰ্টি	6
शिशुनुगंपि देखन		कनक इन्स्त्र शांत्रक	É
-	•	• ,	

यही शव ।

भाविमि हुन	७१ कण्डेकांनि शाहन	4
কাগরাদি চুর্	ে মোচরলাদি চুর্	٤,
ক্ষীরকল্যাণ গুড়িকা	' विलामि	6
অভিসার চিকিৎসা	্কুটজাদি	45
युक्टियां १	६৮ कृष्य छक	•
ङ्गीरवदापि शाहन	• নারঙ্গ ধর	•
इश्थणुगामि शावन	 ধন্যাদি চূর্ব 	٠,
রহ্ৎহ্বেরাদি পাচন	' স্ত রা ল বৃটিকা	>
व्यायामि ह्व	' দাড়িয়খার	99
खर्थी मणयूनी	• ল্বফচতুঃস্ম	,
क्नकश्चन द्रम	লবঙ্গ ডাব ক	,
সশোণিত জ্বাতিসার	১ মহাগক্ষক	2
চিকিৎসা	৬৯ মোদক	,
মহাভ বটিকা	' গৃহিণী চিকিৎসা	98
कनक चुन्नत द्रम	' কুটজাবলেহ	6
থান্য চ তৃষ্টয়	< গঙ্গাধর চুর্ব <p> তিন্তু</p>	93
খান্য পঞ্ক	' গৃহিণী গ ন্ধে ন্দ্ৰ	,
ৰঞ্চীদিপাচন	.' - গৃহিণী রোগের গুরু পা	
দিখীয় প্রকার	 ভব্য মাতেই পথা নছে 	,
কুটৰ পুটপাক	৭০ পানিতক্ত বটিকা	,
বৃহৎ কুটদাইক পাচন	< মণ্ডুর প্রকার	10
কুটকাষ্টক পাচন	' নৃপ্ৰলভ	6
व्याननम रेख्यव	' মহাগক্ত	•
वाणिकवामि	, লব্দ চতুঃসোম	,
शाना शक्षक	১৭ পঞায়ত পূর্ণটী	99
श्यामि शाहन	ি বিজয় পর্গটী	•
ক্ছকাদি পাচন	' शक्षां मृष्ठ लो र	14
इर्॰कूडेमानि शाहन	' क्षिवायाम्	(43)

•	
भगनीयां क	গৰ্ভ স্থতিকা চিকিৎসা 🕟 🕻
নিজি শোধন '	इञ्चयक्रोपि हुर्व .4
রুহৎ শতাবরি মোদক '	মেথি মোদক 🕠
महाकारमध्य (मानक ४०	মদন মোদক ৮৯
मत्रमामि हुर्व ७५	. স্থানে থি মোদক
জাতিফলাতা 6	ত্রীলোকের গর্ভহইরা যদি দ্বা-
नाशिकाम हुर्व	দশ মাস পার্যান্ত প্রতিমাসে
नांशवामि हुर्व प अरं	গর্ত্তে বেদনাও স্থতিকা হয়
इंश्कांखकार्गाम हुन	তাহার নিবারক ঔষধ প্রথম
স্থাপথাক্যভ্যাদি চুৰ্	মাসাবধিক্রমে লিখিভেছি ৯০
गृहिनी गरबन्धविका ४०	অর্শাধিকার ৯১
जीतकामि हुर्व · '	প্রাপদাগুড়িকা '
दृह्दक्षां उकतामि हुर्न '	শূরণ মোদক ৯২
सन्भ नवनानि इर्न	বাহুসাল গুড়িকা '
মাক্তেয় চুৰ ৮৪	ভেলা শোধন ৯৩
ধারাধর চূর্ণ	कू छे का यर ल इ
বাল্য শক্ৰাশন মোদক '	ছন্দ্রপ্রভারবটিকা '
बहीकामि (मामक '	পিতভারা রজ্থই হইয়ানা-
इश्लवाकां पिरमनांक ४०.	সিকা দত্ত গুছু নখ লিঙ্গ এই
পঞামৃত পর্ণী	পঞ্জান হইতে নিৰ্গত
অকালমৃত্যুহরণ বটিকা '	হইয়া পঞ্চ প্রকার অর্শ হয় '
যুতিকা চিকিৎসা ৮৬	তার মন্ত্র ৯৪
তিচামূলি চুৰ্	সমশর্করা চুব 6
शृहिगी कथा है वाहिका 6	व्यानमञ्जूका "
নূপবলত রস	मन्त्र ग्राप्त भावक २०
विलामि इर्न भा	ब्रह्द ग्रंग भामक ं
নায়িকা চূর্ণ '	वर्गवज् वर्षिका '
যুতিকান্ধণ রসায়ণ ৮৮	প্রনেপ ৯৬
-	

	श्रुही ।	শুৱা	-
কুড়চি অবলেছ	4	ज्जीनं कर्णक	; 6
इ. विरया श	. 6	ভুক বিপাক বটি	5.2.
পায়সাদি পাচন		মহোষ্থির স	6
অশ্হারি ছত	6	कां भावि मन्ती शन स्म	पिक '
क्षिरयाश	6	কামেশ্বর মোদক	500
শৰ্শারি কৌছ	あり	বিশ্বচিকা চিকিৎসা	6
व्यधिमाना हिकिथमा	. 6	य एक पूर्व	6
हिन षशिक	6	র্হয়বাঞ্ চূর্	2.8
অগিমুখ চূৰ্	24		6
थाना खर्थी शाहन	6	नीत्रकामी विषि	6
मुखि रयां ग	. 6	অবিপাদিক চুর্	6
মেথিমোদক	4	সালসার বিলম্বি চিবি	e71 6
ছুতাশন রুস	6	इहर छर्थी थल	6
রামবান রস	4	মুষ্টিযোগ	200
অগ্রিকুমার রস	25	नांद्रिक्ल लद्ग	4
কড়ি ভন্মের প্রকার	6	ভাকর লবণ	6
মহাশস্থ বটি	6	বলভজ ঘৃত	6
বুহ্রহোধদি	. "	मोडागा एथी थ	200
क्रियाणि वन	300	শতাৰ্ত্তি মোদক	4
স্বত্পশস্থ বটি	6	नवकारि वि	4
हिन अधेक	6	खर्थाम् इ ह्र	2.3
পুর্কিষোগ	2.2	সালসাচহারি মোদক	6
বাতাশীৰ	• •	কামাথি সন্দীপন	1
পিতাৰীৰ্ণ	6	মোদক	•
रेमकवानि		इस्र भिश्वनि थस	307
म चित्र थ	6	মুরাপি খণ্ড	6
दियानत हुन	4	क्रिम क्रिकिथ्ना	2.9
मारामन हैंन	6	युक्तिरय श	

274

श्रुन्तवा रेजन

नानिका इंटरफ ब्रेक्ट्यारवन्न

•			1
इ कि रबाग	6	শ্বন্দ রসেন্দ্র গুড়িকা	252
शूचे इहरण्य तक निवांत्र	6	উক্তমত চিকিৎসা	6.
उ षध		কানড়াদি চুৰ	6
শৃঙ্গারাজ বটি	6	বৃহত্তালিশাদি মোদক	٠ ،
छोनिमापि हुर्व	. 6	व्यथनकामि व्यवत्वर	5 ७€
	१७	বাসাথগু	4
কুৰা ও খণ্ড	• .	কাস চিকিৎসা	353
যুক্তাধিকার		शक्षय्वामि श्रीहम	6
ৰাসক লৌহ	> 28	मठार्गि हर्न	•
हन्मनोपि देखन	6	वानानि शाहम	4
इस्वानावरलह-	6	ভাকাতাবলেহ	` `
	32.a	পুষ্ণরাদি	6
শৃক্ষারাভ	6	मं भ गृ ना मि	6
মুঁ গান্ধরস	6	क ऐक नामि शांठम	4
গুড়িকারপ্রকার	125		6
ত্রোদশাক পাচন	6	कणेकाद्रि इ 5	303
পঞ্চদশাক পাচন	•	व्यक्ति लोश	6
अ वत्वर		वानामि हुर्व	6
यं जाना वटन र	. 6	কফকেশরি রস	4
বাদাবলেফ	4	কাস সংহার বটি	•
হাগলাভ ঘৃত	729	রদেক্র বটিকা	303
इन्स्नामि रेजन	•	হিন্ধা চিকিৎসা	
কাস মাতের চিকিৎস	6	मुखिर या श	203
কল্টকারি পাচন	6	শ্বাস রোগের চিকিৎস	11 .
मुक्तिरयां श	6	মুন্তি যোগ	•
इंडीडकी (मानक .	6	পাচন	
	うえび	भुक् वित्वह	~ ~
बाजी रही जबी	. 6	শিথিপুছতশ্ম করিবা	ब्राह्य

ভাগীগুড়	303	युक्तियां श	4
গুড় পাক করিবার		পাচন	28¢
विधि	•	গৃধিণি বায়ুর চিকিৎসা	. 6
স্র্য্যাব র্ছরস	6	जिएगयद्भी धन्थन	788
ষ্বতক চিকিৎসা	300.	গুণ্ডল পাক প্রকার	4
বাতজে মুফিযোগ	6	ছাগলাদি মৃত	*6
কল্যাণ ঘূত	*	नकून: मिं घृ ठ	584
ৰক্ষী সূত [ি]	6	স্বন্প বিষ্ণু তৈল	78F
षद्रि हिकि भा .	309	পদকর প্রকার	6
মুষ্টিষোগ	6	মহাবিঞু তৈল	6
(मानक	•	মধ্যমনারায়ণ ভৈল	782
ছদি চিকিৎসা	704	বুজ প্রসারণী তৈল	
এলাদি চুৰ	6	यणभाष रेजन	>00
ছফা চিকিৎসা	200	বৃহৎমান তৈল	6
পৰকাণ্ঠাবলেহ	6	সপ্তথ্যা স তৈল	65
মুচ্ছ বিধকার	.8•	বাতরক্ত চিকিৎসা	•
मार চিকিৎসা	6	স্বন্ধভড়চি তৈল	. 6
উন্মাদাধিকার	85	शृह्द छ ए ि ठेव	
कलागि इंड		কৈশোর গুগ্তল	205
कौत्रकना। १३७	785	বজ্গগ্ণল	,
মহাকল্যাণ সূত	,	छज़ ठामि लोह	à
চৈত্ৰ ঘৃত	,	তা নক	200
শিবামৃত	283	হরিতাল শোধন	6
অপসার চিকিৎসা	>88	উরুস্তন্ত্রীধিকার	268
म.च्टिर यो ११		প্রালপ	*
ৰকীয়ৃত	•	আমবাভাধিকার	. 6
ছদিত বায় চিকিৎদা		রানাশগুক	6
ৰা ট্যাল্যাযূৰ	•	প্রবেপ	6

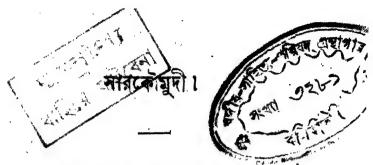
	यही	नुष्य ।
বোগরাজ গুগুগুগ	• •	উর্ত্রাহ রোচগর লক্ষণ
শ্লেষু যাদি চুৰ	200	इकिट्यांग
वांक मार्क्त अन्तर	. 6	इंखक्ष्म हिक्दिमा १७०
इर् रेगंकावानि रेजन	•	म्फिर्यान ७ विकर्शानि
শামবাতারি গুড়িকা	790	ঘৃত
শ্ল চিকিৎসা	€.	হ্ৰাধাত চিকিৎসা
श्किर्योग	•	मुखिरयांश ও গোস্থর
श्रीहर्व	6	সৃত ,
वारमभ		বছমুক্র চিকিৎসা ১৬৪
পাচন	6	মুব্দিযোগ ও ধাতিমৃত '
Б ष्ध्यम लोह	509	इ स्टिया श
পরিণাম শ্ল চিকিৎ	11 6	পার্থার চিকিৎসা ১৬৫
रवमना निवादन इस्टि	•	मुखिरयां १।
যোগ	SOF	কুল্থাদি ছত
नोदिरकन थ्रं	4 6	বরুণ গুড় ১৯৬
षामनकी	6	প্রেমেই চিকিৎসা '
শতাবার মণ্ডুর	202	रुकियांग उ माजियांनि
રાઇી થછ	. 6	ঘুত '
ंइर् बीद्रकारित्राप	क (मांखगृञ '
বিভাগরাত্র	36.	हेट्य विधिवा ' ५७१
मुक्टियां ग	6	শরার হুর্গন্ধ চিকিৎসা '
গুলা চিকিৎস	383	विष्कामि लोह
मछिर्द्री उकी	4	मुखिरगांग '
বিক্তাধর রস	€.	छपद्री हिकिथमा - ७७४
ছভোগ চিকিৎসা	6	युखिर्याश ज मात्रजामि
मूकि (बाश	302	र्व
व्यक्ति गृत	6	भूनर्गवाष्ट्रम '
উরঅহ (চকিৎস)	6	महौरूर्व ७ स्कित्याभ

যুত্ত প্লীহা চিকিৎসা	500	্ৰ ফি ং গণ	6
মান গুড়িকা	,	পঞ্চিক মৃত	296
যক্তারি গৌহ	4	পঞ্জিক্ত গুণুগুল	4
कां बर्गा न तथ	6	অমৃত ভল্ভিন	6
লোকনাথ রস	* 6	সিন্দুরাদি তৈ ল	•
		हरू गद्री हो मि टे ड न	S 0.00
শোথ চিকিৎসা কংস হয়ীতকী	24.	কন্দর্পদার তৈল	398
			-
শুক্ত মূলাদি তৈল		অমৃতাকুর লৌহ	399
काय इष्ति চिकिৎमा .	212	শিতপিত চিকিৎসা	_
শতপুষ্পাঘৃত	•	মুষ্টিযোগ	286
নিত্যানন্দ রদ	6	অম্পিত চিকিৎসা	6
গলগন্ত চিকিৎসা	6	युक्तियां ग अ नां प्रिक	व्या-
জুকি তৈল	6	মূত	٤.
मिण्णाम हिकि श्रा	292	অধিপিত চূর্ন	6
মুফি যোগ	6	শিতামভার চুর	6
সৌরেশ্বর মূত	•	বিষধা চিকিৎসা	592
বিজাবলাধিকার	6	বিষকোট চিকিৎসা	
खे रहिक e. मा	4	গুদত্র চিকিৎসা	6
মুফি, যাগ	6	যু ফিযোগ	6
হণ তৈল	390	টাক রোগের চিকিৎস	•
वरुद्ध कि कि कर्मा	4	মালতি তৈল	6
ভগন্দর চিকিৎসা	>98	বু ঠাভি তৈল	300
ए कि यो ग	6	দন্তরোগ চিকিৎসা	6
वश्वानम रेडम	6	मसियां ने अभित्र वी	টকা'
চগন্দর হর রস	6	কৰ্ণ চিকিৎসা	4
डशप्रम हिक्टमा	6	मस्टियां अ कात रेज	er 6
য থিযোগ	6.	দশ্যল তৈল ও জা	
হুঠাধিকার চিকিৎসা	6		
E. a. P. of do. H. D. do mall		ঘুত	343

युगी श्व।

নাগিকা চিকিৎসা	6	ষ্ড্বিন্ডু তৈল	P.8
हिंद इंद्री छवी		প্রদর চিকিৎসা	6
•	245	শীতকল্যাণ ঘৃত	<u> </u>
হ জিযোগ	•	অদোক্ষ্ত	220
গৃহধুমাদি তৈল চক্ষু রোগ চিকিৎসা	6	मुविक रेजन	6
	•	কল ঘৃত	6
मुक्तिरगंश	6	শ্বতিকা চিকিৎসা	350
इंड्र्यानकामि शाहन	240	মুফ্টিযোগ,	6
हरकामंग्र वि	100	বালকের চিকিৎসা	,
ত্রিক্সা ঘূত	6	मुच्छिरयां श	4
শিররোগ চিকিৎসা	6	हर्ज्य व्यव लक्	> b-9
দশ্ল তৈল		অ্ট্যঙ্গল মৃত	6
द्रहर मणमृत रेखन		न्य प्रमणना १४	

সূচী পত সমাপ্তঃ।



সংক্ত গ্রন্থ পশুতের বোধগম্য তাহা অত্যন্ত কুটার্থবুজ হয় সে গ্রন্থ বৃদ্ধিতে বিশুর জ্ঞান অপেকা করে অতএব
সারকৌমুদী নামক যে চিকিৎসা শাস্ত্র আছে তাহা অপ্পশ্রমে বোধ হইবার কারণ প্রাক্ত বাক্য দারায় লেখা যাইতেছে, অনায়াদে চিকিৎসা করণের বাসনা যাহার হয়
তিনি গ্রহণ করিবেন।

नमा ११ প्रस् नमः।

পারমানন্দিত লোক সকলের পারমানন্দের মূল স্বরূপ প্রিথক্তদেব চরণে প্রণতি হইয়া মান্দ বৃদ্ধি জনের উত্তম বৃদ্ধি হওনের নিমিত্ত সারকৌমুদী পৃস্তকের ভাষা করিলাম।

শরীরের আরোগ্যতা ধর্মার্থ কাম মোক্ষ চতুবর্গ দাধ-নের মূল তাহার নউকারী এবং শরীরের মঙ্গলাপাহর্তা রোগ দকল হইয়াছে।

ভাষতে চিকিৎনা কর্ম অভ্যাবশ্যক ইইয়াছে চিকিৎ-নাতে কোথাও ধন লাভ কোন স্থানে পুণ্য কোথাও স্থা-ভাব কোথাও অনুরাগ কোথাওবা কর্মাভ্যাস হয় চিকিৎনা কর্ম কোন প্রকারে নিজ্ফল হয় না।

वाधि। परशत निर्वाम এव॰ ममन रेवरछात এই इटे कर्म रेवछ बाद्य पियात कर्डा नरहा . রোগীর কণ্ঠাগত প্রাণ পর্যন্ত চিকিৎসা কর্ত্তব্য অর্থাৎ মৃত্যু না ছইলে রোগীকে বৈস্তাত্যাগ করিবেন না।

রোগমুজ শরীর বৈভের অধিকার প্রযুক্ত বৈভ রোগীর পিছা তুল্য হয়েন অভএব বৈভা স্থানে চিকিৎসিত শরীর ক্রয় করেবে তাহা না করিলে সেই শরীর দারা তিনি বত কর্ম করেন তাহার ফলভাগী বৈভা হয়েন।

অত্যে রোগ নিৰূপণ করিয়া পশ্চাৎ নিৰূপিত রোগের উপযুক্ত শাদ্ধোক ঔষধ রোগীকে সেবন করাইবেন সহৈ-জ্যের চিকিৎসা ক্রম এই।

দর্শন স্পর্শন এবং প্রশ্ন ই হাতে রোগ জানা বায় অত-এব রোগীর শরীর মূত্র জিহ্ন দৃষ্টি করণ পরে নাড়ি ধরিয়া স্পর্শন এবং বৈভাকে যে লোক ডাকিতে যাইবে ও রোগীর নিকট পরিচারক যে সকল লোক থাকে তাহাদের জি-ভাসা করণ এই তিন প্রকারে রোগ জানিবেন।

নিদান পূর্বক ৰূপ উপশম এবং সংপ্রাপ্তি এই পাচ প্রকারে লোক সকলের আকার রোগের স্থালকণের নাম নিদান রোগের মানসিক প্রকাশ পূর্বৰপ রোগেরৰপ বাছ প্রকাশ এবং চিকিৎসা ছারায় রোগ সাম্য হত্তন উপশম এবং সম্পূর্ব লক্ষণাক্রান্ত হত্তন সংপ্রাপ্তি এই পাঁচ প্রকার রোগের লক্ষ্ণ।

সকল রোগের আদি কারণ মনদাণি তাহা অতিরিজা-হারেতেই হয়। আহারের যেমতশাল্রে কহিয়াছেন ভক্রপ আহার করিলে মনদাণি হইতে পারে না।

কোন জন রোগ উৎপন্ন হইয়া লাম্য হয় এবং কোন কোন রোগ জ্বনিয়া নিবারণ হয় না আপনি সমভাবে থা-কিয়া অন্যহ রোগোৎপন্ন করে দেই রোগ অভি ছুই লে রোগকে বৈদ্য বড় সাবধান হইয়া চিকিৎনা করিবেন দে সামান্য রোগ নহে, দেই রোগ কুছ সাধ্য জানিবা॥

हिकि नात अकांत्र आर्ता निथिया देवछ अवर द्वान है.

হার সধ্যে রোগী যদি রোগানুগত হয় তবে বৈস্ত বড় ব্যা-মোহ পায় রোগের দমন করিতেও শীব্র পারেন না রোগী মুচ্চপি বৈস্তের আক্তানুবর্তী হয় তবে রোগের দমন করিতে পারিবেন। অতএব বৈস্তা বিবেচনা করিবেন রোগীকে রোগানুবর্তী কুপথ্যাদি করিলে কি না করিলে আজ্ঞানু-বন্তী জানিতে পারিবেন।

রোগেরলক্ষণ এবং উষধের প্রমাণ কহিতে পারে এবং উষধ ও চিকিৎসা অনেক প্রকার দেখিয়াছে আর চিকিৎ-সাতে মুন্দরকপে পট্টাথাকে এবং আপনি গুচি এই চারি গুণ যুক্ত বৈভাকে উত্তম বৈভা বলা যায়।

ইহার মধ্যে শাস্ত্রজ্ঞ এবং বছদশী যে বৈতা তিনি সিদ্ধ বৈতা কি ম এই এই গুংলার একেতে বহ্ছিত হইলে তাহাতে এক পক্ষ হীন পক্ষির ন্যার কঁছা যায় অর্থাৎ এক পাক্ষা ভাবে পক্ষির গতি হয় না ভদ্রপ এক গুণ থাকিলে বৈতা চিকিৎসা করিতে পারে না।

এই চিকিৎসা শাস্ত্র গুরুপদেশ দ্বারা জ্ঞাত হইরা যে বৈস্তাচিকিৎসা করে সেই শ্রেষ্ঠ ক্রন্তিয় চিকিৎসাকারি বৈস্তা সকলকে নফ্ট বৈভা চোরের সমান জানিবা।

আয়ুকেদ এবং চিকিৎসাশাস্ত্র জ্যোতিষ ধর্ম নির্ণয় এই চারি শাস্ত্র অধ্যায়ন না করিয়া যে চিকিৎসা করে তাহাকে ব্রহাতক বলা যায়।

ি চিকিৎসা শাস্ত্র অধ্যয়ন করিয়াও তন্ত্র শাস্ত্রের যুক্তি
না জানিলে।চকিৎসার সম্পূর্ণ ফল ভাগী হইতে পারে না
তাহার দৃষ্টান্ত পুরুষ যে কালে ছুভাগ্য প্রাপ্ত হয় তৎকালে
উপাক্তিত অর্থের ফল ভাগী হইতে পারে না।

আর মনদ বস্ত্র পরিধান বাক্য কর্নশ চতুরতাহীন কু-আমে বাস এবং আহ্বান না করিলে চিকিৎসা করিতে গ-মন এই পাঁচে বৈভের সমান হয় না তিনি ধনুস্তরি তুল্য হইলেও মান্য হয়েন না। রোগ শরীরের সংহার কর্তা ভাহাকে ঔষধ দারা নিবা-রণ করিলে রোগী বৈস্তকে শরীর সমর্পণ করেন এই প্র-কারে চিকিৎসক রোগীর পিতা হরপ হয়েন। অতএব রোগীকে বৈস্তপুত্রের ন্যায় পালন করিবেন।

যে বৈদ্য অবশ্য রোগ নিবারণ করিতে পারেন তিনি উত্তম বৈদ্য যে বৈদ্য কোন রোগ নিবারণ করিতে পারেন কোন রোগ পারেন না তিনি আংজ্যাদর ভরণ নিমিত্ত চি-কিৎসক নামধারি মন্দ বৈদ্য অর্থাৎ সাধ্যাসাধ্য জ্ঞান বি-শিষ্ট হয়েন না চিকিৎসা বিষয়ে সাধ্যাসাধ্য জ্ঞানের আব-শ্যক আছে।

সকল বৈভারে অর্থ যে জ্ঞান্ত তাহার নাম বৈস্ত শেই বৈক্য আয়ুর্কেদ উপবিষ্ট হইলে তাহার দ্বিজ্ঞ শ-ক্তা হয় অ-র্থাৎ আয়ুর্কেদোপদেশ দ্বারা জন্মান্তর হয়।

ব্রাহ্মণ গুরুগণক নবগ্রহ এবং বৈতা ইছারা নমত ইহা-দিগকে রোগীরা নমকার না করিলে আপদ স্বরূপ ব্যাধি স্ইতে ভর প্রাপ্ত হয়।

কালে ঔষধ আরম্ভ এবং সমাপন পশ্চাৎ পরীক্ষা ক-রিয়া প্রশস্ত কালে রোগীকে সেবন করাইলে সেই ঔষধকে মহৌবধ বলা যার এবং সেই ঔষধ অপপ মাত্র ধারণ করিলে মহাবীধ্যবান হইয়া শীঘ্র ব্যাধির দমন করে।

রোগীর পরিচারকের লক্ষণ। ঔষধ করিবার প্রকারজ্ঞ বলবান প্রভূপ্রতি অন্মরাগ এবং শুচি এই চারি গুণযুক্ত ব্যক্তিকে পরিচয়া কর্মে নিযুক্ত করিবেক।

উত্তম রোগীর লক্ষণ। যে রোগী আপনার শরীরের ভাব এবং রোগ হইবার কারণ বৈতা জিজ্ঞানা করিলে ভাল বিস্তার করিয়া বৈভাের নিকট কয় এবং ভয়াকুল না হয় এ-সভ রোগী উত্তম।

বৈদ্য আনিবার দুতের জাতি তেদ এবং নিসিদ্ধ লক্ষ্ণ। চণ্ডালাদি জাতি। শীত্র গমন আল্রিড কেশ শক্ত এবং দশুধারণ মলিন বসন পরিধান করণ অক হীন এবং শক্টাণিছিল মহিষ্টিট্টাহাতে আরোহণ রজবর্ণমাল্যধারণ গারে ভৈল মর্দ্দন এক বস্ত্র পরিধান দিগঘর ইত্যাদি নিষেধ। এবং বৈজ্ঞের নিকট উপস্থিত দুত্রে নিংবদন প্রকার। এক পদে দাশুটিবেন না এবং কেশ, মস্তক, পৃষ্ঠ, গলা এই সকল স্থান স্পর্শা করিবেন। একদৃষ্টে হেটমুগু হইয়া আপ্রান্ধা রোগীর বিষয় বৈত্যের দক্ষিণপাম্মে দগুরমান হইয়া নিবেদন করিবে এবং ভিষক যখন রোগী দেখিতে যাইবেন তথন জভগামী না হইয়া নন্দ্র গমন করিবেন। এই প্রকার শাস্তে প্রশিক্ষ বিধি।

ষৎকালে রোগের প্রথম প্রমন্ত ইবেক সেই সময়ের লগু ছির করিয়া দেখিবেন যদি পাপগ্রহের গৃহে প্রম হয় এবং সেই লগু পাপগ্রহ থাকে দেই লগু সম্পূর্ণ দৃষ্ট হয় আর সেই লগের অউন গৃহে যদি পাপগ্রহ থাকেন তবে নিশ্চয় সেই রুগু ব্যক্তির মৃত্যু হয়। অভগ্র চিকিৎসক যথম রোগীর গৃহে গমন করিবেম তথম শুভাশুভ লক্ষণ ইন্ছাতে অমুমান করিবেম।

শুত হওনের প্রার্থনা যে ভিষকের আছে তিনি শুচি হ-ইয়া রোগ পরীক্ষা করিবেন। এবং যেমত চিকিৎসা ক-রিলে রোগীর খাতু মুস্ত থাকে তাহাই সদৈত্যের কর্ত্ব্য।

ইতি নারকৌমুন্তাং প্রথম পরিছেদ সমাপ্তঃ।

সমুষ্যদিশের শরীরে দোষধার মল এবং আধার সকল আছে। বাছ পিত কফ এই তিনের নাম দোষ। এবং বিঠা মূতীদির নাম মল এবং ধারু আর আধার শংকর, অর্থ পুরে লিখিতেছি। মনুষ্যের বাল্য যুবা হন্ধ এই তিনকালে শরীরে স্থূল স্থানপে নাডি সকলের বিবরণ পরে লিখিব সংপ্রতি, আধারের কথা লিখি।

মনুষ্য আহার করিলে যে স্থানে গিয়া অঠরানল ছারা পাক হয় সেই স্থান নাভির উর্জে, তাহার নাম আমাশরঃ আধার অয়াদি পাক হইয়া যে স্থানে গিয়া থাকে সেই স্থান নাভির অধঃ তাহার নাম পাকাশয়ঃ এব১ তাহার অ-ধোতি মূআশয় তথা হইতে লিঙ্গ পথে মূর্ত্ত বাহির হয় এবং আমাশয়ের ছই দিগে পাঁজরার ভিতরে ছই আধার আছে তাহার নাম যত্ৎ ও প্লীহা। প্লীহা বামে যক্ত দকিশে, থাকে।

যক্ত ও প্লীহা হুই রজাশার অর্থাৎ রক্ত জ্বিয়া এই হুই
ভানে সঞ্চর হইয়া সকল শরীরে ব্যাপিত হয়। আর নাভির উর্চ্চে এবং অধোতে যে হুই স্থান আছে দেই স্থানের
মধ্যে নাভিমূলে পাকের এক স্থান অ'ছে তাহার অধোতে
নলের স্থান তার নামউপুক। এবং লিক্সমূলে যে মুত্তের
স্থান তার নাম কৃদ্ধুন। এবং আমাশায় ও পাকাশায়ের
মধ্যে যে স্থান তার নাম পুপ্পপ্ত আহার করিবা মাত্র
নাগবায়র ঘারা যে স্থানে গিয়া পাক হইয়া অন্য স্থানে যা
ইবার যোগ্য হয় দেই স্থানের নাম গহিণী। এবং নাভির
স্থানের উর্চ্চে পিতের স্থান দেই শরীরে ভেজের স্থান তিনিই শরীরে মূলস্বরূপ হয় তাহার নাশ হইলেই দেহ নট্ট
হয় অত এব জ্ঞানী চিকিৎসকেরা ভাহার রক্ষার জন্য চেটা
ক্রিবেন।

শরীর দূষণ হেতু বাত পিত্ত কফের দোষ সংজ্ঞাহয় এবং বিষ্ঠা মূত্রাদি শরীরকে মলিন করে অভএব তাহার নাম মল বলা যায়।

্দিবা রাজিতে কফ পিত বায়র সময় নিৰপণ। • • প্রথমতঃ। দিনমান যত দণ্ড হইবেক তাহা অংশক্ষ

করিয়া প্রাতঃকালে যত দণ্ড হইবে তত দণ্ড ককাথিকার মধ্যাত্রে পিত্তের শেষ বায়র অধিকার হয়। কিন্তু প্রাতঃ-কালে দক্ষিকাল ছই দণ্ড যে আছে তাহা ত্যাগ করিয়া অংশ করিতে হইবে এই রূপ মধ্যাত্রকালের সন্ধিকাল এবং নায় কালের লন্ধি সময় ত্যাগ করিয়া কক বায়র অধিকার জানিবেন। এবং তিন দক্ষিকালে বায় এবং কফ উত্তর মিলিত হইয়া অধিকারী হয়েন এবং রাজিকালে ঐ প্রকার ককী পিশু বায়র হয় তাহাতে সন্ধিকাল ত্যাগ করি-বার বিষয় নাই।

শরীরে কফাপিত বায়ুর অধিকার প্রকরণ।

কটিদেশ পর্যন্ত অধোতাগ ককের উর্দ্ধে গলা পর্যন্ত পিত্তের এবং কেশ মল পর্যন্ত বায়র অধিকার এবং দক্ষি-স্থানে বাতশ্রেমার অধিকার। কলিযুগের মন্বরের অয়ের নিয়ম নাই অকাল মৃত্যু হইয়াছে তাহাতে বৎনরের মধ্যে ঐ তিনের কি ৰূপ অধিকার হইবেক তাহা বৈভ বিবেচনা করিবেন শত বৎনর মন্বয়ের আয়ু তাহা ভিন অংশ ক-রিরা পুকোত ক্রমে ঐ তিনের অধিকার জানিবেন। কফ পিত্ত এই ছুই অচল কিন্তু বায়ু সচল হয়েন কেবল বায়ুর শ-ক্তিতে কফ এবং পিত্ত গমন করে যেমন প্রবল বায়ু কর্ণক মেঘ সর্বাত্ত প্রমণ করে তক্রপ বায়ু কর্তৃক কফ পিত স্বাঙ্গান্ত ব্যাপিত হয়। অতএব কোন২ রোগে কফ পিতকে সাম্য রাথিয়া বায়ু দমন অত্যে করিবেন।

নাভির অধোতে পাকাশয় আছে সেই স্থান বায়ুর এবং নাভির উর্চ্চে আমাশয় আছে পে কফের স্থান এই ছুই স্থা-নের মধ্য স্থান অগ্রি জুল্য পিত স্থান হয়।

প্রশাস কটিদেশ এবং গুছু কর্ব চক্ষ স্পর্শেন্ডিয় এই লকল বায়র হয় তত্তাপি প্রকাশয় বায়র নিত্যধাম হয় ত-লাগা শীতোফাদি বোধ হয় এবং কোমল ক্রটিন বোধ হয় ভাহাকে স্পর্শেন্ডিয় কছে।

পঞ্জ প্রাণের অবস্থান।

হৃদয়ে প্রাণ বায়, গুছে মাপন বায় নাভিতে সমান বায় কঠে উদানবায়, এবং ব্যানবায় দকাকে ব্যাপিত জানিবেন।

शक প्रापंत्र काये।।

ষিনি শারীরের রক্ত চালনা করেন তিনি প্রাণবায়, যিনি আয়ের প্রাস গ্রহণান্তর ষবলে প্রকাশয়ে লাঁয়ে যানি এবং যাহার শক্তিতে প্রাণবায় কার্যা করেন তিনি ম্পান বায় হয়েন এবং যাহার শক্তিরার গনা বমন উদ্পার ও শ্বাসাদি
হর তাহার নাম উদান। পক্ত শার এবং আমাশয় এই তুই
ভানের মধ্যে যে নাতি স্থান আছে তাহাতে অগ্রু রূপ যে
পিত সেই পিতে রূপ অগির সহায় যে বায় আছেন তাহার
নাম সমান তিনিই অয়াদি পাক করিয়া ভিয়২ করেন।
এবং বিনি প্রভাশয়ে থাকিয়া মল মূত্র ভাগে ও বদ্ধ করেন
ত হার নাম অপান। বিষ্ঠা মূত্র শুক্র ক্রমির এ নকলের অন্ত
গতি হইয়া আছেন এবং সকল শ্রীরে ব্যাপিত যিনি তাহার নাম ব্যান বায় এই প্রাণাদি পঞ্চ বায়র স্থান এবং
কর্মা কাহলাম।

পরে শ্লেমা এবং পিত্তের মান্চর্য্য যে পরমেশ্বর নির্মিত স্থানে প্রমেশ্বর কর্ত্ক স্থাপিত করণ। ইহাতে এই
ময়ের বিচিত্ত সম্বন্ধে যে স্থিতি তাহা পাপ্তত বৈছেরা নানা
শাস্ত্র মধ্যমন করিয়া উত্তমকপে বোধ করিতে পাবেন না
কেবল স্থাল মাত্র বোধ করিয়া চিকিৎনাতে মাধিকারী হয়েন। অতএব প্রাক্ত মনুষ্যের বোধগ্রা হয় না এবং শরীর মধ্যে পিত শ্লেমার স্থিতি মুনিগণেরা মন্তদ্ভিতে দেথিয়াছেন ভাষা সারকৌমুদী গ্রন্থে কিঞ্ছিৎ প্রকাশ আছে
বিস্তার কপে প্রকাশ তন্ত্র শাস্ত্রে এবং শন্তর ভাষ্যে আছে
ভাষান্য চিকিৎসা করা মুর্ঘট। অতএব বঙ্গুয়া

রচিত গ্রন্থ অপ্যায়াসে বোধগম্য হইলে শীঘ্র চিকিৎদাতে সক্ষম হইবেন।

পিত শ্লেমার স্থিতি প্রকরণ।

যথা নাভিমূল এবং আমাশার এবং শারীরে জ্বল স্থান ও রজাশার এই সকল পিতের স্থান তত্তাপি ইহার বিশেষ স্থান নাভিমূল দেই নাভিমূলস্থ যিনি শক্কাধান তিনি ভূতাঅক। কিন্তু দেই স্থানে পরমেশ্রের ভৈজন কোষের অধি
তান অতএব তাহাকে বৈল্প কহিতে হইবেক নতুবা তিনি
কোন শাজির দ্বার্থা অম পারিপাক করিয়া অসার ভাগ ত্যাগ
পূক্ষক শার ভাগ এইল কার্য়া সপ্ত ধাতুতে ভিন্ত স্কন
পূক্ষক শারীরকে বলবান করিয়া রক্ষা করেন। এবং শারীর
মধ্যে যে ঈশ্বর কপাদি দর্শন হয় তাহাও তৈজস কোষের
শাজি। এবং শারীর মধ্যে মূল স্থান নাভি মূল ইহাতে পান
ক্রাশার পারম দেবতা কপ আছেন ইহার বিষয় উত্তম কপা
বোধ করিয়া চিকিৎসা করিবেক।

প্লেক্সা প্রকরণ।

শ্বেষা এবং কক এই তুই শব্দের একার্থ মন্তাবে অর্থাৎ কল ৰূপে থাকিলে শ্রেষা এবং বিকার প্রাপ্ত হইলে মল ৰূপ কক ইহার স্থান বক্ষ কণ্ঠ মন্তক উদরের উদ্ধি বক্ষের অধঃ অর্থাৎ যে স্থান কণ্ডা হয় সেই স্থান এবং শরীরের সন্ধি দ্রান সকল ও আমাশ্যরস মেদ নাসিকা জিহ্বা এই দকল থাকিলেও বক্ষঃস্থলে বিশেষ ৰূপে থাকেন ইহার মধ্যে আমাশরস্থ কক্ষ পঞ্জ নাম গ্রহণ করিয়া পঞ্জ ক'ব্য করেন।

পঞ্জ নাম যথা।

আম্বলকঃ ক্লেদকঃ বোধকঃ তর্পকঃ শ্লেজকঃ। পঞ্চ কাই্য যথা।

ক্লেদক নামা কফ আমাশর গত জব্যাদিকে কর্দন ন্যার করেন বোধ রসনেতে থাকিয়া রসবোধ করান তর্গক ম-স্তকে থাকিয়া অঞানির্গত করেন শ্লেমক শরীরের স্থিতিত থাকিয়া শিথিলীকরণ করিয়া গমনাদি করান আদি শব্দের অর্থ সমুদর সন্ধিত্যনের কার্য্য করান। কিন্তু শ্লেম্মক না থা কিলে হস্ত পদ পদাদির প্রসারণ আবুঞ্চন ইত্যাদি হইত না কেবল দণ্ডের ন্যায় থাকিত এবং কফ ক্রুর হইলে সন্ধি স্থানে থাকিয়া অব্শু পীড়াদায়ক হয়েন।

ষ্মবলম্বক কফ শরীর নাশ এবং রক্ষার কারণ।

শ্বলম্বক রুজনপী কক জল নপে আমাশয়ে থাকিয়া শ্রীর রক্ষা এবং নাশের কারণ হয়েন কিন্তু নাশের কারণ হইয়া রক্ষার কারণ কিনপে সম্ভব হয় ইংগর দৃষ্টান্ত হলাহল দর্প মুখে থাকিয়া সর্পেকে নচ্ট করে না অথচ বলবান করে অর্থাৎ নির্বিষ সর্প হইতে বিষ বিশিষ্ট সর্পকে বলবান কণিরিয়া কহা যার সেই প্রকার রুজনপী অবলম্বক কক আমাশরে অধিষ্ঠান করিয়া আমাশয় গত কক ও পিত ইহারা পারম্পার নাশ হইতে রক্ষা করিয়া শারীর রক্ষা করিতেছেন অন্তর্পর শারীর রক্ষা কারণ অবলম্বক নামা কক।

শরীর নাশের কারণ।

প্রাপ্তকাল হইলে শ্রীর রক্ষক ঐ অবসম্বক কফ ইনি
শ্রীর রক্ষার মূল আমাশয় গত কক পিছে বায় ইহার মধ্যে
কক পিছকে প্রাণ করিয়া বায়কে নই করিছে না পারিয়া
শারীরকে যে প্রকার নই করেন তাহা দুইান্ত পূর্বক লিখিভেছি। জল পাবকোদর নৌকা অনায়াদে সমুপ্র গ্রমন করে
কিন্তু নৌকান্থ অগ্নি এবং জল নৌকার নাশ কারণ তৎকালীন হয় না পরে কাল প্রাপ্ত ইলে বায়র ব্যতিক্রমে অথবা
অন্য কোন প্রকারে দেই সমুদ্র ঐ নৌকাকে আপন জলে
মগ করিয়া নৌকান্থিত অগ্নিএবং জলকে নই করতঃ নৌকা
কে যেমত নই কল্পে তাহার ন্যায় আমাশয় গত রুদ্র রূপ
ঐ অবলম্বক কফ আমাশয় গত অগ্নিরপী পিত এবং জল
রূপ শ্লেআকে বায়ু ব্যতিক্রমে নই করেন এই প্রকারে আমাশ্র গত ক্ষ শ্রীর সংহারের কারণ হয়।

পিত কফ বায়ুর অধিকার কথন।

বর্ধা আর শরৎ এই ছই ঋতুতে যে চারি মান ইহাতে পিতের অধিকার। এবং শিশির ও শীত এই ছই ঋতুতে কক্ষের অধিকার বসস্ত এবং গ্রীম্ম এই ছই ঋতুরত বায়র অধিকার। এই প্রকার বংসরের মধ্যে পিতি কক বায়র অধিকার হয় ইহার উষধ ঋতু অধিকারে দিতে হইবেক দেশ কাল পাতা বিবেচনা অত্যাবশ্যক জানিবে।

मधुरमाधन विधि।

নিজে মধু তৌল করিয়া তাছাতে উপযুক্ত কিঞিৎ জল দিয়া নূতন পাত্রে চুলারউপর বসাইয়া মধ্যম জালে পাক করিলে ফেলা হইবে ও ক্রমে২ জল নিঃশেব হইবেক এই কপে মধু শোধন হইবেক।

কক রাজি প্রকরণ।

শিশির কুজ্বটিকা এবং প্রাতঃকালে ভোজন বসন্ত-কালে মিউ অব্য ভোজন অভি শীতল ওক্ষপান এবং ইক্রস পান তক্র দিবা নিজা লুচি হইতে উত্তম রূপে মৃত মিশেষ না হইলে সেই লুচি এবং পিউকাদি অব্য ভোজন এই সক লেতে শ্লেমা রাজ হয়।

বায়ুয়োগ প্রকরণ।

হঠাৎ পদাবশ হয় এবং মলদ্বার বেদনা করে মুচ্ছা অন্তর্ন দি অভি মৌন হইয়া স্তন্তের ন্যায় থাকে আর পৃষ্ঠ জান্ম কপোল ক্ষ ইহাদের চালনা দন্ত কিড়িমিড়ি এবং দন্ত কপাটি এবং বাক্য উরুদেশ ছোয়ালি স্তন্তিত ও চক্ষ সদয় গলদেশ মন্তক স্তন্তিত শার ধুজভক ক্ষ ও দন্তস্থানের অন্তর হয় উদরাধধান এবং নাড়ি আদির স্তন্তন আর তৈল মর্দন করিলেও গাত্র রুক্ষ এবং চর্মাক্ষাটন ও দলন এবং ভোজন করিলেও পুনর্বার ভোজন করিতেও ইচ্ছাহ্ম এবং কম্পে শ্রভক আর কর্মক্ষম হইলেও অল্মপ্রযুক্ত কর্ম্মেনা যাওন অকারণ অভিশন্ন পরিশ্রম করণ এবং গত বিষয় স্থ-

(थेर निमिएड भूने १२ (थेम करिय़ा लांक्स निक है कर्यन তাস ভুগ কোধ এবং যে কোন শব্দ হইলে কর্নে রোধ বোধ আর মুন্তর্বপে যে বিষয় কর্মী করিয়াছে তাহার স্মর্ণ ক-রিতে পারে না এবং হস্তাদির কর্ম হঠাৎ বোধ হওন জ-র্থাৎ ভোজনাদি করিতেই অবশ। আর অপরাধি না হই-লেও লোকের উপার নকাদা ভাড়ন আর হর্ষ বিষাদ পরি-শ্রম ইহার কোন কারণ উপস্থিত না থাকিলেও অন্তঃকরণ मध्या मक्तना উल्लाम कर्न এवः लामाक्ष । किन्तु कक क्रमा লোমাঞ কাহ্যাছ অতএব উভয়ের ভেদ আছে। লোমাঞ হইয়া শরীর ভাল কইলে কফ জন্য এবং লাঘৰ ক্ইলে বায়ু জন্য আর পিত কফকে নানা স্থানে ক্ষেপণ এবং হস্তাদি ক্ষেপ্রণ ও টানিয়া লওন শরীরের রস শোষণ কোন ব্যক্তি কর্তৃক দৃঢ় আলিজনের ন্যায় ধারণ আর শরীর মধ্যে নূতন ছিছ জ্ঞান। এবং চকু শরীর মুদ্র প্রভৃতি ক্লফবর্ণ অথবা রক্তবর্ণ আর অভিশার ভ্যা হইলে জল পান করিতে ইচ্ছা না হওন এবং নথমধ্যে ক্ষায় বোধ ইত্যাদি বায় জানিবে বারু পারম দেবতা ছবপ। শারীর মধ্যে রাজার ন্যায় তা-হাকে বোধ করিবেন। দৃটান্তঃ রাজা কোপা করিলে থ-জাকে অনায়ানে নট করিতে পাঙ্ন। এইৰপ বায় কোপ যুক্ত চইয়া পিতাধিকো নটা করিয়া শরীরকে নটা করিতে পারেন অতএব বৈপ্ত কফ পিতকে সাম্যভাবে রাখিয়া বা-মুর চিকিৎসা অতি সারধানে করিবেন কিন্তু বায়ু চিকিৎ-নাতে অপে ফলভাগী হর। দৃটান্ত মহামহৈশ্বব্য দাতা এগুরুদের ভাহাকে দাতা না বলিয়া কর্ণাদিরালাকে দাতা वरलन এवर मटेइ अये। लांच क्रिय़ा कि खिर धन लांच क्रिय ভাহার ন্যায়।

পিত্ত লক্ষণ।

মনুষ্যের গলামধ্যে জ্বালা করিয়া অম্বলের ন্যায় যে উল্লার হয় এবং অকারণ অধিক বাক্য কহন ও অতিশয় ঘর্ম অর্থাৎ যে হর্ম হইয়া ধারা বাহির হয় ও মূল্ছা হয় এবং চল্ছ জিন্তা কিয়া শরীরের কোন অন্য স্থান আগুলিখা যুক্ত তুল্য হইয়া যে দক্ষ হইতেছে।আর অন্ত চি এবং জলপান করিতে ইচ্ছার্থে জল খাইতে পারে না এবং কোধ ও বাক্যের ভূল মুখ বৈযাত্যের জন্যে ভোজন করিতে পারে না,কিন্তু পুনঃ পুনঃ ভাজন করিতে ইচ্ছা হয় আর গৃহে প্রবেশ করিয়া বোধ হয় এবং জিল্লাভিক্ত অয়ল কাল রস আর পীতবর্ণ মল ভ্যাগ হয় আর জড়তা হইয়া মদোমতের ন্যায় বাক্যখলন হয়।

ক্ষলকণ।

ভোজন-না করিয়া ভোজন করিয়া এমত বোধএবংততা অতিশয় মল তরল এবংঅধিক হয় এং শর্মদা শীতল জব্য ভোজন করিতে ইচ্ছা এং শীতল জব্য গাতে মাথিতে ইচ্ছা আর ক্ষাওণ পোছাইতে ইচ্ছা ও শরীর চুলকান শোথ অ-ধিক নিজা আর ঝাল রস জব্য থাইতে ইচ্ছা চক্ল খেতবর্ণ ও মল মৃত্য খেতবর্ণ আর অলন হইলে দ্বন্দ্ররোগ পিত্ত শ্রেমা পিত্তবায় বায়পিত ইত্যাদি।

সাগ্নিপাতিক লক্ষ্ম।

বায় পিত ককের যে যে প্রকার পূর্বে লিখিরাছি সেই
মত থিবেচনার যে স্থানে পিত এবং কফ এই ছয়ের লক্ষণ
দেখিবেন। সেই স্থানে পিত প্রেস্থার রোগ জানিবেন এই
প্রকার বাতপ্রেম্মা এং বায় পিত পিতবায় এবং এই তিনের লক্ষণ প্রবল দেখিলে সাদ্মপাতিক বোধ করিবেন
বিন্তু ঐ প্রবল তিনের মধ্যে যিনি অধিকপ্রবল ইইবেন তাহার চিকিৎনা অগ্রে করিবেন।

বায় দমন প্রকরণ।

শীতেকৈ জল একত করিয়া স্থান যে সকল জব্যে শুক্র স্কি হয় তাহা ভোজন এংবলইজি যাহাতে হয় তাহা তা- জন এবং হ্রাদ অয়ল সৈদ্ধবের সহিতে ভোজন তিল তৈল এবং বায়ু নিবারক পাক তৈলমদিন করিয়া স্নান এবংছাগ নাংস ভোজন করা মদিরা পান এবংনারিকেলোদক পান এবং পল্পতে শয়ন অতোফল ভোজন তপ্তায় জলধীত করিয়া ভোজন এবং ভোজনান্তর স্নান এই সকল প্রকারে বারু দমন হয়েন।

পিত দমন প্রকরণ।

পটোল পারর রস এবং বট্কী চিরাতা ইক্সন্ধ ইছা
দিগের ক্লাথ আর হরীতকী আমলকী ইহার রস মিউরলে
পাক করিয়া ভোজন আর শীতল বায়ু ও নিয়ছাল নেবন
পোয়াজ ভোজন ইহাতে অবশু পিত্ত নই হয় আর দার
দিয়া যে জ্যোৎসা গাতে সংলগু হয় ইন্ডিজল পান স্ত্রী সঙ্গম
ছাগ মৃত ভোজন এবং ঔষধ দারা ভেদ বমন হওন আর
স্বেদ করিয়া ঘর্মা নির্গতকরণ। রক্তমোধণ হরিজাদি মুর্দন
গোমুত্র পুরাতন বুম্মাও ভোজন আর ছোলার জল হিঞান
রস গুলঞ্চের পালো কিয়া গুলঞ্চের ক্লাথ সেকালিকা পাত্র
রস ক্রেপাপড়ারস ধনিয়া মধুরপানা ভোজন ইভ্যাদিতে
পিত্ত নইট হয়।

कक प्रमा श्रकत्र।

মৃত বৃহিত ক্লটি এবং তগুল ভিপ্টিক মশ্রক রফ কলাই ভর্জন আগ ওল মানকচু কাঁচাকলা আদি ভালা এবা
মাত্র কিন্তু তৈল মৃতাদিতে ভালা ভিন্ন। আর ভগুলাইাভিতে কিঞ্ছিৎ উষ্ণ করিয়া দেই তগুলের অন্ন উষ্ণ থাকিতে এ সকল ক্ষ্ণ ভালার সহিত ভোলন এরং উষ্ণল পান আর কৃষ্ণ হরিজা গাত্রে লেপন আর বিভূতি লেপন।
নিসিন্তাপত্র রস হলকসার রস ভালসাড়ার রস এই সকল
জব্য পান। অগ্রিভাপ শুঠী পিপুল মরীচ মৃগনাভি কন্তুরী
পাণের রসে মাড়িয়া থাওন আর নির্দ্ধন আদার রসের
সহিত সৈক্ষবলবণ ত্রিকটু চূর্ণ মুখ মধ্যে রাথিলে মুখ হইতে শ্লেষা নির্গত হয় এবং তিকটুর নহা আর এরও পত্রমধ্যে বালুকা পুট্লী করিয়া মন্তকে অধিক তাপ দিলে মন্তকের স্মোমা নন্ট হয় আর পুরুষ্টের অধিক ককে রাঙ্গাচিতার মূল মরীচ দিয়া বাটিয়া খাওয়াইবেক কিন্তু ইহা জীলোককে কদাচ দিবেনা, মস্থরি এ।ং ছোলার ছাতু ভোজন আর নাগরদোলায় দোলন মল্লযুদ্ধ জীলন্থ উপহাল দৌড়ান আর ভেদ বমন করান এবং জাগরণ এই সকল প্রকারে কক নন্ট হয়।

শারীরিক মানসিক ব্যাধির বিশেষ কথন।

শরীর পীড়াদারক কক পিত বায় এই তিনকে জানি বেন মন পীড়াদারক তমোরজঃ দত্ব এইতিন গুণকে জানি বেন। কিঞ্ছাক্ত কথনং। নানা প্রকার জার এবং গহিণী কান শ্বান শল বুঠ প্রভৃতি রোগ বাতপিত্ত কফ দারা জ-আয় এবং বিষাদ তয় উৎসাহ তীন ইত্যাদি মানন পী-ড়াকে সল্বজঃ তমোগুল জাত জানিবেন এই ছই পীড়ার মধ্যে শারীরিক পীড়ার চিকিৎসা এই প্রত্তে লিখিব। কিন্তু মানসিক পাড়ার চিকিৎসা লিখিব না কালে তাহা যোগ শাস্ত্রে পাজ বিশেষে লিখিরাছেন এবং এই মনঃ পীড়ার কারণ মহামোহ অতএব মহামোহ জাত যে রোগ বিশেষ, ভাহার উষধ আন্তিক্য বৈরাগ্য। ধৈব্যুম্তি ধ্যান ধারণা কিন্তু ইহাতে উপদেন্টা প্রিক্তদেব হইয়াছেন অতএব অন্য উপদেন্টা হইতে পারে না।

শারীরিক বিষয় কথন।

শরীর মধ্যে কফ পিত বায়ু যে আছেন তাঁহারা ষ-ভাব দারা কিয়া আহতাদি করণ দারা কদাচ কফ রজি ক-থন বা পিত রজি কদাচ বা বায়ুরজি করেন ইহাতে জ্ঞান বান বৈচ্চ এই ভিনের মধ্যে যে গুর্বল তাহার রজি এবং বলবানের সাম্য ও সাম্যের পালন করিবেন ইহা করিলে উপ্তম বৈতা হয়েন।

পুনঃ কক পিত লক্ষ্ৰ।

কক পিত বার কে শরীরে বাহ্ন লক্ষণ দৃষ্টি দারা এবং রোগী স্বংশ্ন যে প্রকারে দশন হয় তাহা জিজ্ঞাসা করিয়া কফ পিত বায়ুর প্রবলতা বোধ করিতে পারিবেন ।

বারুর বাছ লক্প।

শরীরে কার্যতা এবং লাবণ্য রাহিত্য ও অপে কেশ এবং সর্বাহা মন চঞ্চল ও সর্বাহা মনের ভ্রম আরু নিজাব-স্থাতে বিস্তর বাক্য কথন এবং স্বপ্রাবস্থাতে অধিক ভ্রমণ এই সকল বাহ্য লক্ষণ দ্বারা বায়ুকে বোধ করিবেন।

পিত্ত বাছ লক্ষণ।

বয়ঃপ্রাপ্ত না ইইলে কেশের শুক্লবর্ণ প্রাপণ এবং রাই সূর্যপের ন্যায় শরীরের বর্ণ আর নীললোকের মত মকল কর্মে ক্রোধবুজ হইয়া শব্দ কর্ম এবং বুদ্ধির প্রথরতা আর নিজাবস্থাতে আলোকমল দর্শন এই নানা বাহ্য লক্ষ্ম দ্বারা পিতকে জ্ঞাত হইবেন।

ক্ষত বাহ্ লক্ণ।

বুদ্ধি ও শরীরের স্থালতা এবং শরীর লাবণ্য আর সর্বা প্রশংসিত কেশ। এবং নিজাবস্থাতে জলদর্শন এই প্রকার বাছ লক্ষণ হেতু ককের বোধ করিবেন বায়ু পিত্ত ক্ষ দুন্দ যে সাবধান হইরা চিকিৎদা করিবেন। যে স্থানে পিত্ত এবং ক্ষ এই উভয়ের চিহ্ন দেখিবেন সে স্থানে উভয়ের যোগ বোধ করিয়া এবং বাতশ্রেমার যোগ এই প্রকার জানিয়া পরম্পরের নিবারণ ঔবধ দিবেন। যক্তপি এমভ বোধ হয় যে ক্ষ পিত্তের যোগ কি প্রকারে হয়। ক্ষ জল স্থানপ পিত্ত অগ্রিষ্থানপ অত এব উভয়ের যোগে উভয়ের শ্বংস ক্রেননা হয় ইলার দুটান্তপুরাক লিখিতেছি। পরমেশরের জনাধ্য সাধনে ক্ষনতা প্রযুক্ত সকল বিষয় স্থাধ্য সম্ভব ক্ কৈরে তজপ অগ্নিশক জলকপ কফের সহিত পিত ক-পাগি মিলিত হইয়া জীবন ধারণ করেন।

বায় রছি প্রকরণ।

ধাবন দুর গমন উপবাস উচ্চা হইতে পত্ন অথবা কেবল পছন হস্তপদাদি ভঞ্জন ম্প্রদোষরাত্তি জাগরণ মল মুত্র বেগধারণ অতিশয় শাহল ক্রিয়া ভয় প্রাপ্ত হওন ক্লক্ষ-দ্রুণ্য ভোজন স্থার্ভ হওন কটু ভিক্ত ক্ষায় দ্রুব্য ভোজন মেঘারন্ত কাল র্থ্যি সময় ভোজনান্তর কাল ভোজন শেষ ইহাতে বায়ু কুপিত হইয়া রুদ্ধি হয়েন। কিন্তু ইহার মধ্যে কটু ভিক্ত ক্ষায় দ্রুব্য কহিয়াছি ভাষা যদ্যপি পাচনে কিয়া উমধাদিতে থাকে ভবে ভাষাতে রুদ্ধি হয় না।

পিত্ত রুদ্ধি প্রকরণ।

লক্ষামরীচাদি কটজব্য অৱল্ডব্য তাপাযুক্ত দক্ষজব্য আরু বিষাংশ যে সকল জব্য ও লাণ ক্রোথ উপাবাস অগ্র-হারণ প্রীসঙ্গ তিল মদিনা দুধি এই তিন জব্য ভোজন এবং স্থাপান শোকাকুল টক আমানি ভোজনান্তর ও ভোজন শেষ ইহার মধ্যকাল ও শর্ৎকাল জনসমূহ গোলের মধ্যে স্থিতি মধ্যাষ্ট্রকাল মধ্য রাত্রি ইত্যাদিতে পিন্তু কোপাযুক্ত হইরার্ছিক হয়। ইহাতে যে রৌজ কহিরাছি সে পৃষ্ঠালগ্ন ভিন্ন জানিবেন। এই মধুতে পিত্ত নই করে জানিয়া মধুর বিষাংশ দূর না করিয়া ঔষধ সেবন করেন ভাহাতে ঔষধ উপাকারি না হইয়া অপাকারি হয়েন অত-এর মধু শোধন কপ্রব্য।

ইতি ভাষারচিত নারকৌমুদ্যাং শ্রীরাধিকারে। নাম দ্বিতীয় পরিভেদঃ।

--

রোগ বিশেষে অসাধ্য কৃচ্ছু সাধ্য স্থাধ্য এবং কোন রোগ সাধ্য অতথ্য উপযুক্ত উবধ এবং গ্রহণান্তিও ছন্তা-য়ক দারা রোগ মকলের অবস্থান্তর হয় অর্থাৎ অসাধ্য রোগ জাপ্য হইয়া থাকে কৃদ্ধু সাধ্যমুসাধ্য হয়। অতএই চিকিৎ সার আবভাকতা পরে পূর্বজন্ম কৃত কর্ম দোক আর ইহ জন্মের পাপেতে এবং অন্যক্তাহারাদিতে রোগ জন্ম ইহা জানিবার কারণ লিথিতেছি। যে সকল রোগের যে সকল উত্তথালাক্তে উক্ত আছে এবং যেসকল মন্ত্যয়ন শান্তি আছে সে সকল করিলে বেহ রোগ ভাল না হয় সেই সব অদুট জাত জানিবা আর উষ্ধাদি ছারাযে সকল রোগ ভাল হয় সেই সমস্ত অনুক্তাহারাদিতে জন্মে জানিবেন।

ইতি ভাষা সারকৌমুদ্যাৎ রোগ নিরপ্রাধ-কার সমাপ্তঃ।

রোগীর মূত্র পরীকা।

নূতন সরাতে গোরীর মূত্র ধরিয়া তাহাতে একবিন্তু তৈল দিবে সেই তৈল যদি সরিয়া বেডায় তবে বায়ব্যাধি লানি বেন এবং বিল্ফুং হইয়া তৈল যদ্যাপা ছাড়িয়া পড়ে ভবে পিত্তের চিহ্ন জানিবেন। আর ঐ তৈল বিন্দু যদ্যপি ঘন इत्र उद्य करकत्र नक्षा क्षांनित्वन । धावर रेडन विन्छ यानि मृत्व ভূবিয়া পড়ে ভাসিয়া উঠে তবে দে^{*} সামিপাতিক রোগ জানিবেন, আর ঐ তৈলবিষ্ট্র যভাপে পুর্বাদিগে সরে তবে সেরোগ অতিশীভ্রভাল হয়,এবংযদি দক্ষিণদিগে সরিয়া যায় তবে সে বেগ क्रांस क्रांस वित्यय हहेश **लाल हा, य**नि পশ্চিম্বিটো যায় ভবে অপ্প চিকিৎসাতে ভাল ইয়। আর যদি উত্তরে যার তথাপিও রোগ হইতে মুক্ত হয়।আর যদি জ্শানকোনে যায় তৃবেদে রোগীর একমানের মধ্যে প্রাণ-ত্যাগ হয়। আর যদি মূতে তৈলবিন্দু দিবামাত নানাবন হুইরাছিল ভিল হর ভবে লে রোগীর মৃত্যু হয় জানিবে। আরু যদি তৈলবিন্দু পুনঃ পুনঃ জোবে ভাসে কিয়া মিশা-ইয়া যায় তবে সেই রোগী মৃত্যুবঁৎ হইয়া বাঁচোপিও রোগে মূত্ৰ পাণ্ডুবৰ কক রোগে মূত্ৰ কেশাযুক্ত ৰায়ুরোগে রক্তবর্ ইহাতে রোগ যদি দ্বন্দুক্ষ হয় তাবে মূত্রমিশ্রবর্ণ হয় অতএব দ্বন্দুক্ষ রোগেরমূত্র বিবেচনা উত্তম ৰূপে করিবেন সন্নিপাত রোগে মূত্র কালবর্ণ হয়।

> ইতি ভাষা সারকৌমুতাৎ মূত্র পারীকা। সমাপ্তঃ।

অথ জিহ্বা পরীকা।

জিহ্বা যদি সরু কিয়া পাতলা হয় এবং ভাহাতে এথারমত যদি ধার হয় অথচ ফোটকবুক্ত হয় তবে ভাহাকে বাযুক্ত রোগ জানিবেন। এবং জিহ্বা হইতে রক্ত প্রাব হইলে
পিতৃত্ব বোধ করিবেন। আরু শুক্রবর্ণ এবং ভাহাতে অন্পরস
বোপ এবং ভাহা হইতে জল নিঃসরণ যদি হয়। তবে ভাহাকে প্রেমান রোগ কহিবেন। এবং রুফবর্ণ অথচ কুঞ্চিত
হইয়া টাক্রাতে যায় ও শুক্ত হয় তারে সামিপাতিক জ্ঞান
করিবেন। আর দ্বন্দ রোগে মিল্ল লক্ষণ হয়। পুনশ্চ সামিপাতিকে অভি ভ্রানক লম্বনানা ইইয়া মুথ হইতে যদি
বহির্গতা হয় কিয়া উল্টিয়া পড়ে এবং অন্যান্য বিক্তাকার
হয় তবে রোগীর মৃত্যু অভি নিক্ট জানিবেন।

অথ নাসিকা প্রীক্ষা।

নাদিকা শুক্লবর্ণ কিন্ধা রুক্ষবর্ণ শুক্ষ ও মোটা কিয়াকিথিং হেলিরা পড়ে অথবা বিদয়া বায় কিয়া কোন জব্যের
আন না পায় এবং ক্টিত হয় কিয়া শুন্য পীড়া বুক্ত হয়
• অথবা নাদিকার অথ্যে বিজ্ঞাতীয় ক্ষোটক হয় তবে মৃহ্যু
লক্ষণ জানিবেন।

नाजी शत्रीका।

পুরুষের দক্ষিণ হল্ড জ্রী লোকের বামহন্ত স্পর্ম করিরা দেখিবেন। বৈন্ত রোগীর দক্ষিণ হচ্ছের মূল আপনার বাম - হন্ত ভালুকাতে রাথিয়া রোগীর দক্ষিণহন্তের হজাঙ্গু ঠের অংখা যে কর সন্ধিন্তান আছে ভাহার অধ্যেতে আপুনার তিন অস্ লির অপ্রভাগ যোগ করিবেন।পরেনিজ শরীরকে

ক্রম্থ নমুভাব করিবেন এং তর্জনী উর্জে সংখ্যমা মধ্যে
অনামিকা অধাতে রাখিবেন। এমত করিলে নাড়ীর শুভাশুভকল বোধ হয়। আর ভোজনের পরস্থা এবং মান করিবা মাত্রও রোগীরঅভ্যস্তহ্বধা এবং ভ্রাছইলে নাড়ীউত্স
কপে বোধ করিতে পারেন না এবং দূর হইতে চলিয়া আসিলে অথব। পরিশ্রম করিলে কিয়া অভিশয় তৈল মর্দ্ধনের
পর এবং নিজা কাল এই সকল সময়ে নাড়ী পরীক্ষা হয়না অভএব স্থান্তর হইলে কিঞ্জিৎকাল বিলয়ে পরীক্ষা
করিবেন কিন্তু নাড়ী পরীক্ষা একবার হস্তম্পর্শ করিলে হইতে পারে না পুনঃ-দেখিতে হয়াজভাবে ছইবার নাড়ী ধরিয়া অবশ্য দেখিনে । আর কোন মন্ব্রেয়রহন্তে নাড়ীবোধ হয় না এ ছারণ পুর্ব্বোক্ত বিধিক্রমে পায়ে নাড়ীধরিয়া
দেখিবেন।

অথ বাহাত্মিকা নাড়ী গতি প্রকার।

বাত পিত্ত ককা আকা ক্রমে নাড়ীর গতিক উত্তম ৰপে
বিবেচনা করিবেন। নাড়ী পারণ করিবা নাক যে নাড়ীর কুটিলা গতি বোধ হয় তাহাকে বাতা আকা লানিবেন অর্থাৎ
বায়ুর কুটিলা গতি ছারায় নাড়ীর কুটিলা গভি হয়। গতি
দুটান্ত । তৃশ্বলোকা অন্যত্ণে গমনকালীন যাদৃশী গতি তাদুলা। এবং দুপ্র প্রমুন কালীন যাদৃশ বক্র হইরা গমন করে
ভাদৃশ জানিবেন।

অথ পিড়া বিকা নাড়ী গতি প্রকার।

রোগীর স্থাঙ্গ উত্তপ্ত করিয়া এনং হস্ত পানাদি অগ্নি জ্বালাযুক্ত প্রায় করিয়া ককে এবং ভেকের ন্যায় বাংগর গতি হয় তাহাকে পিতাজ্বিকা লানিবেন। অর্থাৎ কাক এবং তেক যেনন লন্ফ কঃভঃ গমন করে ভাহার ন্যায় পিতের নাড়ী গমন করে।

অথ কফাত্মিকা নাড়ী গতি প্রকার।

হংসের ন্যায় ঈবৎ হেলায়মান অথচ মন্দ মন্দ হইয়া যাহার গতি এবং কপোতের ন্যায় মন্দ মন্দ হইয়া যাহার গত্তি এবং স্তন্তের ন্যায় যাহাকে শূন্য গতি প্রায়্র বোধ হয় তাহাকে ক্ফাত্মিকা জানিবেন। কিন্তু নামান্য কফে হংস কপোতের ন্যায় মন্দ গতি।অতিশয় কফে স্তন্ত্রগতি অর্থাৎ স্থিয়া গতি,যেমন পূর্ণীগর্তা ক্রীলোক শীদ্র গমন করিতে না পারিয়া খীয়ে খীয়ে গমন করে তক্রপ কফের নাড়ীকে বোধ করিচেন।

वाध वन्तव नाष्ट्री श्रकात।

যে স্থানে কফ এবং পিত্তের লক্ষণ দেখিবেন তাহাকে
কফ পিত দলক বোধ করিবেন। এবং যে স্থানে কফ এবং
বায়ুর লক্ষণ দেখিবেন তাহাকে বাতপ্রেমা রোগ জানিবেন আর যে নাড়ীতে বায়ু এবং পিত্তের গতি দেখিবেন
ভাহাকে বাতপৈত্তিক রোগ জানিবেন। এবং যে স্থান
তিনের লক্ষণ দেখিবেন তাহাকে কিদোব রোগ জানিবেন

वर खतरुक नांड़ी अकात।

মনুষ্যের জ্বর হইলে নাড়ী তাপযুক্ত এ ১৭ ধাবনান হয়। সামিপাতিক নাড়ী প্রকার।

মন্দ মন্দ গতি এবং কুটিলা ইহাতে যন্তপি অতিশয় কুটিলা গভি এবং অত্যন্ত স্থিৱা গতি হয় তবে সে রোগকে অসাধা এবং রোগীর মৃত্যু সপ্তাহের মধ্যে জানিবেন।

শায়িপাতিকে মন্দগতি নাড়ীর দৃতীত। যেমন মনুষ্য
অত্যন্ত প্রকাল হইলে এক গ্রন্থ পদ পরিমিত ভূমি কন্টেতে
গমন করিয়া পুনর্করে দগুয়মান হয় ভাহার ন্যায় সায়িপাতিক নাড়ী গমন করিতেই স্থির হয় এবং দেই ভিছি
কালে কখন স্কাতি হয় ক্খন বা স্কাতি হয় না। পুন'বার তর্জনী অঙ্গুলিতে গতি বোধ হইয়া যেন অধোতে
স্থালীত হইয়া পড়ে এমত দেখিলে সে নাড়ীকে অসাধ্য

আনিবেন এ। শ্বভাব পরিত্যাগী ও যথেষ্ঠাচারী উন্মত্তব্যক্তির ন্যায় নৃষ্টা যদ্যপি অভাব গতি ত্যাগ করিয়া যথে
ঠাচারিলী ইয়তবে রোগীরজীবন সংশয় জানিবেন ইহাতে
যদি তর্জ্জনী অঙ্গুলিতে নাড়ীরগতি কিছুই বোধ না হইয়া
কেবল মধ্যমা ও অনামিকাতে নাড়ীর গতি বোধ হয় পরে
একবার তর্জ্জনীতে বোধ হয় তবে অর্জ প্ররের পর রোগীর মৃত্যু জানিবেন আর যদি ঐ শ্রকার ইইয়া ভর্জ্জনীর
অর্জ পর্যন্ত নাড়ী বোধ হয় পরে তর্জ্জনীতে সম্পূর্ব বোধ
কিঞ্ছিং বিল্লেতে না হয় তবে দে রোগীর মৃত্যু এক প্রহ্রের পর হয়।

नां फ़ीत खान स्न धकात।

বারতে বক্রগতি পিতে অত্যন্ত চঞ্চলা কফে হিরা এং মন্দগতি জানিবেন।

শামান্যকণ নাড়ীর স্থানী চল কথন। গুরুপাক এব্য ভোজন করিলে নাড়ী স্থান হয় এবং লহ্বামরী চাদি এব্য ভোজন করিলে নাড়ী আঁত চঞ্চা হয়। আর মিইটর্ল এব্য ভোজন করিলে নাড়ী শীতল হয়।

इंতि मात्र को भूमगार नाष्ट्री शतीका ममार्थः।

ज्यद्रां ९ भि ज कथन।

জ্বর দকল রোগ হইতে প্রধান হয়েন। কারণ দৃক্ষ প্রজাপতি ক্ষত্রকে অপামান করিরাছিলেন ভাষাতে ক্ষত্র ক্রোধি
করিয়া নিশ্বাদ ত্যাগ করিলে নেই নিশ্বাদে জ্বরের জন্ম হয়ভাত এব অন্যথ রোগে হইতে জ্বর বলবান এবং প্রাণিদের
শারীর ওমনের ভাপাজনক হয়েন। সেইজ্বরকে প্রকারভেদে
ভাট প্রকার জানিবেন। এক জ্বরের অট প্রকার দৃটান্ত।

যেমন এক জন মনুষ্য গান করিলে গায়ক বাদ্যক-রিলে বাদ্যকর নৃত্য করিলে নর্ভক কছে। ইত্যাদি কর্মণ বিশেষে যেমন এক ব্যক্তির নানা নাম হয় এইকপ বাতিক পৈত্ৰিক পিপ্তশ্ৰেষ্মিক বাতস্থোদ্ধিক বাতপৈত্ৰিক কফ বা-তিক সংঘাতিক আগন্তুজ ইত্যাদি অন্ত প্ৰকার হইয়া অই নাম ধারণ করেন।

শরীরে জ্ব:রাৎপত্তি করণ।

মিথ্যাহার অর্ধাৎ ফীরের নহিত মৎনা ভোজন ইত্যাদি
নিসিদ্ধ আহার যে সকল জার আছে তাহা ভোজন এবং
ভোজন পরিমাণ ত্যাগ করণ ভোজন পরিমাণ যথা অল্লে
তে উদরের অর্দ্দিক পুরণ করিবে। এ ৭ অল্ল পরিপাক
কারণ উদরের চতুর্য ভাগের এক ভাগ জলপান করিবে।
আর এক ভাগ বালু গননাগমনের নিমিতে রাথিবেক এই
উক্ত প্রকার আহার না করিয়া আকণ্ঠ প্রয়ন্ত আহার করিলে ক্ঠরের অগ্নি মান্দ্র হল ইংলে ঐ ভুক্ত অ্লাদি
পাক হল নাতজনা কোরে রস সঞ্জয় হল তাহাতে ঐ জঠ
রাগ্নি আমাশর হইতে বাংছ নির্গত ইয়া সমূদর শ্রীরকে
তাপ্যুক্ত করেন আর আমাশর মধ্যে যে কক পিত বার
আতে তাহারাও নিরুদ্ধ ভাব ইইয়া জ্বের কারণ হয়েন।

বাহ্য হয়। প্রকাশ কথন।

জারের উত্তর শ্রম করিতে পারে না, শরীরের বর্ণ অন্যথা হল। হাই উঠে, শরীর নর্দন প্রায় হয়, জিহুলার নশূন্য হর চক্ষ জার বর্ণ ন্যার হয়, ক্ষণের বায়ু সেবন ইচ্ছা করে এবং তৎক্রণে রৌজে যাইতে ইচ্ছা হয়, শরীর ভার হয়, রোম হর্ষ হয়, অলে অক্রচি জলে, জ্রান্তি হয় শীত বোধ হয়, প্রথম জারে এই প্রকার জানিবেন। অর্থাৎ জুরের স্বাভাবিক ধ-র্দোতে এই সকল প্রকার হয়। ইহাতে যে হাই উঠে কহি-য়াছি তাহা বাতিক জুরে অভিশয় জানিবেন। এবং পিত জুরে চক্ষ পোড়ে আর কফ জুরে অলে অক্লচি হয়।

বাতিক জুর লকণ।

• কম্প, এবং কথন নাড়ীর বেগ অতিশয় উষ্ণ এবং কণ্ঠা শুদ্ধ হয় নিজা ২য় না, শত্নীর ক্লকভাব হয়, মন্তক ও শরীর বেদনা করে আর মুখের ভিতর শুক্ত হয়, মল কটিন, উদরা-ধানি, হাই উঠে, বাতিক জ্বরে এই সকল লক্ষণ হয়।। অথ পিত্ত জ্বর লক্ষণ।

নাড়ীতে বেগের তীক্ষ্তা, তেদ হয়, বসন ও নিজা অণ্প হয়, কণ্ঠ, ওঠ, মুখ, নাসিকা, দক্ষপ্রায় হয়। প্রলাপ, মুখ তিক্তরস, মুক্তা, শরীর দাহ, এবং বমন হয়, এমত বোধ পিপাসা, মলমূজ চক্ষ্ পীতবন, গাজ ঘূনায়মান। পিত-জ্বরে এই সকল প্রকার হয়।

व्यथ करू ज्यूत लक्ष्म ।

জনযুক্ত বস্ত্র গাজে কেছ যেন বেন্টন করিয়াছে এমত বে: ধ্রুর, আর নাড়ীর বেগ অপপা অলন, মুখ দর্ম, গুকুরুর মল ভারিত হয়, এবং ভোজন নাকরিয় ভোজনের কৃষ্ঠিবোধ হয়, শালীরের ভার শীভ, গাত্র বমন, রোমাঞ্চ, নিজা অধিক মুখ এবং নাসিকা হইতে জল নির্গত হয় অ-ক্রি, কাশি চক্ষ্ শুকুরন। ক্ষ জ্বরে এই দকল প্রকার হয় জানিবেন।

অথ বাতপৈত্তিক জ্বর নক্ষণ।

তৃকা মৃষ্ঠা ভ্রম দাই হয়, নিজা হয় না, এবং মন্তক বেদনা করে, গলা এ বংহস্ত পাদা দির প্রন্তিমকল যন ভাঙ্গিয়া
বার এমত বোধ আর হাই উঠে, এই সকল লক্ষণ দারা
বাত পৈত্তিক ভ্রা বেধি করিবেন।

অথ বাতশ্লেদ্মিক জ্বর লক্ষণ।

নাড়ীতে অপে বেগ বেঃ ধ হয়, পর্বে সকল ভালিয়া গেল এনত বেঃধ নিডা অধিক মন্তক বেদনা করে, মুখ এবং নাসিকা হইওত অল পড়ে কর্গেও ঘর্ম অধিচ হয় শরী-রের তাপা অধিক হয় না। এই সকল লম্মণ দ্বারা বাত-শ্লেক্ষা জ্বর নিকপণ করিবেন।

্ অথ পিত প্লখা জুর কেন। মুখ তিজ বুস ভদ্রা নোহ,কাশি অক্লচি, দুকা কানে কানে. শরীর দাহ, এবং শীত, আর কোনং ব্যক্তির নাড়ী স্তম্ভিতা হয় অথবা কৃষ্ণ পিতের প্রিবর্ত্তন অর্থাৎ কোনসময়ে শ্লেষা অধিক বোধ হয়। এবং কোন সময়ে পিত অধিক বোধ হয় এই সকল পিতঃশ্লুদ্ধা জ্বরের লক্ষণ জানিবেন।

সামিপাতিক অ্রের লক্ষ্

ক নেংদাছ এবং শীত, অন্তির ভিতরে জালা-এবং বেদনা মস্তক বেদনা, চহুর কোণ হইতে রক্ত নিগঁত হয়। এবং চকু হুস্ককায় হয়, কর্ণবৈদনা, এবং কর্নের ভিতরে নানা প্রকার गंक रुश, एक कारछेत्र मंग्रेश बिख्य। कृष्टवर्व रुश, धवर बिखार्ड উখার খারের ন্যায় কণ্টক হয়, অথচ জিহ্বা এন্থকায় হইয়া টাক্রায় উঠে আর মুখ হইতে জল রক্ত এবং পিত নির্গত হয় শিরে! লুগুন অতিশয় ভূষা, দিলা রহিত বক্ষঃতল রেদনা ও ঘর্ম অতিশয় হয়। বিল্প নিব রণ ছঃদাধ্য আর প্রস্রাব পীড়া বোধ হইলে প্রস্রাব হয় না এবং মল ঐ প্রকার। অনাহারে ক্লশ হয় না আর কোন২ ব্যক্তির গ্রীবা লঘা এবং কাহারো বা ছোট হয়। তলপেটে রাঙ্গা কিয়া কালো চক্রা ক্রতি দাগ হয়। বাক্য র(হডের ন্যার হয়। উদরের ভিতরে নাড়ী সকল পুটুলি মত হল, এবং কাহারো পেট উচ্চ হর আর দোয় নিবারক নানা প্রকার ঔষধ দারা দোল নিবারন इस ना। এবং एक निवन किएव नाम इस। बाब काइरिवा मस मूर्वा मान के के किन हरा, धवः माल - घर्ष न विति न स्थानक ·শব্দ হয়-দিব**দে বাসকে**র ন্যায় ক্ষণে২ নিজা রাজিতে নিজা হয় না এবং কোন ব্যক্তির দিবা রাজিতে নিজা হয় না এবং কেহবা হাম্য করে কেহবা রোদন করে কেহবা গান করে কেহবা নৃত্য করে আর কেহবা উন্নত্তের ন্যায় এবং ভূতে পাইবার মত নানা প্রকার বিক্ত্যাচরণ করে এই সমস্ত ্লক্ষণ এক ব্যক্তিতে হয় না কিন্তু সকলি সামিপাতিকের ল- अर्थ हिंगत इक्षकान १।२।२२।४४।५२२ मितम श्रिष्ठ । अदर अरे ज्ञात भीमा २२ मितम श्रीष्ठ स्नानित्य ।

অরোদশ প্রকার শারিপাতিক কথন।

বাতেলিন পিতেলিন কফোলন বাতপৈতিকোল্ন বাতলেঘিকোল্ন পিতলেঘিকে ল্ন, বায় প্রধান, বাত্-পৈতিকোল্ন শ্রেমা প্রধান বাতলেঘিকোলন পিত প্র-ধান। পিতলেমকোলন বায়পিত সমান উলন পিতল্পেমা সমান উলন বায় পিত সমান উলন, এই ত্রয়োদশ উলন কাল্যকপ হইলা প্রাণের সংহার কর্তা হয়েন। এই সালি-প্যাতিক জুর হইলে কর্মালে শোর্থ হইলা কেহবা রক্ষা বায় কেহ বা রক্ষা পায় না।

অভিযাত জুর লক্ষণ।

লগুর কিয়া কোন অস্ত্ররারা আঘাতিত হইলে যে জুর হয় তাহার নাম অভিঘাত জ্র।

অভিচার জ্ব লক্ষণ।

ছই ব্যক্তি কোন কারণে কোন ব্যক্তির উদ্দেশে মনদ স্বন্ধ্যারনাদি করিলে উদ্দেশ ব্যক্তির যে জুর হয় অথবা অভি শাণা এবং হুতাদি কর্তৃক প্রাপণ হয় বৈশুণ ইত্যাদি যে জুর হয় ভাহার নাম অভিচার জুর।

जीव जब कथन।

একবি শতি দিবস পর্যায় যদি জুর ত্যাগ না হয় এবং যে জুর প্রীহাদি দ্বারা জীণ ভাব হইয়ে শরীরে থাঁকে তা হাকে জীণ জুর বোধ করিবেন।

বিষম জুরোৎপত্তি কারণ।

অস্পরোগে রছৎ রোগের চিকিৎনা করণ এবং নারি-পাতিক জ্রের ২২ দিনের পর স্থিতি কারণ। আর জ্র হালে বীষ্টা খলন জীনজঃ স্থাদোব ইত্যাদি জ্ব বিবমতা প্রাপ্ত হয়েন। শন্তর জ্ব লক্ষণ।

ন্পু দির্ঘ অন্তরে যে জুর হয় এবং দশ দিব্দ অভার

य जुत्र इस कार्थना दानमा नितम करात स्व जुत्र इस अवर व्य-নিয়ন দিবলান্তর যে জর হয় তাহাকে লয়ত জর জানিবেন দ্বোকালীন জর লক্ষণ।

্যে জর হইয়া একবার সগনা হয় ঋথচ দিবা রাত্রি ঋষ্ট প্রহরে সমান ভৌগ করে এবং দিবদে যে সময়ে জর হয় আর রাজিতে যে সময়ে জর হয় তাহাকে ছৌকালীন জর कानिद्वग।

্ ঐকাহিক জর লক্ষণ।

य खत्र প्रथमं पिवरम इत्र वि छीत्र पिवरम इत्र ना शून-ব্বার তৃতীয় দিবসে হয়, সেই জ্বকে একাহিক জানিবেন। চাতুর্থিক জর ক্ষণ।

- যে জ্বর প্রথম দিবদে হয় দিতীয় ও তৃতীয় দিবদে হয় না পুনবার চতুর্থ দিবসে হয় দেই চাতুর্থিক জারে এবং পূ-কোজ ঐকাহিক জর চতুর্থ আর চাতুর্থিক জর মর্জাগত জর ইহাতে উৎপত্তি হয় জানিবেন।

বিপার্যার চার্ত্তিক জর লকণ।

य जत श्रथम निवरम ना इहेशा विजीश निवरम इशा श्रन কার চতুর্থ দিবসে হয় না,তাহাকে বিপর্যায় চাতুর্থিক,জা-নিবেন এবং এই জরকেও মর্ক্সাগত জ্ঞাত হইবেন।

न्भार्ति अतु लक्षा।

শরীরের পিত্ত হুট এবং মন্তকে কফ হুষ্ট এই হুই ধ্য ब्दा इत भ बदा मंत्रीत उछ इत। इस भाम मौठन इत, পুনবার শরীরে কফ ছয় মস্তকে পিত ছয় এই ছই ফে জরে হর সে জরে শরীর শীতল হর। হন্ত পদ তপ্ত হয়, সং-শূর্গি জরের প্রকরণ এই ৰূপে বোধ করিবেন। এবং সংস্থি জরের পূর্ত্বে দাহ হয় পরে জর প্রকাশ হয় আর ইহাতে শুক্রধিকা জানিবেন অত্এব ইহার চিকিৎদা সাবধানে ক-উব্। আর যে জরে বায় কফ সমান থাকিয়া পিত্ত ছবল थारक रम इन्द्र वाह्र कक ममान था किहा थिए प्रवान श्रारक

সে জর প্রায় রাজিতে হয় এবং যে জরে বাছ পিত সমান থাকিয়া কফ তুর্বল থাকে সে জর প্রায় দিবসৈতে হয়, আর বর্ষাকালে পিত প্রধান জর কিয়া কফ প্রধান জর যদি হয় তবে সে তুঃসাধ্য আর শরৎকালে কফ প্রধান জর কিয়া বাছ প্রধান জর যদি হয় তবে সে তুঃসাধ্য। বসন্তকালে পিত প্রধান কিয়া বাছ প্রধান জর যদি হয় তবে তাহাকে তুঃ- সাধ্য জানিবেন।

আমজর লকণ।

তদ্রা মুখভার এবং মুখ বিরস অভিশন্ন অলস শরীর ভার ক্রধাশন্য প্রস্রাব অধিক এবং চক্ত মুদ্রিত করিয়া ন্ত-ক্রের ন্যায় শয্যাগত হইয়া থাকে আমজরে এই সকল লক্ষণ জানিবেন।কিন্তু অফাছের মধ্যে আমজর যদি বিকার প্রাপ্ত হয় ভরে রোগীকে শক্ত প্ররোগ করিবেন এবং আমজরে লক্ষণ সহিত বিকার লক্ষণ অভেদ কিন্তু ভদ্রা অলসাদি আ-মজরের স্বাভাবিক বাহ্য লক্ষণ অভএব উত্তম কপ নাড়ী প-রীক্ষা করিলে আমজরে বিকার জ্ঞাত হইবেন কেবল বাহ্য লক্ষণ দৃষ্টি করিয়া বিকার জ্ঞানিতে পারিবেন।

জ্বরশ্ব দশ উপদ্রব।

কাস মৃত্য অক্লাচ ছদি তৃষ্ণা অতিসার মলবদ্ধ হিকা-শ্বাস গাত্রতঙ্গাকিন্ত জুর হইলে দশউপত্রের সকলে হয় এমন্ নহে উপত্রের সকল জুর জন্য জানিবেন আর জ্বরে বিকার প্রাপ্ত হইলেও যদি উপত্রের না থাকে তবে তাহাকে সাধ্য বোধ করিবেন।

नामान्द्र नक्रा।

বাতশ্রেষা রক্তের দহিত যোগ হইয়া নাদিকা কিঞিৎ স্ফীত হয় পারে জুর প্রকাশ হয় অতএব নাদিকা হইতে রজ নোক্ষণ করিলে জরের হুইতা স্থাকে না।

জর ত্যাগ লক্ষণ।

-छश्राखव नाम मञ्जीदात छात्र छ्र इश्रम आशात कतिरम

পরিপাক হইরা পূর্বাবৎ মলত্যাগ মৃথ আ জর জন্য মৃথ বৈ-জাত্য দূর হইরা পূর্বের ন্যায় অর্ব্ব্যের রসবোধ, ঘর্ম হাঁচি, মনের হচ্ছতা অন্নেরুচি মস্তক কণ্ডুয়ন। জুরত্যাগ এই সকল লক্ষণ জানিবেন।

इंडि गांद्रकोगू छ ९ खुर निर्मान शदिष्ह्मः।

• নবজুর ত্যাগ বিষয়।

দিবানিতা স্নান তৈলমদন স্কুল তণ্ডুলের অন্ন ভোজন জ্ঞীসঙ্গ ক্রোধ অত্যন্ত বাছ্সেবন এবংগমন ক্যায় ডব্য ভো-জন এই স্কুল বিষয় নবজ্বে ত্যাগ কর্ত্ত্ব্য।

রুশ ব্যক্তিতে লংঘনকারণ অনুচিত আর বায় জন্য জুর ভয় जना खुत, कांधजना जुत कांगास्व खुत, এই नकन জ্বরে লংঘন বিধি নাই কেবল কফ প্রধান জ্বর ও সাল্ল-পাতিক জুর ইহাতে লংঘন বিধি আছে অন্য রোগে লংখন मास्त्रां कानिर्वन।कांत्र । िकिश्ना श्राप्त वर्थ यांशां क রোগীর বল রুদ্ধি হয় কিন্তে লংঘনে তাহা হইয়া কেবল বল-হানি মাত্র হয় অতএব লংঘনের স্পাষ্ট দোষ লিখিতেছি, পিত্ত সঞ্চর কুধামান্দ্য,অক্লচি তৃষ্ণা রজি চক্দিবি কর্ণদোব মনের অন্থিরতা এবং বাই উর্ছগত শরীরে কফ জন্য নানা शीषा (पर कार्याणा क्या नाहि, वन नाहि, नःघान এই न-কল প্রধান দোষ হয়। এবং শূল রোগী শ্বাস কাস রোগী वालक, इन्न शर्छिनी खौ वङ (द्रांशी मृज्यामाय छेनद द्रारंश স্তিকাদি রোগে শরীর শীর্ণ ব্যক্তিদিগের বায় প্রধান রোগে এই সকলেতে উপবাদ করিবে না অত্যন্ত কফজরে এবং অতিশয় তৃফাতে রোগীকে উষ্ণ জল পান করাইবেক কিন্তু পৈত্তিক এবং বাভিক-প্রধান জরে রোগীকে শীতল জল পান করাইবে, শীতলজল পান্ধারা অপক্ষত্র পাক इहेब्रा चार्त्र द्वाल इब्र ठाहा इहेटन नाष्ट्री खाल, धव पन इक्ति হয়। অভ এব রোগী মাতে শীতল গল পান অকর্ত্ব্য ইহা

বোধ করিবেন না। পুনশ্চ রোগীর অন্ন বারণ করিলে যাদুশ দোষ পূর্বো লিখিয়াছি জল বারণে তাহা হইতে অাধক দোষ লিখিতেছি। উপাবাদেতে মন্ত্রের দীর্ঘকাল
পার্যন্ত প্রাণ ধারণ হয় কিন্তু তৃঞ্চতে কণ্ঠ রোগ হইয়া অপ্প
কালেতে প্রাণত্যাগ সম্ভব হয়। আর জর এব১ তৃষ্ণাদত্বে
রোগীকে ষ্ডুল্প পানীর দিবেন।

ষড়ক পানীয়।

মুথা রক্ত কন গল্পবেণারমূল ক্ষেত্রপাপড়া বালা শুণ্ঠী এয়াপপ্রতি ২৭ রতি জল ৩২ পলাশেষ ১৬ পল। ষড়ঙ্গ জলে তৃথা নিবারণ হয় জানিবেন এবপ নবজনে বিধি আছে। লপ্যন এবং বমনের পার লাজ সিদ্ধা পথ্য দিবেন ইহাতে মন্দাগ্রি হইলে মগুর্পথ্য দিবেন।

লাজমণ্ড প্রকার।

রক্তবর্শালীধান্য কাটখোলায় ভাজিয়া সেই খইতে একখান ওঁট দিয়া পুটলীতে দিদ্ধ করিবে পরে মপ্ত ক-রিবে নেই মপ্ত উষ্ণ থাকিতে কিঞ্জিৎ মধু দিয়া রোগীকে দিবে।কিন্তু যদি রোগীর লিক্ষ্যলে ও পাশ্বে কিয়া মস্তকে বেদনা থাকে তবে পুরাতন স্থল্ন তগুল চূর্নের মগুলাজ মপ্তের সহিত চূর্ন মিজিত করিয়া দিবেন।ইছা জিদোধেতে ও ব্যবস্থা জানিবেন।

नांकमछ छन्।

অগিরজিকরে আর শরীর দাহ, তৃষ্ণা জয়তি সারঃ। শ্লেম্মা দোষ, আমরোগে, এই সকল নিবারণ করে।

माभाग जुत्र कि किश्मा।

নাগরাদি পাচনং। শুগী দেবদার ধন্যাকণি কারিবাাকুড় এবাং প্রতি ৩২ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু।

শে আদি পাচনং। কণ্টিকারি গুলঞ্ শুগী কুড় চি-রাজ্য কটকী এষাংপ্রতি হুল ৪ পল শেব ১ পল প্রক্ষেপ্ নধু ৪০ রতি।

বাতদ্র চিকিৎসা।

রহৎপঞ্চমূলী পাচনং। বিলুছাল দোনাছাল গাস্তারি ছাল পারুলিছাল। এষাংপ্রতি ৩২ রতি জ্বল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু ৪০ রতি। ঔষধ মৃত্যুঞ্জয় দধির মাতে দেবন করাইবেক।

দর্পণের মন্ত।

বাতারি বটিকা। শোধিত পারা শোধিত গ্রন্ধক জিরা শুণী পিপুল মরীচ এষাৎ প্রতি সমভাগ আদীর রদে ম-দিনকরিয়া ছই রভি প্রমাণ বটি করিবে অনুপান পাণেররস পি.ভজুর চিকিৎসা।

জব পটোল। পটোল পত্ত ১ তোলা জবের চাউল ১ তোলা। জল ৪ পল শেষ ১ পল। প্রক্ষেপ মধু ৪০ রতি। ক্ষেত্র পর্পটি।

ক্ষেত্রপাপড়া ২ তোলা জল ৪ পল শেষ ১ পল। প্র-ক্ষেপ মধু ৪রতি ক্ষেত্রপাপড়া রক্তচন্দন বালা শুগী এযাং প্রতি ৪০ রতি জব ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু।

धना भक्त दा।

খন্যর চাউল ২ তোলা।জল ৪ পল শেব ১ পল। রা-জিতে সিদ্ধ করিয়া প্রাতঃকালে ৪০ রতি চিনি দিয়া পান করিবেন। ইহাতে পিতুলর অন্তর্জাহ নষ্ট হয়।

घनठननामि शाहन ।।

মুথা রক্তচন্দন ক্ষেত্রপাপড়া কটকী বেণামূল পটোল পত্র বালা। এষা প্রতি ২৩ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্রেপ চিনি৪•রতি শীতল করিয়া পান করিবেন। ভূমি কুল্মাণ্ডমূল দাড়িমছাল লোধ কান্ত। এষাং চূর্ণ প্রত্যেকে৪• রতি। পিপুল চূর্ণ ৪০ রতির সহিত মধ্য দিয়া অবলেহ ক-রিবে। ইহতেে হিক্কা এবং প্লীহা নিবারণ কিন্তু বালকদিগের প্রশেষ উপকার হয়।

सन्गानि हुन्भ। धन्गा विकना विकरू अनारेह छ इक ए-

জপত নাগেশ্ব বনাওল। এষা প্রতি সমভাগ চুর্ব মর্ব শহিত অবলেহ করিয়া ৪ মাষা প্রমাণ ভক্ষণ করিবে।

কফলুর চিকিৎনা।

ত্তিকলাদি পাচনং। তিকলা পটোলপত বাকসমূল গু-লঞ্চ চিতামূল কটকী বচ। এষাংপ্রতি ১৮ রুতি জল ৪০পল শেষ > পল প্রক্ষেপ মধু ৮ মাসা।

शिशुन्तरामि शाहमः।

পিপুল, পিপুলমূল, চঞি,চিতামুল,ভণ্ঠী মরীচ, বন-यमानी कर्की दकामून तामनशांत्रिमृनं त्यवनदिया अवार প্রতি ১৯॥ বৃতি কল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ ম্যু ৮ निशामि शांहनः। মানা!

নিম্বছাল গুণ্ঠী গুল্ঞ দেবদারু গন্ধশঠী চিরাতা বুড ব্রহতী পিপুল। এষাংপ্রতি ১৮ রতি জল পাকশেষ পূর্বাবৎ চতুর্ভজচুর্। প্রক্রেপ মধু ২০ রতি।

কটকল কুড় কাকড়াশৃঙ্গি পিপুল। সমভাগ চূর্। ঐ চূণ ৪ মাসা মধুর শহিত সেবন করিবে।

মধু পিপুলী।

পিপুল ২ তোলা জল ৪ পল শেষ ১পল প্রফেপ মধু ২০ রতি অথবা পিপুল চূর্ব ৪ মাসা একত ভক্ষণ করিতে। াপত্তশ্লেদ্মাজুর চিকিৎসা।

বাসকপত্র এবৎ পুষ্প। একত্র ছেচিয়া নির্জ্জন রস ২ লোলা ৪∙ রতি মধুর সহিত থাইলে রক্তপিত কঁ∣তলার সহিত পিত্তশ্লেষাজ্ব নাশ হয়।

ककेक द्रांपि शाहनः।

কণ্টকারি গুলঞ্ বামনহাটী শুণ্ডী ইন্দ্রযব হুরালভা চি-রাতা রক্তন্দন মুখা পটোলপত কটকী। এষাংপ্রতি ১৪• রতি জন ৪ পান শেষ ১ পাল প্রফেপ মধু ৪০ রতি ইহাতে मार क्या अक्षरि इकि काम क्ष्मन शर्य मृत। धरे मकन यव शरहोनकः। नहीं इहा।

পটোলপত ১ তোলা ধন্যার চাউল ১ ভোলা পূর্বের ন্যায় পাকশেষঃ এবং প্রক্ষেপ।

অনুতাষ্টক পাচনং।

• গুলঞ্জ নিম্নছাল ইন্দ্রঘব পটোল পতা কটকী শুণ্ঠী রজ-চন্দন মুথা এষা প্রপ্রতি ২০ রতি। জল শেষারস্ত পূর্বাৎ প্র-ক্ষেপ মধু ৪ রতি এবংপিপুলের গুড়া ৪০ রতি ইহাতে অ-লস অফটি ছর্দ্দি পিপাসা ইত্যাদি নইট করে।

4999 1

ঘননিষাদি পাঁচনং। মুথা নিষ্ঠাল কণ্টিকারি ওঠী ক্ষেত্রপাপড়া গুলঞ্চলকী রহতীই ক্রয়ব হরালভাধন্য। প-টোল প্র প্রকাঠ চিরাতা গোছরি। এবাংপ্রতি ১- রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু এবং পিপুলের গুড়া।

বৃহৎগুড় ছ্যাদি পাচনৎ।

গুলঞ্চ রক্ত চন্দন পামক ছি শুণী ইন্দ্রয়ৰ ছুরালভা হর-তকী সালুকফল বালা আকনাদি মূল ধন্যা মুথা কটকি এবাংপ্রতি ১০ রতি পাক শেষ পূর্ববং।

मृज मञ्जीवनी विषिक

শৃক্ষিবিষ ২ মাসা পি পুল রুয়া ২ মাষা হিঙ্গুল ৩ মাসা বেগুন পত্রেসে মর্দন ম টারাকৃতি বটি অন্মপান আদাররস ইহাতে পিতুশ্বোজুর নৃষ্ট করে।

জরাশনির স।

পারা গল্পক শ্লিবিষ অভ্রত্ম শুট পিপুল মরীচ তামু ভিন্ম লৌহত্ম এবাং পতি সমতাগঃ। আদাররসে মর্দন ম-টরাক্তি বটি অনুপান পাণের রস।

বাত পৈত্তিক জ্বর চিকিৎসা।

নবাঙ্গ পাচনং। শুণ্ঠী গুলঞ্চ চিরাতা মুখা শালপানী চাকুল্যা কণ্টিকারি গোহুরি ব্যাকুড়। এবাংপ্রতি ২৮ রতি জল্ ৪ পল শেষ এক পল প্রক্ষেপ মধু ৪০ রতি হলান অ-রুচি ছদ্দি পিপানা দাহ নই করে।

अड्डामि भारत।

গুলঞ্চ নিষ্ছাল ধন্য। পল্কার্চ চক্তচন্দন এবাংপ্রতি ৩২ রতি জল প্রথম এবং পাকশেষ ও প্রকেপ পূর্কবং।
যন্তপি ভূকা অধিক থাকে তবে পল্কান্তের পরিবর্তে জ্যেত্বস্থা দিবেন। ইহাতে পিপাদা অক্লচি ছর্দিন দাই দৌকল্য নত করে।

मर्शनर ।

মধুকাদি চূর্ণ। জৈ ঠমধু শামালতা জাক্ষা মহূলফল রক্তচন্দ্ৰ নীলোৎপল গান্তারি ফল পালকাঠ লোদছাল বিফল। পালবীজ নাগেশর ভূরুবাফল বেশানূল এষাংপ্রতি সাসা চূর্ণ করিয়া শক্তশালি তণ্ডুলোদকে ঐ চূর্ণ ৪ মাসা একত্র করিয়া কিঞ্জিজু ফ থাকিতে পান করিবে পারে মধু থৈ চিনি ভক্ষণ করিবে। ইহাতে বাতপিতজ্বর দাহ ভূফা মূর্ছা বম্ন ভ্রম রক্তপিত নট হর।

নিম্ব পাচন।

নিম্বছাল ক্ষেত্রপাপড়া বেশামূর পটোলপত মুখা রজ চন্দী চিয়াতা বালা পদাকাত এবাংপ্রতি ১৮ রতি জল ৪ প্রান শেষ ১ পল পরীকা মণু চিনি।

রহৎ পঞ্মূল পাচ্ন। বিল্ছাল মোণাছাল গাড়ারি ছাল পারুলছাল গণিয়ারিছাল পাকশেষ পূর্ববং।

স্থাপ পঞ্চলি। শালপানী চাবুল্যা কণিউকারি গো কুরি ব্যাকুড়ি। পাকশেষ পূর্ববং। এই এই একত্র করিলে দশনূল পাচন হয় ইহাতে কায খাস তন্ত্রা পার্শ শূল নই হয়। যদি গলদেশে কিয়া হৃদয়ে বেদনা থাকে তবে পিপু লের ওঁড়া ৪ রতি প্রক্ষেপ দিবেন।

অন্তাদশাক পাচন। চিরাতা দেবদার বিল্ছাল সোণা ছাল গান্তারিছাল পারুলছাল গণিরারিছাল শালপানী, চাকুল্যা কণ্টিকারি গোড়রি ব্যাকুল শুঠী মুগ্ধা কটকী,ইক্র যবধন্যা গর্জপিপুলী এ্যাংপ্রভি ৯ রতি জল ৪ পল শেষ '> পল প্রক্ষেপ মধু (র তি ইহাতে তন্ত্রা প্রলাপ হন্তপাদাকর্যণ অক্লচি দাহ মোহ শালাদি উপশ্রব সকল নট হর
তিদোৰ বর্ষে ভর্জন কুল্পে ললাই মুল্ল চূর্নগান্তে মর্দ্ধন এবং
উদ্যারে ঐ চুর্ন ভক্ষণ জিল্পা জড়তা হইতে লিছিও ড়া কিয়া
কন্য ওলের ভাটা জিল্পাতে ঘর্ষণ, ষ্মতাপি, জিল্পা ছিল্পাতে
লেপন, তিদোৰ কম্পে এবং অতিশার বাক্য কথনে, শীতল
অব্যাদি দিবে না,ক্র শোথে জলোকা দারা রক্ত মোক্ষণ।
কিয়া কুল্পকলাই কটকন শুগু কিফাজরা সম্ভাগ জলে
পেবণ করিয়া উফ প্রলেপ পুনঃ২ দিবেন। অথবা দশমুলের
প্রলেপ দিবেন, গল্ফীতে টাবালেবুর মূল শুগু দিবেন।
মুগ্রেদ বটিকা।

শুণী পিপুল মরিচ প্রত্যেকে চূর্ব ২৭ রতি কজ্ঞলী ১ তোলা সোহাগা ১ তোলা দলে মর্দন বুল আঁটি প্রমাণ বটি অনুপান কর্মচি নারিকেল জ্বল পরে আদপোরা আন্দাল ঐ নারিকেল জ্বল পান করাইবেন। নিঃশোষ ভেদ্ হুইলে উফোদকে স্থান উঞ্জন্মব্যঞ্জন ভোজন করিলে পুন কার ভেদ হুইবেক না বিন্তু জর হুত্বে স্থানাদি কিয়া নিরেধ

জর কেশরী রসঃ। রসগন্ধক শুণ্ঠী পিশুল মরিচ ছার তকী বয়ড়া শাসলকী। এষাংপ্রতি ২ তোলা শোধিত জয় পাল এবং বীজ ন তোলা জন্য সকল চূব রস গন্ধকে ক-জ্জনী নিজ্জল **আ**দা রসে মর্জন শুণ্ণ থটি বালক নি নিতু সর্বপায়তি বটিকা করিবেন।

রোগীর অপাক দোষ নারিকেল জল। পিতাধিক্যে কেবল মধু সাম্নিপাতে মধুতে মর্দ্দন করিয়া মরিচ চূর্দ্দের সহিত দেবন করিবেন, যদি দাহ থাকে তবে পিপুল এবং শজরার গুঁড়া দিবেন রোগীর কোঠ বজা থাকিলে এই উন্ যথ সৈবন করাইবেন। জন্নপাল বীজ শোধন ধীজ ভাঞ্জিয়া বাজের সধ্যে বিষ্পত্ত জ্যাগ করিয়া ছক্ষেদিজ-করিবে পরে। ধৌত করিয়া শুক্ষ করিবে।

नीक छङ्गीतमः।

পারা গল্পক হিন্দুল এষা প্রতি ১ তোলা ওছ জয়পাল বীজ ৩ তোলা দল্পীমূলের ক্লাথে মর্দন ২গুঞ্জা বটি অনুপান মধু। ইহাতে দধি শক্রা শীতল জল সহা হয়, কিন্তু ক্ফ পিত্ত বায় বিবেচনা করিয়া দিবেন। আঁর ঔষধ সকলকে পূর্ণমাত্রা দিবেন না বয়ো বিবেচনা করিয়া দিবেন।

কজনী করিবার প্রকরণ। তালটোঁচ হিন্দুল পাতি-লেবর রসে চারিপ্রহর থলে মর্দন পরে ঐ নর্দিত হিন্দুল শুদ্ধ করিয়া পাগের উপর হাঁড়ির মধ্যে রাখিবেন, পরে ঐ হাঁড়িতে এক খান সরা ঢাকা দিয়া ঐ সরার চারিদিগে কর্দ্ধনাক্ত পাঢ় লাজাইবেন পরে বজুলেপ দিয়া এক দিবস রৌত্রেশুক করিবেন যন্তাপি চুল প্রমাণ কাটে তবে পুনবার তাহাতে লেপ দিয়া শুক হইলে সবার উপরে কি প্রিং শীতল জল দিরা হাঁড়ি চুলীর উপর রাখিরা অলেপ ই জাল দিবেন দিতেই পুনঃই সরার জল পারিবর্জন করিয়া শীতল জল দিবেন এই প্রকার ২১ বার হইলে চুলী হইতে অবতারণ করিবেন পরে শীতল জল হইতে সরার তলা হ-ইতে চুল দিয়া তম্ম ঝাড়িয়া প্রশুরের উপর লইবেন পরে সেই ভাম হস্তে মর্দ্দন করিলে পারা নির্গত হইবেক।

কাঁচাপারা শোধন। পারা ১০ তোলা তাছাতে রম্থার কোরার উপরে জক সমুদ্য ত্যাগ করিয়া ভিতরে যেশ কিঞ্জিৎথাকে তাছার রস পারার মত পারাতে দিয়া কো-মল হত্তে থলে মর্দন করিবেক লোড়া থলে স্পর্দানা হয় কেবল পারার উপর মর্দন করিবে পারে কিঞ্জিৎকালে পারা নির্মান হইলে রম্বন ধৌত করিয়া পারা অতি সাব-ধানে লইবেন পারে আমলানার গলাক যুক্ত্র তাছার উন্পর্ব সমাভাগ শোধিত পারাদিয়া কন্তী প্রস্তারের থঁলে ৪ প্রহর মর্দ্দন করিলে কজ্জলী হইবে ইহাতে যদি অধিককাল মর্দ্দন করেন নে উত্তম। এই গুই প্রকার পারাতে কজ্জলী হয় জানিবেন।

ছিলুলেরঃ। পিপুল রোগ্না মুক্মচূর্ব ছিলুল বিষ এষাৎ প্রতি ১ তোলা জলে মর্দন ২ রতি প্রমাণ বটি। অনুপান নবজ্বরে মধু, বাতিকজ্বরে দধির মাত, গছিণী এবং রজাতি সারে জায়কল চূর্ব ১ মাসা জয়ীররসে মর্দন বালকদিগের চতুর্থাংশের একাংশ মাতা ঔষধ বিধি সর্বাত

লক্ষীবিলাসরস। অজ ১ তোলা কজ্ঞানী ৮ তোলা ক-পুর জ্বিজী জায়কল বীরতাড়ক বীল নিজিবীজ ভূমিকুদ্বাপ্ত মূল শতমূলি বাঢ়ালা গৌখরি চাকুল্যানূল গোক্ষরী
বীল হিলজবীল পুস্তুরবীল এষাংপ্রতি ২ তোলা। সাচিপালেররনে মর্জন ৩ রতি প্রমাণ বটি অনুপান মধু কিয়া
পাণের স্বর।

দাকা পঞ্চকং।

আকৈ জৈ ঠমবু প্রত্যেকে ৪ মাধা শিলে পেষ্ণ ক-রিয়া ছক্ষ মধু ইক্রুসে গুলিয়া পান করিবেন, ইহাতে দাহ জর নিবারণ হয়।

বাহেশ্বেমা জর চিকিৎসা।

এরও পতে এইটা বালুকা পুটুলি খোলায় তপ্ত করিয়া রোগীর মস্তকে মূহুমূহু তাপদিবে যে পর্যন্ত রোগীর ম-স্তক অগ্রিৎ উষ্ণ না হয় পরে পাচনাদি দিবে।

পঞ্চ কোল পাচনৎ।

পিপুল পিপুলমূল চঞি চিতা শুণ্ঠী এযাৎপ্রতি ৩২ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রকেপ মধু ৪০ রতি।

ি পিপুল ২.তোলা জল ৪ পাল শেষ ১ পাল মধু প্রক্রেপ ৪· রতি। স্বশ্লেরাক্ষ্মাঃ।

পারা গন্ধক শ্কিবিষ এষা প্রতিত মাষা ধুস্তুর বীজ

৬ মাধা ভাঁট পিপুল মরীট এষাংপ্রতি ৪ মাধা বিধানি চূর্ব করিয়া নীড়ালেযুর রনে মর্দন করিবে, বটি ২ রভি প্রমাণ অনুপান মধু পিপুলি চূর্ব আদার রুন। সারিপাতিক জ্বর চিকিৎসা।

নামিপাতিক জার, অর্থাৎ জিদোয জার, উপবাদ বালু কাষেদ, নহা, নিষ্ঠাবন অবলেহ অঞ্জন, এই বট কর্মা অবশ্য কারতে হয় কারণ এই জারে কফ প্রধান অতএব অগ্রে যে প্রকারে কফ নই তাহাই কর্ত্তব্য, পশ্চাৎ পিত এবং বা-ভিকের চিকিৎসা ক্রিবেন নহা টাবালেবুর রন আর্দ্র কর্ম বিটলবণ, সৈদ্ধবলবণ, তপ্ত জালে মর্দ্দন করিয়া নহা দিবেন ইহাতে সন্তক্তের জল নিঃসরণ করিয়া মন্তক এবং সকল শারীরের বেদনা দূর হয়।

অবদেহ। কটকল কুড় কাঁকড়াশৃঙ্গী শুণী পিপুল মরিচ তুরালভা রুক্জীরা এই ৮ অব্য সমান ভাগ স্ব্লচ্ব মধ্
অথবা আতি ক রস সহিত অবলেহ, ইহাতে সান্নিপাতিক
ভার এবং হিক্কাবা খাস কাস কণ্ঠরোগ উর্দ্ধণ কফ হরণ করে
এবং রোগীর শ্রীর ভপ্ত থাকে, যভাপি ঘর্ম হয় ওথাচ অবলেহ দিবে।

অন্তন। শিরীষ্বীজ পিপুল মরীচ সৈন্ধাবলবণ রম্ম সমঃশিলা বচ এই সকল জ্বা সমভাগ গোমুতে পেষণ পরে অঞ্জন করিয়া চক্ষে দিবেন।

নবান্ধ পাচন। বিলু সোণা গান্তারী পাঙ্গল গণিয়ারি ইহাদিগের ছাল চিরাতা গুলঞ্ শুঠী মুখা এবং ১ প্রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রাক্ষণ পিতাধিক্যে ৪০ রতি মধু কফাধিক্যে ৪০রতি পিপুলচুর্ব-জীলোকের বিকারে দের

ভৈরবেশ্বর। সরীচ ২ তোলা বিষ ১ আলা কড়ি অর্জ তোলা জলে মর্জন ১ গুঞা প্রমাণ বটি শিরঃমূলে নহা দিবে ক্রিদোষ পিপুলচুর্ব অনুপান বিষ শোধন বিধি লৌহপাতে গোমূতের সহিত্ত এক রাতি রাখিলে বিষ শোধন হয়।

जिल्लाय निर्दात दम।

পার। ১ তোলা গন্ধক ৩ তোলা উভয়ে কজুলী করিয়া দেই কজলী চিতার মূলের বুর্নে ৮ দিবলে ৮ বার রৌদ্রে শুক্ক করিবে পরে শোধিত বিষ স্থাচুর্ন তাহাতে দিয়া পুন কার চিতামূলের রসে মর্দন করিবে তৎপরে মৎশ্রের পিত্ত দিয়া কিঞ্ছিৎকাল মর্দন করিয়া ১ গুঞ্চা প্রমান বটি করিবে, অনুপান আদার রস উষধ সেবনের পর কিঞ্ছিৎ আদার রস পান করাইবেন ইছাতে সাগ্নিপাতিক জর নই করে।

বেতাল রপ। পারা গন্ধক সমান ভাগে কজ্জলী শুদ্ধ হরিতাল শুদ্ধ বিষ মরীচ পারার সমান হরিতাল বিষ ম-রীচ চুর্ব হইলে নিজ্জল আদার রসে কজ্জনী প্রায় মর্দ্দন করিবে গ্রই রতি প্রমান বটি অন্তপান আদার রস নাগ্নি-পাতিক বিকারে মহৌষধি জানিবেন।

मर्भन ।

অমৃতেশ্বর বটিকা। শৃঙ্গী বিষ পার। গলাক জায়কল তালভম পিপুল রোয়া শুজকাল সর্গবিশ্ব এবা প্রতি সম-তাগ আদার রমে মর্দন ২ রতি প্রমাণ বটি অনুপান আ-দার রস পিপুল রোয়া এই উব্ধ সামিপাতিক জন, তন্দ্রা শ্বাস ও কাশ এই সকলকে নট করে।

ষ্ট্দ ভৈরব। পারা শৃদী বিষ, গল্পক এবাংপ্রতি ই মাধা হরিতাল তামু ভন্ম এবাংপ্রতি ৪ মাধা সকল শো-ধন চুব। আদার রদে মর্দন পরে পঞ্চপিতের ভাবনা দি-বেন মটরাক্তি বটি।

পঞ্চিপত হথা। মংশু, ময় র, মহিষ,- ছাগ, বরাহ সামিপাত তৈরব পারা কালসর্প বিষ শৃক্ষি বিষ, হরিতাল গোদত গল্পক, মনংশিলা সোহাগা জায়কল লবক এবাং-প্রতি গমতাগ ইহার মধ্যে শোধ্যত্তব্য শোধন করিয়া সাঁচি পাণের রসে মর্দন ২ রতি প্রমাণ বটি অন্ধপান আদা তুল-নীপ্রের রস, ইহাতে মদ, মোহ, ভ্রম, তাপ, হাশ্ম গীত প্রলাপনৃত্য মৈকন্সিকা পীড়া বিকটাক্ষ পরিভ্রম এই ল ক্ষণ হইলে চিন্ত বিভ্রম নামক বালিপাতিক কহা যায়। ইহাকে নট করে।

ষোড়াচড়ি রসং। পারা, গল্পক, মনংশিলা হরিতাল মুরিচ অভতম শ্রিবিষং এষাংপ্রতি ২ মাষা শশুবিষ গা। মাষা শিলাজতু গা। মাষা, এই সকল শোধন করিষে রোদ হিত্র মংখ্য পিত্তে ভাবনা তুলসীপত্র ইনে মন্থরাকৃতি বটি করিবে অনুপান সজিনাছালের রস ইহাতে কণ্ঠকুক্ত সালি-পাত নাশ করে।

কণ্ঠকুজ লক্ষণ।

কণ্ঠগ্রহ জর মূচ্ছা, দাহ, কম্প, বিলাপ মোহ, তাপ শীতও বাতর্ভ প্রলাপ।

দারুত্রকারন। শশুবিষ ধৃস্তুরবীক পিপুল রোয়াহি-ক্লল এবাংপুতি সমভাগঃ বিষ হিঙ্গুল শোধন ক্ষীর রসে মর্দ্দিই রতি প্রমাণ বটি অনুপান তুলসীপত্র রস। এই উ-ষ্ধ বর্ণিক সন্নিপাত নাশক হয়। অফলক্ষণ।

জুর কর্ণান্ত শোখ, স্থাস, কম্প, প্রকাপ, স্বেভ, কণ্ঠগ্রহ তাপ মোহ ভ্রমঃ।

আনন্দ তৈরৰ রস। হিন্দু স শৃঙ্গিবিষ, তিকটু সোহাগা গন্ধকঃ পৃস্তার বীজ পারা অভ্তন্ম এষাংপ্রতি সমভাগ নি-বিজা পত্র রসে ভারনা ১ গুঞ্জা পুমাণ বটি। অনুপান আ-দার রস সামিপাতাতিসারে অবস্ক জায়কল।

জিল্পগনাম দালিপাত বিনাশক হয় মহৌষ্যি। জিল্পগ লক্ষণ। জিহুৱা কঠিন কাশঃ স্থাস অতি বেদনা মুখ ববির ডা তাপ বলহানি। বেতাল রস।

পারা গল্পক শ্লিবিষ শশুবিষ সোহাগা এষাংপ্রতি সমভাগ যত হরিতাল তত শোধন করিবে অয়ীর রূপে মর্দন
২ রতি প্রমাণ বটিকা অনুপান পাণের রস কুলাহ সামিপাত নাশক হয়।
মহৌব্যি কুলাহ লক্ষ্ণ।

মোহ, তাপা, ব্যথা, কণ্ঠভ্রম, ভ্রম, বেদনা, অতিসার-জর, আর স্থাস প্রসাপ। কালানল রস।

শৃদ্ধিবিয় কালস্পবিষ এত যোংপ্রতি ২ নাবা শস্থাবিষ্
হরিছাল, পূর্বে দ্বিগুণ শোধনান্তর করবীর রসে মর্দন চানকাকৃতি বটি মাবক সান্ত্রিপাত নাশকের হয়। মহৌষ্ধি
মারক লক্ষ্ণ। দাহ, মোহ; শির, ও অক্ষ কম্পা, হিক্কা কাশ্য সন্তাপ শ্রম।

মহাজরাস্কুশ বটিকা।

পারা ২ মাষা গদ্ধক সোহাগা জীরা এষা প্রতিষ্ঠ মাষা শৃঙ্গীবেষ ২ মাষা মরীচ কটফল দন্তিবীজ্ঞ এষাংপ্রতি ১০ মাষা এই সকল শোধন পারে স্ব্লচ্ব জনীর এবং আ-জ ক রসে ভাবনা মরীচাক্তি বটিকা অন্থপান আদার রস্বিত্ত ইবধ ভূগ্নের সান্নি শাতিক এবং ভূগ্নের জরকে দুরী, করণ করে।

ক্রমেণোভরোলক্ষণং।

শোষণ লোচনম্বর ভঙ্গ স্বরণ শূন্য অধিক জর, মোহ,
প্রলাপ কম্প, জম, নিজা মুহুমুহু পৌনঃ পুন্য শীত, বার
বার মোহ, প্রলাপ ঐকাহিক দ্বাহিক ত্যাহিক চাতুর্থিক
ইত্যাদির বিষ মাক্ষ জর সকল। সিলুশোষক রস।
রমসিলু গলকঃ কালসর্প বিষ শৃঙ্গি বিষ, হরিভাল এবাং
প্রতি সমভাগ শোধন করিবেক পশ্চাৎ চুর্গ করিয়া মৃৎপাতে নিষিদ্ধাপত্রেসে ভাবনা ২ রতি প্রমাণ বটি অনুপান
লবঙ্গাদি চতুইীয় তগুলোদক ছাগওক্ষে পারাণ।

রক্তারি সামিপাতিক নাশিকেরং বটিকা। অশুলক্ষণ রক্তনিষ্ঠীবন মূর্চ্ছা জর মোহ তৃকা ভ্রম, বমন িক্কা অতি-মার জ্ঞান নাশ ব্যথা বোষণ রক্তের মণ্ডলাক্ষতি দেহেতে চিক্ল। প্রতাপলক্ষের রস। কন্তুরী কজ্ঞানী ঘণ্-মাক্ষি, তামু, হরিতাল, দারুমোচ দ্বিমক্ষার্ম শ্লিবিষ্ এষাংপ্রতি স্মভাগ, শাধন করিয়া চুণ্ ক্রিবেক ভাবনা রোহিত মংশুপিত করবীর মূল রস বামনহাটি মূলের রস ২ রতি প্রমাণ বটিকা। প্রদাপ দার্মিপাত নির্ভনোছ মহৌষধি। প্রদাপশু লক্ষণ। প্রলাপ তাপ অভিশয় কম্প প্রজ্ঞানাশ পাদ শোফ কুপীড়া বৈকম্প প্রতিপাদন।

শভর নৃদিংহ রস। হিন্দুল শৃন্ধিবিষ তিকটু জীরা গো-হাগা গল্পক অভভন্ম পারা এবা প্রতি যত অকিঙ্গ তত শোধন করিরা চুণ করিবে জয়ীররসে মর্দন মটরাকৃতি বটি অনুপান জিরা মধু শীতাক্ষ সালিপাত নিই শের বটিকা শীতাঙ্গ লক্ষণ স্বনের ন্যায় শরীরের বন্ত্রণচ দীই অতি-লার কম্প প্রনাপ অকতাপহিক্ষা শ্বাস ভ্রম স্কাক্ষ শীতল

নুদিংহ কালানল বটিকা। কালস্প বিষ্ণ গন্ধক শন্থ বিষ শ্লিবিষ তিকুট সোহাগা পারা তামু ভন্ম লৌহভন্ম - এষা প্রত্রি সমভাগ শোধনানন্তর চুল করিবে পরে পঞ পিত্ত ভাবনা। ধৃস্ত,ূরমূল রসে অন্ধরতি প্রমাণ বটি বান্ধিবে অনুপান খেত আকনদমূল রস দ্ধিপুথ্য তৈল হরিডা ম-দ্দন স্নানক্রিয়া করাইবেন। অভিন্যাস সামিপাতিক নাশ-কোহরমোষধি অভিন্যাস লক্ষণ্ जिদোষ মুখলোষ, বি-কল্প নিজা নট বাক্য চেতনা শূন্য অতিযাস মনদাগু বল হানি। মৃত সালিপাতে। চূড়ামাণ গুড়কা পুরোজ্যা গারাগুড়ি হরিতাল শশ্বিষ, গোমস্ত হিঙ্গুল ধৃত্তর বীজ ক্রিকট্রেখম্যাবিষ ভূঁতে শিলাজটু কন্তরী পীরা গন্ধক স্বণ মান্ধি বিষতাড়ক বীজ এবাংপুতি সমভাগ শোধন করিবে পরে ভাবনা। নিষিক্ষাপত রদ আকন্দ মূল রস চিভামূল, রস নাগদানাপত্রস করবীগুল রস লাজ্লের মূল রস গল ষ্দপত্র রুদ এবাংপ্রত্যেকে > বার রৌত্রে পাক অতি সুক্র চুণ ভক্ষণ ২ বুতি অনুপান ধাতু বিশেষ।

অথ উলুন চিকিৎসা।

দশনূল পিপুল নিকর, এবাংপ্রতি ১। শাষা পাকার্থ, জল ১ সের শেষ ১ ছটাক পরীক্ষা চতুর্দ্মুখ।

'ধাতু চতুর্নুথ, সুবর্তকা, তানুতকা লৌহতকা অভতকা

এরা প্রতি সমাতাগ চূর্বির আদাররদে গুঞা প্রমাণ বটি
•ক্রিবেন।

অথবা উল্নে চতুমু থ প্রয়োগ করিবেক।

রসমানিক,গঙ্গাজালি ফটকারি ৮ ভোলা, তবকী হরিতাল ২৪ তোলা উভর চূর্ন করিয়া আলোকতর রসে ভাবনা
দিরা শুক্ত হইলে চূর্ন করিবে নেই চূর্ন উর্দ্ধ কলেবর ছই অজুলি প্রমাণ করিবা জীহলাতে অভ্রের উপর রাখিবে, তত্ত্ব
পরি অভ্র আছাদন পরে লৌহ পাজোপরি লৌহপাত্র
আছাদন,তাহাতে দৃঢ় করিয়া মৃত্তিকালেপ পরে অই প্রহর
জাল দিলে নাজ হইবে,ভক্ষণ ২ রতি প্রমান, এই উষধ নাদ্বিপাত জর, কফাধিক উল্ন অফ্রাদশ প্রকার বুর্ভ, বাতরক্ত, এই সকলেতে যোগ করিবেন, বিশেষত উল্ন।

অথ হিলুলেশ্র, হিলুল শশুবিষ, সমভাগ শাধন বে-লের আটাতে মর্দন করিয়া শুর্দ্ধ হইলে সমান ভাগ মরীচ দিয়া পুনঃমর্দন করিয়া মরীচাক্তি বটি বাল্ধিবেন অনুপান উল্নেটিনি মধু লবঙ্গ, সামিপাতে ত্রোদশাঙ্গ পাচন, ক্ফ পিতের খালরের মধু, খাস কাদে পঞ্কোল মধু।

চতুর্দ্দশাক পাচন, দশমূল শুণ্ঠী চিরাতা, এষাংপ্রতি ১'। মাষা, পাক শেষ পূক্ষবৎ, প্রক্ষেপ রসাদিন্তুর্রস। কোণ্ঠ বন্ধে তেউড়ি চুন।

রুদদিন্ত্রদ, দীনে ৮ তোলা অদ্য শোধন, সর্বপতিল তক্র গোমূত্র, কাঞ্জি, কুলোথ কলায়ের রাথ, প্রত্যেক তিনবার, গল্পক ১৬ তোলা, অদ্য শোধন, মৃত ১৬ তোলা লাতে গালাইরা ওফো নিঃকেপ করিবে পারা ২৪ ভোলা অদ্য শোধন, পক্ষপর্গটি ২৪ তোলা হরিডাচুন ২৪ ভোলা ইউক্চূন ২৪ তোলা, ঝুল ২ ভোলা এই সকলে প্রত্যেক ১ প্রহর মর্দন করিয়া কর্জ্জলী করিবেক অদ্য ভাবনা, সপ্ত কুঞ্চিকার্দ, ভুল্বাজর্ম, মৃতকুমারীরদ, অপরাজিভা রদ, তুলদীপত্র রুদ, সাচিপাণের রুদ, সাঞ্চে রুদ, এষাৎপ্রভ্যেক ১ বার দিয়া শুষ্ক করিবে পরে বোতোলের গায় মৃতিকার
দৃঢ় লেপন শুক্ক তাহাতে কজ্জলী পুরিত করিবে, দীদার
পাত খণ্ড২ করিয়া প্রথম রাখিবে, পরে দিন্দুরবর্গ ২ অস্কুলি পুরু হাঁডির অর্জ ভাগ বালুকা পূর্ণ করিয়া তাহাতে
বোতোল বসাইবে বোতোল মুখে ঢাকাদিয়া বোতোলের
২ অস্কুলী প্রমান স্থাতত রাখিয়া বালিপূর্ণ করিবে পরে
বোতোলের ঢাকাখুলে ২৪ প্রুর জালাদিলে দীদা খাপর
হইবে ক্রমে২ লোহের গঙ্গে আঁটিবে, নির্মুম হইলে ত্যাগ
করিবেন, ২৪ প্রহর জাল দিলে বালি ক্রফবর্ণ হইবেক।

অথ দিনান্তরে উলুনাধিকার, অইদশাঙ্গ পাচন, রসসিন্তুর সহিত প্রয়োগ করিয়াছেন দর্পণ মতে হেমামূত
রস সিন্তুর ক্লাথ শোধিত দোণা পাত করিবেক শোধিত
লীসাপাত করিবেক,শোধিত গল্ধক শোধিত পারা কজ্জলী
করিবেক, এয়াং ভাগ, সোণা ১ তোলা দীসা ১৫ ভোলা,
গল্ধক ১৬ তোলা পারা ১ তোলা,মৃত্তিকা লেপযুক্ত বোতলে
পূরিয়া বাল্কাযন্ত্রে পাক করিবে,বোতল মুথে অগ্নিউটিলে
গোণা শিষার পাত খাপরে ২৭প্রহর পাক বিদ্ধি হয়, অন্
ন্থপান ভূনিয়াদি, অউদেশাঙ্গ নানা প্রকার উলুন, এবং
সালিপাতিক জ্বর নট করে।

মুথা, অটাদশাল, মুথা লবপর্গটা বেণামূলে দেবদারু
শুণ্ঠ ী ত্রিকলা হরালভা নিম্ব, গুণুংরোহিণী তেউড়িমূল চিরাতা আকনাদিমূল বাট্যালাসমূল কটকী কৈটামপু পিপুল
এবাংপ্রতি ৯ রতি পাকশেব পুর্ববৎ প্রক্ষেপ মধু ৪ মাধা
পুর্ণ চন্দ্র,রমারণ ইহাতে উল্ন সাগ্নিপাত, পিতজ্বর মন্যাশুদ্র উরুস্তন্ত, উরুঃ পৃষ্ঠ, শির্থাহ সকল রোগ দূর হয়, পূর্ণ
চন্দ্র রমায়ন,প্ররোজনজ্ব্য স্কুর্ণ ১ ভোলা, রৌপ্য ২ ভোলা
কাংশ ও তোলা কান্তিলোহ ৪ ভোলা, তামু ৫ ভোলা, হল
য়াক্ষি ৬ ভোলা, অত্র ৭ ভোলা,হরিতাল ৮ ভোলা, হিস্কুল
ত ভোলা, শহুবিষ ১ ভোগা থাপার ১১ ভোলা রাড ১২

ভোলা, দীনা ১৩ ভোলা, গঞ্জক ১৪ ভোলা, পারা ১৫ ভোলা এই দকল চূর্ন করিবেক মপ্তকুঞ্চিকা কজ্জলী, বোভোল পূ-রিষ্ণা বালুকা যন্ত্রে ৩২ প্রহর জাল দিবেন অন্ধ্রপান বিশেষ নানা প্রকার গুণ করিবে কফ পিন্তে আদার রস মধ্য খান কানে পঞ্চকোল মধ্য।

वय जीर्व खद किंकि श्रा।

ক্ষকীণ জীপ জ্বার ওশ্ব পথ্য অতি উপকারী হয়,কক-স্বতে এবং নবজ্বরে ওশ্ব পথ্য অতি করিলে প্রাণ সংশয় হয়

নিদিকিকা পাঁচন, কঁনিচকারী গুল্ঞ, শুণী এষাং প্রতি ৫০ রতি জল ৪০ পল শেষ ১পল অনুপান মধু ৪রতি রাজিভোগ জ্বরে পিপুল চূর্ন ৪০ রতি।

শালপানী চাকুল্যা কণ্টিকারী গোক্তরী ব্যাকুড় এষাং প্রতি ৩২ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ পিপুল চূর্ন ৪০ রতি, পিপুল ৪০ রতি পুরাতন গুড় ৪০ রতি উভয়ে অবলেহ দিবেন।

অথ ধাত্রী মোদক। আমলকী হরীতকী শুণ্ঠী পিপুল এই সকলের ফুল্ল চূর্ণ যত গুলঞ্জের পাল তত একত জলে পাক করিবেন চুল্লীইইডে অবভারণ করিয়া ভাহাতে সকল অব্যের সমান চিনি দিয়া মর্দনকরিবেন পারে মধু দিয়া মোদক করিবেন, ২০ রভি প্রিমাণ প্রভাহ সেবন করিবেন ইহাতে স্নীহা কাম অগ্নিমান্যাদি নই করে।

অথ ভাগ্যাদি পাচন। বামনহাটী মুখা বুড় শুগী হরীভকী পিপুল দশমুল এষা প্রাতি ১০ রতি জল ৪ পল শেষ
১ পল প্রেকেপ মধু ৪০ রতি পিপুল চূর্ণ ৪০ রতি, ইহাতে
অগ্রিজি হয় এবং জীর্ণজ্বর বিষমজ্বর সালিপাতিকজ্বর
নিবারণ হয়।

রাত্তিজ্বরের রহমবান্ধ,বিলু সোণা গান্তারি পারুল গণি-রারি এই সকলের ছাল চিরাতা গুলঞ্চ শুণ্ঠী মুথা এযাং প্রতি ১৭ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রেক্ষেপ পিপুল চূন ৪॰ রতি ক্ষীরারীমূল লাজুনস্যামূল রবিবারে অথবা অ-ইমী তিথিতে রক্ত হতে বদ্ধ করিয়া মন্তকে ধারণ করিলে ব রাজিজ্বর নই হয়।

मर्भार ।

মুস্তকাদি পাচন। মুখা আমলকী গুলঞ্চ শুণ্ঠী কণ্টি-কারি এবাংপ্রতি ৪ মাধা।

ধান্যাদি পাচন,ধন্যা মুখা তিফলা গুলঞ্চ পটোলপত নিম্বছাল এবাংপ্রতি ২ মাবা পাকশেব পুরুবৎ প্রক্রেপ মধু শকর', রহৎ পঞ্চমুলি ৪ মাবা পাক শেব পুরুবৎ প্র-ক্ষেপ পিপুল চূন ৪ গতে।

ভূনিষাদি চূল, চিরাভা কটকী মুথা পটোলপত খেতচলন পিপুল মূল জিরা শুণ্ডী গুলপ্ত বালা ধন্যা অভ্ৰত্য
লৌহত্য এলাইচ আকানাদি মূল মরিচ গুড়ত্বক তেজপত্ত
জেঠমধু এযাংপ্রতি সমভাগ চূর্ণ করিবে ত্যাল মাধা অমুপান মধু এবং সেফালিকাপত্ত রস,ইহাতে জ্বীল ভার অবশ্ব নাশ করে এবং একাহিক দ্যাহিক ত্যাহিক চাতুর্থিক বাতিক পৈত্তিক শ্লেজিক সামিপাভিকাদি ভার সকলকে নট
করে।
জীনকাদি লৌহ চূল।

বিরা তিফলা মুথা আন নাগেশ্বর এলাইচ গুড়ত্বক ল-বঙ্গ লৌহত্বন এবা প্রতি সমান চুর্ব করিবে ভক্ষণ ২ মাধা অনুপান মরু শ্বেতকুলিপারস লৌহপাতে লৌহদণ্ডে মর্দ্দন করিয়া ভক্ষণ করিবে, ইহাতে জীর্ব জ্বর ক্ষরকাশ শিরংশূল পাশ্ব শ্ল অক্লচি অনুপিত্ত নটকরে।

অটাক ধন, গুণ্গুল নিষপত বচ কুড় হরীতকী শ্বেত সরিয়া যব তপুল এযাংপ্রতি সমান চুণ গ্রাহত ফর্দন ১ তোলা পরিমাণ বটি কুলকার্ছের অগ্নিপূর্ণ স্রাতে ভাক্সিয়া উলক শ্রীরে কৃষ্ণবর্ণ ক্ষলাছোদন করিয়া ধুম লইবে ই-হাতে জীর্জার নই করে।

অথ মহেশ্বর মন্ত্র। নমো ভগবতে ক্রডায় নমো নমো

হথিল প্রকশিয় কপাল নালিনে জটিলায় নির্গন্ধিনে নথট বিকট ধারিশে জর ঐকাহিক, দ্যাহক আহিক চাতুর্থিক, দি-নজার সন্ধ্যাজ্ঞার রাজিজার সক্ষেমাং জ্বরাণাং উচ্ছাদয় উচ্ছা-দর আরোগ্য কর ভগনতে স্কোদেবেতি স্বাহা, ইমং মন্ত্রং পিঞ্বিংশতি বারান্ শৃণুয়াৎ।

অথ ধাত্ৰ মোদক

প্রাতুকী হরীতকী শুণ্ঠী গুলঞ্চের পাল পিপুল এযাৎ প্রতি ৪ ভোলা চুর্ব চিনি ৪ ভোলা দিয়া মোদক পাক ক-রিবেক ১ ভোলা পঢ়িমাণ বটি অনুপান জল ৪ মাধা।

অক্সায়ক তৈল লাক্ষ্যা ছকামূল হড়িছা দাক্সহরিছা মঞ্জি রাখালসমারমূল ব্যাকুড়বীক সৈন্ধব কুড় রামা জটা মাৎদী শতমূলী এবাংপ্রতি ১২ মাথা চুর্ব করিয়া বল্ক দিবে নার্ধপতৈল ৪ নের মূছার্থ মঞ্জি । ২ তোলা কাঞ্জি ৪ সের এই সকল জীর্জার নট করে।

অথ প্লীহাত্তিত জীণজর চিকিৎসা।

চিত্রকাদি জারক। চিতামূল সৈত্রাব তিকটু হিল জীরা মুদকার যবকার বনজমানী চিরাতা বিটলবণ ক্ষণজীরা এবাংপ্রতি সমচুণ করিবে জয়ীর রসে মর্দন ভক্ষণ ২ মাধা। অনুপান জয়ীর রস।

ভাত্রকুণী জারক। মৃততাত্র মৃত্রতাত্র লোহত্র শুদ্ধ জরপাল বীজ সমুত্র ফেণা চিতামূল জীরা হিন্দ যককার সা-চিক্ষার দৈল্পব বিড্ল নীলবড়ি চিরাতা বিটলবণ ফটিকিরী নুদক্রর এবাং চুণ সমভাগ জ্বীর রসে মর্দন ভক্ষণ ২ মাধা অনুপান জ্বার রক্ষ, ইহাতে গ্রীংজ্বর শোথপাণ্ডুউদর-রোগ গুল্ম শুল নট্ট করে।।

নকজ্বরহর লৌ। চিতারমূল ত্রিফলা ত্রিকটু বিড়ঙ্গ মুথা হরীতকী পিপুলমূল বেণামূল দেবদারু চিরাতা গুলগু কালা কট্কী কণ্টিকারী মূল দাজনাবীজ বীক্সছা জ্যেষ্ঠমধু বুরুচি বীজ এবাংপ্রতি সমভাগে চুর্ব যত লৌহ তত একত্রে মধু ঘৃত দিয়া মর্দ্দন বদরান্তি পরিমান বটি অনুপান কুলি-খারস, ইহাতে বাতিক পৈত্রিক শ্লেম্মিক সামিপাতিক দ্ব-নদজ বিষয় ঘোর ধাতৃত্ত কলপ এই সকল জ্বর দাহ বমন হিক্কা খাল অক্লচি কাল প্রীহা গুলা ক্রমিরোগ রজপিত ম-নদাগ্রিট করে,।

মান গুঁড়িকা। মানদাটা সুকামুল অভাবে অপাক গুণলঞ্চ বাকস মূল দালপানি মূল চিতা মূল দৈশ্বৰ শুণ্ঠী তালকাঁছা এষাৎ প্ৰতি ৮ তোলা এক ত্ৰক্টিৰে পাকাৰ্থ গোলমুত্ৰ ১৬ যের ইহা ছাঁকিয়া গুড়ের ন্যার পাক করিবে পরে মধু ২৪ তেলা বিটলবণ সচল লবণ যুৱক্ষার এষাংপ্রতি চুণ ২ তোলা তাহাতে দিবেন ভক্ষণ ৮ মাঘা প্রক্ষেপ গোমুত্র ইহাতে যক্ষৎ গ্রীহা পাঞ্জ অগ্নিমান্ত গৃহিণী নই করে।।

মস্কুশ গুড়িকা। স্বন্ধুল আলকুদিগাছ ৪ দের পুরাতন কাঞ্জি ১৬ দের ৪ দের ছেকে পাক গুড়ের ন্যার ক্রপরি শুণ্ঠী যবকার ছিল্ল দৈয়ের বিটলবন করকচ লবণ সচলল-বণ স্থায়ন্তর লবণ নমুদ্র কেণা মরীচ যমানী জীরা রক্জীরা নোহাগা চিতামুল চই আপাক্ষকার তালসাঁড়াক্ষার বিরক্ষ পিপুল এলাইচ গুড় স্বক তেজপত্র এ্বাংপ্রতি ১ তোলা চুর্ল দিবে মধু ১৬ তোলা প্রক্ষেপদিয়া উত্তারণ করিবেন ভন্মণ ৪ মাধা স্থান আলকুদি রস, ইহাতে যরুৎ গুলা সকল প্রীহাল্রর কান্লর শোথরজ নম্ট করে।

ক্ষীর অঙ্গারক তৈল। পিপুল পিপুলমুন চঁই চিতামুল শুণ্ঠী তালিসপত্র মিজিণ্ঠা দেবদার এযাংপ্রতিহ তোলা
তিলতৈল অথবা সার্থপ তৈল ৪ সের কাঞ্জি ৪ সের জ্বীর
রস ৪ সের ওক্ষ ৮ সের জন ৪ সের এই সকল আঃ তৈল
পাক হইল নিজল হইলে পাকসিদির হইবেগল্পতার বীরজা
লথী কপুন ইলাতে বাতিক পৈতিক দ্বন্দ্র সাহিপাতিক
সন্তত সতত ভ্রিপ্র গ্রীরাদি জীনজার গ্রীহাপও কামলা
নাশ হর।

ত্ত পিপুলী। বিড়ঙ্গ ত্রিকটু কুড় বিট দৈল্পব করক চ সকল স্বায়ন্তর হিঙ্গ যবক্ষার সাচিক্ষার সমুদ্রকেণা চিতামূল
চিরাতা জীরা কৃষ্ণীরা চঁই বংশলোচন তামুভত্ম অভ্রতম
লোহভত্ম ভিলক্ষার বুমুড়াক্ষার লালমোচক্ষার আপাঙ্গক্ষার তেতুলক্ষার এযাংপ্রতি সমভাগে যত পিপুল তত উভয়ের তুল্য পুরাতন গুড় চূর্ণেমিজ্রিত করিয়া মর্দ্দন করিবে
ভক্ষণ ৪ মাযা অনুপান লেবুরস এই উষধ সেবন মাত্রে দাক্রণ প্রীহা কামলা পাজুরোগ জীবজ্বর নাশহর বিল্প বালক
দিগের বিশেষ কপে।

যমানী জারক।

বিট সৈন্ধব যবকার সাচিক্ষার ফট্কিরী বনল্যানী পি পুল ক্ষজীরা এযাং প্রত্যেক ৮ তোলার যত যমানী তত সকল চুর্ব ৪ সের লেবুরসে গুলিয়া হাঁড়ির মধ্যে সরা ঢাকা দিয়া রাখিবে ভক্ষণ কেবিংশতি দিবস ১ তোলা পরিমান জল, ইছাতে খাস কাম কোটবজ গ্রীহা উদর্বা বায় অনিন্ নান্দা বাতাজীর্ব এ সকল নট করে। অট্টুর্ভিরস।

শোধিত পারা শোধিত গল্পক শোধিত জয়পাল অভ্র জন্ম তামুভন্ম শোধিত গুণ্ডল লোইজন্ম কাংশুভন্ম এয়াং প্রতি > ভোলা চিরাতা জীরা রুঞ্জীরা যমানী বিলয়মানী সোহাগা তিকটু তিফলা তিমদ তিজাতক এবাংপ্রতি ৭ মাবা সকল স্মাচূর্ণ করিবেক মধ্ স্থত চিনি এবাংপ্রতি ৪ তোলা লোইমণ্ডুর ৮ তোলা দকল একতে মর্দ্দন করিবেক বটি > মাবা পরিমাণ অন্ধপান কেয়ুভাের রস। ইহাতে জীর্ণজ্বর অইবিধ প্রীহা অই প্রকার জর শোথ শূল খাদ গুলা পাগু নানা প্রকার কাগলা রুজপিত্ত হলীমাক এই দকল রোগ নই করে অগিও বল রুজি হয়। শ

মহাচিত্রক লবণ। চিতাগুল তেউড়িমূল মানজাঁটা দান্তি-গাছ আলকুশিগাছ বুয়াড়িগাছ ঘাটুমূল সোণাছাল তাল-মোচ এযাংপ্রতি ১৮ তোলা পাকার্থ পুরাতনকাঞ্জি ১৬ সের শেষ ৪ দের হরীতকী > সের পাকার্থ জল ৮ দের শেষ ২ দের লেবুরস > সের দৈহাব ২ সের এই ৮ সের একত্র করিয়া ইহাতে ত্রিকটু ত্রিফলা ত্রিমদ ত্রিজাভক যবক্ষার নাচিকার নাগেশ্বর জীরা হিন্দ রাল্লা সমুদ্রফেলা লোহাগা জাতিফল আভইচ বিট দৈল্লব করকচ হায়ন্তর সচল দন্তিবীল মঞ্জিঠা লোহভন্ম তাল্লভন্ম বুড় রসাঞ্জন যমানী শিলাজভু জাক্ষা শন্ত্রত্ম তিড়ন্ত এষা প্রতি ১ ভোলা চুর্ব করিয়া দিবে ভক্ষণ ৪ মাষা প্রপান লেবুররস ইহাতে নানা প্রকার গ্রীহাজর উদরান্যশোথ পাত্রু কামলা শ্বাস কাম অমুশূল নাট হয় এবং অগ্নু রুদ্ধি হয়।

তৃতে শশ্বিষ নিশাদল গোদন্ত এষাংপ্রতি ২ ভোলা শৈল্পব বিটলবেশ ফট্কিরী এষাংপ্রতি ৮ ভোলা যবক্ষার ৩২ ভোলা এই সকল জব্য চুব করিয়া গঙ্গামৃত্তিকার কাপাতে পুরে বক্যন্তে পাক করিবে কাঁচের পাতে ঘর্ম্ম চুয়াইয়া প-ভিবে ভক্ষণ ২ মাঘা জন্মপান আদার রস এই ঔষধ দেবনে যক্ত প্রীহা সাধ্যাশাধ্য জর পঞ্চবিধ কান এবং শ্বান, অফ প্রকার শ্ল শোথ উদরী পাশু এই নকল বিনষ্ট হন্ন।

জরকলীয়াবটি। শোপিত পারা শোধিত গল্পক শো-থিত শৃক্তিবিব এষাংপ্রতি ৮ মাধা হরিতাল পুটে তামাত্র ১৬ মাধা তালক ১৬ মাধা সকল একত চূর্ণ করিয়া কাগুচি লেবুরসে ২ দিবস ভাবনা মটরাক্ষতি বটি অনুপান লেবুরস

মেঘনাদ রস। রৌপ্যভত্ম কাংশুভত্ম স্থানিত ব্যাংপ্রতি যত শুদ্ধ গল্পক ভত কাঁটানটেরদে সর্দান করিয়া যোড়াবি-নুকে পুরিয়া মৃত্তিকা লেপনানন্তর গল্পুটে ৪ প্রহর পাক করিবে ভক্ষণ ১ রতি অনুশান সাচিপানের রস এই উষধ সাধ্যাসাধ্য জর খীলা গুলা নাশ করে।

শীতভাঞ্জত তৈল। তিল তৈল ৪ দের নালুকা মাঞ্জি:-ছয়োঃ প্রতি ৪ তোলা মৃচ্ছবিং ভীমরান্তরন কেবৃত্যের রস কুলিখাপত রস হিঞারস এবাংপ্রতি ১পের কল্কার্থংলাকা .হরিতা বিরুজা ত্রিকটু ত্রিকলা মুথা চিরাতা মেথি চিতারূল বিড়জ এলাইচ গুড়বক তেজপত্র তেউড়িলুল এষা প্রতি ২ তোলা এই সকল চুর্ব করিয়া তৈলে পাক করিবেক।

ত্বী ধন্যা ক্ষজীরা গুরালভা পিপুলমূল বেণামূল বালা চিরাতা সজিলা আঠা রজচন্দন আকনাদিমূল ত্রিকলা বচ জ্যেষ্ঠ মধু সৈন্ধব এলাইচ গুড়বক ভেজ প্র নাগেশ্বর বছতী বীজ ত্রিমল ভালিশপত্র যমানী ক্ষত্রমানী অভ্রতম বাসকছাল ভীমরাজমূল কড়িভন্ম এযাংপ্রতি যত লোই মগুর ভ্যা তত্র সকল চুর্ল ভক্ষণ ১ মাযা অনুপান মৃত মধু লোই খলে লোইদণ্ড দ্বারা মর্দ্দন করিয়া ঔষধ সেবন করিবে ইহাতে জীর্জ্বর প্লীহা পাপ্ত কাম শ্বাম স্বর্ভেদ অক্তি তৃক্ষা দাহ শোগ্ ভাল হয়।

অভিযাত এবং অভিচার জ্বরে স্লিক্ষদ্রব্যাদি ও সন্দার দ্ব্যু দিবেন স্নান করাইবে না ইহাতে বিশেষ অভিচার জর স্বস্ত্যুয়নাদি এবং গ্রহাদি দেবভাদিগের পূজা করাইবেন।

ক্রোধজর নংপ্রসঙ্গাদি। এবং মনোছর বাক্য কহিবেক কঠোর বাক্যাভ্যর করিবেক না এবং কামজ্বরে এ প্রকার মাধুর্য্যাদি ক্রিয়া করিবেক কঠোরক্রিয়া করিবে না। শোক জরে এবং ভয় জরে যাহাতে রোগীর মন হর্ষযুক্ত হয় তাহা করিবেন।

ভৌতি জরে ভৌতিক বিস্তাবদ্যাজি দ্বারা চিকিৎসা করা-ইবেন কিন্তু রোগীকে তাড়ন পীড়নাদি করিবে না ষাহাতে রোগীর মন হুস্থ থাকে তাহা করিবেন।

॰ ঐকাহিক জর চিকিৎনা।

রবিবারে জলস্পর্শনের পূর্বে আপাঙ্গেরমূল তুলিয়া সাত থেই রজবর্ণ ফত্রে বন্ধন করিবে পারে রোগীর পৃঠে পাদা-পিণ পুর্বেক মত্র পাঠ করিয়া বামহস্তে বান্ধিবেন। মন্ত্র। অঙ্গ বঙ্গ কলিজের দৌরাই মগধের চ। বারা-প্রাঞ্জ বর্তং তল্পার্থনি রে জর।

জর তর্পণ মন্ত্র। গঙ্গারা উত্তরে কুলে অপুপ্রস্তাপদোমৃতঃ তথ্য তিলোদকং দত্যাৎ মুঞ্চ ঐকাহিক জর তর্পণ
বিধি। অস্নাত জরের পালাদিবদে ক ক শব্দের পূর্বর প্রঃ
ভুয়ের গাত্রোত্থান করিয়া এক রক্ষ ও পুষ্করিণীর জল অন্য
ব্যক্তিকে স্পর্শের পূর্বে বাম হস্ত দ্বারা নুতন ঘটে উল্তোলন করিয়া দল্লিণ হস্তে অশ্বত্থপত্রোপ্রি কুশ তিল যব
রক্তপুষ্প এবং উত্তোলিত জলদ্বারা পূর্বাশ্য হইয়া মন্ত্র পাঠ।
পূর্বক একবার তর্পণ করিয়া ঝটিতি তথা হইতে গমন কব্রিবে পশ্যাক্ষনি করিবে না।

সমুদ্রভাতরে তীরে দিবিদোনাম বানর। জরমৈকাহিকং হান্ত লিখনং যঃ প্রপার্যতা।

এই মন্ত্র অখ্যপত্রে আলতায় লিথিয়া পালার দিনে রোগীকে দেখাইবেক। চাতুর্থিক জর চিকিৎসা।

গুল্ঞ আমল্কী মুথা এযাংপ্রতি ৫৩ রতি জল ৪ পাল শ্বে ১ পাল প্রক্ষেপ মধু পিপুল চুর্ন ৪° রতি ব্রুজ্ল পা-তার রম নতা করিলে পালাজর ভাল হয়।

শিরিষপুপ্পের রস হরিজা দারুহরিজা স্তএকত্রে এই চারি জব্যের নশ্য করিবে রইস্পতিবার রাত্রিতে চাঁপানটি-মার মূল উত্তোলন করিয়া রজ্ফত্রেরারা কর্ণে বন্ধন করেলে পালাজর ভাল হয়। গুণ্গুল এবং পেরামূল ব্রুথণ্ডে বন্ধন করিয়া রোগীর গাত্রে ভাহার ধুম অবশ্য দিবে।

সন্তজর চিকিৎসা।

ইন্দ্রয়ৰ পটোলপত্র কট্কী এষা প্রতি ৫৭॥ র র জি জল ৪ পল শেষ ১ পল মধু পিপুল চুর্ল ৪০ রতি।

পটোলপত্ৰ অনন্তমূল মুথা আকনাদি মূল কট্কী এবাংপ্ৰতি ২৬॥• রতি দল ৪ পল শেষ ১ পল প্ৰক্ষেপ মধু পিপুল চুৰ্ব ৪• রতি। শুগ্রন নিম্নপত্র বচ কুড় হরীতকী সরিবা যব মৃত এই সকল অব্য একত্র করিয়া রোগীর গাত্রে ধুম দিবে।

কম্পালর। মার্ক্রার বিঠার ধুম রোগীর গাত্রে দিবেন এবং স্থদর্শন চুল ঔষধ প্রয়োগ করিবেন অতএব নানা প্র-কার চিকিৎসা করিয়া যে জর ত্যাগ না হর সেই জরেতে স্থদর্শন চুণ মহৌষধ জানিবেন।

দর্পণং। 'আগন্তুক জর'চিকিৎদা।

বাতপিত কফ ক্রুর হইয়া যদি অকস্মাৎ ধাের জ্বর হর তাহার নাম দ্যহিকাগন্তক জর চিরাভা জীরা চিনি এষাং প্রতি ৪ মাষা জল দিয়া পেষণ করিয়া মধুর সহিত পান ক-রিবে। ভৌতিকদ্যহিক জর।

স্বল্পপঞ্চমূলী শুণ্ঠী চিরাতা গুলঞ্চ মুথা এযাংপ্রতি ২ মাষা পাক শেষ পূর্ববং পিতাধিক্যে মধু ৪ মাষা কফা-যিক্যে পিপুল চুণ। অশু মন্ত্রং।

বাস বশিষ্ঠ গৌতম এই তিন ঋষি তপ করি আদে আচ্মিতে দেখা কালপুরুষা নৌডফা হাতে রক্তসরা কলে নরমাংস ভার তিন ঋষি বোল ন্ত মার২ পানি ঋষি বলে কি উপায় মারিব ওয়ো তিন ঋষি নাম যাহা শুনিবুঁ তাহার অকরে না খবুঁ যেবে অঙ্গরে সিবুঁ তেবে ঈশর দোহি ইট্বুঁ সেই কথা দঙ্গরি ছাড় পুরুষা ছাড় কার আজ্ঞায় ব্যাস বশিষ্ঠ গৌতম ঋষির আজ্ঞায় নাঞি অমুকার অঙ্গে নাঞি ৩।১ কালিকলাই কয়োকান গড়্যা খর্পর মুগুমাল যে জানে কলাই কলিকা বাণে না রহে পানে ছাড় কার আজ্ঞায় ব্যাস বশিষ্ঠ গৌতন ঋষির আজ্ঞায় নাঞি অমুকার কার আজ্ঞায় ব্যাস বশিষ্ঠ গৌতন ঋষির আজ্ঞায় নাঞি অমুকার বাজ্ঞায় ব্যাস বশিষ্ঠ গৌতন ঋষির আজ্ঞায় নাঞি অমুকার অঙ্গে নাঞি ৩।

জীর্বাহিক জর চিকিৎসা।

কফ পিত্যুক্ত এবং কফ কান জর হইতে উদর যে জর গ্লীহা পাত্ত শোথ তাহার নাম জীব্দ্যহিক ! কারব্যাদি পাচন। ক্ষজীরা কুড় গাবমূল ভেউড়ি-মূল শুঠা গুলঞ্চ দশমূল গল্পতি কাকড়াশাঙ্গ ছুরালভা বা-, মনহাসী মূল খেত পুনন্বা এষাংপ্রতি ১ মাধা পাকার্থ গোমূত্র ১ সের শেষ ১ ছটাক প্রক্ষেপ মধু।

ত্র্যহিকাগন্তক জার চিকিৎসা।

ইহাতে দ্যাহিক অভিন্যাস ভয়ানক এই সকল জর এবৎ প্রীহা শোথ পাণ্ডু নট হয়।

কক বাত কাঁস শোথ স্কাঙ্গ বেদনা অরুচি বলহানি ইহার নাম ত্রাহিকাগন্তক।

দশনূল প্রত্যেক ২ মাধা পাক শেষ পুর্ববৎ প্রক্ষেপ। লক্ষিনারন ৪ মাধা আদারন ৪ মাধা।

রহয়বাঙ্গ পাঁচন। হহৎ পঞ্চন শুণ্ঠী চিরাভা গুলঞ্ মুথা এযা প্রতি ২ মাঘা পাক শেব পূর্ববং প্রক্ষেপ জর মুরারী চুণ মধু।

জর মুরারী চুণ। শিকুট ত্রিফলা মুথা চিতামূল বি-ড়ঙ্গ এলাইচ গুড়ৰক তেজপত্র রুজ্চন্দন পদ্মকার্চ নাগে-শ্বর চিরাতা জীরা এবাৎপতি সমভাগ চুণ অনুপান মুথা কালি রস মধু ইহাতে ত্রাহিক জর নাশ হয়।

চাতুর্থিকাগন্তক জর চিকিৎসা।

অন্তলকণং। জরাতিসারে শোথ অরুচি ভ্রম গ্রীহা সন্দাগ্নি : জরমুরারি বটি। .

শোধিত পারা শোধিত গন্ধক চিরাতা জীরা ত্রিকুট ত্রেকলা ত্রিজাতক ত্রিনদ অভত্য লৌহত্য এবাংপ্রতি সমতাগ চুণ দক্ষ যব পর্পটী রসে ১ মাবা পরিমাণ বটি বালিবেক অনুপান শ্বেত কুলেণাড়া রস এই ঔষধ চাজু-থিক জর কাসতন্ত্রা অক্লচিছদি পিপাসা দাই নাশ করে।

দশমুলাদি অভীদশাঙ্গ পাচন। দশমূল গ্রন্থটি কা-কড়াশ্সি কুড় ছরালভা ভাগীমূল কুড়াচবীজ পটোলপত্র , কট্কী এযাংপ্রতি ১ মাষ্ পাক শেষ পুর্ববং প্রকেপ সর মুরারি বটি। ইহাতে দালিপাতিক জর কার ছদয় খাস হিক্সা বনি বিশেষতঃ অতিসারাগন্তক জর ভাল হয়।

মধু পাঠাদি পাচন। গল্পটি কুশমূল কণ্টিকারী কা-কড়াশ্লি ছরালভা গুলঞ্চ শুণ্ঠী আকনাদিমূল চিরাতা ক-ট্কী এষাংপ্রতি ২ মাষা পাক শেষ পূর্ববেৎ প্রক্ষেপ জর-মুরারী বটি ইহাতে আগন্তক জর বাতস্থেমা বিকার খাদ কাল নন্ট করে। বিষম জর চিকিৎসা।

মুখা আমলকী গুলঞ্ শুণ্ঠী কণ্টিকারী এবাংপ্রতি ৩২ বৃতি জল ৪ পল শেষ > পল প্রক্ষেপ মধু পিপুল চুর্ব ৪০ রতি।

ক্ষেত্তপাপড়া ২ তোলা পাক শেষ পূর্ব্ববৎ প্রক্ষেপ মধু ৪০ রতি।

সুযোঁ দয়ের পূর্বে বাক্সপত ছেচিয়া ভাহার রস ২ ভোলা একতে দেবন করাইবেন।

গুলঞ্চের এবং সেফালিকা পাত্রের রস পূর্ব্বোজ প্রকারে ২ তোলা লইরা ২ তোলা মধূর সহিত দিবন।

অর্ণপ ভর্জন কৃষ্কীরক চুর এবং পুরাতন গুড় একত্তে লাড়ু করিয়া অধিক দিবস খাওয়াইবেন এই সকল মুর্ফি-যোগে বিষম জর নফ করে।

এবং উক্ত লাডুতে খেত জীরাও মরিচ চূর্ণ দিলে ঐ কাহিক জ্বর নাশ করে।

ষ্দর্শন চুব। ক্ষাগোর চন্দন হরিতা দেবদারু বচ
যথা হরীত্বী দুরালভা কাকড়াশ্রি কৃণ্টিকারী শুণ্ঠী ভাছল্যা ক্ষেত্পাপড়া নিষ্টাল পিপুল বালাশুণ্ঠী কুড় পিপুল মুঝামূল কুড়চীটাল ল্যেন্ত্রমধু সজিনাবীজ নিজি ইন্দ্র
যব নোরা সানিবচ দারুহরিতা রজ্চন্দন পল্লান্ত শ্বেতবাট্যালা বেণায়ল গুড়ত্বক প্রপর্পতি শালপানী যমানী
আতইচ বেল শুণ্ঠী মরিচ তেজপ্র আমলকী চিতামূল
প্রিলপ্র ধনিয়া বয়ড়া মরামাংশী গ্রাপ্রল চাকুল্যা

হংতী গুলঞ্চ কট্কী এষাংপ্রতি সমতাগে সুত্র চুৰ্যিত চি রাতার স্ক্রচুর্গতত একতে মিশ্রিত করিয়া বাঁশের চোলের ভিতর অথবা কাঁচপাতে অথবা মহিষের শৃঙ্গে রাখিবেন প্রতি দিন ১০ রতি পরিমাণ চুর্গ মুখে দিয়া জল দারা গি-লিয়া খাইবেন। ইহাতে লাগ্নিপাতিক ঐকাহিক দ্যুহিক লগ্নত বিষমান্দীর্গ থাতুন্থ ইত্যাদি অসাধ্য জর নই হয়।

অঙ্গার তৈল। ভিলতৈল ৪ সের মুচ্ছার্থ মঞ্জিষ্ঠা ১৬ তোলা হারিছা লোধ লালুকা মথা হরীতকা আমলকী বয়ড়া কেরারনামনা বালা এবা প্রতি ৪ তোলা এব পকলা
তৈল মুচ্ছার্থ এই সকল জব্য জানিবেন। কল্কার্থ কাঁজি
ছক্ষামূল লাহা হরিজা দারুহরিজা মঞ্জিষ্ঠা রাখালসনার মূল
রহতী সৈন্ধব বুড় রায়া জটামাংশী শতমলী এবা প্রতি
৫ তোলা ৬।। রতি এই তৈল মদিনে জীন বিষম ধাতুত্ত
অভিগত এবং মজ্জাগত ইত্যাদি জর সকল নট করে।

হলপলাকাদি তৈল। তিলতৈল ৪ সের পূর্ব্বোক্ত মুচ্ছা দ্রেয় কাজি ৪ সের কল্কার্থ লাকা হরিডা মার্ক্তি এবাৎ প্রতি ২১ তোলা ২১॥• রতি।

রহলাদি তৈল। তিলতৈল ৪ সের লাকা ১৬ সের ২
মোন ৪৬ সের জলে সিজ করিয়া ক্রাথ ১৬ সের লইবেন
অথবা ৮ সের লাকা ১০ সের জলে সিজ করিয়া শেষ ১৬
সের লইবেন দর্গির মাত ১৬ সের কল্কার্থ শুলকা হরিজা
অ্র্রাকুড় বেণুক কটকী জ্যেন্তমপু রালা রশ্বগলা দারু হরিজা
ম্থা রক্তচন্দন এবৃথিপ্রতি ২ তোলা এই তৈল মর্দন করিলে
বায় উপশম বিষম জর মাতেই ভাল হয় চোয়ালিধরা রোগ
থাকে না আর হাৎ শূল পৃষ্ঠশ্ল মেহ শরীর ক্যোটকাদি
মন্তী হয়।

দারুহরিতা দেবদারু বুড়াচ্বীল মঞ্জি খামালত! পাঠায়ল শঠি পিপুল বেণামুল চিরাছা গজপিপুল গজভা-দালী পালকঠি কাকড়াণ্জী ধনা। তেওী মুথা সর্ল্কান্ত সজিনাছাল বালা কফল হরীতকা কণ্টিকারী যব পর্পটী
দশমূল কটকী বিড়ঙ্গ গুলঞ্চ কুড় এষাংপ্রতি ১ মাষ। পাকার্থ জল ১ সের শেষ ১ ছটাক প্রক্ষেপ মধু ইহাতে ধাতুম্ক বিষম তিলোয জনিত একাহিক দ্যাহিক ত্যাহিক চাতৃথিক কামজ শোকজ সন্তত এই সকল জর নইট হয়।

এবং এই দ্র্যাদি চূর্ব কিঞ্চিৎ জলে গুলিয়া উষ্থা-কিতে মধুর সহিত পান করিবেন:

স্দান চুর্। কালাকাড় মুল হরিছা কটকী গুলঞ্ মুথা হরীতকী ধন্যা হরালভা কাকড়াশৃঙ্গি কণ্টিকারা মুল কৃষ্ণলীরা কুড় কটফল তিকটু তিফলা গন্ধভাদালীমূল যব পার্গটী নিম্বছাল পিপুল মূল বালা গন্ধশাটী মুর্বামূল কুর্রিচ ছাল জ্যেষ্ঠমধু সজিনাছাল স্থাজ সাল্ক ইত্রেষৰ বচ দান্ধ-হরিছা রক্তচন্দন পালকার্ছ শেতচন্দন বেণামূল গুড়ত্বক গে-রিমাটি শালপানি চাকুল্যা মুগাইমুল বিরানচইমূল আতইচ চিতামূল পাটোলপত এষাংপ্রতি সমভাগে যত তাহার অ-র্কেক শুদ্ধ চিরাভা সকলচুর্ব করিবে ভঙ্গাল ৪ যায়া অন্ধপান উষ্ণজল ইছাতে অফ বিধ জর এবং অসাধ্য জর ও নানা দোশোদ্ধৰ বারিজ জর ইত্যাদি দোষ সকল উপশম হয়।

রহৎ স্থদর্শন চূর্ব। পুর্বোক্ত স্থদন চূর্বের অব্যাদ-কল এবং তেউড়িমল চিঙ্গুড়মল জীরা ইশরমল পাঠামল হিঙ্গ বিড়ঙ্গ জায়ফল শুলালিশীশ ধাতকীপুষ্প ভাগীমল বাকসমল জটা মাংসী সরলকাঠ ক্ষুদ্র এলাইচ জায়িত্তী লৌ-হত্তম অভ্রতম মনানী নাগেশ্বর তালিশপত রেণুক গঙ্গা-মৃত্তিকা এবাং পুর্বোজ ভাগ।

অশ্বসন্ধা তৈল। তিলতৈল ৪ সের অশ্বসন্ধাছাল ১৬ পাল পাকার্থ জল ১৬ সের শেষ ৪ সের শতমালরস ৪ সের গ্রহুক ১৬ সের লাহাজল ৪ সের জীবন্তি জ্যেষ্ঠ মধু রামা রক্তচন্দ্র গ্রানি মাসানি মঞ্জি কিফলা জীরা ক্রুজীরা হরিলা দারুহরিলা কুড়ম্থা বচ লোধক। ছ বিভুক্ত শালপানি এবাংপ্রতি ২ তোলা চূর্ব করির। তৈলে দিবেন পাক নিদ্ধে গন্ধ দ্য়ে লখি কপুর বিরুজা ইহাতে জীর্ব ও তিনোষ জর বাত মুক্তদোষ শূল কামলা হলীমক বিষম জর এই নকল নট্ট করে এবং দেহ পুট হয়।

কিরাতাদি তৈল। কটু তৈল ১৬ দের চিরাতা ৩২ পল পাকার্থ জল ১ ।। ৪ দের শেষ ১৬ দের পুরাতন কাঞ্জি ১৬ সের দ্ধিরমাত ১৬ দের লাহার জল ১৬ দের মুঝামল লাহা হাজো দারুহরিজা মঞ্জি রাখালসসার মুল রামা গজ্পপুলী বালা তিকটু গুড়ত্বক খেত আকন্দ আমালতা বাকসমল ইন্দ্রযব মহাকাল ফল এষাংপ্রতি ২ তোলা পো-বণ করিয়া দিবেন পুর্বোক্ত গল্পব্য ইহাতে লিপ্তভুক্ত সাং-ঘাতিক বিষম ধাতুত্ব এই সকল জর এবং পাণ্ডু কানলা প্রীহা গৃহিনী অভিনার নাশ হয়।

জর তৈরব চ্ব। শুণ্ঠী গল্পভাহলী নিষ্ঠাল হরালতা হরীতকী মথা বচ দেবদার কণিকারীমূল কাকড়াশ্লী শত মূলী ক্ষেত্রপাপড়া পিপুল কুড় বালা শঠি মুর্গামূল পিপুল ইয়েডা দারহরিডা লোধছাল রক্ত দেনন ধাতুকী পুষ্প কুর চি বীজ জ্যেত্রমধু চিতামূল সজিনাছাল মহাবরি বচ তালিশা-পত্র আতইচ কট্কী বাট্যালমূল পালকার্গ ক্ষেত্রমানী শালপানি মূল গুলপ্রের পাল বেলশুঠা পঞ্চাই পাটামাটী তেলপত্র গুলক এলাইচ আমলা চাকুল্যা পটোলপত্র গল্পক অভ্র লৌহ সমানী শিলাজতু এষাংপ্রতি যত শোধিত চিরাতা চুর্গ তত ভক্ষণ ৪ মাষা এই ঔষধ বিষম প্রাধৃত্তি জ্বর সকল প্রীহা নট করে।

চন্দনাদি লৌছ। রক্তচন্দন বালা পাঠায়ল বেনায়ল পিপুল হরীতকী শুণ্ঠী স্থল্ধি শালুকয়ল আমলা মুথা চিতা বিডুল। এষাং সম্দায়ে চর্ব যত লোহতন্ম তত সকল একত্র কবিষ্ণা মৃত মধুষারা এক মাধা পরিমাণ বাটি বাহ্মিবে শন্ত

পান মৃত মধ্লোহখলে লোচদণ্ড দ্বারা মন্দন, ইহাতে স-কল বিষয় জর ও ধাতুত্ত জর ছরীকরণ হয়।।

রছলাকাদি তৈল। তিল তৈল ৪ দের লাহাজল ৮ সের শুলকা দার হরিদা মুর্গান্তল কুড্রেশ ক কটকী জে, ঠনধুরামা অধ্যক্ষামল দেবদার মুখা রজচন্দন এবাৎপ্রতি ২ তোলা চূর্ল করিয়া তৈলে দিবেন পাক্ষিদ্ধ গন্ধ্বা এই তৈল স্ক্রিব জন্ন নদী করে।

রহৎ জর সংহারিশী চুর্। ধন্যা তিকটু হরীতকী বচ দেব
দারু হরালতা কাকড়াশ্লি শুগুী হরিদ্রা দারুহরিদ্রা লোধ
চাল রক্তচন্দন খেতচন্দন কুরুচিবীজ ও ছাল গল্পাঠি বালা
ল্যেষ্ঠমপু আত্টচ যমানী বেলশুঠা এলাইচ গুড়বক তেজ
পত্র নাগেশ্বর তিকলা মথা চিতা বিড়ক্স গল্পক পারা লোচল্ম অভ্রত্ম তালমূল শালপানিমূল গুলঞ্জের পাল চাদুল্যা পটোলপত্র গল্পতাদালীমূল নিম্নছাল ক্ষেতপপ্তা
শৃত্মলীচুর্ব মুগামূল প্রকাষ্ঠ সাজনাছাল প্রপর্পটি মাটী
রাথালন্দামূল এই সকল চর্ব এবং এই সকলের ত্রিগুণ
শোধিত চিতাচুর্ব। ভক্ষণ ও মাবা অমুপান মধু ভুলিখা রস
ট্রাতে ধান্ত বিষ্কা দল্শ কফকীর্ব জীর্ব সাধ্যাসাধ্য এই
ধ্কল জুর পান্তুশোথ উদ্বাময় নাশ হয়।।

মহেশ্বরী চূর্ব। লবঙ্গ আতইচ ত্রিকটু সৈন্ধব হবুষ ভুক্ধবাকল ধন্যা ককলে কুড় জ্বিজী জীৱা রসাঞ্জন জারকল
ধাতকীপুষ্প তালিশপাত এলাইচ গুড়স্বক তেজপাত বিটলবণ বেলগুটা বন্যামনী নাগেশ্বর্যমানীয়বক্ষার সমুদ্রফেণা
সোহাগা হরিজা দারুহরিজা ইন্দ্রয়ব কটকী অমুবেতস চিলাতা অশ্বগল্পানূল মুখা চিতা তালমূল অভ্রত্ম লৌহভ্রম
ব্রুভির্ম এবাং সমচূর্ব ভ্রমণ ৪ মাযা অনুপান চিনি
নিমু ইহাতে দ্বোকালীন ঐকাহিক ঘ্যাহক চাতুর্থিক সতত
দেখ্যত এবং প্রবলম্বন ভোগ করিয়া নাড়ীতে স্থির থাকে
ও নাড়ী হইতে অপগত হয় আর গন্তীর মানিক পাক্ষিক

धादुन्द दिवम जीन व्यक्ति क्षित এक नमरा जिन करते उ जिल्लायकत पोकानीम এव॰ मक्षा कि उक्तनी कि फि-वाटि ज्लान करते अहे नकण श्रकात कर बाद शीहा छन्। कामना नसे हते।

পেপুল্যানি তৈলা। ভিলভৈল ৪ সের দ্ধিরমাত ৪ সের পূরাতন কাজি ৪ সের জন্ধীর রস ৪ সের কল্কার্থ পিপুল্মুল ধন্যা গজপিপুল মুথা দৈল্লব তিফলা যমানী বিলযমানী রজক্ষন কফল কুড়জাকা শাঠি গোরক চাকুল্যা বচমাল-পানি এলাইচ গুড়ত্বক তেলপাত চিতামল নিম্নছাল মহা-নিমছাল ব্যাক্ড কল্টিকারি গলঞ্চ দন্তী চিরাভা দেবদার আলকুশি ক্ষেত্রপাপড়া হরিছা দারুহরিছা কটকী বীক্ষমা জ্যেষ্ঠমধু এযাংপ্রতি ২তোলা সকল চূর্ল করিয়া তৈলেদিবে ১২ সের জল দিয়া পাক করিবেক সমাপ্ত ইইলে গ্রন্থব্য দিবেন। ইহাতে সকল প্রকার বিষম জুর ধাত্ত্ব লীহা শোথ জীর্ল কর কামলা পান্ত্রকপিত্রর কাম শাস কন্ত্র হলীমক নাশ হয়।

কামাচার লৌহ। তিকটু তিফলা তিজাতক জীরা ২ প্রকার ধন্যা প্রাঠায়ল পিপুল্মল দন্তিবীজ দাড়িছছাল গজ
পিপুল শতমূলী শুল্ফা পটোলপাতা বেনামল বচ কান্তিলৌহতম্ম রক্তম নৈল্লব অভ্রতমপল্লকাঠ রক্তচন্দন কটকী
চিঙ্গু ডমুল্মনানী বিলয়মানী যবকার পানমোরি জ্যেষ্ঠ মধু
ভালিনপাত চিরাভা বালা শঠী এবাং প্রতি সমভাগ ছর্ণ
সক্তল্য মঞ্ভু আন। লৌহদপ্ত দারা লৌহপাতে স্থত মধুর
সহিত মর্দ্দন ভক্ষণ ২ মাধা অনুপান কেন্ডভ্যের রম পথ্য
ভক্রতায়। এই উষধ বিষম্ভার কামলা পাঞ্লীহা শোথ
শ্ল গুলা কান শাস অক্লচি নাশ করে।

মাহেশ্রধুপ। গুণ্ল শ্বেত্মরিবা নিম্নাল যব লালুকা বচুকুড় শটি তহ্ন কাপাদবীজ ছাগ্রিষ্ঠ। সপ্থোলস সা -সন্থার নেদাড়ি ঝল হস্তিদন্ত বিরানচ্ঞি গোঘাদি গোপুছ গোকর গোশ্ব । এষা পারিত নুমতাগ তুর্ন গর্য ছতে মর্দ্রন ১ তোলা পারিমাণ বটি কুলকাটের অগ্নিযুক্ত সরাতে দিয়া ক্ষেত্র কয়ল গায়ে আছোদন করিয়া ধূম লইবে এই প্রকার সপ্ত দিবস লইতে হয় ইহাতে এককালীন দ্বিলালীন তৃতীয় কালীন জর নই করে।

লাকাদি তৈল। তিল তৈল ৪ সের দধিরমাত ১৬ সের লাহার ক্লাথ ১৬ সের ক্ফ শুল্কা অশ্বগন্ধামূল হরিডা দেব-দারু কট্কী রেণুক মুগমুল কুড় জ্যেষ্ঠমধু রক্তচন্দন মুথা রায়া। এযা প্রাভি ১৬ মাধা সকল চুণ্ করিয়া তৈলেদিবে পাকসিজে গন্ধজ্ব্য দিবেক।

জরনাগময়র চূর্ব। জীরা রক্তচন্দন খেতচন্দন খন্যা বালা রেণুক ভালিশপত তিলাতকলবঙ্গ নাগেশ্বর সরল্কার্ছ কুড় কাকড়াশৃলি কাকুলি ক্ষীরকাকুলি রুফজীরা কপুরদেবদারু দারু হরিছা জামফল জয়িতী তিমদ বচ হিন্দ অভাবে আল্-কুসি তিফলা তিকট বেলশুঠা শিমূল আটা মেথি সোহাগা যমানী বিল্যমানী মৌরি কট্কী ইন্দ্রয়ব বেণামূল গৃহধুন আফিন্ন পায়ামূল অভ্রভন্ম লেইভন্ম শুল্ফা হরিজা এষাং প্রতি ৪ মাষা শুদ্ধ চিরাভা শুদ্ধ বিজয়া শুদ্ধ শুণ্ঠী এবাং প্রতি ৫ তোলা দকল শুল্ম চূর্ব লক্ষণ ৪ মাষা অনুপান উফ্ জল ইহাতে বৈষম্যজ্বর নানাপ্রকার অভিসারকামলাপাণ্ড, কাস শ্বাস দাহ শীত ছার্দি অমুপিত্ব শূল সংগ্রহ গৃহিনী এই সকল নক্ত করে, এবং খাতু ও কাম রিজি করে। আর বলবর্ণ অগি এই সকলকে প্রকাশ করে।

বঙ্গের মদক। ধন্যা জরিতী লবক জীরা সোহাগা মুরা
মাংনী মুথা সুজিমুল গুলপ্তের পাল জারকল তিকলাতিকট কেন্তর পটোল্পত পানমৌরি জটামাংনী চিমুড্মল জ্যেষ্ঠ মর্ অভ্তম লৌহতম চিতা্মুল এলাইচ গুড়্বক তেজপত নাগেশ্বর ধাতুকীপুষ্প তালমূল মুগই বিরামচক্রী তালিশ পাত রক্তানন খেতচন্দন ডাক্ষা বিড়ঙ্গ কাবাবচিনি কুড় এষাংপ্রতিষত বঙ্গতান উত্সকলের দ্বিগুণ চিনি দ্বিগুণ কে চিনি দ্বের মনান শতমুলী রন এই সকল একতেপাক ক-রিবে, বদরান্তি পরিমাণ বটি অনুপান কাঁচা হল্ধ ইহাতে ধাতৃত জ্বর সংগ্রহ গৃহিণী মত্ল অলীন অতি ক্ষীলমন্দগতি দেহকার্বতা মূতাঘাত মূত্র জ্ব প্রমেহ শোধ নানাপ্রকার কাস নানা প্রকার শূলজ্বাচি এই সকল নই করে আর বল ও কামর্জি করে।

অথ জ্বরাতিশার চিকিৎসা।

পৈতিকাতিসারজ্বরে। চাকুল্যা পাট্যালা বেলগুটা মুদ্ধিমূল ধন্যা এবাংপ্রতি ৩০ রভি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ সর্ব ৪০ রভি দিয়া পান করাইবেন। পথ্য লাজ্মণ্ড।
বাতিক জ্বরাতি সারে। ত্রীবেরাদিপাচন। বালা আতইচ
বেলগুটা মুথা শুণ্ডী ধন্যা এষাৎ প্রতি ২৮-রভি জল ৪ পাল
শেষ ১ পল অনুপান টক দাড়িষের রস পথ্য যব চূর্ণ
মণ্ড।

রজাতিসারে। বেণার মূল বালা মুখা ধন্যা শুণ্ঠী বরাক্রান্ডা ধাতকীপুষ্পালে:ধছাল বেলশুটা এবাৎ প্রতি ১৮ রতিজল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু ৪০ রতি পথ্য মন্থর যুদ।

সামিপা,তক জ্বাতিসারে। পঞ্মূল্যাদি পাচন। সাল-পানি চাকুল্যা কি. নটকারি গোক্ষরি ব্যাকুড় বাটেলামুল বেলগুটা গুলঞ্জ মুখা শুণ্ঠী আকনাদিমুল চির্রাতা বালা বুরুচিছাল ইত্রেষর এষাংপ্রতি১০। বুতিজ্বলঃপল শেষ১পল প্রক্রেণ মধু ৪০ রতি ইছাতে পথ্য দিবেন না।

অভ্রবটিকা। পারা ২ তোলা গন্ধক ২ তোলা উভয়ে ক-জ্ঞানী অভ্ৰত্ম হ তালা শুণী পিপুল স্বীচ এষাংপ্রতি সক্ষ চূর্ব ২ তোলা এই সকল একজ্ করিয়া ভাবনা দিবেন, যথ। প্রথম, কেশুভেরেরস ভীমরাজ্বস নিষিদ্দা পাতি রস চিতা ২ পাত্রস স্বৈজ্ঞপ্রাজিতা পাতাররস জয়ন্তীপ্ত রস থূল- কুঁড়িপত্র রল সাঁচিপানের রন। এই সকল প্রকার পত্র রুষের ভাবনা পর ২ ক্রমে অট দিবসের সমাপন করিকে। পরে মরীচের ফুল্লচ্ব ২তোলা সোহাগার খই ১ ভোলা উ-হার সহিত মর্দন করিয়া গুঞ্জা পরিমান বটি করিবেন, অমুপানমর্ কেণ্ডরিয়ার রল, ইহাতে অধিক গমন জীলক রান নাগর দোলাদিতে দোলা যে পর্যন্ত করাতিসার রোগ হইতে মুক্ত না হয় সে পর্যন্ত এই সকল করিবে না। দধিবটি পোরা সন্ধাক বিষ হরিতাল স্বর্গাক্তি তুতে আ-কিঙ্গ এই সকল অব্য সমভাগে যত গোদন্ত তত সকল অব্য শুদ্ধ পারা গন্ধকে কর্জ্নলী তুলদী পাতা রুষে মর্দন করে নিষ্মাপিক রুলে সপ্ত বার এবং ভীমরাজ রুদে সপ্তবার ভা-হয়, অরুপান পিপুল চুর্ন ৪০ রতি উঞ্জল, উষ্ধ কেবনের পরক্ষণে নির্দ্ধল দ্বি খাওয়াইবেন। ইহাতে জরাভিসার নাশ হয়।

জরাতিদার বিশেষ পথ্য। দা দ্বিপাতিক ও প্লেম্মিকে নি রাহার। পৈণ্ডিকে লাজমণ্ড। বাতিকে ঘব চুর্ন মণ্ড।রজা-তিমারে মন্তর যুষ।

পিপুল্যাদি তৈল। কটুতৈল ৪ সের টাবালেবুর রম ৪ সের তক্র ৪ সের নিবিন্দাপত্র রমঃ সের পিপুল পিপুলমুল চিতা– মূল গজপিপুল বিড়ক্স সৈদ্ধব জীরা অম্লবেডন যবক্ষার কুড় গাঠ্যালা শুণ্ঠী তালিঘ পত্র জ্যেষ্ঠমর্ গুলকু শুণ্ঠী চা-কুল্যা বাট্যালা নিয়ছাল বাকসমূল পুনন্বা গোক্ষরি রামা শোদাল দেবদারু মুখা এযা প্রতি ২ তোলা, এই সকল্ ডাব্য ছেচিয়া দিবেন, চূর্ব দিবেন না, কারণ দিলে খুলিতে ধরিবেক,তৈল প্রথমে খুলিতে দিয়া মধ্যমরপ জাল দিতে দিবেন তৈলের সহিত কিঞ্জিৎরদ শাকিতে ভক্লদিনে এই রপা পর্ব জব্যের কিঞ্জিৎ শেষ্ থাকিতে পর্ব পর खवा निरवन कोत्र खव खवा निर्वात अहेत श बावश खवः बनोनि खेव खरवात शतत्थात न्यार्ग देखन धनकाती इस नजुवा इस ना।

অর্থ বিষমজ্জর রসায়ন। তিপুর ভৈরবরম, শুক বিষ ২ নাবা সোহাগার এই ৪ মাবা গলক ১ তোলা দন্তিবীজ্ঞ ১ মাবা দন্তি মুলের রসে মর্দন করিয়া গুপ্পা পরিমাণ বটি করিবেন অনুপান ককাধিক্যে তিকটু চূর্ন ৪ বিত ও সধু কিছা তিকটু চূর্নের পরিবর্তে আদার রস পিতাধিক্যে শক্রা।

নবজ্জরা কুশা।

শুদারন ১ তোলা শুদা গন্ধক ২ তোলা শুদা হিন্দুল ও তোলা দন্ডিম্লের রসে অট প্রহর মদিন করিবেন,এক গুঞা পারিমাণ বটি তনুপান কফাধিকা আদার রস মধু,পুর্বোজ শীতভুঞ্জি রস প্রয়োগ করিবেন, কিন্তু মল বদ্ধ থাকিলে ন-ভুবা নহে।
সহাজ্যরাংবৃশ।

রসগন্ধক তাম হিলুল শুদ্ধ হরিতাল বল লোই স্বর্ণনাকি শুদ্ধথাপর মনছাল অভ গেরি সোহাগার থই দন্তিবীকা। স-কল স্মভাগ ফুল্ল চুর্ণ করিয়া ভাষনা দিবেন, পাতিলেবুর রসে একবার সিদ্ধির কাথে ঐ তুলসীপত্র রসে ও ঐ পরে শুলে মর্দ্দন করিবেন গুল্লা পার্মাণ বটি অনুপান কফা-থিক্যে আদার রস মধু অথবা তুলসীপত্র রস কিয়া কেশু-ত্যের রস কি নিষিদ্ধাপত্র রস পিতাধিক্যে ভর্জিত জীরক চুর্ণ ১ রতি আর মধু।

ইতি সারকৌমুভাং জ্বাতিনার চিকিৎসা।

मर्जन ।

ধান্যশুর্থী। ধন্যা শুর্থী। এতয়োগ্প্রতি প্রমাধা পোষণ করিয়া উষ্ণ থাকিলে খাইবে,ইহাতে আমবাতে শ্লুমাজ্জর শুল অতিসার নুষ্ট করে এবং অগ্নি হুদ্ধি হয়।

द्वीरवद्गानि भावन । वाला चाउँ हे मुथा विल्ला एकी

ধন্যা; এবাংপ্রতি ও মাধা পাকার্থ জন, ১ নের শেব ১ ছ-টাক, ইহার গুণ, শূল অভিনার রক্তাতিদার বাতস্থো জ্বর নটকরে। হীবেরাদি চুণ।

বালা আতইচ মুথা বেলগুটা ধন্যা কুলচিবীজ বরাক্তা-মূল ধাতকীপুষ্পা মোচরস শুণ্ঠী, এবাংপ্রতি সমভাগ চুর্ণ, ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান আতবতঞ্জোদক, ইহাতে অ-কুচি পিছাম বি্বর্জ দেহাদির বেদনা নইটিয়ে।

উবিরাদি পাচন। বেণারমূল বালা মূথা ধন্যা শুণী বরাক্রান্তামূল ধাতকীপুষ্প লোদছাল বেলশুঠা, এবাংপ্রতি মাবা পাকশেষ পূর্ববং প্রকেপ মধু, ইহাতে অরুচি পিছাম বিবর্জ দেহাদিবেদনা রক্তাতিসার বাত শ্লুমা জ্বর নাশ হয়।

চিরাতা মুথা গুলঞ্জ বালা ভত্তমুথা রক্তচন্দন ধন্যা এরাং-প্রতি২মাবাওরভি পাকশেষ পূর্বাবৎ প্রাক্ষেপ মধু, ইহাতে সোম অতিসার হালাস অন্তর্গাহ জ্বর ভাল হয়।

মুথাদি পাচন। মুথা আতইচ শুণ্ঠী কুড়চিবীজ হরীতকী চিরাতা এবাংপ্রতিতমানা পাকশেষ পূকাবং প্রকেপ মধু, ইহাতে সকল অতিসার হিন্ধা সকল প্রকার শোথ ও জ্বর দূর হয়। দশমুলাদি।

পুর্ব্বোক্ত দশমূল প্রত্যেকে ২ মাধা প্রক্রেপ শুণ্ঠী চূর্ব ৪ মাধা ইহাতে জ্বর অতিনার শোথ গৃহিণী নাশ হয়।

শুঠাদি পাচন।শুগী ধন্যা গুলঞ্চ ভাজমুখা বালা বেল-শুঠা রন্ধুনিছাল কুড়চিছাল, এযাংপ্রতি, ২ মাধা পাকশেষ পূকাবং প্রক্ষেপ শুগী মধু চিনী এষাংপ্রতি ২মাধা।

ত জ্চ্যাদি পাচন। গুলক আতইচ শুণী ধন্যা বেলশুঠা মুখা বালা পাঠামূল চিরতা কুজ্চিছাল রক্তচন্দন বেণামূল পদ্মকার্ত এবাংপ্রতিত মাধা ৫রতি পাকশেষ প্রবং প্র-ক্ষেপ মধু, ইহাতে জরাতিনার জ্লান অফুচি পিপানা ছর্দ্ধি দাহ এই নকল নফ হয়। শিক্ষুবাদি পাচন। স্বৰ্ণ গল্প মূলি রাট্যালায়ল বেল শুটা গুল্প মুখা শুগু পাঠামুল চিরাভা বালা কুড়চিছাল ইন্দ্রেয়ব এষা প্রতি গলিকশেষ পূর্বেবৎ প্রকেপ শুগু চুর্, ইছাতে সর্বাভিনার জ্বর দোষ বনি স্থান কান মুব্র হয়।

কীর ব্রক্তদন্দন মুখা বেলগুঠা আক্রনাদি মূল দাড়িয় ছোল ধন্যা আতইচ শুঠী বাতকী পুষ্পাইন্দ্রয়ব এষাংপ্রান্তি ২ মাবা পাকশেষ পূর্ববং প্রাক্ষেপ মধু, ইহাতে অভিনার জ্বর দাহ শুল রক্ত এই সকল নতী হয়।

ব্যোশাদি চুবঁ। তিকটু ইন্দ্রয়ৰ নিম্নছাল চিরাভা ভীমরামল চিতামুল কটকী আকনাদী মূল দায়হরিজা আভইচ
এয়াংপ্রতিসমচ্নসকলেরসমানকুড়চিমুলচ্নমিশ্রিতকরিয়া
ভক্ষণ ৫ মাথা অনুপান আত্বতগুলোদক অথবা মধুর
সহিত অবলেহ করিয়া ভক্ষণ, ইহাতে অভিসার জ্বাতিসার কমলা গহিনী গুলা গ্রীহা প্রমেহ পাপু শোথ কাস
নাশ হয়। গঙ্গাধর বটি।

জারফল আফিঙ্গ লবঙ্গ জীরা সোচাগা সকল শোধন ক-রিয়া চূর্বকরিবে পরে পোত্তকাথেমর্দ্দন করিয়া মটরাকৃতি বটি, ইহাতে আমরক্ত জ্বর দাহ শূল তৃষা অক্লচি নাশ হয়

জাতিকলাতা বৃটি। জায়কল জীরা জারিতী যুমানী তিকটু আতইচ ধন্যা আফিল কট্কী খেতপুনা থদির অজ্র ভ্যা লোহভ্যা তিকলা চতুজাত বেলশুঠা মুথা মোচরস সো-হাগা গল্পাঠী এয়াংপ্রতি সম স্থা চূর্ণ সিজিপত রুদে ম-দিন,১ মাধা পারমাণ বৃটি অনুপান ছাগছল,এই ঔষধ সে-রুন মাত অনুপিত্ত বৃন্দি গিছা শূল এই সকল রোগ নাশ হয়।

কনক স্থুন্দরখারক।

শোধিত পারা শোধিত গল্পক এতয়োঃ প্রতি ২ মাবা । হিল্ল ৪ মাবা শোধিত কনক ধুস্তুর বীজ ৮ মাবা সকল চুৰ ক্রিবে পুরে রুড়চিম্লের রুণেণ্বার ভাবনা দিয়া মট-

বাক্তি বটি বালিবেং অনুপান ছাগংকং ইহাতে জ্বাভি-সার রজাতিসার অক্লচি নউ ২য়।

পাঠাদি চুৰ। আকনাদি মূল জীৱা ধাতকীপুষ্প মুখা আঁতইচ ধন্যা জায়ফল তথী লোহাগা বেলতা কুড়চির বীজ মোনছাল বালা লবক 'মোচরল এবাংপ্রতি লম চূর্ন, ভক্ষণ ৪ মাষা অনুপান কিঞ্ছিৎ উষ্ণ জল আভশভণ্ড লো-मक मधु हेशांक चामछात्र नाना (मर्गांखवांकिनांत चक्रकि बुक्त (मायनाम र्यू।

মাগরাদি চুর্। শুগু ী আতইচ মুখা ধাতকীপুলা কুছাচ यून हान हेळ्यव (वनल्ठा वाकनामि कर्की, धवारश्रील मम हूर्व कि कि ए उस उस दला हक, धरे उस्य ब्राडिमात পৈত্তিক গৃহিণী অস শোথ অরুচি নানা প্রকার অভিসার नाम करता

ক্ষীরকল্যাণ গুড়িকা। চিঙ্গুল শৃঙ্গীবিষ লৌহভন্ম ধুস্তুর বীজ শন্তাবিষ সোহাগা এষাংপ্রতি ২মাবা আফিঙ্গ ৬মাবা শোষিত করিয়া চুধ করিবে বেগুণপত রদে ভাবনা পরে ছাগছুফো মৰ্দন করিয়া তিন দরিয়া পরিমাণ বটি বান্ধি-तिक, अनुभान ছाগছक मर्यम धक शथा क्रिएव लद्न ज्ञ नित्वध, हेरां ए छानक खाता विमात श्रीरंगी পा**ए** त-ক্তাতিসার শোধ তৃষ্ণ অক্লচি দাহ অগ্রিনাল্য অন্লাপত কাস এই সকল রোগ নদ্ট করে।

ইতে দর্পণে জুরাতিনার সমাপ্তঃ।

অথাতিসার চিকিৎসা।

. এই জুরাতি দার রোগ অভি বলবান অতএব ভক্রশাস্ত প্রমাণার্নারে জ্ঞানবান বাহ্মণ দারা জরদেবতার সভোষ -নিমিতি অবশ্য বলি প্রদান করাইবেন কিন্তু এই জুরেই বিধি এমত নহে অসাধ্য জুর মাজেই বিধি জানিবেন বি-শেষ তোড়ল তত্তে জ্ঞাত হইবেন।

মুর্তিবোগ। শুদ্ধি এক প্রন্য এই ছই এবা চুর্ণ করিয়া। লাজ মণ্ডের সহিত খাওরাইবেন।

হুবেরাদি পাচন। বালা আতইচ বেলপ্রঠা মুখা ওঠী
ধন্যা এবাং প্রতি ২৬॥ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু ২০ রতি ও সোচরল ২০ রতি স্ক্র চুর্গ দিবেল।
স্ক্রহৎ গুড়চ্যাদি পাচন। গুলঞ্চ আতইচ বেলপ্রঠা ওঠী
ধন্যা মুখা বালা আকনাদি মল চিরাভা কুড়িচিছাল রক্ত
চলন বেলামল পালকার্চ এবাং প্রতি ১২॥ রভি জল ৪পল
শেষ ১ পল প্রকেশ মধু ২০ রতি কুল্প চুর্ব ২০ রতি।

রহৎহাবেরাদি পাচন। বালা আতইচ বেলশুঠা মথা ধন্যা কুড়চিছাল বরাক্রান্তা ধাইফুল লোধ শুঠী এষাং প্রতি ১৬ রতি জল ৪পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু ২০রতি মোচরুল ২০ রতি।

ব্যোশাদি চুব। তথী পিপুল মরীচ ইন্দ্রয়ব নিম্বছাল চিরাভাভীমরাজ চিতার মুল কট্কী আকনাদি মুল দারু হরিতা আতইচ এবাং প্রতি ১ তোলা এই সকল জব্যের সমভাবে স্ফাচুব যত কুড্চিছালের চুব তত একত করিয়া অধিককাল প্রেশ করিবে। অনুপান আতবতগুলের জল ও মধু।

ন্ত্রণী দশমুলী। বিল্ছাল সোণাছাল গাস্তারিছাল পাকলছাল গণিয়ারি ছাল শালপানি চাকুলাদি কণ্টিকারী
গোক্ষুরী ব্যাক্ডি।এষাং প্রতি সমভাগে স্কুচ্ন যত শুগী
স্ক্র চ্ন তত পরে পুর্ববৎ পেষণ করিবেন ২০ রতি পারমাণ চুন পুরু অনুপানে সেবন করিবেন।

কনক মুক্তর । হিন্তুল মরীচ সোহাগার ধই অভাবিষ পুত্ত ব্রীক্ষ গল্পক পিপুল এই সকল জবা সমভাগে হক্ষাচুর্ন করিয়া শিক্ষাভার রসে ৪ প্রহর খলে মর্দন কলিবেন, চলকার্যনি বৃটি অনুপান পূর্বেৎ এবং ইহার চুর্ব ২ রভি দিবেন। অথ সশোণিত জুরাতিসার চিকিৎসা।

মহাত্রবিটিক।। রস ২ তোলা গন্ধক ২ তোলা অত্র ২ তোলা শুণ্ঠী পিপুল মরীচ এবাং প্রতিংতোলা এই সকল চুণ করিয়া যথাক্রমে তাকনা দিবেন, যথা। কেশুরিয়ার রশ তীমরাজ রস নিবিন্ধা রস খেত অপরাজিতা রস জয়ন্তী রস থুলকুড়ি রস কাঁচা সিজির রস রম্ভযুক্ত পানের রসএই সকল অব্য এক এক ক্রমে দিন দিনে দিবেন গুঞা পরিমাণ বটি অনুপান আত্রতপ্রের জল মধু। পথ্য দধি।

কনক স্থলর রস। হিঙ্গুল মরীচ গল্পক পিপুল অত্র বিষ ধুস্তুর বীজ লিজি এই সকল অব্য সমান চুর্ণ করিয়া সিজি পাভার রসে মর্দন ২ গুঞা পরিমান বটি অনুপান পুর্বাবৎ এই ঔবধ গৃহিনীতে ও আগন্তক জুরে সেবন করান যার।

ধান্যচত্যীয়। ধন্যা মূখা বালা বেলগঠা, জল ৪পল শেষ ১ পল।

ধান্যপঞ্চ । ধন্যা শুণ্ঠী মুখা বালা বেলশুটা, জ্বন । পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু। অভিদার পিপানা স্বন্ধে। মুখা ১ ভোলা ৪ দের জলে দিজ করিয়া ১ দের থাকিত রোগীকে দিবেন অনুপান মধু।

কণ্ণটাদি পাচন। কানছি ছারপত দাজিরপত্ত জয় পত বেলশুঠা বালা মুথা শুণ্ঠী পানিফল পত্ত এষাংপ্রতিত্তিত ও গুঞ্জা জল ৪ পল্ শেব ১ পল প্রক্ষেপ মধু। নাভিমুলের বেদনা নিবারক মুফ্টিযোগ। আমলকী কোমলছাল জলে উত্তম ৰূপ পেষণ করিয়া নাভির চতুর্দিগে মঞ্জাকার প্রা। লেপ দিবেন পূরে নাভিকুপ পূর্ব করিয়া নিজ্জাল আদার রুষ্ দিবেন।

. দিতীয় প্রকার। অনুছাল কাঞ্জির সহিত পেরণ করিয়া প্রদেপ দিবেদ ক্তচিছাল মুখা ইন্দ্রয়া এয়াং প্রতি ৩৫ রভি জলঃপল শেষ ১পল প্রক্রেপ মুধু ২০ রভি চিনি ২০ রতি। এবং বেলগুঠা ২ তোলা ছাগছক ৮ তোলা জন ৩২ ভোলা। একতে নিদ্ধ করিয়া জল নিঃশেষ হইলে তাহাতে. প্রক্রেপ চিনি মোচরস ইন্দ্রষৰ চুর্ণ এষাং প্রতি ১১ রতি শিয়া খাওয়াইবেন।

কৃটক পুটপাক। অতিকোমন কৃড্চিছাল ২ তোলা আঠ-বভণ্ড লের জনে কিঞ্ছিৎ ছে চিয়া জন্ত্ব পত্তেকুশবদ্ধ পুটুলি করিবেক এই পুটুলি কর্দ্ধমে লেপন করিয়া ঘূটিয়ার অগিতে দক্ষ করিবেক কিন্তু ঐ কূড্চিছাল সরস থাকিতে অগ্নিহইতে পুটুলি উজোলন করিবেন ভদন্তর ঐ ছাল উত্ত-মরূপে পেষণ করিয়া মধুর সহিত রোগীকে খাইতে দি-দেন ইহাতে রজাভিসার নিহত্তি হয়।

রহ্ৎকুট জাইক। কুড়চিছাল ১০০ পল ৬৪ দের জলে দিছি.
করিয়া শেষ ১৬ দের যে থাকিবে তাহাকে পুনর্বার ঘন
করিয়া দিজ করিবেন এবং তাহাতে নোচরস আকনাদি
মূল বরাক্রান্তা আতইচমুখা বেল্নন্তা ধাইফুন এবাং প্রতি৮
জোলা চুর্ চুলী হইতে উন্তরিত উক্ত ঘন উক্তলে দিয়া
তাড় দারায় মন্তার পাকের বীজ মারিবার মত করিয়া জ্ডাইলে ১ ডোলা প্রিমাণ বটি করিবেন উবধ মেবনেরপর
বাণিজল কিঞ্ছিৎ পান করিবেন।

কৃটলাইক পাচন। কুডচিছাল দাডিয় কলেরছাল সংথা বেলহাল বালা লোধ রক্তচন্দন আকনাদি মূল এয়াং প্রতি ২০ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধ্ ৫০ রতি।

আননদ ভৈরব। হিন্দুল বিষ গল্পক আফিন্স শিম্লকার মরীচ সোহাগার খই পিপুল। এষাং প্রতি সমভাল স্থনদর কপেজলদারা ৪ প্রহর খলে মর্দান করিবেক ২ রতি পরি-মাণ বটি অনুপান জীরাভাজার চুর্ণ এই উষ্ধ। জিদোয়া-ভিসার ও রক্তাভিগার নাশ করে। ইহাতে দ্ধিপথ্য।

জাতিকলাদি। জায়কল সোহাগার থই অজ ধৃন্ত র বীজ এই চারি দুব্য পুতি অর্ডালা আফিল ২ তোলা গ্রভা- দালীপাতার রুদে ৪প্রহর থল করিয়া ২ রতি পরিম'ণ বটি করিবেন অনুপান আত্রতগুলের জল ও মধু।

ইতি সারকৌমুভাং বুজাতিসার পরিচ্ছেদঃ সম, शः।

व्यथ मर्जनः।

ধানাপঞ্জ। ধন্যা হওী মুখা বালা বেলান্চা এষ। প প্রতি ৪মাবা পাক শেষ পূর্বেৎ প্রক্রেপ শুগুী চূর্ণ ইহাতে অতিসার আমশুল নাশ হর্ এবং অগ্রিহন্ধ হয়।

পথাদি পাচন। হয়তকী দেবদার বচ মুথা শুগ্রী আতইচ এযাণপ্রতি ২ মাঘা পাক শেষ পুরুবৎ প্রক্ষেপ শুগ্রী চুর্ব ইহাতে আমাতিসার নম্ট করে।

কছকাদি পাচন। কুছাচবীজ কুডচিয়লের ছাল আত ইচ বেল ঠো মথা ধন্যা এষা প্রতি ত মাবা পাক শেষ পুর্বাহৎ প্রক্ষেপ তিটাটুর্ন ইছাতে আমাতিসার নট্ট করে। আর অগ্রিক্ষি হয়।

পিতাতিসারে। ইহৎ বৃট্জাদি পাচন। কুড়চি মূল ছাল দাডিয়ছার মুথা ধাতকীপুষ্প বেলহুঠা বালা লোধ-ছাল রক্তচন্দন আক্নাদি মূল এবাংপ্রতি ২ মাবা পাক শেষ পূর্ব্বিৎ প্রক্ষেপ মধু ইহাতে আমশুল পিতাতিসার নাশ হর।

কঞ্টাদি পাচন।

কাচিড়ান দাড়িছাল জামছাল পানিফলেরপাতা বেলশ্চা বালা মথা শণ্ডী এঘা প্রতি ২ মাঘা পাক শেষ প্রকাব প্রকোশ শুণ্ডী চুর্ন ৮ মাঘা ইহাতে বেগবতী নদীর ন্যায় যে অতিসার তাছাকেও নাশ করে।

মোচরসাদিচুর্। মোচরস মথা শুগু আক্রনাদিম্ল লে শুঠা ধাতকীপুলা এবাংপ্রতি সমতাগ মধুর সহিত অবলেহ করিয়া ভক্ষণ কারবে। অথবা অধিকারোক সকা পাচনে প্রই চুর্ব অনুপান কানিবেন।

বিল্যাদ। বেলশুঠা ৮ মাযা-পোষণ ক্রিয়া এক প্রোয়া

ছাগ ছথো নিজ করিয়া সুল বজে ছাঁকিবে পরে সেই ছথো প্রক্রেপ চিনি এবং মোচরস ইন্দ্রয়ব সমচূর্ণ ৪ মাধা ছক্ষণ করিবে। ইহাতে রক্তাতিসার নাশ হয়।

কুটবাদি। কুড়চিছাল ২ তোলা পাচনের ন্যায় পাক শেষ করিয়া তাহাতে আতইচ শুঠী উভয়োঃ প্রতি ৪ মাধা চুর্ব দিয়া ভক্ষণ করিবে ইহাতে রক্তাতিসার নাশ হয়।

কুটলাটক। কাঁচা কুড়চুছাল ১০০ পাল পাকার্থ জল ৬৪ সের শেষ ১৬সের ইছাকে পুনর্কার ঘন করিবে পরে প্র ক্ষেপ মোচরঙ্গ পাঠামূল বরাক্রান্তামূল আতইচ মুখা বেল শুঠা খাতকীপুষ্প ধন্যা এষাংপ্রতি ৮ তোলা চুণ ভক্ষণ ৪ মাষা অনুপান ছাগহন্ধ অথবা আতবতগুলোদক ইছাতে ক্ষণ লোহিত ইত্যাদি ভয়ানক অতিনার নকল আর নানা প্রকার গৃহিনী ও সশোণিত অ্শরোগ এই সকল নাই হয়।

সারক্ষর। জায়ফল আফিক্স এবাংপ্রতি সমভাগ পে-ষণ করিয়া ধুস্ত, ফলেল পূরে গোময় লেপন করিয়া দক্ষ ক-রিবে মটরাক্ষতি বটি অন্ধান আমরক্তে ছাগঞ্জ দক্ষাতি সারে দাড়িয়পাতের রস ইহাতে রজাতিসার ও স্কাতি-নার নাশ হয়।

ধন্যাদি চূর্ব। ঘন্যা জিরা তিকটু সিদ্ধিপাতা ত্রিফলা বিটলবল সৈল্পর যুক্তার ফটু কিরী নোচরস মুখা গুল্ফা চিতা এষা প্রতি সমস্তাগ চূর্ব করিয়া ভক্ষণ ৪ মাঘা অনু-পান জল ইহাতে অতিমার অমুপিও অগ্নিমান্য অজীর্ব কণ্ঠদাহ জ্লাহ এই সকল রোগ নই হয়।

স্তরাজ বটিকা। পারা ১ মাঘা গন্ধক ২ মাঘা সোহাগা ২ মাঘা শৃজিবিষ ১ মাঘা মরীচ ৫ মাঘা আফিল ৫
মাঘা এ দকল শোধিত করিএ চুর্ব করিবে হুড়চি রসে পেযণ করিয়া মটরাক্তি বটি অ্রপান কেম্বরিয়ার রস। এই
উষধ সেবন মাত্রে নানা প্রকার অভিসার নাশ হয় আর
পা্গু শোধ কাদ শ্বাস দুর হয় ও কাম এবং অগু র্জি হয়।

দাড়ীয়াধার। সায়্ত্রী ইন্দ্রমন খাতকীপুলা বেলগুঠা বালা আতইচ মোচরস মথা লবক জীরা জায়কন সো-হাগা এষাংপ্রতি ২ মাধা আফিক ৬ মাধা শোধিত চুর্ব ব্র-রিবে দাড়িয়পরে রনে মর্দ্রন পরে দাড়িয় ফলের মধ্যে পু-রিয়া দক্ষকরিবে মটরাক্রতি বটি অনুপান ছাগ হক্ষ, ই-হাতে নানাবর্ণ অতিসার অনাধ্য গহিণী অক্রচি অগ্নিমান্দ্য অজীর্ণশোথ নাশ হয়।

লবক্চতুঃসমা। লবক জীরা জায়ফল লোহাগা শোধিত করিয়া সমতাগে চুর্ন করিবে ভক্ষণ ১ মাধা অনুপান ত-গুলোদক আমরতে ছাগছল, ইহাতে হিক্কা ছদ্দি অতিসার রক্তাতিসার নাশ হয়।

লবসভাবক। লবস আ হুইচ বেলশুঠা মুথা পাঠামূল দৈলব রসাঞ্জন মোচরস আফিস জীরা ধাতকীপুষ্প স্বর্ণভন্ম
অভ্রত্ম বসভন্ম লোধছাল ধন্যা শ্বেতধুনা থদির যবক্ষার
বুড়চি মূল ইন্দ্রযব শুল্কা ত্রিকটু এলাইচ গুড়ত্বক তেল্পপত্র নাগেশ্বর, এবাংপ্রতি সমভাগ চুর্ণ সকলের সমান
পোস্ত দানারস্কাথ, পাকার্য জল অইগুল্ শেষ ক্লাথ ঘন
করিবে ভাষাতে চুর্ণ সকল দিরা ১ মাধা পরিমাণ বৃটি করিবে অনুপান ছাগ্রে ইছাতে অসাধ্য অতিসার রক্তশূল
অজীর্ণ শোথ পাঞ্জার নাশ হয়।

মহাগন্ধক। গন্ধক পারা দিয়পাতালবঙ্গ জায়িক কর জীরা আফিঙ্গ সোহাগা এবাংপ্রতি সমচূর্ব করিবে শোশুকাথে মর্দ্দন জোড়া ঝিন্তকে পূরিয়া মৃত্তিকা লেপ্দাকরিবে পরে সামান্য গজপুটে পাক পোশুকাথে বটি বাজিয়ে অন্থপান ছাগছকা, ইংগতে নানাবর্ণ অভিসার গৃহিনী শোখনাশ হয়।

শোধনাশ হয়।

শোধনাশ হয়।

তিকটু তিকলা কাঁকড়াশৃঙ্গী কুড় সৈত্ৰৰ কট্ফল ওঠী নাগেশ্বর বন্যমানী মেথি ধন্যায়মানী ভাঙ্গবীজ জীৱা ক্ল- কলীরা তালিশপাতা মুখা বচ এবাংপ্রতি ১ তোলাছ শোধিত দিছিপাতা ১১ তোলা সকল চুর্ণ করিবে চিনি ১ গেরের মহিত মোদক পাক বদরান্তি পরিমাণ বটি করি-বেক, অনুপান মুগ্ধ জল, ইহাতে অম্লাপিত অজীর্ণ জাগ-মানদ্য অরুচি অসাধ্যাতিসার নানাবর্ণাতিসার গৃহিনী শোখ পাণ্ড জ্বর এই সকল রোগ দূর হয়।

ইতি দগণের অতিসার চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

शृहिनी 6िकि शा।

গৃহিণী রোগের করিণ অতসার রোগ নিঃশেষ না ছইয়া
তুটি বৈ হয় তাহাতে অগুমানদ্য হইলে বায় ছুট-ছইয়া
গৃহিণী রোগ জন্মে, অভএব ইহাতে তক্ত অতি উপ কারী
আনিবেন, কারণ তক্রদারা ছুট বায় নাশ হইয়া অগি প্রবল
হয় তাহা হইলেই গৃহিণী রোগের শান্তনা হয়।

শুঠী আত্ইচ মুখা। এয়া প্রতি ৫০ রতি জল ৪ পল

শেষ ১পল প্রক্ষেপ মধু ৪ রতি।

ে বেল্ডার ফুন্ত্র তালা শুণ্ঠী চুর্ব মাবা পুরতিন গুড় > তোলা মথিত করিয়া পাইবেন পরে ক্রিঞ্ছ ভক্ত প্রাক্রিবেন।

ম্রীচ চুৰ্চ তোলা ভগী চুৰ্হ তোলা কুড়চিছাল ৪ তোলা পুরাতন গুড় ১:তোলা মখিত করিয়া খাইবেন পরে

কিংগিৎ ভক্ত পথ্য।

কুটলাবলেই। কুড়চিছাল ২০০ পল ৬৪লের জলে পাক করিয়া শেষ ১৬লের থাকিবে ভাহাতে ২০পল চিনি দিয়া পুনঝার গুডের ন্যায় পাক সমাপন করিয়া ভাহাতে আ-কনাদিমূল বরাক্রান্তা বেলন্তুঠা শুণী ধাতকী পুপ্স মথা দা-ডেন্দ্ কলের ছাল আতইচ লোধ মোচরস রসাঞ্জন ধন্যা বেণানূল বালা, এই সকল অব্য স্থলাচুন করিয়া প্রত্যেকে ১ প্রা চুণ দিখা নাডিতে নাড়িতে শীক্তল ইইলে ১ পল মানু দিনা অবলেই করিবেন পারে শুক্ত না হয় এমত এক পাতে ব্যক্তিবেন প্রতাই ১ তোলা থাইবেন অনুপান বাদীজল, ইহাতে গৃহিনী মাতেই দূর হয় !

গঙ্গাধরত্ব। বিল্ছাল মোচরস আকনাদিয়ল ধ'ত-কীপুষ্প ধন্যা গঞ্জাদালীয়ল শুণ্ঠী মথ। আতইচ আকিঙ্গ লোধকাণ্ঠ দাড়িয়কলের ছাল কুড়চিছাল পুনা গন্ধক এই সকল দ্রব্য সমভাগে স্কাচ্ব বুজিক্রমে পারা গন্ধকে ক-জ্জনী সকল একল ২০ গুঞ্জা পরিমাণে প্রত্যেহ তক্রের দ-ছিত নিশ্রিত করিয়া খাইবেন, ইহাতে সকল গৃহিণী ও জ্বর সকল নন্ট হয়।

शृहिगी शरबस्य।

পারা গন্ধক লোহ দক্ষণন্থ সোহাগার এই হিল শুণ্ঠী তালিশপাতা মথা ধন্যা জীরা দৈল্ধকবণধাতকীপুপ্প আ-তইচ শুণ্ঠী ঝুল হরীতকী ভেলা তেলপাতা জার্ফল লবক্ষ দারু চিনি এনাইচ বিলুছাল বালা বেলশুঠা মেথি দিদ্ধি-পাতা, এই দকল তব্য দমভাগে স্ব্লচ্ব করিয়া ছাগ্যুক্ষের সহিত থলে পেষণ পূর্বক ২ রতি পরিমাণ বটি করিবেন, অনুপান ছাগ্যুক্ষ, এই ঔষধ স্থতিকাদিউদ্রাময় এবং গু-ল্যাদি নাশ করে।

গৃহিনী রোগের গুরুপাক জব্য মাত্রেই পথ্য নহে।পথ্য স্থা পুরাতন তণ্ডুলের আর ক্তা মৎস্যের ধ্যতক পটোল ডুয়ুর মানকচু পল্তা শুক্তল পাতিলেবু কাঁচাতেতুল পুরাতন তেতুল ইতি।

পানিতত বিটকা। কুকাজ শুদ্ধমন্ত্র বিড়ক্ছন এবাং-প্রতি ৮ তোলা চঞি শুন্তী পিপুল মরীচ হরীতকী বয়ড়া আসলা কেউরিয়ার মূল দন্তী মূল মথা পিপুল মূল চিতামূল ভাটীমূল মান মূল বন্য ওলারহতী মূল তেউড়ি মূল অড্ছ-ডিয়ারমূল পুননবামূল, এবাংগ্রন্তি ২তোলা গন্ধক সভোলা এই শুক্ল অব্য আদার রবে ৪ প্রহর মর্দন করিয়া হন্মতি. প্রিমাণ বটি করিবেন, অনুপান স্থাদার রস কিয়া কাঞ্জি অথবা দ্ধিরমাত পথা ষ্থাকেচি।

মগুর প্রকার। কর্মকারের দোকানে লৌহ পোড়া-ইতে কাঁকরের মত লৌহের মলা যদি ডেলার নাার হয় ছবে তাহাকে মগুর পুনঃ> পোড়াইয়া পুনঃ২ গোয়তে ভূবাইলে মগুর শুক্ত হয়.ইহাতে পুরাতন মগুর হইলে উৎ-রুষ্ট হয় জানিবেন।

নৃপবলভ। জায়কল লবক মুখা দারু চিনি এলাইচ গোহাগার থই হিল জীরা যমানী শুণ্ঠী দৈজব তেজপাতা
লৌইজন্র পারা গল্পক তামু এবাংপ্রতি > পল মরীচ চুর্ন
ও পল ছাগুরক্ষে অথবা আমলকীর রলে ৪ প্রছর খলে ম
দিন কার্য়া ৪ গুঞ্জা পরিমাণ বটি জনুপান ছাগুরুফ্ম কিয়া
পানের মুন্ন, এই উব্ধ দীঘকাল সেবনে গৃহিণী ঘটিত লদ্বন্ধ রোগ নইট হ্য়,পথ্য মৎদ্যের যুধ পুরাতন স্ক্র তন্তু,লের জন্ম ভক্ত।

মহাগলক।

পারা ১ ভোলা গল্পক ১:ভোলা পর্পটি ২ ভোলা জায়কল ২ ভোলা নিম্নপাতা আত্বতগুলোদকে উত্তন্ধপে
খলে সর্দন করিয়া যুগা ঝিনুকে পুরণ করিয়া পরে বাল্যকদলিপাতা বেন্টন দিয়া কোঠা দারা বন্ধ করিবে ভাষাতে
কর্দন লেপন করিয়া মৃত আগতে পাক করিবে বিটি করিবার ন্যায় ইইলে উত্তারণ করিয়া ১ রতি প্রিমাণ বটি করিবে অনুপান আ্তবতগুলোদক ও মধু এই ঔষধ দকলের উপ্রকারী হয় বিশেষ বালকের অধিক।

লবন্ধ-চতুঃসোম। জীরা সোছাগার এই জায়কল লবক্ষ সোহাগার এই উত্তমরপে করিবেন যে কাঁচা না থাকে কাঁচা থাকিলে বিপারীত হয় নিশ্চয় জানিবেন আর তিন জব্য খোলার ভর্জন করিয়া লইবেন ৪ এব্য সমানাংশ ল-ইয়া চূর্ণ একওঁ করিলে, চতুঃলোম হয়, শুরুপাম আভবস্ত- खुरैनाएक ख मधु खेषध २० द्रांड श्रादिमांग रमयन कदिर्यन, चेहा.. ठ गृहिनी द्रांग निइंखि इत्र ।

পঞ্চামৃত পর্নটি। শুদ্ধ গন্ধক ৮ তোলা শুদ্ধ পারা ৪ ভোলা লোহ ২ তোলা অভ ১ তোলা ভাষ ২ মাষা, এই मकन खरा थटन ८ थर इस महिन करिया शर्निय नाम करिएन उत्रथनिषि इश, এই उत्रथह शाहा शक्तक माधरनद विश्व, পারাগুদ্ধি অত্যে মৃতকুমারির রসে শোধন তৎপুরে তিফ-লার রসে শেষে চিতায়লের রস, গলক শুর্দ্ধি, আমলাসা গল্পক চূর্ব করিয়া ভীমরাজের র'স এক ভাবনা দিয়া পরে धे शक्षक भना इता जी मत्रांद्यत तरम निःद्यम क तिर्देश ३ গুঞ্জা পরিমাণ বটি অনুপান মধু, এই ঔষধ নানা রোগের স্হিত গৃছিণী রোগকে নফ করে বালক যুবা রুদ্ধ সকলের উপকারী হয়, এবং যদি অতিশয় শোথ থাকে তবে রো-शीटक नंदन जन जिट्दन मा, निर्कतन दक्ष जिट्दन आह द्वांश विः रमय थातं रहेल नवन कन करा, महाहेरक जांद्र यिन শোথ গৃহিণী বিষম জুরাদি প্রভৃতি অত্যন্ত অসাধ্যরোগ द्रোगी जाषृष इत उत्य डेक शर्नीं डेक अनुशास क्षम দিবন্সরতি দিতীর দিবস ২ রতি এই ৰূপ দিন প্রতি এক এক রাভরন্ধি মপ্তাহ পর্যান্ত সেবন করাইবেন, কিয়া পুন-বার প্রথমক্রমে আরো এক সপ্তাহ সেবন করাইবেন,পথ্য क्वित निक्किन इक अव अव, रेशांड दोशी यिन दोश হইতে মুক্ত নাহয় তবে জানিবেন যে রোগীর আয়ুঃ শেষ হইয়াছে, আর মহাস্বস্তারন আরম্ভ করিবেন না মহাম-স্তায়ন কলিযুগে তোড়াল ভন্তসতে করিবেন ঝটিভি কল-দায়ক হয় যদি সে মতেনা করিতে পারে তবে মহারন্ত্য-য়ন তুলদী প্ৰদান এবংগুগানাম তাহা ভক্তিমান বাক্ষণ প্ৰ-. ७० पाता कताहरलाई मकन कार्या निक्ति इस ब्रानिट्यम, धवर देवता श्रुक्षणिय स्वियानी स्रेश खन्ना ठाउतर छन्न मात्रुष्ठ कतिरान चाते द्वागी अस्टायन चात्रुष्ठ कतारेया. শুলাচারে উমধ লেবন করিবেন আর এই উবন গহিনী অ-ধিকারে লিখিত আছে বলিয়া যে কেবল গাঁহণী রোগ হ-ইতে রোগীকে মুক্ত করে এমত নহে কুটাদি সহারোগ হ-ইতে রোগিকে মুক্ত করে পর্লটী করিবার প্রকরণ ভোতল-ভত্তে এবং রনানিকু চিন্তামণি এন্থ লিখিরাছেন ভনমুনারে পাক করিবেন এবং গৃহিন্যাধিকারে লিখিতব্য আছে ভাহা দৃষ্টি করিয়া পাক করিবেন কিন্তু এই স্থানে গ্রন্থকার লিখেন নাই একারণ এই স্থানে লিখিতে পারিলাম না।

বিজয় পর্পটি। পারা হীরাজারার অভাবেবৈকান্ত মণি শোণা মক্তা তাম রূপা অভ্র এবাংপ্রতি ১ তোলা গল্পক ৭ তোলা এই সকল দ্রহা ভিন্ন২ খলে মর্দন করিয়া রম গল্পক কল্পলী পরে লকল দ্রহা একত করিবেক তৎপরে দ্বাদশ প্রহর খলে মর্দন করিয়া পর্পটি পাক করিবেন ইহাতেরোগ মাত্রেই বিমাশ হয়, আর পূর্ব্বোক্ত পঞ্চামৃত পর্পটি ১ রতি সেবন প্রথম দিবদে পরে ক্রমেং সপ্তদিবলে এক এক রতি করিয়া রন্দি করিবেন যে লিখিতে হইয়াছে ভাহার ন্যায় বিজয় পর্পটি সেবন ১ ধান্য পরিমাণে আরম্ভ করিয়া ক্রমেং রন্দ্রি করিবেন।

পঞ্চামত লোক। লোক তামু অভ্যান গঞ্জক, এবাং প্রতি ১ তোলা হরীতকা বর্ডা আমলকা ভুগী পিপুল ম-রীচ মুখা বিভঙ্গ চিতামল পিপুলমল চিরাতা দেবদার হরিতা দারহরিতা কুড যমানী জীরা রুক্জীরা শচিধনা চ্যিত, এবাংপ্রতি ১ তোলা শুজ মভূর সকলের অর্দ্রেক স-কল অব্য হুজ্ব করিবেন, সগন্ধকে কজ্জনী পরে নির্দ্রেল মধু পাক করিয়া চুলী হুইতে উত্তারণ করিবেন, পরে এই সকল অব্যের স্কাহর্ণ ঐ মধুতে দিয়া কর্মমের ন্যায় হইলে. ১০ বৃত্তি অনুমান, ভক্ষণ অনুপান মধু, পথ্য মংবার যুদ্ধ প্রতিন তণ্ড লৈর কর তক্ষ্ক, শুক্তিনির মুর্থাদেব্যার পূকা এবং ব্রহশাতির পূজা শভানুসারে করিয়া ঔষধ সেবন শার্ম্ভ করিবেন।

কঞ্চীবলেহ। কানছিড়া ১৬ দের তালমূল ১৬ পাল পাকার্য জ্বল ১৬ সের শেষ ৪ দের ঐ শেষজ্বলে ৮ পাল চিনি দিয়া পুনকার পাক করিবেন অবলেহের ন্যায় পাক হইলে তাহাতে বরাক্রান্তা থাতকীপুষ্পা আকনাদিয়ল বেল শুঠা মুথা পিপুল ইন্দ্র যব আতইচ যবক্রার সচল লবণ রসা জন মোচরদ এবাং প্রত্যেকে ২ তোলা ফুলচুর্ব দিয়া দন্দে শের বীচ মাডিবার মত তাভূ দ্বারা নাড়িবেন পারে কিঞি, ছুফ থাকিতে মধু ৪ পাল ইহাতে দিয়া কর্দমের ন্যায় করি-বেন ১০ রতি পারিমাণ রোগীকে দেবন করাইবেন অন্ধপান বাদি জল পাণ্য পূর্ববেক।

মন্ত্রনাদক। হরীতকী বর্ড়া আমলকী শুণ্ডী পিপুল মরীচ কাকড়াশ্লী কুড দৈহব ধন্যা শঠি তালিশপত কট কল নাগেশ্বর মেথি জীরা কৃষ জীরা যফিমধুর যমানী বন্যানী এবাংপ্রতি ২ তোলা শুল সবীজ দিজিপত্র ঈ্ষৎ ভর্জান করিয়া ৪০ ভোলা এই সকল অব্য স্ব্ল্যুর্গ করিয়া স্থলবাত্র ছাঁকিবে পরে এই সকল অব্য পাক হয় এমত জার মান মৃত চিনি মধ্ এই তিন অব্য সমভাগে থুলিতে পাক চড়াইবে পরে কিঞ্চিৎ পাক হইলে চুলা হইতে নামাইবে কিঞ্চিত্রক থাকিতে ঐ স্ক্রুর্গ সকল একত্র উহাতে দিয়া তাড় দারা পুর্বের ন্যায় নাড়িবেন কিঞ্চিৎ উক্ষ থাকিতে দার্লটিনি তেজপত্র বড় এলাইচবীজ কপুর এই সকল অব্য স্ক্রুর্গ প্রত্যুক্ত ২ তোলা ইহাতে দিয়া ১ ভোলা অথবা ৪০ রতি পরিমান মোদক করিবেন পুর্বের অনুমানে শেবন করিবেন ইহাতে সংগ্রহণ্টিনী আদি সকলগ্রহণী নাশহয়।

মিজি শোধন ঘথের-সহিত পাক করিলেই শুক হয়। বুহৎ শতাবরীমোদক। শভাবরী ভূমিকুমাণ্ড বাটাল্যা গোকুর চকুল্যা গোকুরবীল কুল্যাথাড়ারবীল আলকুণীর বীজ এবাংপ্রতি ৮ ভোলা মুক্তর্ন সিদ্ধিপত মুক্তর্ন ৮পল এই সকল চূর্ন একত করিয়া ইছাতে শহাবরীর রস ভূমিরুষাও রস এবং চুঞ্চ দিয়া মুক্ষণ করিবেন পরে ১।। সের
চিনি খোলায় পাক করিবেন ঐ পাকের সহিত ঐ মুক্ষিত
জ্ব্য দিবেন কিঞ্ছিৎ বিলয়ে মোদকের উপযুক্ত পাক হইতে
কিঞ্জিৎ কৃষ্ণতিল চূর্ন উছাতে দিয়া চুলা হইতে নামাইবেন
পরে শুগ্রী পিপুল মরীচ দারুচিনি তেজপাতা এলাইচ
কৈন্ত্রর ধন্যা জরিত্রী জায়কল বালা জীরা কৃষ্ণজীরা বন্দর
কুট মুখা মন্ত্রি পুরামাংশী তালিশপাতা নাগদানাপাতা
গাঠ্যালা হরীতকী শুল্কা চ্ঞি দেবদারু প্রিয়ম্ব লবক শৈ
লক্ত বক্তজ্বের কল অগুরু এষাংপ্রতি ২ তোলা এই সন
কল অব্য স্লাচ্ন ঐ পাকে দিয়া তাজ্বারা নাডিতেই মো
দকের যোগ্য হইলে তাহাতে ত্রিকচ্ চুর্ন ও কিঞ্জিৎ কপূর্ব দিয়া অর্জতোলা পরিমাণে মোদক করিবেন ইহাতে
অসাধ্য গৃহিনী ও বিষমজ্বর নই হয়।

মহাকানেশ্ব নোদক। অদ্র কুড কটকল অশ্বণকা গুলপ্প নেথি মোচরল ভূমিকুমাণ্ড তালমূলী গোলুরী নিজ শতনূলী কেণ্ডরিয়া যমানী তালাল্থী ধন্যা গোরক চালুলা তিল মন্ত্রি জায়ফল গৈছব বামনহাটী কাকড়াশূলী শুঙী পিপুলমরীচ জীয়া ক্লজারা চিহামূল গুড়বক তেল পত্র এলাইচ নাগেশ্বর পুননবাস্থন গজপিপুল জাক্ষা শটি বাসতমূল সিমুলমূল হরীহকী বর্ড়া আমলকী আলকুশীবীজ এবাংপ্রভি ১ তোলা এই সকল জব্যের চুর্নেতে মত ইইবে সিজিপত্র চুর্ন তত্ত লইবে সকলের সমান চিনি তাহাতে যত হইবে তাহার দিশুল চিনি পাক করিয়া চুলী হ্রতে উভারণ করিয়া পুর্বোক্ত প্রকারে ভাত, ঘারায় মিজিত, করিবন পরে ১ ভোলা কিয়া ২ ভোলা পরিমাণে শোদক করিয়া রোগীকে সেবন করাইবেন পার ভোলনের পুর্বোক্ত স্থার ভোলনের পুর্বোক্ত প্রারী ব্যোগীকে সেবন করাইবেন পার ভোলনের পুর্বোক্ত স্বারী ব্যোগীকে সেবন করাইবেন পার ভোলনের পুর্বোক্ত স্থার ভোলনের প্রব্যার স্থাকী করাইবেন পার ভোলনের প্রব্যা

উষণ দেবনের বিধি আছে এ উষধ যদি সহ্য না হয় তবে ভোজনের পরেতে সেবনের বিধি আছে আর অন্যং গ্রন্থে কহেন হহৎ কামেশ্বর মোদক কটফলাদি সকল অব্যেতে যত হইবে তাহার যোডশাংশের একাংশ অন্ত দিবেন এবং অন্তের অর্দ্ধেক কজলী অার যথালাভমতে মৃত ও মধু দিরা মোদক কর্ত্বর আর জীলোকের এবং বালকের এই উষধ করণের আবেশ্যক নাই কেবল পুরুষের হুর্নমাদি গৃহিণী রোগে আবিশ্যক আছে ভ্রাত হইবেন।

লবকাদি চুৰ্। লবক্ষাতইচ মুখা বেলকঠা আকন্যাদি যুল মোচরুস জীরা ধাতকীপুষ্প লোধ ইন্দ্রয়ব বালা ধন্যা ষেতপুনা কাকড়াশৃঙ্গী পিপুল বরাক্রান্তা যবক্ষার সৈন্ধব রুসাঞ্জন এই সকল সমভাগে স্কাচূর্ব একত করিয়া সেবন ২০ রভি অথবা ১০ রতি অনুপান তণ্ডাদক এই ঔষধ বালক রন্ধ আর জ্রী লোকের অতিশয় উণকারী জানিবেন এবং এই ঔষধে আত্তইচ শৌধন করিবেন, ভাহার প্রকরণ গোময়ের সহিত সিদ্ধ করিয়া শুদ্ধ করিবে পরে চূণ করিবে জাতিকলাতা। শুদ্ধরু ৪ মাধা ওদ্ধ গন্ধক ৪ মাধা জায়-ফল মোচরুদ মুখা দোগাগার থই আতইচ জীরামরীচ এষা প্রতি ৪ মাবা শৃঙ্গীবিষ ১ মাষা এই সকল জব্য স্কল-চুৰ্ ক্রিয়া তাহাতে ভাবনা আমুপতে রুল ৪ মাধা বংশপত রস ৪ সাবা কেত্রিয়ার রস দাভ্রপাতার রস আকনাদি পাতার রস ভীমরাজপাতার রস এই সকল প্রকার রস ঐ এক ত্রেক চূর্ব সকলেতে দিয়া ৪ প্রছর ব্লৌডের রাণিবেন এবং ৪ প্রচর শিশিরে রাখিবেন তাহার পর খলে মর্দন করিয়া ৪ রতি পরিমাণ বটি করিবেন অনুপান আতপভঞ্লো-मक अ मधु देर्श टि प्रश्माधा श्रिनी द्रांश निहाँ इर वदः .ওলাউঠা রোগ নাশ হয়।

় নাথিকাচ্ব। চিতামূল হ্রীতকী ব্র্ডা আমলকী শুণ্ঠী পিপুল মরীচ বিড্ল হ্রিডা দায়হ্রিডা ভেলা ব্যানী হিঞ্ বিটলবণ নৈস্ত্রন্ত্রণ মন্ত্রন্ত্রণ পালালবণ বাল বচ কুড়ুম্থা গল্পক অন্ত্র ঘাকার শাচিক্ষার লোলাগার থই বন্ধ্যানী পারা গল্পপিল এই সকল জন্য সমান চুর্ণ সম্ম দায়ে যত চুর্গ হইবে তালার সমান সিল্পি পত্তচুর্গ সকল চুর্গ খলে মিন্ডিত করিয়া কাঁচের পাজে রাখিবেন সেবন ১০ রতি অনুপান ভণ্ডুলোদক এবং মধু আর ঘ্যানী ও বন-ম্যানীর পরিবর্তে জীরা এবং ক্লজীরা এই ঔষধ অতি বীষ্যবান অতএব রোগীর বলাবল বিচ্বেটনার যাজান্যুনা-ধিক্য করিয়া দিবেন।

ইতি সারকৌমুদ্যাং সংগ্রহ গৃহিণ্যাধিকার সমাপ্তঃ।

मर्भवर ।

নাগরাদি চূর্। শুণ্ঠী অতইচ মুখা ধাতকীপুষ্পা রুদা জন কুড়চিম্থন ও ছাল ইন্দ্রযাব বেল ঠো আকন।দিম্ল কটকী এবাংপ্রতি সমচূর্ণ ভদ্দণ ৪ মাবা অনুপান তত্তু লোদক > ছটাক মধু ৪ মাবা ইহাতে গৃহিণী রুক্তদোষ পিত্র ছুক্ট অর্মাণোথ গুহুশূল নাশ হয়।

রহজাট্ক্যাদি চুর্। ধাতকীপুষ্পা আতইচ মুখা বরাক্রান্থামূল বেলস্থা ইক্রেয়ব পাঠ্যুল জায়ফল লোধছাল বালা
খন্যা জীয়া বহেড়া মোচরস ক্রফজীরা খেতধুনা এষাংপ্রতি
সকলচ্র্ব ভক্ষণ ৪ মাবা অনুপান ছাগ্যুক্ত উফ লইবে আর
মধু ২ মাবা।

ষণ্পধাতৃক্যাদি চুর্। ধাতকীপুষ্প বালা বেলং ঠা ইন্দ্রয়ব লোধ ধন্যা সমভাগে চুর্ন অনুপান পূর্ফোজ লবঙ্গাদি চুর্ন লবঙ্গ জীরা গন্ধক নৈন্ধব এলাইচ গুড়্যক তেজপুত্র বন্ধ-মানী মুখা ত্রিকটু তিকলা শুল্কা আক্নাদি মূল চিরাতা গোন্ধর জয়িত্রী জায়কল দারুহারতা বিড়ঙ্গ রক্তচন্দন মুর্গা-দ্ল ঘবন্দার শুর্গী মেথি লোগাগা কৃষ্ণজীরা এঘা প্রত্যাত সমচ্ছিত্রকণ ই মাধা অনুপান উল্লেক্ট ইহাতে আমবাত থাত ভয়ানক গৃহিণা শুল বিশুচিকা কামলা পাঞ্ কঠোর প্লীহা মন্দাগ্রি ঐ সকল নম্ট করে।

গৃহিণী গভেত্রবা কা। শোধিত পারা শোধিত অন্ত গক্ষক লোহত্য অন্তত্য বঙ্গত্য জান্ফল জারিত্রী লবজ
চিতায়ল জারা মুখা সৈজাব বেলক টা মেথি মোচরম ধাতকীপুপা শুলকা শুণ্ডী গুড়ছক বুজ্চনান আফিঙ্গ আতইচ
ধন্যা ইত্রেয়ৰ বরাকান্তা দাভিয়পুপ্পা পাঠায়ল সোহাগা
কট্কী শ্বেতবুনা জোইচ পানমৌরি জটামাংসী লোধছাল
বালা রসাঞ্জন। এষাংপ্রতি সমচ্ব বুড্চিছালের রমে ভাবনা পঞ্জন্তা পরিমাণ বান অনুপান ভাগ্রম ইহাতে
নানা প্রকার গতিনী বক্তাতিসার ও নানা প্রকার অভিসার
শুল দাহ নাশ হয়।

জীরকাদি চুর্ব। জীরা সোহাগা মুগা পাঠানল বেলশ্ঠা ধন্যা ব'লা শল্ফা দাডিয়ভাল কট্রা বরাক্রান্থাল ধা-তকী পুষ্প তিবে চূ ত্রিলাতক মোচরদইন্দ্রব শুষ্ঠী গল্পক অভ্রতক্ষ শোধিত পারা এধাংপ্রতি সমতাগে যত জাবকল তত সকল স্থাচুর তেকত্র করিষা ভ্রমণ ৪ মাধা অনুপান ভঞ্জোদক। এই ঔষধ সেবন মাত্রে ড্লাধা গহিনী নানা প্রকার অতিদার ও রক্তাতিসার কামলা পাঞ্জাগমান্দ্য নাশ হয়।

রহজ্জাতিকলাদি চুন। জাতিকল লবস জীরা লোহাগা ধনা। শুণী খেতধুনা কেন্দু শঠি লোধছাল ইন্দ্রয়ব মুথা বালা অজ্জন্ম ধাতকীপুষ্পা বরাক্রান্তাহাল শতস্লি জ্ঞল্ফা মোচরস থানির দৈল্লব কুড় আভহচ রাথালস্পায়ল তাল-খুলী কুডচিমূল ছাল এযাংপ্রতি সমজাগ চুন করিবে ছক্ষণ ৪ নাম। অনুপান মধু ইহাতে সকল রোগ নই হয় অতি ভ্রানক গৃহিণী নানাব্লাতিসার শোথ জ্বর পৃথক সালি-পাত বন্দ্রসালিপাত রক্তশূল নাশা হ্র।

बन्भगवकामि हुन । चवक बाम्बह्रें मुशा विकार है। शाहित

হল তালহলী জীরা ধাতকীপুলা লোধছাল ইন্দ্রয়ৰ বালা ধন্যা শেতধুনা কাঁকড়াশ্লি পিপুল শুণ্ঠী বরাকান্তাহল লোচরস আফিল গৈল্পব রসাঞ্জন এবাং প্রতি সমভাগ চুর্ন ভক্ষণ ৪ মাষা অনুপান ধাতুবিশেষ এই উষধ গৃহিণী অতি-সার মন্দার্গি অক্লচি শোথ নই হয়।

মার্কণ্ডের চুর্। শোধিত পারা শোধিত গদ্ধক শোধিত হিঙ্গুল নোহাগা তিকটু জায়কল লবন্ধ তেজপত এলাইচ বীজ মুথা চিতায়ল গজপিপুল শুগু ী বালা অভ্ৰত্ম ধাত-কীপুপা আতইচ সজিনাজাটা তাল্যুলি আফিন্ধ পালাশ বীজ এবাংপ্রতি সমচুর্ন ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান চিনির্জল অতিমার ছাগহুক ইছাতে সংগ্রহ গহিণী নাশ করে এবং ধাতু ও বলর্ছিক করে আরে অগ্নুর্জি হয়।

ধারাধুর চুব। শোধিত হিঙ্গুল দেবদারু শুণ্ঠী বালা জায় কন আতইচ লবজ পাঠায়ল ধাতকী পুপা বেলশ্রঠা কেন্দু শঠি থদিরপত্র মুথা হরিজা দারুহরিজা ইক্রেয়ব পিপুল এবাংপ্রতি সম চুব সিদ্ধিপত্র রদে ভাবনা সপ্তবার দিবে ভাকণ ৪ মাধা অনুপান জল ইহাতে গৃহিণী রোগ নিবারণ হয়।

বাল্যশকাসন নোদক।

চিতালল তিকলা তিকটু এলাইচ নাগেশ্বর জীরা বল-ভলা বৈণ্ক মুখা যামানী বিলয়মানী দৈলাব মেথি কৃত খন্যা শুল্কা সোহাগা এবাংপ্রতি সম চুর্ণ শোধিত।লজি-পত্র চুর্ব নকলের অর্থেক সর্বাদ্ধিণ চিনি মোদক ৮ মাধা পার্নাণ ভক্ষণ প্রাভঃকালে এবং সায় কালে অনুপান কল ইহাতে সংগ্রহ গৃহিণী জ্বরাতিসার এবং স্বাভিসার জ্বিমান্দা নট করে।

জীয়কাদি মোদক। জীরা ত্রিক্ষনা মথা গুলঞ্চের পাল অভ্ৰত্য নাগেশ্বর তেজপত গুড়হক এলাইচ লবক কৈত-পাপিতা বেণায়ল- ধন্যা বালা পিশুল শুঠী চিভায়ল। এষাংপ্রতি সমভাগ সকলের সমান জীরা এই সকল চূর্ণ করিবে সকল চূর্বের দ্বিগুণ চিনি মোদক ৮ মাধা মৃত মধু দ্বারা বান্ধিবে অনুপান জল ইহাতে সংগ্রহ গৃহিণী ও জীর্ণ জ্বর নফ করে আর বল এবং বর্ণ হৃদ্ধি করে।

রহৎ লবকাদি মোদক। লবক পিপুল শুণী জীরামরীচ গলপিপুল রক্তচলন বালা লটা মাংসী সরলকার্গ লৈলক্ষ নাশেশ্বর আতইচ কুড় শেতচলন বিরুলা শুল্ফা ত্রিফলা ভুরুজাফল ভালিশপত বুশস্ল তিজাতক ভূমিকু আণ্ড
তালমল পাঠায়ল বরাকান্ডামূল লৌহভন্ম অভ্রভন্ম লয়িত্রী
লায়ফল মুথা অগৌর কৃষ্ণদ্দীরা শ্বেতবুনা ফৈরুব রামাধন্যা
পালকার্গ গাঠালো মূল পিপুলমূল হরিদ্রা বংশলোচন ধাতুকী পূর্পা মোচরস খামলতা মহলফল ইন্দ্রয়ব কর্ফ্রা।
এবাংপ্রতি সমভাগে যত তালার চতুর্থ শের একাংশ জীরা
সর্ববিশুল শকরা মোদক ৮ মাঘা পরিমান অনুপান ধাতু
বিশেষ ইহাতে নানাবর্গ অতিসার সংগ্রহ গৃহিনী রক্ত পিন্ত
শ্বেতপিত্র বমি দাহ অরুচি অগ্নানন্য অলীর্গ বিষমজ্বর
প্রন্থেই কামলা পাঞ্জু অম্লাপিত্র শূল তিদোষ্পর গৃহিনী
রক্তাতিসার শূল এই সকল নম্ট করে।

পঞ্চায়ত প্রতি। শোধিত পাশ্লা শোধিত গল্পক অভ্ৰত্ম লৌহভঙ্ম আফিঙ্গ এয়াংপ্রতি সমভাগে পর্গটি করিবেন অ-নুপান ধাতুবিশেষ ইহাতে সংগ্রহ গৃহিণী নাশ হয়।

শকাল মৃত্যুহরণ বটিকা। হিন্ধুল শৃন্সীবিষ শ্বৰ্ভন্ম লোহ ভন্ম হরিতালভন্ম বঙ্গভন্ম গোহাগা দারুমোচ আকিঙ্গজীরা এই সকল জব্য শোধিত করিয়া সমভাগে চুর্ব করিয়া জা-বনা দিবেন ভাবনা যথা – বেগুণপত্র রল ভীমরাজ্বল কৈণ্ড রিয়ার রল ছাগৃহক্ষে মর্দ্ধন অথবা কেবল ছাগৃহজ্যে ভাবনা দিবেন যবার্দ্ধ পরিশাণ বটি অনুপান ছাগৃহজ্যে পথ্য হুকায় ইহাতে অগ্নিমান্য শোথ গুলা শূল সংগ্রহ গৃহিনী জ্বরাতি- সার কামলা পালু এই সকল রোগ মন্ত হয় এবং শুক্র ও বল রন্ধি করে।

इंडि पर्नर्ग मः अइ गृहिन्मिधकात ममार्थः।

স্থতিকা গৃহিণী চিকিৎসা।

. চিভামূলি দুর্গ। ধন্যা বালা সোমরাজ জৈয়েন্ঠমর সৈত্বব প্রকান্ঠ দেবদ। জুলা কাগেশর প্রিভাতক কাক্ডাশৃঙ্গী জটামংনী জিমদ হরিডা দাক্লহরিডা ল্ভাক্স্তুরী দারু-চিনি অগৌর রেণুক বিরুপা লালুকা মক্তচন্দন পানমৌরী জীলা রুক্জীবা কাগুলি কপুর শুল্ফা তিফা। গোল্ডবীজ জীবন্তী জাম্কল সোহাগা বেল্ডিয়া দাড়িয়ভাল আফঙ্গ চিমুড্মূল স্থলি মালুক লবঙ্গ পাঠামূল মোচর্ম আলকুশি বিজ্য়াবীজ শ্বেপ্রমা থদির মুখা এষাংপ্রতি সমূর্ণি ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান জল ইছাতে মুভিকাগ্রিণী শুল নানাবর্ণ অভিমার সংগ্রহণ্ডিগী শোথ অগ্নিমান্তা অক্লচি এই দকল নতি করে।

শোধিত পারা শোধিত গল্পক শোধিত হরিতাল শোণ
গিত হিলুল শোধিত শৃঙ্গি য অভ্যন্ম লোইংলা বঙ্গতান
কড়িভলম শোধিত সোহাগা জায়িতী জায়কল লবল জীরা থ
দির মোচরল তিকটু তিফল। এযাংপ্রতি যত আফিল তত
লকল চূর্ব করিবে পরে ভাবনা কাকডাশৃলী রল আকনাদি
খূলরল ধৃষ্টুরামূল রল গল্পাদালী রল এবাং প্রত্যেকে
অকবার ভাবনা দিবে মটরাক্ষতি বটি অন্পান এলাইচের
খোলা পন্যা শুণী আমকেশি লবল জায়কল ইহাতে নানা
প্রকার মৃতিকাগহিণী ও ঘলুজগহিণী লাগ্নিপাভগহিণী নট
হয় আর যমের বাঞ্জিত নাশজরে ও বাহ্ন নভাশ
করে এবং স্থীলোকের সন্তানের চিরজীবিতা হয়েন।

নৃপাবলভারস। হিচ্ছালন্ত পারা গগণগন্ধক অভ্রভন্ম তা-বিশ্বিত নৌহভন্ম সৈত্ত্বন হথা ধন্যা ধাতকীপুষ্পা বেলস্কা আত্ইচ শুণী ত্রিকনা রক্তচননৈ খেতচনান তেল্পত জায় কল লবক এলাইচ গুড়বক বালা মেথি ভালবীল চিতামূল কড়িভন্ম সোহাগাভন্ম মোচরস পিপুলকুল হরীতকী চিড়-ক্লুন্থল মরীচ পাঠামূল কেন্দ্র শঠি ইন্দ্রেয় এবা প্রতি সম ভাগ সকলের সমান আফিল সকল শোধিত চুর্ব করিবে পোন্ডরসে মর্দ্দন করিয়া ১ গুলা পরিমাণ বটি করিবে অন্ত পান ধাতু বিশেষ এই উবধ দেবন মাত্রে হন্তর স্থতিকা নানাবর্ণ অভিসার সংগ্রহ গহিণী অমুপিত গহিণী শুল রক্ত বেগ সাধ্যাসাধ্য জার শোথ পাণ্ডু কামলা প্রীহা নাশ হয় আর এই উবধ ক্ষীণেতে পুন্তিকর হয় ও জীলোকের ন্তনে হন্ধকর হয়।

विनामि ह्व।

বেলন্ডটা লবক জীরা রেণুক সৈত্রাব চ হুজাতী যমানী শঠি ত্রিকলা শূল্কা মৌরী মুখা ত্রিকটু হিলুল ফুলহরী তকী কজলী আফিল জারত্রী জার্কল হরিজা দারুহরিজা বেণা-মূল জাটামাংলী শ্বেতচন্দন রক্তচন্দন জ্যেপ্তময় ভূষু,রক্তর অভ্যত্ম মুখা লৌহভন্ম চিতামূল তালিশপত্র থদির পোশ্ত বীজ তালমূলী পাঠামূল মোচরন কেন্দ্র শঠি ইন্দ্রয়ব শ্বেত ধুনা এবাংপ্রতি যভ নিদ্ধিপত্র শুণ্ঠী তত সকলম্ব করিবে ভক্ষণ মমাধা অনুপান উঞ্জল ইহাতে,নানাপ্রকার মুতিকা নানাপ্রকার অজীব নানাপ্রকার অভিসার অমুপিভ শ্রান্ন মানদ্য সংগ্রহ গৃহিণী অর্মাণ্ডাথ পান্তু নাশ হয়।

নাঘিকা চূর্ব। চিতানুল বিফলা বিকটু বিড়ঙ্গ হরিতা দারু হরিতা ভেলা যমানী হিঙ্গু বিটলবন সৈল্পবলবন্ সচললবন্দ গৃহধূন বচ কুড় মুখা অভ্যত্ম গ্রাক যবক্ষার নাচিক্ষার বন যবানী পারা গজপিপুল হল এবাৎপ্রাত সমভাগে যত শোধিত বিজয়াপত তত সকল চুর্ব করিবে ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপ্রান জল ইহাতে মন্দাগ্রিকাল গ্রীহা পান্ত, প্রমেহ শোথ বিষ্টান্ত সংগ্রহ গৃহিনী নানাতিসার সর্বা প্রকার শূল আমবাত গদ ছদি হাতকাকুল নট হয় ইহাতে পথ্য কাঞ্জি দধি অম্ল হকা

স্তিকাক শর্মায়ন। ছব্ভন্ম বক্তন্ম পাগা গন্ধক জীরা হরিতাল হিল্ল শ্লিবিষ লোহভন্ম ধুরুরাবীজ শন্ধ বিষ সোহাগা এষাংপ্রতি সমভাগ শোধন করিবে সকলের অ-কোক আফিল সকল চুব্ করিয়া ধুতুরা মূলরসে পোষণ ক-রিবে পরে শুদ্ধ করিয়া সরিষা পরিমাণ বটি বাদ্ধিবে ভন্দণ ই রতি অনুপান হক্ষ পথ্য হুঝার উহাতে ভয়ানক স্থতিকা গর্ভস্তিকা প্রস্থুতা সংগ্রহ গৃহিণী জ্বরণতিসার অতিসার শোথ অগ্নিমান্তা অমুশূল কান শ্রাম নইট হয়। ইতি দর্পণে স্তিকাতিসার সমাপ্তঃ।

গৰ্ভ স্থতিকা 1

রহলবঙ্গাদি চূর্ব। ধন্যা আত্ইচ জিক টু লৈক্ষর হবুষ
কুড় ককল জীরা জায়িল জায়কল জিকলা সচললবন বিটলবণ ধাতকীপুষ্পা রসাজন জিজাতক তালিশপত নাগেশ্বর
বেলহঠা পিপুল্মল বন্যমানী মোচর্ম সোহাগা যবক্ষার
মুখা বালা কুড়চিবীজ কুড়চিছাল কটকী নাটাকল জটা–
মাংনী লেমূবীজ দাড়িশ্ববিজ চিতাম্ল বিড়ম্ম কেন্দু শঠি
পাঠামূল অভ্যন্ম লোহ্ডল হব্ডল বেখং প্রতি সমন্তাগেশ্ব, কবিল তত সকল চূর্ব করিবে ভক্ষণ ৪ মাঝা অনুপান
লল ইহাতে গরিণীর স্থিকা নানাবর্ব আত্সার অনুপাহি
আগ্নান্য অকচি অমুশ্ল কুজিশ্ল জীলোকের এই সকল
নম্ব করে।

মেথিমোদ্ক।

ত্তিকলা মুখা জীরা রুফজীরা ধন্যা কর্মল কুড় কাঁকড়াশুলী ষমানী সৈন্ধব বচ তালিখপত নাশেশর তেজ পত গুড়বক জাফলল এলাইচ এষাংপ্রতি সমতাগে যত শোধিত মেথি তত সকল সমতাগে চূর্ব করিবে পুলাতন গুড়বারা ৮ নামা পরিমাণ যোদক বান্ধিবে উষ্ধ সেবন কেবল প্রাভঃকালে অনুপান হক্ষ দাগ্ন করিলে আমবাত নই করে আর মৃত মধু অনুপানে ঔষধ দেবন করিলে আগদীপ্তি করে গর্ভিণীর স্তিকানই হয় এবং বল ও বর্ণ য়্যান্ধি করে আর গর্ভে সন্থান রক্ষা-হয়।

মদনমোদক। ত্রিকটু ত্রিকলা কাঁকডাশুলি কুড সৈজ্ব ধন্যা শঠি তালিশ পত্র কর্মল নাগেশ্বর বন্ধমানী মমানী মন্তিমধু মেথি জীরা ক্রফজীরা ত্রিজাতক ত্রিমদ একাংপ্রতি দমভাগে যত শোধিত বিজয়াপত্র তন্ত সকল চুর্ণ করিবে দকলের দ্বিগুণ চিনি মোদক ৮ মাবা পরিমাণে বান্ধিবেন ইহার পুরের কপুর এলাইচ গুড়বক তেজপাতা এবাংপ্রতি ১ তোলা চুর্ণ দিবেন ব্লিক্ষভাণ্ডে মোদক রাখিবেন ঔষধ দেবন এক সন্ধ্যা অথবা হই সন্ধ্যা অনুপান জল। ইহাতে গর্ত্তিনীর সতিকা নাশ হয় এবং সর্ব্ধ রোগ নাশক ইহাতে জানিবেন আর অণ্যুমানদ্য কাস সকল প্রকার শূল এই স-কল রোগের নিঃশেষ হয় এবং এই ঔষ্ধ সেবন করিলে বৃদ্ধ যুবার ন্যায় হয়।

ষ্পামেথিমোদক। তিকটু তিফলা কাঁকডাশৃলি ধন্যা জানিত্বী লৈন্ধব তালিশপএ নাগেশ্বর কুড কটকল এলাইচ গুড় স্বক ভেলপাতা এবাংপ্রতি যত শোধিত মেথি তত সকল চুর্গ করিবে সকলের সমান চিনি স্থত মধু দিয়া মোদক পাকাইবে ৮ মাবা পারিমাণ সেবন একসন্ধ্যা অথবা ছুই সন্ধ্যা অন্মপান উষণ্ড ছুন্ধ ইহাতে অতিসার স্থতিকা গৃছিণী মন্দাগ্রিল্বর শূল এিদোব অমুপিতে এই সকল নাশহয় এবং এই ঔষধ ক্ষীণেতে পুক্তি কর হয়।

জীলোকের গর্ভ ইইয়া যদি ঘাদশমাস পর্যান্ত প্রতি-মাসে গর্ত্তে বেদনা এবং স্থতিকা হয় তাহার নিবারক ঔষধ প্রথম মাসাবধি ক্রমে লিখিতেছি।

ু প্রকার্থ রক্তচন্দন চঞি জ্যেষ্ঠমধু স্থল্ধি শাল্ক একাংপ্রতি ২ নাধা ছঞ্চে পেষ্ণ করিয়া চিনি মধু প্রক্রেপ দিয়া দেবৰ করাইবে এই যুক্তিয়োগে প্রথম মাদের গর্ত্ত বে দুনা শূল অমু কামলা স্থতিকা অণিমান্দ্য নাশ করে।

২ থুলকুঁ জিরছল ছাজ পোৰণ করিয়া অগ্নিতে উষ্ণ করিয়া পাইবে ইহাতে ঘিতীয় মানের গর্ত্ত বেদনী এবং প্রথম মা-লোজ ঔষধ নিবারিত ব্যাধি সকলের নাশ হয়।

৩ অমুয়লের ছাল কথবেলের ছার্কিএই হয়ের রস চিনি মধু হক্ষের সহিত উফ করিয়া খাইবে ইহাতে তিন মাসের গুরুবেদনা নাশ হয় আর পূর্বোজ রোগ নির্ভি হয় i

৪ ইম্রস নারিকেলোদক একত করিয়া উষ্ণ করিয়া পরে: পান করিবে ইছাতে ভর্তরোগ নাশ হয়।

ও পদ্মহল স্বীজ্কদলী ছুপ্নে পেষ্প করিয়া কিঞ্ছিৎ উষ্ণ খাকিতে স্বেন করিবে ইহাতে পূর্কোজ রোগ বিনাশ হয়।

ভ তালমূল পাল্যুল চন্দন ছথে পোষণ করিয়া খাইরে এই মুফিযোগে ষঠ মানীয় গর্ত্তরোগ নিঃশেষ হয়।

ণ এরগুমূল রস ভূমিকুমাগুমূল রস এই ছুই প্রকার রস এ-করে পান করিলে সপ্তম মাসীয় গর্ভরোগ নির্ভি হয় এবং মঞ্চল হয়।

৮ কেরুক রস মধু চিনির সহিত পান করিলে গর্ত্তরোগ নির্ভি হইয়া মুখ প্রাপ্তি হয়।

৯ অনস্কর্ল র্জি। দারুক রসে পেষণ করিয়া সেবন ক-ব্লিলে নবম মাদীয় গর্ভরোগ নফ হয়।

- ১০ দাভিদ্ব থিফলা মৃত ছঞ্চার্শর একতে পেষ্ণ করিয়া খাইলে দশম মাসীয় গর্ভরোগ বিনাশ হয়।

১১ অশ্বগন্ধামূল তক্তের সহিত পান করিলে একাদশু মা-শীয় গর্ভবোগ বিমুজা হইয়া যুপ্রস্থা হয়েন।

১২ স্থতের সহিত চম্পক মিশ্রিত করিয়া গ্রা দুজের সমতাগে পান করিলে ম্প্রস্বা হয়েন এবং গর্ভরোগ মা-তেই থাকে না।

🗎 ু ইতি দপণে গৃহিণ্যাধিকার চিকিৎসা সুমাপ্ত।

भादरको भूनी ।

অর্শাধিকার।

অন্বোগ মলমারে তিন প্রকার বলি হয়, অন্তবলৈ মধ্য বলি বাছবলি তাহার মধ্যে যাহার বাছবলি হইয়। থাকে তাহার প্রলেপ, গেঁচে হরিদ্রা হল্লচ্র্ন করিয়া ফুল বস্ত্রে ছাকিয়া সেই চুর্নে মন্সাসিজের আঠা দিয়া মলমারে প্র লেপ দিবে এবং মলমারে অগ্রির তাপ দিবেন এক সপ্তাহ কিয়া ছই সপ্তাহ এই প্রকার চিকিৎসা করিলে নিঃশেষ রোগ হইতে মুক্ত হট্বেন, অর্শরোগের পথ্য, মবনীত মৃত ক্ষতিল পানীকলের আটার ক্লি পুরাতন ফুল তগুলের অম ক্ষত মৎস্যের বৃষ তরকারি ওল মানকচু মুলা পটোল ভুষুর তক্র ইত্যাদি পথ্য জানিবেন তগুল মটরাদি ভর্জন এবং পচা মস্য কদাচ থাইবেন না ইহাতে অভ্যন্ত রোগ রুদ্ধি হয় জানিবেন।

যোষালকল স্থা চূর্ণ করিয়া স্থা বুজে ছাঁকিয়া পুঁ-টুলি করিবেন পারে বলিতে লাগে এই প্রকারে মলছারে ঘুর্বণ করিবেন।

পুনকার ঐ ঘোষাল স্থা চূর্ব কিঞ্ছিৎ গুড় দিয়া বক্ত খণ্ডে মাখাইয়া বাতি করিবে সেই বাতি মলদারে প্রবেশ করাইয়া রাখিবে ভাছাতে তিন প্রকার বলির প্রতিকার হয়।

নকট্কীর মূলের ছাল যোল দিয়া অথবা কাঞ্জি দিয়া পেষণ করিয়া মলদারে প্রলেপ দিলেন, এবং নকটকীর মূলের ছাল আর বিটলন্দ তক্রদারা পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে প্রতিকার হয়,এবং পূর্ব্বোজ অব্যে বনষমানী পেষণ করিয়াও প্রলেপ দিবেন।

আর নকট্কীর মূলের ছাল স্থা চূর্ণ হরীতকী সুন্ম চূর্ণ গুড় দিয়া খাইবেন, অথবা কেবল হরীতকী চুর্ণ গুড় দিয়া খাইবেন এবং বলিতে প্রলেপ দিবেন।

প্রাণদাগুড়িকা। ওঠী ও পল মরীচ ৪ পল পিপুর ২

পল চঞি ১ পল তালিপপাতা ১ পল নাগেশ্বর ৪ তোলা পিপুলমূল ২ পল তেলপাতা ১ তোলা গুলরাটি এলাইচ্ বীল ২ তোলা দারুচিনি ১:তালা বেণামূল ২তোলা পুরতন গুড় ৩ পল, যদি পিতাধিক্য থাকে তবে শুণী স্থানে হরী-ভকী দিবেন, এই সকল জব্য চূর্ব করিবে তাহাতে যত হ-ইবে তাহার চত্ত্রণ চিনি পাক করিয়া চুলা হইতে নামা-ইয়া তাহাতে ঐ চূর্ব দিয়া তাড় দ্বারা নাড়িতে২ যথন কিঞ্জিৎ উফ থাকিবে তথন ২০ রতি প্রিমাণ গুড়িকা বা-ক্লিবে, এই উবধ প্রাতঃকালে সেবন ক্রিয়া কিঞ্জিৎ কাল বিলয়ে বাদি শীতল জল পান করিবে, ইহাতে অল সংযুক্ত প্রীহা পাণ্ড শ্বাস এই রোগ নির্তি হয়।

শূরণমোদক। মরীচ ২ পল শুণ্ঠী ২ পল চিতামূল ৪ প্রান্তিক ওল ৪পল এই সকল অব্যের চুর্ণ যত হইবে তা-হার সমান পুরাতন গুড় এই সকল অব্য একতে পাক ক-রিয়া চুলা হুইতে নামাইয়া ভাড় দারায় বীক্ত মারিবার মত ক্রিয়া ১ ভোলা পরিমাণ মোদক করিবেন।

বাহুসালগুড়িকা। তেউড়ি চঞি দন্তি গোলুরী চিতামূল রাথালনার মূল মুথা শুণ্ঠী বিড়ঙ্গ হরীতকা এবাংপ্রতি
১ পল ভেলা ৮ পল বিভীতকা ৬ পল বনজ্ঞ ল ১৬ পল
পাকার্ম জল ১২৮ সের শেষ ৩২ সের পরাতন গুড় ১২২ পল
পাকের নিয়ম, ১২৮ সের জ্ল পাকপাত্রে চড়াইয়া ভাহাতে তেউড়ি প্রভৃতি অয়োদশ অব্যা দিয়া পাক করিলে
যখন ৩২ সের জল থাকিবে তথন ঐ জলকে ছাঁকিয়া তাহাতে ঐ পুরাতন গুড় দিয়া পুনকার গুড়বৎ করিবে পাক
সিদ্ধি হইলে ভাহাতে ভেউড়ি চুর্ ২পল বন্যগুল চুর্ব ২পল
চিতামূল চুর্ব ২পল এলাইচ বীজ চুর্ব ৬ পল দারুচিনি চুর্ব
৬ পল মরীচ চুর্ব ৬ পল নাগেশ্বর চুর্ব ৬ পল এই সকল
চুর্ব প্রজেপ দিয়া ভাড় দিয়া নাড়িতেহ সার গুড়ের মত
ভ্রত্তে প্রত্তাহ ১ তোলা অরপান প্রাত্থকালে থান্ট্রন,

हेडां एक नाना श्रकांत व्यर्ग এवर श्रीहा व्यथमान कड़ा छन्। मोमाना गुन এই नकन त्रांग नके इत्र।

ভেলা শোধন। গোময়ের জলে সিদ্ধ করিয়া নির্মাল জলে থাত করিবেন, পারে রৌজে শুদ্ধ করিয়া ভেলা ভা-কিয়া তাহার আঠা লইবেন।

কুটকাবলেই। কুড্চিছাল ১: পাল পাকার্থ ফল ৬৪
সের শেষ ৮সের পুরাতন গুড় ৩০ পাল মৃত ৮ পাল প্রক্রেপ
বচ শুণ্ঠী পিপুলা মরীচ বিড়ফ হয়ীতকী বয়ডা আমলকী
ইক্রেষৰ চিতামূল র'লাঞ্জন ভেলা আতইচ বেলশুঠা এইসকল
তব্য চূর্ব করিয়া প্রত্যেক ১ পাল লইবেন, আর মধু ৮পাল,
পাকের প্রকার পাকপাত্তে ৪৬ সর জল দিয়া তাহাতে ১০০
পাল কুড্চিছাল ছেঁচিয়া দিবেন পাক শেষ হইলে ৮ সের
শেষ জল ছাঁকিয়া লইবেন ঐ ৮সের জল আর পুরাতন গুড়
৩০ পাল এবং ৮ পাল মৃত একত্তে পাক করিবেন, পারে মখন অবলেহ ন্যার হইবে তখন বচ প্রভৃতি ভ্রেরের চুর্ব তাহাতে দিয়া ভাজুর দ্বারা নাড়িতে২ শীতল হইলে মধু ৮
পাল হাহাতে দিয়া অবলেহ যোগ্য হইলে শুড় না হয় এমত এক পাত্তে রাখিবেন প্রভাহ ১ তোলা পরিমাণে
সেবন করিবেন।

চন্দ্রপ্রভাব বটিকা। বিড়ঙ্গ চিতামূল শুণ্ডী পিপুল মরীচ হরীতকী বয়ড়া আমলকী দেবদারু চঞি চিরাত। পিপুল মূল মুথা শাঠী বচ শুদ্ধ স্থানিক দৈল্লব সচল যবক্ষার মাচিকার হরিতা আরুহরিতা ধন্যা গল্পপিপুল আতইচ, এষাংপ্রতি ২ তোলা শুদ্ধ গুণ্গুল ২ পল চিনি ৪ পল বংশ-লোচন তেউড়ি দন্তি দারুচিনি তেলপাতা এলাইচ বীলং, এষাংপ্রতি ১ পল এই সকল অব্য স্ক্র চুণ করিয়া ৮ প্রহর জল দ্বারা খলে মর্দ্দন করিয়া ৪ গুলা পরিমাণ বটি করিবেন অনুপূর্ণন পুরাতন শুড় ২০রতি এবং বন্যগুল মুক্ষচুণ ২০রতি কোন মতে এই উষ্ধিতৈ কজ্জনী ১ পল দিতে হয় লিখি-য়াছেন, ইহাতে অশ্রোগ নির্তি হয়।

मर्भवर ।

পিত দারারজ ছট হইরা নাসিকা দন্ত গুহু নথ লিঞ্চি এই পঞ্জান হইতে নিগত হইরা পঞ্জকার অসা হয়।

ইহার মন্ত্র। শাকার কোরে শক্ষর চরিতা যে জানন্তি, ক্লিচ্ছ চরিতা, তারক অঙ্গেনা হয় আরিশা, প্রভিন্ত তাৎ ইমাং বিজ্ঞাং চহুঃগ্রামে যোন প্রকাশন্তি রস্য ব্রহ্মহত্যা পাতকা ভবতি,বিজ্ঞান দিছাতি অগস্ত্যামুনি ব্রহ্মহত্যা পাতকা ভবতি অমুকার অঙ্গে হারিশা নাই, অকল কলিকা হ ইহ কলিকা যে জানন্তি যে শুনন্তি তাকর অঙ্গে তাকর বংশে না হয় হারিশা লিজই রিমিবি সিবি অমুকার অঙ্গে,নানিকা হারিশা দন্ত হারিশা গুলু হারিশা শুক্র হারিশা লিজ হার্বিশা ক্রতিত তাং বিজ্ঞাৎ চতুঃগ্রামে যোন প্রকাশতি সভা সত্য ব্রহ্মহত্যা পাতকাভব নি,কালি কালি কাত্যায়নী বত্রম হঃস্বহা পানিছন্দ পানিবন্দ পানি যে উপজিল ধরল যোকল্প একনালে ঝরে সহস্র নালে পুরে কার আজ্ঞাশিকা যোগা গোর ক্রের আজ্ঞায় অমুকার অঞ্জার নাই।

সমশর্করা চূর্ব। শুণ্ঠী পিপুল ৫ তোলা মরীচ ৫ তোলা নাগেশ্বর ৪ তোলা তেজপাতা ৩ তোলা গুড়ম্বক ২ তোলা এলাইচ বীজ ১:তালা,এই সকল দ্বেরের চুর্ব যত চিনি ভত্ত সকল একজে মার্দিত করিয়া ভাগ্নে রাখিবে, ভক্ষণ ৮ মাধা মরুপান উক্ত জল, ইহাতে গুল্ল আৰু কান শ্বান এই সকল নট করে।

প্রাণদাগুড়িকা। শুণী চুর্ধ ৩ পল মরীচ ১পল পিপুল ২ পল চঞি ১ পল তালিশপাতা ১ পল নাগেষর ২ কর্ম পিপুলমূল ২ পল পিপুলপাতা চুর্ব ১ তালা এলাইচ বীজ ১ কর্ম গুড়ুছক ১ তোলা বেণারমূল ১ তালা, এই সক্ল জব্য সুক্ষ চুর্ব করিবে, পুরাতন গুড় ৩ পল সকল একট্র ম- দিত করিয়া বদরি পরিমাণ বটি বালিবে অনুপান শুঠী হরীতকী ছেঁচিয়া জলে ভিজাইবে, দেই জলে এবং ভোজনাতে ও ভোজনের পর ঐ জল পান করিবেন, পিও অর্শে অরুপান চিনির জল এবং ভোজনের পুরে ও পরে চিনির জল পান করিবেন, এই উব্ধি সকল প্রকার আল ও বাত পিত কফ জন্য যে যে নানা প্রকার অর্শ মুক্ত কুরু বাতরোগ গলগ্রহ বিষমজ্বর মন্দাগি পাণ্ড রুমি হাজোগ গুলা ছিদি অতিমার কামলা কাম শ্বাস এই সকল রোগের না-শ্ব হয়।

ষণ্প শূরণমোদক ৷ মরী চ ২ তোলা শুণ্ঠী ৪ তোলা চিতামূল ৬ তোলা বনযতল চুর্ব ৮ তোলা, এই সকল অব্যের
চুর্ব অর্জির পুরাতন গুড়ের সহিত মর্দন করিয়া ৮ মাযা
পরিমাণে মোদক করিবে অনুপান ওলসিজ জন এক
মন্ত্র্যা অথবা দিসজ্যা এই উবধ সেবন কন্তব্য ইহাতে নানা
প্রকার অশশ্ল গোদ গুলা শ্লীপদ এই সকল রোগন নট করে

রহৎ শ্বরণমোদক। বন্যওল চুর্ন ৩২ ভোলা চিতামূল ১৬ তোলা শুণ্ঠী ৮:তালা ভূনিকুমাণ্ড চুর্ন ৩২ভোলা গুড়-দ্বক ৪ তোলা এলাইচ বীজ ৪ ভোলা কপুর ১ ভোলা এই সকল জব্য মর্দন কারণ পুরাতন গুড় ৬ সের একতে মর্দিত করিয়া ৮মাধা পরিমাণ মোদক করিবে অমুপান পুরাতন বিরিকলাইয়ের বুষ, ইহাতে অল শ্লীপদ হিক্কা শ্বাস কাস ইত্যাদি রোগ সকল অপন্য হয়।

অশীবজবটিকা। তিকটু তিফলা তিজাতক ধূস্ত,রাবীক রাম্নালবল লায়ফল জীরা মোছাগা শুল্কা হালিম আফিঙ্গ কড়িভাম শাখাভাম কজলী ইত্রেষব বিটলবণ সৈল্লবন এবাং প্রতি সমভাগ চুর্ব করিয়া ভাবনা দিবেন যথা কুড়চিম্ল ছালের রস ওদিবস দিবেন কুটিলামূল ছালের রস ২ দিন দিবেন পরে মর্দ্রন করিয়া ওরতি পরিমানে বটি বাজিবেন অন্ত গাঁন কেশুরিয়ার রস,ইহাতে নানা প্রকার অণ্ গৃহিনী গুলা শূল অম্নশিত অগ্নিমান্তা সংগ্রহ গৃহিণী এই সকল রোগনাশ হর।

প্রলেপ। চিতারমূল হরিছা, পেষণ করিষা ও দিন প্র-লেপ দিবেম।

ে মেদিমূল ছাল শুণ্ঠী পোষণ করিয়া ৪ দিন প্রলেপা দিবেন।

পাকার্থ প্রলেপ। তিল তণ্ডুল কাঁচা হরিছা পূচা কলা সন্তা দ্ধি দ্বারায় পেষণ করিয়া প্রদিন প্রলেপ দিবেন,পা-কিলে মুক্ত হইবে।

কুড়চি অবলেহ। কুড়চিছাল ১০০ পাল পাকার্থ জল ৬৪
সের শেষ ৮ সের বেস্ত্র ছাঁকিয়া পুনর্বার ঘন করিয়া পাক
করিরে,পরে ভেলা ৬ ঠ বিড়ঙ্গ তিকটু তিকলা রসাঞ্জন চিতামল ইন্দ্রঘব বচ আতইচ বেলশুঠা, এযা প প্রত্যেকে ৮
তোলা চুর্গ ইহাতে দিবে চিনি আও সের মধু ১ সের মৃত
১ সের একতে পাক করিবে ভক্ষণ ১ তোলা ছই সন্মা সেবন করিবে, সমুপান আমরুকে ছাগগুল অশে জল ইহাতে
গুছু শূল আমরুক্ত শোথ এই সকল রোগ নট হয়।

্ মুন্টিযোগ। সভাজাত নবনীত তিল তণ্ডুল, একএ পে বণ করিয়া থাইবে।

মুফিযোগ। নাগেশ্বর পুষ্প চুর্ণ সন্ত নবনীত চিনি এ-কএ মর্দান করিয়া খাইবেন।

য়কিযোগ। নাগেশ্বর চূর্ণ সভা নবনীত চিনি তিল-ভগুল পোষণ করিয়া ঘোলের সহিত গুলিয়া পাইবেন।

পায়সাদি পাচন। বরাক্রান্তান্থল স্থানিন্তল মোচরস
মুথা লোধছাল তিল তগুলরজচনন এয়াংপ্রতি ৫মাবা এই
সকল তব্য ভেঁচিয়া বস্ত্রে পুঁটুলি করিয়া দোলা যন্ত্রে পাক
করিবে পাকার্থ ছাগহুল অন্ধিনের জল ১ সের শেষ ১পোরা
প্রক্রেপ চিনি।

অশহারি মৃত। বৃত্ত ক্ষের ছাগরুক ১৬ সের তঞ্চলা

দক ৪ দের বেশাইল জল ৪ সর কেণ্ডরিরার রম ৪ সের ড্
য়ৢর জল ৪ সের কল্ক লৌহমপ্তুর রক্তচন্দন পাল্লকান্ত নাগোশ্বর বয়ড়া বরাক্রান্তান্তান্তা মোচরস মুখা বালা বেল্ডিঠা
পাঠামূল তালমূলী ধাতকীপুষ্পা রমাঞ্জন এষাংপ্রতি ৮
তোলা চুর্ন চিনি ১মের মধ্ ১ মের ভক্ষণ ১ তোলা অন্যপান

১ক্ষ ইহাতে অর্শ বিস্পাদাহ ক্ষীণতা কলিশূল গুন্তাশ্ল এই

সকল রোগ নই হয় আর অগ্রিছিল কান্তিপুর্ন্তি ও কাম রছিল

হয়।

" মুক্তিযোগ।

বয়ড়ার সাঁশ খেত পুনর্ন মূল শুগী চিনি এষাংপ্রতি ২ মাষা পেষণ করিয়া খাইবে।

অর্শাদিলোই।। কাঁচা কদলীরক্ষের রস ৪ সের দাড়িম্ব পাতার রস ৪ সের কাঁচা পানীফল ৪ সের সিম্বলচালের রস ৪ সের ছাগছেক্ষ ২ সের চিনি ২ সের এই সকল দ্রব্য বস্ত্রে চাঁকিয়া ঘন করিয়া পাক করিবে পরে লোহভন্ম তালমূলী কিফলা শ্বেত পুনর্নবা মূল জায়ফল জয়ত্রী তালমাখলা এলা ইচ বীজ এষাংপ্রতি ২ তোলা চুর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া ঔঘধ করি বেন ভক্ষণ ১ ভোলা অনুপান কেন্দুরত্যের রস ও অশোক পত্র রস একত্র করিয়া লইবেন ইফাতে অর্শ প্রমেহ গুল্পাই অতিসার এই সকল রোগ নস্ট ২য় ।

অগিনান্তা চিকিৎমা।

হিল্লছক। শুণী পিশুল মরীচ বন্যমানী সৈক্ষব জীরা কৃষ্ণজীরা হিল্ল। এষা প্রতি ন্ম ভাগ স্কার্ণ করিয়া স্কার ব'স্তে ছাঁকিয়া পাতিলেবুর রুসে চারি প্রহর মর্দ্দন ক-রিরা ৪রতি পরিমাণ বটি প্রতাহ প্রতিঃকালে পাতিলেবুর রুষে মর্দ্দন করিয়া দেবন করিবেন। ইহাতে অজীন রোগ নাগ হয়, পথা পুরাতন তণ্ডুলের অয় ক্ষ মৎসার য্য। কিন্তু হিল্ল শোধন করিয়া দিবেন, শোধন যথা, স্লতানি হিল্ল মৃতে ভালিয়া লইবেন।

অগিমুখ চুর্ ছফ ছিল ১ ভোলা বচ ২ ভোলা পিপুল ও ভোলা শুগু ৪ ভোলা যমানী ৫ ভোলা হরীভকী ৬ ভোলা, চিতামূল ৭ ভোলা কুড় ৮ ভোলা এই সকল জ্বা সূজ্যুর্ করিয়া ১০ রতি অনুমানে প্রত্যাহ সেবন করিবেন সেববের কিঞ্ছিৎকাল বিলয়ে নিজ্জল তেঁতুলপাভার রন আদছটাক অনুপান পথ্য পাভিলেব্র রস ও চিনি একত করিয়া খা-ইবেন আর পুরাতন তথ্যলের অন্ন প্রভৃতি লঘুপাক জব্য। পাভিলেবুর রনে ছিল মদিন করিয়া লইবেন।

ধান্য শুগু ী পাচন। ধন্যা ১ তোলা শুগু ী ১ তোলা। জল ৪ পল শেষ প্ৰক্ষেপ মধু মনীজ চুৰ্ণ ৪০ রভি।

ভূকিবোগ। যব ফুলচ্র খোলে পাক করিয়া দোরার চুর্ব ২।৪ রতি তাহাতে দিয়া কিঞ্ছিৎ উফ খাইলে অজীর ও জ্বর নাশ হয়।

মেথি মোদক। শুণী পিপুল মরীচ হরীতকী বহেড়া আমলকী মথা জীবক ঋবতক ধন্যা কটকল কুড় কাঁকড়াশুলি যমানী লৈছব বচ নাগেশ্বরকুল ভেজপাতা গুড়বক
এলাইচ অন্দ্র বক্তচন্দন মুকা লবঙ্গ তালিশপাতা বিড়ঙ্গ কপূর্ব এই লকল অব্য সমতাগে চুর্ব মত হইবে ঈবং ভাজা
মেথিচুর্ব তত পুনর্বার মেথির সহিত যত হইবে ভাহার দ্বিগুণ পুরাতনগুড় পাকের প্রকার, গুড়পাক পাত্রে চড়াইয়া
মোদকের উপযুক্ত পাক হইলে চুলা হইতে নামাইবেন,
পারে ঐ চুর্ব সকল উহাতে দিয়া তাড় দারায় নাড়িতেই
মোদক পাকাইবার মত হইলে ১ তোলা পরিমাণে লাড়
পাকাইবেন সেবন প্রাত্তক কুত্র মংখ্যের যুব কুল্ল পুরাতন
তক্ত লের অন্ধ জলপানীয় চিনি মিছরের পানা মরীট চুরের সহিত অথবা পাতিলেবের রস সহিত।

হুতাশন রম। শোষত গলক ১ তোলা শোধিত পারা ১ ভোলা সোহাগার থইও তোলা ওজবিষ ৩ তোলা মরীচ ৮ তোলা। রস গন্ধকে কজ্জনী পাতিলেবুর রসে ৮ প্রহর থলে মর্দ্দন করিয়া ১ গুঞ্জা পরিমাণ বটি করিবেন অন্তপান চিনি ২০ রতি আর মরীচের গুঁড়া ২০ রতি পথ্য পূর্ব্ববং। রামবান্রস। রস গল্পক বিষ লবক্ত এষাংপ্রতি ১তোলা মরীচ ২ তোলা জায়ফল অর্দ্ধ তোলা এই সকল অব্যের চুর্ন কাঁচাতেভুলের রসের সহিত খলে ৪ প্রহর মর্দ্দন করিবেন ১ গুঞ্জা পরিমান বটি অনুপান পাতিলেবুর রস ও চিনি অ-থবা মুথার রস ও মরীচের ওঁড়া পথ্য পূর্ববং।

অপ্রিমার রয়। সোহাগার খই রম গল্পক এবাৎপ্রতি ১ তোলা বিষ কড়িভন্ম শহাভন্ম এবাৎপ্রতি ৩ তোলা মরীচ ৮ তোলা এই সকল জব্য স্ফার্ট্র করিয়া বস্ত্রে ছাঁকিষে পরে পাতিলেবুর রমে ৪ প্রহর খলে মর্দ্দন করিয়া ১ রতি পরিমান বটি করিবেন অনুপান পাতিলেবুর রম। ইহাতে অগ্নিপ্রবল্ল ইইয়া অজীর্ভার করে।

কড়িভন্ম প্রকার। শুক্লবর্ণ গোঠেকড়ি পাতিলেবুর রুসের স্থিত অনলে সিদ্ধ করিলেই শোধন হয়।

মহাশত্ম বটি। কৈ স্থাবলবণ বিটলবণ সামরলবণ সচল লবণ পাঙ্গালবণ হিন্দ শত্মতম্ম তে হুলের ছাল ভন্ম শুণ্ঠী পিপুল মরীচ রসগন্ধক বিব। এষা প্রতি ১ তোলা এই স-কল জব্য স্থাছণ করিয়া আপাক্ষপাত্মের রসে এক ভাবনা দিয়া পরে চিতারসূলের রস দিয়া এক ভাবনা তৎপরে গোড়ালেরররসে ভাবনা ৪রতি প্রমাণ বটি অনুপান গোড়া লেবুর রস এই ঔষধ ভোজনের পর সৈবন করিলে অন্ধীন রোগ মিঃশেষ হয় ভোজনের পূর্বে সেবন করিলে অনুপিত রোগ জন্মে পথ্য পূর্ববিৎ।

রহমহোত্র বি । লবক চিতারল শুণ্ঠী জয়পাল সোহা-পার থই বীক ভাড়করল এবাংপ্রতি ২ ভোলা এই সকল দ্বায় স্বলচুর্ন করিয়া দভিরদে চতুর্দশবার ভাবনা পারে গো-ড়ালের রসে ও ভাবনা বীক্তাড়ক রগে পঞ্চ ভাবনঃ এই শকদ ভাবনা দিয়া তাহার পার রসগন্ধক মিঠা বিব এবাং প্রতি ২ তোলা কিন্তু রসগন্ধকে কজ্জলী করিব্লা দিবেন আর বিষ শোধন পূর্বক চূর্ব করিয়া দিবেন তৎপরে দন্তির স এবং আদার রস হুই রস মিলিত করিয়া ভাবনা দিবেন অথবা চিতামূলের রসে ভাবনা দিবেন তদনন্তর খল করিয়া ১ গুলা পারিমাণ বটি করিবেন অনুপান মুখাররস নির্দ্ধল ও মরীচ চূর্ব।

পারা ১ পল গন্ধক ২ পল তামু ৪ তোলা এই তিন

ত্রেরা কজলীর মত করিয়া লৌহপাত্রে পর্পটির মত পাক
করিয়া ১০০ পল পাতিলেবুর রসে লৌহপাত্রে পাক করিয়া পাতিলেবুর রস শুদ্ধ হইলে পিপুল চঞি চিভায়ল
এই তিন ত্রব্য সমভাগে লইয়া তাহার ৮ গুল লল দিয়া তার
চতুর্বাংশের একাংশ থাকিলে সেই ক্লাথে ঐ পর্পটিবৎ ৫
বার ভাবনা দিবেন ভাহার পরে বন্যওলের রসে ৫ ভাবনা
দিবেন ভৎপরে ৩৪ ভোলা সোহাগার খই স্ক্লাচূর্ব
আর ১৭ ভোলা বিটলবন তাহাতে দিবেন ইহাতে যত হই
বেক ভাহার সমান মরীচের স্ক্লাচূর্ন তাহাতে দিবেন ভৎপরে ভাহাতে কুলথ্য কালাইয়ের জলে ৭ বার ভাবনা দিবেন শেষে থলে মর্দন করিবেন ১ রতি পরিমাণ বটি প্রভাহ প্রাভঃকালে সেন্ন করিয়া কিঞ্ছিৎকাল বিলয়ে শিশৈরে দেওয়া ছোলার জল অনুপান করিবেন।

্ ষশেশশ্বটি। বিষ ২ ভোলা কড়িন্তন্ম ৬ তোলা মরীচ ১ তোলা জল দিয়া ৪ প্রহর থলে মর্দন করিয়া ৪ রতি পরি মাণ বটি করিবেন অন্তপান পাতিলেবুর রস এবং ঔষধ সেবনের পরে কিঞ্ছিৎ লেবুররস পান করিবেন।

मर्भागः ।

হিন্দু অইক। ত্রিকটু বন্ধমানী সৈত্ব জীরা হক্জীরা। হিন্দু এষা প্রতি সমান চুর্ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান উষ্ট্রিছ ইহাতে মন্দাগ্রি অমুশূল নই করে। যুক্তিযোগ। হরতকী ৬ মাধা শুণ্ঠী ৬ মাধা চিনি ৬
মাধা পোষ্ঠ করিয়া সেবন ক্রিবেন ইহা কফ জন্য মনদাগ্নিতে জানিবেন।

ं বাতাজীৰ। হ্রীতকী ৪ মাধা পুরাতন গুড় ৪ মাধা নৈদ্ধবলবৰ ৪ মাধা।

পিভাজীণ। হরীতকী ৪ মাধা সৈন্ধব ৪ মাধা চিনি ৪ মাধা পেষণ করিয়া ভক্ষণ করিবে।

নৈজ্যাদি। নৈজ্য হ্রীতকী পিপুল মথা চিভায়ন এষাংপ্রতি নমচুর্ব ভক্ষ ৪ মাধা অনুপান উম্জল ইহাতে অতিশয় অনল দীপ্তি হয়।

অনল মথ চুর্। হিঙ্গ ১ তোলা বচ ২ তোলা পিপুল ৩ তোলা শুগু । ৪ তোলা যমানী ৫ তোলা এই সকল চুর্ব ক-রিয়া ৮ মাধা পরিমান ভক্ষণ করিবে অনুপান বাতে উষ্ণ জলা পিতে দ্ধিরমাভ ইহাতে অজীর্গ প্লীহা উদ্রী অর্শাল্ল গুলা এই সকল রোগ নটা হয় ও অগ্ন রাজ করে।

বৈশানর চুর্। ত্রিকটু এলাইচ হিন্ন বামনহাটীয়ল বিট লবণ যবক্ষার পাঠায়ল যশেনী তেতুল কাচলিতক্ম কৃষ্ণ জীরা চঞি চিতায়ল গজপিপুল গুড্ত্বক কটকী গাঠ্যালা খ্রেত বাট্যালায়ল এবাংপ্রতি সমচ্ব করিবেক ভক্ষণ ৮ মাধা অনুপান উষ্ণ মৃত ইহাতে নারাপ্রকার অজীর্ব নাশ্ হয় কিন্তু এই ঔষধ দ্বিসন্ধ্যা সেবন কর্ত্ব্য।

দাবানল চুব। জারকল জারিত্রী শন্থতম কটকিরী সো হাগাতম এবাংপ্রতি ১ তোলা যবক্ষার ৫ তোলা পঞ্জবণ প্রত্যেকে ১ তোলা পঞ্জম প্রত্যেকে ১ তোলা এই সকল জব্য চুর্ব করিয়া স্থন্ম বজ্রে ছাকিয়া পরে মর্দন করিয়া এ-কত্রে রাখিবৈ অনুপান লেবুর রস ইহাতে আমবাত অমু-পিতু শূল মনদাগ্নি গহিণী গ্লীহা গুলা এই সকল রোগ নউ করে।

(अञ काकम्पूल कनका भाक्त धारिकूल नार्श्यमञ्ज

পাঞ্জাকুল ব্রিফলা আয়কল অমুন্বতস সাচিকার যবকার বােহাগা শহাতম কড়িভন্ম হাওী ব্রিজাতক মরীচ জ্যৈষ্ঠ-মধু এযাংপ্রতি সমচুর্গ করিয়া ভাবনা বিজয়া পত্ররস ভক্ষণ ৪ মাঘা অনুপান জল ইহাতে সকল প্রকার মন্দাগ্নি নইট হুয়,আর শরীরের শোভা হয়।

ভুজবিপাক বটি। লবক ত্রিকলা ত্রিকটু যমানী বিল মমানী জীরা কৃষ্জীরা ত্রিজাতক ত্রিমদ শৌধিত হিলল জায়কল দোহাগা অভ্রন্থ নাগেশ্বর বন্ধতা কভিত্য আ-কিন্দ এবাংপ্রতি সমচুর্ব সিজিপাতার ইনে মর্দন করিয়া ১ মাবা পরিমাণ বটি বালিবে জল অন্ধপানে গেবন করি বেন ইহাতে জম্পিত শূল অজীর্ব গাঁহণা গুলা এই সকল রোগ ভাল করে।

मरश्यिध तम।

শোধিত পারা শোধিত গল্পক শোধিত শৃক্ষিবিষ লোছ
ভন্ম অভ্ৰত্ম সোহাগা জীরা ত্রিকটু জায়কল শশুভন্ম লবঙ্গ কডিভন্ম এষা প্রতি সমচুর্ব কারবে পরে সেই চুর্ব সকল দ্বিতে মর্দ্দন করিরা মুদা পরিমাণ বটি করিবেন অনু
পান অগ্নিমান্দ্যে পাণের রস গৃহিণী রোগে লবঙ্গ জায়কল অমুপত্তে পানমোরী কপুর জল ইহাতে অগ্নিমন্দা
অমু অজীর্ব গৃহিণী নাশ হয়।

কামাগ্রিদানিকপন মোদক। তিকটু তিফলা কুড় কর্ফল কাঁকড়া শৃলি ইন্দ্রয়ব বিডল ধন্যা মুথা পানমোর জাঁরা রক্ষণীরা চিতা ত্বক করু র বন্যমানী লবক্ষ চঞি নাগেশ্বর বচ বাক্ষমূল বেগুণামূল ছাল চিডামূল জায়কল যমানী কটিকিরী বামনহাটি মূল অভ্রতম শঠি বালা দৈল্লব বিটলবণ হিন্দ, এবা প্রতিহ তোলা লোহতম ৪ তোলা সকলের অভিন তেউড়ি চুর্গ গুণ্ডী ১ সের দকলের সমান চিনি মদক পাকার্য হন্ধ ২ লের জল ২ সের ২ তোলা পরিমাণ মোহক পাকাইবেন অনুপান জলু ছই সন্ধ্যা উদ্ধ দেবন

ক্লরিবেন) ইহাতে চতুর্বিধ শূল নট করে আর কাম ও অগ্নির্ছিত্বরে।

কামেশ্বর মোদক। বরাক্তো হল মরীচ অভ্রত্ম কফল রুফজীরা অশ্বগ্রাহাল গুলপ্তের পাল মেথি মোচরস
ভূমিকুল্লাণ্ড চূর্ন কেন্ডর গোক্ষরী বীজকুল্লাণ্ড শন্থ বিচাকলা
শতহলী বন্যমানী পুরাতন বিব্রিকলাই তিল তণ্ডুল ধন্যা
জ্যেষ্ঠমধু নাগেশ্বর বাট্যালাহল লোহভ্র্ম চিভামূল জায়ফল সৈন্ধব বাম্মহাটিহল রাখাল কাঁকুড়হল কাঁকড়াশ্লি
কিকটু জীরা রুফজীরা যুমানী চতুঃজাত খেত সেয়াকুলহল
গলপিপুল আকা সোনাছাল বাসকহল ভালহলি কিফলা
পানিকল, এবাংপ্রতি সমচূর্নে যত শোধিত বিজ্ঞাপাতা
চূর্ন তত এই সহুদায়ে যত তত চিনি মোদক পাক করিবে
কর্ম পরিমাণ বটি অন্ধ্রপান হল্প, ইহাতে অজীন অগ্নিমান্য
কাল খাল অভিনার গৃহিণী প্রমেহ অম্ল ইভ্যাদি নানা
রোগ নট করে আর রুজ বুবার ন্যায় হয় ও রুজের কাম
রুজি করে আর রুগালস্থ্ল হয়।

ইতি অগ্নিমান্দ্যাধিকার সমাপ্তঃ।

বিশুটিকা চিকিৎসা। যে রোগার কেবল বনন হয় তাহার রোগ সাধ্য, যাহার কেবল রোচন হয় তাহার রোগ
দাপ্য এবং যে রোগার বনন ও তেদ এক কালীন হয় তাহার রোগ অসাধ্য, আর যদি ইহাতে জ্বর তৃষ্ণা অক্লচি
ছদ্দি কাদ খাদ কটিগ্রহ অক্লাহ যেদ এই সকল থাকে
জ্বরাতিসার করিয়া বলা যায়, আর এই বিশুচিকা পীড়াকে
অভ্যন্ত ভয়ানকা লানিবেন, ইনি যদের ল্যেন্ঠ ভগ্নী অভএব
এই পীড়া যাহার পূর্নিপে হয় তাহার মৃত্যু হয়।।

যড়ক চূর্ব। পান্ধবীক পান্ধকার্চ পান্ধল বেণাখুল যবত-শুল, এবাংপ্রতি সমভাগ চূর্ব ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান জল ইহাতে বিশুচিকা রোগ নট হয়। র্থমবাক চুর্না ভূমিকুমাও তালমূলি ওঠী বদরি অফি শশু শতমূলি জায়ফল জীয়া রজচন্দন চিনি, এযাৎপ্রভি সমচ্ব ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান লাজমণ্ড, বিশুচিকা নাশ-কোহয়ৎ চুর্বঃ।

হেমামৃত চূর্ব। কনকটাপা কুল মুখা রক্তচন্দন তিকুট ধানী পিয়ালবীল আলকুশি বদরি অফিশন্ড তিমুগন্ধ, এবাং প্রতি সমচ্ব ভক্ষণ ৪ মাষা অনুপান বাসিজল।

জীরকাদি বটি। সোহাগা শুণ্ঠী জায়কল লবক্ষ, এই লকল জব্যের লমান শোধিত আফিক্স, দাড়িয়পাতা রসে মর্দন করিয়া বটি বাজিবে জন্মপান ধাতুবিশেষ, ইংতে লকল বিশুচিকা নট হয়।

অবিপাদিক চূর্ব। ত্রিকটু জিকলা মুখা বিড়ঙ্গ এলাইচ তেজপত্ত গুড়জক যমানী, এখাংপ্রতি যত কাঁচালবঙ্গ তত এই সকলের ভুল্য তেউড়ি চূর্ব পুনর্যার এই সকলের যত চিনি তত সকল একতে মর্দ্দন করিয়া এক ভাতে রাখিবে ভক্ষণ ৮ মাধা অনুপান জল এই উষধ ভোজনাদি অথবা ভোজনাত্তে সেবন করিবে পথ্য নারিকেলোদক এবং দ্ধি ইহতে অম্লপত্ত মলমুত্রের বদ্ধতা অগ্নিমান্দ্যে সর্ব্ব প্রকার বিশ্রচিকা শূল এই সকল রোগ নই হয় এবং বল ও দেহ পৃথ্যি করে।

ইতি বিশুটিকা চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ সাল্যার বিলম্বি চিকিৎসা।

রহৎশুণ্ঠী খণ্ড। শোধিত শুণ্ঠী চুর্ন ১ সের চিনি ৪ সের গব্যম্ত ১৬ তোলা থক্ষ ৮ সেরে এই সকল অব্য ঘনীভূত পাক হঠলে, ধাত্তী ধন্যা মুখা বন্যমানী পিশুল বংশলো-চন ব্রিক্সাবক রুক্ষ্মীরা হরীতকী অম্লবেডস মরীচ লাগে-শ্বর, এষা প্রাভ ৪॥• তোলা সুক্ষচুর্ন ১ সের শুণ্ঠী চুর্নের স্থিত মিশ্রিত করিয়া ট্ছাতে দিবে পরে ২৪ ভোলা মধু- দিয়া তাড় দারায় উত্যক্ষেপ মিশ্রিত করিবে, ভক্ষণ ৮ মাধা অনুপান প্রাতঃকালে হক্ষ সায়ত্রে জঙ্গ, ইহাতে জন্-লপিত শূল আমবাত হুলাহ কণ্ঠদাহ ছদ্দি দাহ নানা বর্ণ অতিসার অজীন গৃহিনী এই সকল রোগ নই হয় আর ধাতু রুদ্ধি ও কাশ রুদ্ধি হয়।

মুক্টিযোগ। তেলাকুচা হল মরীচ ১ টি চিনি ১ তোলা কাঁচা ছপ্তের সহিত পেষণ করিয়া সেবন করিবেন। ইহাতে সালসার রোগ ক্ষী হয়।

অথবা লেবু লবণের সহিত যোগ করিয়া প্রত্যাহ ভক্ষণ করিবে, সপ্তাহ ভক্ষণ করিলে উক্ত রোগ নিবারণ হয়।

নারিকেল লবণ। নারিকেল জল ৪ তোলা সৈক্ষৰ ৪ তোলা খোরাশনি বচ ৪ তোলা, এই সকল জব্য নারিকেল জলে পেষণ করিয়া নারিকেলের ভিতর পুরিয়া পরে মৃ-ত্তিকা লেপন করিয়া গজপুটে পাক করিবে এক প্রহর পাক করিলেই ঔষধ হইবে, ভক্ষণ ৪ মাধা অন্মপান জল, ইহাতে বিলম্বি রোগ নির্ভি হয়।

ভাকর লবণ। ধন্যা বন্য মানী থরাশনি যমানী জিলাতক নাগেশ্বর লবক মৌরি, এবাংপ্রতি ২তোলা অম্ল বেতদ জিফলা পিপুল ক্ষজীরা মরীচ শুণ্ঠী জীরা শুল্ফা
এবাংপ্রতি ২ ভোলা বিটলবণ সৈন্ধবল্বন করকচলবন দ্চললবন সম্ভারিনী লবণ, এবাংপ্রতি ২ ভোলা। এই সকল
জব্য স্ক্রচ্ব করিয়া লেবুর রসে পেবণ করিয়া ঐ রসে দাত্বার ভাবনা দিবে কিন্তু এক দিবসে নহে সপ্ত দিবসে দিবেন,ইহাতে সালসার বিলম্বি অম্লপিউ দুর্নাম শূল ক্লাহ
কর্পদাহ ধুমোলার অক্লচি অনলমান্য ছিদ্দি উদ্রাধান,
এই স্কল রেশ্য নাশ হয়।

বলভজম্ভ। গ্রাম্ত ৪ শের গৈন্ধবল্বণ অর্চনের শুণ্ঠী চুর্ণ অর্চনের কল্কার্থ হরীতকীর কাথ হরীতকী ১২।। পল জল ৬৪ সের শেষ ৪ সের মৃতেতে, দিয়া মনদার্গিতে প্রাক করিবে নির্দ্ধান হইলে প্রাক্ষিদিন, ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান হথা, ইহাতে সালসার বিলয় গুলা শূল অম্লপিত অক্চি অগ্রিমান্দা নাই করে।

সৌজাগ্য শুণ্ঠ বিশ্ব । শোধিত শুণ্ঠী চুন ১ সের চিনি
১ সের মধ্ ১ পোরা ছত ১ পোরা ছক্ষ ৪ সের শতমূলি রস
৪ সের ধাত্রিক খ ৪ সের, এই সকল দ্বা পাক করিয়া ঘন
ছইলে ভাহাতে মেথি মৌরি চাঞি ধাতকীপুষ্প ধন্যা মুখা
যমানী পিপুল ত্রিকাতক রফজীরা বন্যমানী খারাশনি
যমানী মরীচ নাগেশ্বর জায়কল ভায়িত্রী জ্যেন্তমধু, এষাং
প্রতি ২ তোলা দিবে, ভক্ষণ দিসন্ধ্যা ৮ মাষা পরিমাণে
অনুপান উষ্ণ জল অথবা ঘুন্ধা, ইহাতে অফ্লপিত্ত শূল
পরিমাণ শূল সাল্যার দোষের পুমোন্ধার বিলম্বি অনলমান্যা বমি মুক্তা অরুচি সংগ্রহ গৃহিনী মৃতিকা এই সকল
পীড়া নাশ হয়।

শতাবরি মোদক শতমূলি ৪ সের চিনি ২ সের গব্য হক্ষ ৪ সের জিফলার কাথ ৪ সের এই সকল জব্য একত্র পাক করিরা পরে ধন্যা জিকটু মুথা জিজাতক সৈল্লব জার-ফল জয়লী বালা জীরা ক্ষজীরা কাকডাশৃ ক্লি বিজ্ঞা মরামাৎসী মৌরি হরীতকী শুলফা তালিশপাতা চ্ঞি দেবদারু প্রিয়ল লবল শৈলজ রক্তচন্দন এষাংপ্রতি ২ ভোলা স্মচ্ব ইহাতে দিবেন পরে তাডু দারায়নাড়িতে ২ মিশ্রিত হইলে ১ তোলা পরিমাণ মোদক করিবেন, অনু-পান শতমূল রদ কাঁচাংকা, ইহাতে সকল শূল সংগ্রহ গহিণী নানাবর্ণ অভিসার অজ্জিব স্তিকা হুলাহ কণ্ঠদাহ শিরোদাহ সক্ষাক্ষ দাহ জঠরদাহ অক্তি এই সকল রোগ নতী হয় আর ধাতু রুদ্ধি বল রুদ্ধি ও অগ্নি হয়।

লবঙ্গাদি বটি। লবঙ্গ জীরা তিকটু কপুর রুঞ্জীরা বন্যমানী যুমানী শুল্ফা শঠী হয়ীতকী বহেছা থাতি ধন্যা কৈল্পৰ ফটিকারী স্নায়ক্তল জয়তী, এবাৎপ্রতি সমভাগী বিজয় রসে মদন করিয়া বদরাভি পরিমাণ বটি করিবে । অনুপান জন।

শুষ্ঠামৃত চূর্ব। ধন্যা তিকলা তিকট ফুমানী বিলম্মানী জীরা ক্ষণীরা আমুক্ষি যবক্ষার চিতামূল ফটিকারি ইসর মূল শুল্ফা সোমরাজ পঞ্চলবণ, এযা প্রতি ২ তোলা শুষ্ঠী ১নের সকল চূর্ব করিবে ভক্ষণ ৮ মাঘা অনুপান উষ্ণ ছক্ষা ইহাতে সাল্যার বিলম্বি বা অমুল্লি প্রতি এবংশূল সংগ্রহ গৃহিণী কৃমি অর্শ শোথ অনল্যান্দ্য অজীব ছন্দি তৃঞা দাহ ইত্যাদি রোগ নাশ হয়।

শালদাচহারি মোদক। শুণী মেথি জীরা যমানী এষাংপ্রতি ১৬ তোলা গব্যংগ ১ সের, চিনি ১ সের শুলফা চিতাছল পিপুলছল ক্লফজারা ধন্যা মৌরি জটামাংদী বিজ্ঞা বিজ্ঞা বিল্যমানী যমানী কর্ফল কৃত কাকড়াশ্লি বিজ্ঞা বিজ্ঞাকত কণ্ র লবন্ধ জিকট লৌহত্যা অভ্রত্যা গুলঞ্বের পাল বালা মুখা জায়ফল শান্ত জায়জী দৈল্পব তালিশপাতা লোধছাল রক্তছন্দন, এষাংপ্রতি ৪ মাবা লকল চুর্ন করিবে পাকার্থ শতস্থান রুম ১ সের ৪ গান বিলির সহিত ও তোলা পরিমাণ মোদক বালিনে অনুপান কাক কিছা উল্কোদক, ইহাতে সাল্যার বিল্যি সংগ্রহ গৃহিণী নানা প্রকার শুল অনলমানদ্য এই সকল রোগ দূর হয়।

কামাগি সন্দিপনমোদক। তিকটু ত্রিফলা কুড় কর্মন কাঁকড় শৃঙ্গ ইন্দ্রমন বিড়াল ধন্যা মুখা মৌরি জীরা ক্লম্ব-জীরা ত্রিজাতক বন্যমানী লবক্স চ্ঞি নাগের বচ বাক্স হল বেগুলাইল চিতাইল জার্ফ্য ফটিকারি বামনহাটিইল ব্রাক্রান্তাইল যমানী অভ্রত্ম শঠি বালা সৈল্পর বিটল-বণ হিন্ত, এবা প্রতি ২ তোলা লৌহভ্যম ৪ ভোলা ভেউড়ি চুর্ন সকলের অর্থেক শুঠী চুর্ন ১ সের এই সকলের বিশুণ চিনি পাক করিয়া ২ ভোলা পরিমাণ মোদক করিবেন অনুপান ইন্ধা জল ভক্ষণ বিসন্ধ্যা, ই্লাতে চতুর্বেধ অজীন

আই বিধ শূল সাল্সার বিলম্বি কোঠবজ গুলাল আধাণ পোগু অম্পিত এই সকল রোগ নাশ হয়, আর দেহকান্তি ও বল রাজি হয়, এই উষধ দেবন করাইয়া রোগীকে ঘৃত মাংসাদি গুলুপাক অব্য ভোজন করাইবেন।

রহৎপিপুল থণ্ড। ধন্যা জিকলা ত্রিকটু কুলথ কলাই জীরা কৃষ্ণজীয়া ক্রিকাতক বিমদ এষা প্রতিত ২ তোলা এই সকল অব্য প্রত্যেকে স্কাচন, পিপুল চুর্ন, সের গব্য ঘৃত ৪ সের চিনি ৪ সের শতনূলির রস ২ সের গব্য ক্ষাই ২ সের ঘৃতাদি অব্য ঘনীভূত পাক ছইলে পুকোজ জব্যের চুর্ন সকল ইছাতে দিয়া তাজু দারায় নাড়িতে ২ ঔষধের মত হইলে উছাতে ১ সের মর্ম দিয়া উত্যক্ষেপ মিল্লাত করিয়া ঘৃত ভাণ্ডে উষধ রাখিবেন ভক্ষণ ১ তোলা অনুপান কপুর জল জথবা হক্ষ কিয়া কেলে জল, ইছাতে সালসার বিলম্ম ক্ষাক কণ্ডু ক্রিদোম শ্লম্মলপিত অক্ষচিব্যমি কাস খাস এই সকল রোগ নটা হয়।

স্রাপি থপ্ত। সালিশুবাক ১ সের শুণ । কার্য জল ৪ সের পাকের দ্বারায় জল শুক্ত হইলে এই তায় চুন করিবে পরে ত্রিকট্ ত্রিকলা ধন্যা চত্ঃজাত খেতচন্দন রজ্চনদন পোরাল বীল রারা জীরা জায়কল জয়ত্রী বংশ-লোনচ লোহতম জটামাংশী লবল মোরি বঙ্গতম কফল অভ্রতম পালকার্ছ পানিকল মুথা লোধছাল জৈয়ন্তমধু শতমূলি এবা প্রতি ২ তোলা চুর্ন চিনি সকলের দিগুণ চিনি আর থেক ইন্থুরস জল প্রত্যেকে ১ সের পাকশেষ ইইলে ২ তোলা পরিমাণ মোদক বাহ্নিবেন জন্মপ্রণ প্রাতঃকালে কাঁচাছঞ্ক সারহে নারিকেল জল ইহাতে সালসার বিলম্বি আম্বাত জম্পিত্ত জম্বাল এই সকল রোগ নইট হয় এবং এই উবধ দেবনে জগ্রন রাজ্ব বল ও দেহপুন্তি হয়।

रे्ि मात्रकोष्ट्याः मालमात्रं विलक्षि हिकि भा

কৃমি চিকিৎসা।

হরীতকী বয়ড়া আমলকী গুলঞ্চ বাসকছাল কটকী চিরাতা নিম্নছাল এযাংপ্রতি ২ মাধা ২০রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ বিড়ঙ্গ চূর্ব ২০রতি মধু ২০রতি দিয়া দেবন করিবেন ইহাতে ক্রমি রোগ নাশ হয়।

মুষ্টিযোগ। পালিতাপত রস ২ তোলা তাহাতে মধূ -৪০ রতি প্রক্ষেপ দিয়া সেবন ক্ষম নাশ হয়।

য়ষ্টিযোগ'। .কেঁউয়লের রস ২ তোলায় মধু ৪০ রতি প্রক্ষেপ দিয়া দেবন করিবেন।

মুষ্টিযোগ। শাঞ্চিরস ২ তোলা উঞ্ করিয়া তাহাতে মধু ৪০ রতি অনুপান থাইবেন।

বিড়ঙ্গচূর্ণ ২ তোলা মধুতে গুলিয়া থাইবেন।

মুফিষোগ। তিতলাউ বীজ ২ ভোলা তক্তের সহিত পোষণ করিয়া সেবন করিবেন।

বিভঙ্গত। হরীতকী আমলকী বয়ড়া বিভঙ্গ এবাৎ প্রতি ১৬ পল পিপুল মূল চঞি চিতামূল শুণ্ঠী এবাংপ্রতি ৬ পল ২ তোলা ৬ মাধা লেকাল নোণাছাল গান্ধারিছাল পাক্লছাল গণিয়ারিছাল সালপানি চাকুল্যা কন্টকারি গোক্ষরি ব্যাকুড়। এবাৎপ্রতি ১তোলা ৬ মাবা জল ৬৪দের শোব ১৬ দের মৃত ৩২ পল কল্কার্থ সৈন্ধর ১৬ পল পাক দিদ্ধি হইলে ৮ পল চিনি প্রক্ষেপ মৃত পাকের প্রকার ঐ শোব ক্লাথ বস্তে ছাকিয়া পাক পাত্রে চড়াইবেন তাহাতে উজ পরিমাণ মৃত ও দৈন্ধর দিবেন, পরে মৃত নির্দ্ধল হ-ইলে তাহাতে ৮ পল চিনি দিয়া পুন্ধার কিঞ্ছিৎকাল পাক্রের ঘারায় মৃত নির্দ্ধা হইলেই পাক সিদ্ধি আনিবেন দেবন অন্ধ্রেলা পরিমাণ ভোজনের পুর্ব ইহাতে শরীরে ক্রমি থাকিতে পারে না।

ইভি সারকৌম্তা ক্মি অধিকার সমাপ্তঃ।

पर्ल । मुखिरवांश। चर्छ्न् शवतम नवन श्रांक्रशः पित्रा चाहरवन। मस्कामि शाहन।

মুথা মূষিকপত্র তিফলা দেবদার সঞ্জনামূল এবাং-প্রতি ৩ মাবা পাকার্থ জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ বি ডঙ্গবীজ পলাশবীজ চুর্ন উভয়োঃ প্রতি পরিমাণ ৪ মাবা ইহাতে চিরজাত কুমি নাশ হয়।।

লাক্ষাদি চুর্। লাহা ভেলা বেলগুঠা শ্বেত অং রাজিতা মূল ঝিরুকভন্ম অর্জ্জুনফল ও অর্জ্জুনফুল, বিড়ঙ্গ ধূনা গুণ্-গুল এবাংপ্রতি সমচূর্ব ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান উফ্জল। ইহাতে ক্লমি নাশ হর।

বিড়ঙ্গাদি অটক। পালাশবীজ যসানী বনযমানী তি-ফলা এবাং সমভাগে যত তাহার অর্দ্ধেক বিড়ঙ্গ বীজ এই সকল জব্য চূর্ণ করিয়া উঞ্জলে সেবন করিবেন।

পিপুলাদি চূর্। পিপুল পিপুলমূল নৈজার কৃষ্ণীরা
বচ চিতামূল তালিশপত নাগেশর এষাংপ্রতি ১৮ তোলা
দচল লবন ৫ তোলা মরীচ সোমরাজ শুণী এষাংপ্রতি ৮
তোলা দাভিষ্টাল চূর্ব অর্জনের অমুব্রতেন চূর্ব ১ পোয়া
এই দকল দ্রব্যের চূর্ব একত করিয়া এক পাতে রাখিবেন
তদ্দ ৮ মাঘা অনুপান উক্ষল ইহাতে কৃষি অর্শ গুলা
গৃহিণী তগন্দর আমশ্ল পাপ্ত এই সকল নাশ হয়।

বিভ্রু ঘৃত। গব্য ছত ৪ সৈর তিফলা ১২ সের দশমূল ২ পাল জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের এই সকল ক্কাথ ছতে দিয়া এবং ১ সের সৈক্ষাব দিয়া পাক করিবে ভক্ষণ ৮ মাধা অনুপান চিনি ৪ মাধা ইহাতে ক্ষমি শুল নই করে।

ধুন্ত রাদি তৈল। শার্ষপ তৈল ৪ সের ধৃন্ত রাপত রস ১৬ সের কল্ক ধুন্ত রবীজ চুর্ব সের তৈলের সহিত একতে পাক করিবে নিজ্জল হইলে পাক সিদ্ধ হয়। কিঞ্ছিৎ উফ ক্রিবেন এই তৈল মর্দন মাতেই ক্ষিনাশ হয়।

हे जि 'मर्लि क्रि व्यक्षिकांत्र मेमार्थः।

পাও কামলা হলীমকাধিকার।

কণ তিকাদি পাঁচন। হরীতকী আমলকী বয়ড়া গুলঞ বাসকছাল। এবাংপ্রতি ২০ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রকেপ মধু ৪ মাষা।

নবাস লৌহঁ। শুণ্ঠী পিপুল মরীচ হরীতকী বয়ড়া আমলকী মুথা বিড়ঙ্গ চিতামূল এবা এতি ১ তোলা লৌহ জীয়া ১ তোলা গুঞ্জা পরিমাণ বটি অনুপান মধু।

অঞ্জন। মুল্য্সিয়ার পাতার রস অঞ্জন করিয়া চক্ষে দিবেন ইহাতে প্রাপ্তরোগ জন্য চক্ষের বৈবর্ণতা নন্ট করে

অঞ্চন হরিজা গৌরী আমলকী এই তিন জব্য স্থ্য চূর্ণ করিয়া অঙ্গন করিবেন,ইহাতে চক্ষের বৈর্ণতা নই হয় নস্থা। কাকরোলস্থলের রগ নস্থ করিবেন, অথবা ঘোষাল ফলের আৰু লইবেন।

পান্ত কামলা হলীমক এই তিন রোগের বিশেষ নি-দান নিরুপণ রহৎ এন্থে আছে কিন্তু এই তিন রোগের প্রতিকার ভিন্ন হি চিকিৎদানা জানিলেও এক প্রকার চি-কিৎদায় তিন প্রকার রোগেই শান্তি হয়, কারণ তিনেতেই এক একেতেই তিন অভএব পরস্পরের ঔষধ পরস্পরে যোগ করিলেই পরস্পর রোগ নির্তি হয়।

পুনর্বা মন্তুর। পুনর্বা য়ুল তেউ ডিমূল শুণ্ঠী পিপুল
মরীচ বিড়ক দেবদারু চিতামূল কুড় হরীতকী বর্ডা আম
লকী হরিদ্রা দারুহরিদ্রা দন্তিমূল চঞি ইন্দ্রয়ব কটকী পি
পুল মূল মুখা এবাংপ্রতি ২ তোলা মন্তুর ৮ তোলা গোমুত্র
১ সের পাকের প্রকার। এক পাত্রে গোমুত্র চড়াইয়া তাহাতে পুনর্নবাদি অব্য সকল মুক্র চুর্ণ করিয়া ও বত্রে চাঁকিয়া দিবেন এবং মন্তুরও তাহাতে দিবেন পরে পাক
করিতে২ যথন তাল পাকিয়া উটিবে তখন চুলা হইতে
নামাইবেন, উষ্ধধুনার মত হুইলে মন্দ হয় জানিবেন ১

তোলা অথবা অন্ধতোলা ইহাতে পাগু, উদরী শোথ শূল অর্শ গুলা ইত্যাদি রোগ নাশ হয়।

বজুবট মণ্ডুর। পিপুলয়ল ও চঞি চিতা শুণ্ঠী মরীচ দেবদার হরীতকী বয়ড়া আমলকী বিড়ঙ্গ যুথা এই দকল দেবা সম্দায়ে ৩ তোলা মণ্ডুর ৬ তোলা পুনর্নবা মণ্ডুরের ন্যায় পাক করিবেন সেবনাদি পুরুবৎ।

তিকত্রাদি লৌহ। শুদ্ধ মণ্ডুর ১ পল প্রাঘৃত ১ পল চিনি ১ পল মধু ১ পল শুঠী পিপুল ম্রীচ হরীতকী আ মলকী বয়ড়া যথা বিড়ঙ্গ চিতায়ল কান্তিলোহ, এবাংপ্রতি ১ ভোলা পাকের প্রকার ঘৃতচিনি মণ্ডুর লৌহ পাকপাত্রে চড়াইয়া চিনির পাক কিঞ্ছিৎ শক্ত হইলে চুলী হইতে নামাইয়া শুঠ্যাদি অব্যের মুন্দ্র্র তাহাতে দিবে পরে মধু দিবেন তৎপরে তাড়ু দারায় নাড়িতেই সন্দেশের পাকের ন্যায় কিঞ্চিৎ শক্ত হইলেই ঔষধ সিদ্ধি হয় দেবন ১০ রতি অনুপান মধু ৪০ রতি পথ্য লঘুপাক জব্য।

শোথ শার্দ্ধল তৈল। তৈল ১৬ সের বিল্ছাল সোণাছাল গান্তারছাল পাক্ষলছাল গনিয়ারিছাল সালপানী
চাবুল্যা কণি কারী গোক্রী ব্যাকুড়ী পিপুলমূল পুনর্বা
মূল এষাংপ্রতি ২৭ ভোলা পাকার্থ জল ৩২ সের শেষ কার্থ
৮ সের গোম্বর ১৬ সের শুক্ষমূলা গুলঞ্চ শুণ্ডী পটোলপত
পুনর্বা নিমমূল বহুলামূল বেণামূল শক্তিনামূল
হরীতকী পিপুল শুঠি বয়ড়া কুড় মুথা রাম্মা বিহুল চঞি
হরিজা দাক্ষহরিজা খন্যা যবকার নাচিকার সমুজকেণা
তেজপত্র দেবদাক্ষ কৃষ্ণজ্বীরা গলপিপুল বেলশুঠা এষাংপ্রতি ৪ ভোলা তৈল পাকের প্রকার। পাকপাত্রে তৈল
চড়াইয়া ভাহাতে উক্ত কএক প্রকার ক্কার্থ এবং গোম্বর
১৬ সের আর শুক্ষমূলাদি জব্য সকল ছেকিয়া দিয়া পাক
ফারবেন।

ब्रम्यक सम्भागवीत छन्छन ध्राभ्था । छाना

জল দিয়া চারি প্রহর থলে মর্দন করিয়া গুঞা পরিমাণ কটি। করিবেন অনুপান নিম্বছালের রস মধু।

পুনন্বা তৈল। পুনন্বা ১০ পল কটু তৈল ৪ সের জল
৬৪ সের হরীতকী বয়ড়া আমলকী শুণ্ঠী দেবদার রেণুকা
কুড় পুনন্বা যমানী রুফজীরা এলাইচ দারুচিনি প্রাকাণ্ঠ
তেজ্বপত্র নামেশ্বর শুল্কা শুদ্ধলা মঞ্জিণা লোধ রামা
মুখা চাঞি বালা পিপুলমূল এই সকল অব্য প্রভাবে ২
তোলা পাকের প্রকার তৈল হুছ্না করিয়া পুনকার কাথ
এবং উক্ত জব্যা দি দিয়া পাক করিবেন নিজ্জল হইলেই
পাক দিন্ধি ইহাতে পাণ্ডু কামলা ঘটিত শোথ নই হয়।

প্রাণবলভ রস। রসগন্ধক কড়িভন্ম লৌহ তুঁতে হিঙ্গ হরীতকী বয়ড়া আমলকী মনসানিজের মূল যক্ষার তামু জয়পাল সোহাগার থই ভেউড়িয়ল এই সকল তাব্য সম-ভাগে জয়পালবীজ পূর্ব্বোক্ত ক্রমে শোধন করিবেন পরে সকল তাব্য ছাগঃ থা দিয়া থলে অই প্রহর মর্দন করিবেন ২ রতি পারিমাণ বটি জন্মপান মধু প্রাভঃকালে সেবন ক-গুব্য ইহাতে পাগু কামলা হলীমক কামলা ঘটিত প্রীহা উদ্বি এই সকল রোগ নাশ হয়।

ইতি সারকৌমুল্ভাং পাণ্ডু কামলা হলীমকাদি সমাপ্তঃ।

मर्भागः।

পুনর্নবা পাচন। খেত পুনর্নবা নিম্নছাল পটোলপত শুগুটী চিরাতা গুল্ফ দেবদার হরীতকী এযা শুতি ২ মাঘা পাকার্য জল ১ সের শেষ ১ছটাক প্রক্ষেপ যবকার ২ মাঘা ইহাতে শোথ উদরি কান শূল খান পাঞ্জুর এই নকন। রোগ নই করে। পালুবজু বটি।

লোহমগুর ৯ সের চূর্ণ করিরে পাকার্থ গোহত ৭ সের • ঘশীভূত হইলে পঞ্চকোল মরীচ দেবদারু তিফ্লা বিড্ল মুখা এষাংপ্রতি ২৪ ভোলা সকল চুর্গ করিয়া উহাতে দিয়া, মর্দন করিয়া ৮ মাবা পরিমাণ বটি করিবেন অনুপান কেন্ডভ্যেররস পথ্য ঘোল। ইহাতে পাণ্ডু মন্দায়ি অরুচি অর্শ কামলা শোথ উরুস্তম্ভ হলীমক রুমি গ্লীহা উদরী গল রোল, এই সকল রোগ উপসম হয়।

নবাস লৌহ। তিকটু জিকলা মুখা চিড়ক চিতামূল এবাংপ্রতি সমভাগে যত লৌহ মপ্তুর্ভ্যা তত সকল একত চূর্ণ করিবে ভক্ষণ ৪ মায়া অনুপান ঘৃত মধু লৌহদণ্ড দারা মর্দন ইহাতে ক্রমি অন্তার মন্দাগ্রি অক্রচি পাণ্ডুকামলা এই সকল রোগ্যন্ট করে।

শোথারি মপ্তর। পুননবা হরীতকী বয়ড়া আমলকী শুণ্ডী পিপুল মরীচ বিড়ঙ্গ দেবদারু চিতামূল হরিছা দারু করে পাপুলমূল মুখা এই সকল শুবা সমভাগে মত তাহার বিগুণ লোহমপ্তর সকলের অই শুণ গোহুত দারা পাক করিয়া রিশ্ব পাতে রাখিবে। অন্থ-পান কুলেখাডার রস। ইহাতে পাপ্তর শোথ উদরাদ্ধান শূল অশ কমি গুলা কামলা কাস হুরে অরুচি এই সকল রোগ নই হয়।

পঞ্চায়ত পর্পটা। শোধিত পারা শোধিত গল্পক তামু ভন্ম অভ্ৰত্ম গুণুগুল এবাংপ্রতি ১ তোলা জয়পাল বীজ ৫ মাঘা সকল মর্দন করিয়া স্থত দারা পর্পটা করিবেন ৫ রতি পরিমাণ সেবন অনুপান কুলেখাডার রস। ইহাতে শোধ পোও, জীর্ণ জ্বর রীহা অপনয় হয়।

ত্রিকতাদি লৌহ। লৌহমশুর তথা গব্য হত চিনি মধু এবাংপ্রতি ৮ তোলা কান্তিলৌহ তথা ত্রিকটু ত্রিকলা ত্রিমদ এবাংপ্রতি তোলা সকল চুর্ণ করিয়া লৌহপাত্রে লৌহনপ্তে. মর্দ্দন রৌজে ও শিশিরে এক দিবস রাখিবে তক্ষণ ৪ মাবা অনুপান হল্প ভোজনের সহিত ঔষধ তিনবার সেবন করি-বেন ইছাতে কামলা পাও হলীসক অম্লুপিত শূল পরি- শামাশূল পঞ্চিধ কাস জ্বর গ্লীহা অগ্রিমান্দ্য অজীব শোথ এই সকল নাশ হয়।

পুননবা তৈল। পুননবা ১২।। সের পাকার্থ জল ৬৪
সের শেষ ১৬ সের কটু তৈল ৪ সের কল্ক মঞ্জি। তিফলা
তিকটু কুড় কাঁকড়াশ্লি ধন্যা কফল শঠী দেবদার প্রিয়ল,
রফলারা যমানী লোগছাল তিজাতক নাগেশ্বর বচ চঞি
চিতায়ল পিপুলন্ল শুল্ফা মথা পুরাত্র মূলা মুরামাৎনী
রারা পিছটিপোক গলপিপুল বীল তাড়ুক্যল মালপানী
যুল চিরাতা বালা রক্তচন্দন কটকী এষাংপ্রতি ২ তোলা
সকল তব্য চুর্ব করিয়া তৈলে দিয়া পাক করিবে, ইহাতে
সকল প্রকার শোথ কামলা পাঞ্ছলীমুক জ্বর কাস শাস
এই সকল নই করে এবং ধাতু ও বল র্ছির করে।

উদরারি বটি। যমানী বিলযমানী রুফজীরা জয়পাল এষাংপ্রতি সমভাগ মনসাক্ষীরে মর্দ্দন করিয়া ওরতি পারি-মাণ বটি বাজিবেন জন্মপান উফজল, ইহারে সকল উদরি রোগ নাশ হয়।

ধাতু উদরারি। তামূভক্ষ কাংশ্র ভক্ষ কজ্জলী জন্মপাল এষাংপ্রতি সমচূর্ব তেউড়িমূল রঙ্গেও দিবসে ওবার ভাবনা ২ রতি পরিমাণ বটি অন্মপান ত্রিফলার জল,ইছাতে কো-টোদরি নাশ হয়।

ইতি দর্পণে পাশু কমলাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ হলীমুক চিকিৎসা। হলীমুক রোগে তক্র পথ্য অবতা কর্ত্তবা।

অগ্নি মুখ মণ্ডুর। লোহমণ্ডুর ভন্ম গ্রের পাকার্ছ গোমূল ৮:নর,পঞ্জকোল দেবদার নৈজ্ব লাচিকার দোহাগা
লিকটু লিকলা লিমদ বালা এবা প্রতি ৪ তোলা চুর্ব করিবে, পাকের প্রকার গোমুজের স্ট্ত মণ্ডুর পাক করিয়া
মূল হইতে ভাহাতে এই সকল অব্যের চুর্ব দিয়া মর্দ্দ ক-

রিয়া ৮ মাষা পরিমাণ বটি অনুপান বুলেখাড়াররস ঔষধ্ সেবন হুই সন্ধ্যা করিবে।

অমৃতান্ব মন্ত্র। গুলঞ্চেরপাল দন্ডিমূল চুন্ তেউড়িমূল চুন্ তামুভন্ম শোধিত স্থানাকি কান্তিলোহভন্ম এবাংপ্রতি সমভাগ যত তাহার দিগুণ মন্ত্র, এই সকল জব্য চুন্ ক-রিয়া কেণ্ডত্যের রসে ভাবনা গদিন দিবেন ৪মাঘা পরিমাণ বিটি অনুপান পুরাতন গুড় পুনর্নবা ক্লাপ দশমূল কাথ, ইহাতে হলীমূক শোথ কামলা পাগু, জ্বর এই সকল রোগ নাশ হয়।

তিলতৈল ৪ সের হছে থি ৮ তোলা মঞ্জি পুরাতন শু
স্কমূলা নিষিদ্ধা এষা প্রতি ১ পোয়া পাকার্থ জল ৬৪ সের
শেষ ১৬ সেরকল্ক পুরাতনহলা তিকটু শ্বেতপুননবায়ল কৃড়
চিছাল রায়া মজিনাছাল চিরাতা বাসকহল ধ্সুরী বীজ
রক্তচন্দন মুথা শ্বেতসরিয়া লোগছাল শ্যামালতা কুড় কস্ক্রি ধন্যা প্রিক্ত হর্ষ বচ এষাংপ্রতি ২ ভোলা চুর্ব তৈলে
দিরা পাক করিবে, এই তৈল মর্দ্ধনে পাঞ্গোথ কামলা
হলীয়ক কফ কাম জরে দাহ এই সকল পীড়া নাশ হয়,
এবং বল ও দেহ পুর্ফি হয়।

পঞ্চামতাদি লোই। লোইত্য অভত্য তানুভ্য ষ্ণ্ত্য শোধিত গন্ধক পারা তিকটু তিফলা তিমদী যাতক নাগে-শ্বর জীরা ক্ষজীরা শঠী দেবদার যমানী ইরিডা দারুহ-রিডা পিপুলয়ল বংশলোচন লবক জয়িত্রী জায়কল প-লাশ বীজ কুড় কফল জ্যেত্ মধু দারুচিনি বেণায়ল শ্বত-চন্দন জটামাংসী শুল্ফা সৈন্ধব চঞি কাকড়াশৃক্ষী চিকুড়-য়ল বামনহাটিয়ল এবাংপ্রতি সমভাগে ষঠ লোই মপ্তুর ভ্রম তত সকল চূর্ণ করিবে মপ্তুর পাকার্থ গোয়ত ৪ সের, শ্বেত পূন্র্বা ২ সের পাকার্থ জল ১৬সের শেষ ৪ সর পারে, কাথ ঘনীভূত ইইলে তাহাতে চূর্ণ সকল এবং মধুম্বত দিয়া মর্দ্দনকরিবে ভ্রমণ৪মাধা অনুপান কুলিখাড়ার রস ইহাতে শোথ পাও উদরি কামলা গ্রীহা গুলা হলীমক কফ জীর্ব-জ্বর মন্দায়ি এই সকল রোগ নই করে, এবং বল বর্ণ ও দেহ পুটি হয়।

ভক্রামৃত। শুক্ষ শেত পুনর্বা যত যবক্ষার চুর্ন তত, এই ছই জব্য ভন্ম করিবে ভন্ম হুল্য জিকটু জিকলা জিমদ লক্ষ তুল্য লৌহ মণ্ডুর এই সকল একজ করিয়া কেন্তত্যের রসে ভাবনা দিবে, ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান ভক্র, পাথ্যতক্র সুন্দ্র পুরাতন তপুনুলর অন্ন মংস্যের যুষ, এই ঔষধ সেবন করিলে ৪৫ দিন মান করিবেন না, এবং লবণ জল খাইবে না হরিজা ভৈল মাথিবে;ইহাতে পাণ্ডুলোথ হলীমক কা-মলা এই সকল রোগ নিবারণ করে।

বারিশোষিক চুর্। জিকট্ জিফলা বরাকান্তা মুল এলা-ইচ গুড় বক তেজপত নাগেশ্বর দৈলবং এষাংপ্রতি সমভাগে তত মরীচ যবক্ষার তত সকল চুর্ব করিয়া ৪ মাবা ভক্ষ্ করিবে অনুপান শুদ্ধ মুলা পুনর্বা ক্লাথ, ইচাতে উদরি শোথ কামলা পাণ্ডু প্লীহা গুলা জ্বর দাহ হলীমূক এই স-কল রোগ নফ্ট করে।।

তক্র মপ্তর। লবক কাঁকড়াশ্লি দেবদার চিরাতা চঞি চিতাহল জিকটু জিফলা মুখা কুড়কফল কালমেঘ, এযাং-প্রতি ২ মাষা আফিল ৬ মাষা সকলের ভুলা লোহ মপ্তর ভঙ্ম লোহ ভুলা ভাল বীল, সকল চুর্ন করিয়া কেন্ডভোর রসে মর্দন ক্রিবে বদার্গান্ত পরিমাণ বটি, অনুপান কেন্ড-ত্যের রস ও যক্ষার ২ মাষা গুলিয়া খাইবে,পথ্য নির্দ্রল তক্র লবণ জল থাইতে নিষেধ ক্রমে ৪২দিন এই রপ ব্যব-হার ক্রিবে, এবং তৈল হরিছা মাখিবে আর দশ দিবস শন্তরে এক এক দিবস স্নান ক্রিবে, ইহাতে পাপ্তু ক্ফ কাস অনীর্ন অভিনার গৃহিনী বিকার কামলা এই সকল রোগ নাশ হয়।

বৈভনাথ রদ। শোধিত পারা ১তোলা গলক পঞ্প:-

পঁটা হরিছা হ্র গৃহধুম ইউক হুর্ব এবাংপ্রতি ১ ভোলা ভাবনা, ভীমরাজ্বন জয়ন্তী রস শ্বেত অপরাজিতা রস বেগুলা
পাত্র রম এবাংপ্রত্যেকে ১ বার শোধিত হরিতাল বঙ্গতান
শোধিত শুন্সিবিষ থাপুর ভন্ম শোধিত হ্রবিতাল বঙ্গতান
লোই ভন্ম শোধিত শিলাজ হু শোধিত আফিঙ্গ এবাংপ্রতি
৪ মাষা এই সকল জব্য হুর্ব করিয়া ভাবনা দিবে, ধূস্তুরার
মূল রম আদার রম উভর প্রতি তিন বার একত্রে পিশু করিয়া মহাইমীতে জাগাইবে বিজয়াদশমীতে সর্বপ পরিমাণ বটি বান্ধিবে সেবন এক সন্ধ্যা একবিংশতি বটি অন্থপান কর্জ্জনি ৪মাষাপিপুল হুর্ব ৪মাষা উফোদক অর্দ্ধ পোয়া
পথ্য জীবিত মৎস্যের যূব পুরোতন তগুলের অয় নির্ক্তল
দধি স্নান দ্বিনন্ধ্যা কাঁচা জল ও লবন বারণ এই প্রকার ক্রম
এক মাম করিবে,ইহাতে সকল প্রকার শোথ গহিনী পাপ্ত
কামলা নানা প্রকার বিষ্ম জ্বর সমস্ত হলীয়ক মন্দায়ি
রোগ নিবারণ করে।

কল্প তরু রসায়ণ। পারা গলক হিন্দুল শশ্বিষ শিলাশ্বরু আকিন্স পিপুল গরল লৌহত্য অভ্যত্ম বন্ধ তামু
ভ্যা শ্বতিম রৌপ্রত্যা কাংশ্যত্ম হরিতালত্ম গোদন্তা
সে হাগা থাপর ভ্যা, এষা প্রাক্তি সমভাগে চুর্ব করিয়া ভাবনা বেগুণ্যল রস ধৃন্ত,রাহল রস খেত্আকন্দ রস এষাংপ্রতি ও দিবস থলে শুক্ষ করিয়া মহাউমীতে জাগাইবে
বিজয়া দশমীতে সর্বপ পরিমাণ বটি বাজিবে সেবন একবিংশতি বটি অশ্বপান কজ্জলি পিপুল চুর্ব উভয়োঃপ্রতি ৪
মাষা উফলল অর্পান কজ্জলি পিপুল চুর্ব উভয়োঃপ্রতি ৪
মাষা উফলল অর্পার পথ্য এক সল্ক্যা, স্নান দিসন্ত্যা
এক মাস কাঁচাজল ও লবণ ব্যবহার করিবে না, ইহাতে
শোথ উদরি পাণ্ড, কামনা হনীয়ক অ্টবিধ জ্বর পঞ্বিধ
কাস ইত্যাদি রোগ নাশ হয়।

বিষয়াদি হব। ৩৬ ী.১ পোয়া সিদ্ধিপত্র ১ পোয়া শো-

নার্থ গোর্থা ১ সের মরীচ মুথা গুল্ফা মৌরি, এযাং প্রতি তোলা সকল চুর্গ করিয়া ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান জল।

इं ि पर्ना इली मूक हि कि देशा में मार्थः।

র্জপিত রোগে রোগাঁকে অবশ্যই ভাবনা দিবেন এবং ভেদক ঔষধ ঘারায় ভেদ করাইবেন ইহা না করাইলে ছুই বুক্ত বন্ধ হইয়া বুর্গ জোগ প্রকাশ হইতে পারে।

ভাবনা। নিষপত একটা হাঁড়িতে দিয়া তাহাতে অর্জ হাঁড়ি জল দিবেন, পরে ঐ হাঁড়িতে সরা চাপা দিয়া বজু লেপ দিবেন এ ১ ঐ সরাতে রজ অঙ্গু প্রবেশ হয় এমত ছিত্র করিবেন আর ঐ ছিত্রে শোলার ছিপি দিবেন, পরে এক প্রহর কাল জাল দিবেন জাল সমাপ্ত হইলে রোগীকে উচ্চ স্থানে বসাইরা তাহার নিমে ঐ হাঁড়ি বসাইবেন, পরে বন্দ্র দ্বারা রোগীকে বেইন করিয়া সরার মুখের শোলা খুলিয়া দিলেন তাহাতে অত্যন্ত ম্মা হইবে ঐ ম্মা গাতে । শুক্ত না হয় এমত করিয়া বন্ত্র দ্বারায় পুঁছিইয়া দিবেন।

তেদ করাইবার প্রকার। চিরাতা ২ তোলা জল ৪পল যেশ ১ পল অতি ফুল্ল চিরাতা চুর্ব ৪০ রাজ প্রক্রেপ দিয়া উক্ত থাকিতে রোগাকে পান করাইবেন ইহাতে যদি তেদ না হর তবে তেউডিমূল ২ তোলা জল ৪ পল শেষ ১ পাল তাহাতে তেউডি ফুল্ল চুর্ব ৪০ ব্রতি প্রক্রেপ দিয়া রো-গীকে পান করাইবেন, অথবা তেউড়িমূল ১ তোলা চি-রাতা ১তোলা জল ৪পল শেষ ১পল প্রক্রেপ বিটলবেণ চুর্ব ৪০ রভি উফ থাকিতে দেবন করাইবেন।

পারা ১ তোলা গন্ধক ১ তোলা কাঁচা চিনের সোহাগা '১ তোলা জয়পালবীজ ১ তোলা পূর্বোক্ত প্রকারে শোধন করিয়া দন্তিমূলের ক্কাথে ৪ প্রহর খলে,'মর্দন করিয়া ৪ গুঞ্জা পরিমাণ বটি করিবে অনুপান নির্দ্ধল আদাররস ২তোলা যদি অত্যন্ত মল বন্ধ থাকে তবে পূর্ব্বোক্ত চিরাতাদির কা-থের যে কোন কাথ ঔষধ সেবনের পার রোগীকে পান ক-রাইবেন। তাহাতে আমঘটিত অথবা কেবল শুদ্ধ মল:যদি উদরে বন্ধ থাকে তবে ভাহাও নির্গত হইবে।

রুজপিত রোগের পথা। রজবর্ণ সালিধান্যের থই চুর্ব করিয়া মধু এবং মৃত দ্বারায় লাড় বৎ করিয়া থাইবেন আর মুগ মম্মর ইহার যুব ছোলার দাউলের যুষ আর উড়িধা-ন্যের ভগুলের অন্ন এবং কোনোর চাউলের অন্ন বন্য মুগ যব ভগুলের অন্ন এবং কোনোর চাউলের অন্ন যুযু পাক্ষির মাংস কপোত মাৎস শশাক্ষ মাংস হরিণ মাংস।

মৃষ্টিযোগ। বাকসপত রস ২ তোলা চিনি দিয়া থাই-বেন যদি ক্লেকা রুদ্ধি থাকে তবে ঐ রস মধুর সহিত থাই-বেন এবং পঞ্জ জুমুর চুর্ন করিয়া২ তোলা মধু ৪০ রভির সহিত অবলেহ করিয়া থাইবেন।

গাস্তারি চুর্ব ২ তোলা মধু ৪০ রতির সহিত অবলেহ দেবন করিবেন।

इती करों हून २ जिला मधु 8. त्रित महिष्ठ व्यवस्तर थोइरवन।

পকৃ খর্জনুর চুর্ব ২ তোলা মধু ৪০ রতির সহিত অবলেহ মূখ হইতে রক্ত নির্গত হইলে এই সকল মফিযোগ উপ-কারী হইবে।

নাদিকা হট্তে রজ্ঞাব নিবারণের মুঁটিযোগ।

ঘৃত দিয়া আমলকী ভাজিয় ব্রহ্মতালুতে প্রলেপ দি-বেন আর চিনির জলে চন্দ্ন মিশ্রিত করিয়া নাসিকার দ্বারা পান করিবেন।

এবং জাক্ষারন হক্ষা মৃত ইক্ষান দাড়িয় পুষ্পোর রস অ-থবা দুর্ক্ষার রস এই প্রত্যেক রস সকলের নশ্য করিবেন। তবং দুর্কার রস ও ঘৃত এই ছই জ্যাব মিশ্রিত করিয় গাতে মর্দন করিবেন অথবা স্থত শতবার থেতি করিয়া গাতে লেপন করিবেন,এবং স্থীতল বায় সেবন করিবেন।

এলাদি বটিকা। এলাইচ বীজ তেজপত দারুচিনি এই তিন অব্য ৩ তোলা পিপুল ৪ তোলা চিনি ৮ তোলা যথ্টিমধু ৮ তোলা পিওথজ্জুর ৮ তোলা আক্ষা ৮ তোলা এই সকল অব্য চুর্ণ করিয়া মধুর সহিত উত্তমরূপে মর্দ্দ করিয়া ২ তোলা পরিমান বটী করিবেন অনুপান মধু।

বাগায়ত। স্থৃত.৪ সের বাসকমূল ও পত্র এবং শাথা আর পুষ্প এযাংপ্রতি ১ সের জ্বল ১৬ সের শেষ ৪ সের ক-নক বাসকমূল চুর্ব ৪ পাল সকল একত্রে পাক করিয়া নি-কর্দ্রল হইলে পাক সিদ্ধি। এক তোলা কিয়া ছই তোগা পা-রিমানে সেবন করিবেন।

বুমাণ্ড খণ্ড। চিনি ১০০ পাল শুণ্ঠী ১ পাল পিপুল ১ পাল জীরা তেজপাত দারুচিনি এলাইচ মরীচ ধন্যা এবাং প্রতি ৪ পাল বীধা রহিত পুরাতন কুমাণ্ড শশু ১০০ পাল পুলরাতন কুমাণ্ড শশু ১০০ পাল পুলরাতন কুমাণ্ড শশু ও জল একার কুমাণ্ড শশু বুরুণি দারা কুরিরা বেস্তার দারা জল নিক্ষ্ণা-রিরা লইবেক পারে নূতন পাক পাত্রের ঘৃত চড়াইয়া মৃত মধুর বর্নের মন্ত হইলে কুমাণ্ড শশু ও জল এবং উক্ত চিনি ইহাতে পাক করিবেন পাক ঘন হইলে আয়ি হইতে নামাইবেন পারে শুণ্ঠ্যাদি অব্যের চুর্ন উহাতে দিয়া তাড় দারায় নাড়িতেই শীতল হইলে ২ সের মধু দিয়া উত্তমক্রে মি-জিত হইলে যত্ন গুক্তিক রাখিবেন সেবন ১ তোলা অথবা ২ তোলা বল্কা হক্ষ কিঞ্ছ উক্ত থাকিতে পান করিবেন অনুপান মধু।

मर्भगः।

মুখ হইতে রক্তস্রাবের মু**ক্তিযোগ।** শুভাবলেহ। ফুল হ্রীতকী চুণ করিয়া বাদকপুত রেসে সপ্তবার ভাবনা দিবেন পরে শুফ করিয়া ৪ মা্যা পরিমাণ দেবন করিবেন অনুপান মধু।

নীলোৎপলাদি চুব। যুদ্ধি সালুকফুল পঞ্চ পর্গটি প্রি রঙ্গুলোধছাল অর্জ্জনছাল রসাঞ্জন পাত্রকেশর এযাংপ্রতি সমচূর্ব ভক্ষণ ৪ নাবা অনুপান মধু ২ মাধা চিনি ২ মাধা বাসক্রল ছাল ২ তোলা পাকার্য জল ১ সের শেষ ১ছ-টাক সকল একজে গুলিয়া সেবন করিবেন।

বাসাভানিশ। বাসকপত্রস ৪ ভোলা তানিশ চুর্ন ৪ মাষা মধু ৪ মাষা নিশ্রিত করিয়া পান করিবে। ইছাতে: ক্ক পিড় কান সরভেদ অক্লচি ন্ট করে।

বালাদি। বাসকপাত যুক্তার ন্যায় দথা করিয়া তাহার রস ৪ তোলা মধু ৪ মাঘা চিনি ৪ মাঘা একতে পান করিবে।

নাসিকা হইতে রক্তস্রাবের মুফ্টিযোগ। দাভিম কুলের রম শ্বেত হকার রস নতা দিবে। অথ মুখ ংইতে রক্ত নিবারণ ঔষধ।

শ্লারত বটি। কর্মল কুড় কাঁকড়াশ্লি কপূর বংশাে লাচন লবল ত্রিকট্ জটানাংসী তালিশপত নাগেশ্বর এলা ইচ গুড়হক তেলপত থাতকীপুপ্প ত্রিকলা বচ জায়কল জ-রিত্রী জ্যেষ্ঠনপু মুখা এধাংপ্রতি সমচ্ব করিবে সকলের অ র্ক্রেক অভ্রত্তম অজ্রের অর্কেক কজ্জলি এই সকল দ্রা একত্র করিয়া ভাবনা দিবে যথা, বেগুণপত্রের রস সন্ধিনারস বা-সনহাটি মূল রস জ্বপাল পত্র রস। এবাংপ্রত্যেকে এক দিবস পরে শুদ্ধ করিয়া ও রতি পরিমাণ বটি বান্ধিবে অনুপান সাচিপাণ রস মধু ইহাতে রক্তপিত কাস জ্বর যক্ষা শ্বান কাস উরুক্ত জ্বর দাহ সন্দািগ্রি'অরুচি ঘুনজ কাস নিবারণ ও রক্ত্রাব নাশ হয়।

তালিশাদি চূণ। তালিশপত 6িতাহল তিকটু কর্ফন কুড় বচ কাঁকড়াশ্জি যমানী আকা হরী হকী বাসকর্ল ক- িটকারিমূল চিম্রমূল বংশলোচন ক্লমজীরা কপূর চত্ঃ-জাত এষাংপ্রতি সমভাগ চুর্ব করিবে ভক্ষণ ৪ মাষা অন্য-পান মধু আদার রস ইহাতে রক্তপিত কাস জ্বর দাহ অগ্নি মান্দ্য ক্ষরকাস এই সকল রোগ নিবারণ করে।

তালিশাদিমোদক। তালিশপত ১ তোলা নরীচ ২ তোলা শুণ্ঠী ৩ তোলা পিপুল ৪ তোলা গুড় বক ৪ মাবা কোইচ ৮ মাবা বংশলোচন ১২ মাবা বচ ২ তোলা চিনি অন্ধিরে এই সকল অব্য চুৰ্ব করিবে মগু দারায় মোদক বাজিবে ৪ মাবা পরিমাণ ভক্ষণ প্রাতে এবং সায়াংকালে অনুপান পঞ্কোল ক্রাথ। ইহাতে কাদ শ্বাস অক্লচি আলিমান্দ্য পাণ্ডু গৃহিণী জ্বর ছিদি শূল এই সকল রোগ নইট হয়।

পুরতিন কুমাণ্ডের শশু শুদ্ধ করিরা চুর্ব ১০ পাল ৪ দের
ঘৃতে ভঞ্জন করিরা ভাহাতে চিনি ১০ পাল কুমাণ্ড রদ ১৬
দের। পিপুল । পপুলস্থ জীরা শুগু । এলাইচ গুড় ছক তে
জপত ধন্যা মরীচ এষা ৭ প্রতি ২ পাল চুর্ব কুমাণ্ড জলের
মহিত পক্ষ কুমাণ্ড ও চিনি ইহাতে ঐ ফলল জব্যের চুর্ব
প্রক্রেপ দিয়া পুনকার পাক করিবে নিক্ফেণ হইলে তাহাতে মধু ১৬ পাল পিপুল নিকড় গুড় ছক তেজপত্র এলাইচ। এষা ৭ প্রতি ৪ ভোলা চুর্ব দিয়া মর্দ্দন করিবে। সেবন
দিসন্ধ্যা ৮ মাষা পরিমাণ মরপান খাড় ১ তোলা ধাত্রীফল ৪ মাষা বুমাণ্ড জল ১ পোয়াতে পেষ্ণ করিরা ভক্ষণ
করিবে এই বে অনুপান লিখিলান ইহা প্রাভঃকালে জানি
বেন সায়ত্রে ক্রির ইক্রেস পঞ্চকোল ক্রাথ ও মরীচ চুর্ব এই
সকলের সম্বান ইংগতে রক্তাপিত জ্বর দাহ হচ্ছুল কাস
শ্রাস ছিদ্বি ইত্যাদি পীড়া নাশ হয়।

ইতি দর্পণে রক্ত চিকিৎনা নমাপ্তঃ।

যক্ষাধিকার।

বাসকলোছ। বাসকছাল ১৬ পল চিনি ৮ পল মৃত ই পল পিপুল ২ পল মধু ৮ পল পাকের প্রকার,পাকপাতে চিনি চড়াইয়া অবলেহের উপযুক্ত হইলে বাসক ছাল চুর্ন ও ঘৃত তাহাতে দিয়া তাড় দ্বারায় নাড়িতে২ শীতল হইলে তাহাতে উক্ত মধূ দিয়া অবলেহ করিবেন দেবন ১ তোলা প্রিমাণ।

हन्तर्गानि रेखन।

তিল তৈল ৪ সের দ্ধিরমাত ১৬ সের মুক্লিলাছা ১৬
পাল জল ১৬ সের শেষ ৪ সের কল্ক রক্তন্দন বালা লথী
তেজপত্র কুড় জ্যৈষ্ঠ মধু শৈলজ পাত্মকান্ঠ মঞ্জিঠা সরল
দেবদান্ধ শঠি এলাইচ খাটাশী নাগেশ্বর শিলারস মুরা—
মাংশী জটামাৎশী কাঁকলা প্রিয়ঙ্গ মুথা হরিডা দারুহরিডা
অনন্তমূল আমালতা কটকী লবঙ্গ অগুরু কুস্কুম গুড় ছক
দারুচিনি লালুক। এষাংপ্রতি ২ তোলা তৈল পাকের প্রকার প্রথমত তৈল মুক্তা করিয়া কল্ক অব্য দিবেন পরে
লাহার ক্লাথের সহিত পাক করিবেন কিঞ্জিৎ শেষ থাকিতে দ্ধিরমাত দিবেন পরে নির্জ্জা হইলেই পাক্ষিদ্ধি
খাটাসি দিবার প্রকার দোলা যন্ত্র করিয়া তৈল খাটাসি
পাক করিবেন চন্দন কুস্কুম একাঙ্গী শিলারস লখী কপুর
কস্তুরী লভাকস্তুরী এই সকল জব্য মুক্মচুর্ন করিয়া তৈলে
দিবেন আর এই রোগে চহুর্মুগ সেবন করাইবেন।

রহদাসাবলেই। বাসক ছাল ২ সের জল ১৬ সের শেষ ৪ সের চিনি ২ সের নাগেশ্বর পিপুল মরীচ বচ মুখা তেজ পত্র এলাইচ দারুচিনি সৈন্ধব। এযাংপ্রতি ২ তোলা মধু অর্চ্চদের পাকের প্রকার ১৬ সের জলে বাসকছাল ২ সের সিদ্ধ করিয়া শেষ ৪ সের থাকিতে উজপ্রিমান চিনি পাক করিয়া অবলেইের উপযুক্ত হইলে নাগেশ্বর প্রভৃতি অব্যের সুক্রাচুর্ন পাক নামাইয়া দিবেন তাড়ুদ্বারায় নাড়িতে২ শী- তল হইলে অর্চনের মধুর সহিত মিলিত করিয়া রাখিবেন ওষধ দেবনের পার কিঞ্ছিৎ উষ্ণ ধ্রূপান ক্রিবেন।

রায়াদি লোহ। রায়া তালিশপত কপুর খুলকুড়ি শুক মনছাল শুণ্ঠী পিপুল মরীচ হরীতকী বয়ড়া আমলকী চিতামূল বিড়ঙ্গ মুথা এই সকল জব্যের সমভাগে যত লোহ তত জলের দার! চারি প্রহর খলে মর্দন করিয়া গুঞ্জা পরি-মাণ বটি করিবেন অনুপান মধু ও ত্রিকটু চূর্ণ।

শৃঙ্গারান্দ্র। রুফান্দ্র ১৬ তোলা কপূর জয়িজী বালা গঙ্গপিপুল তেজপত্র লবঙ্গ জটামাংসী ভালিশ-পত্র দারুচিনি নাগেশ্বর কুড় ধাইকুল শুজগন্ধক এবাংপ্রতি ১ তোলা পারা ৪ মাধা এই সকল জব্য স্ক্রচুর্ব করিয়া জ-লের দ্বারা খলে মর্দ্দন করিবেন ২ গুঞ্জা পরিমাণ বটি অন্ধ-পান আস্তপাণ ও আদার সহিত চর্বাণ করিয়া থাইবেন পারে কিঞ্ছিৎ জলপান করিবেন অথবা আদা ও পালের রুসে মর্দ্দন করিয়া সেবন করিবেন পথ্য মাংসের যূষ গব্য ঘুত ইত্যাদি।

মৃদান্ত রন। পারা ১ তোলা কজ্জনী দারা জীন স্ববন্ধ তোলা শুল মুজা ২ তোলা গল্পক ২ তোলা দোহাগা ২ তোলা এই সকল অব্য কাঞ্জি দিয়া খলে অই প্রহর মর্দন করিয়া ছায়াতে শুক্ত করিবেন, অথবা রৌজে শুক্ত করিবেন, পরে এক হাঁড়ির অর্জেক পর্য্যন্ত দৈল্পব লবণ চুন দারা পূর্ন করিয়া এক মৃত্তিকার কোটার ভিতরে ঐ ঔষধ পুরিয়া কৌটার মুখ অতি শক্ত করিয়া লেপন করিবেন, পরে রৌজে শুক্ত করিয়া লেপন করিবেন, পরে রৌজে শুক্ত করিয়া লেপন করিবেন, তৎপরে ঐ ঔষধের কোটা হাড়ির লবণের উপর রাখিয়া ঐ হাঁজির মুখে সরা ঢাকা দিয়া উত্তমকপে লেপন করিবেন, তদনভার সাবধান হইয়া চারি প্রহর জাল দিবেন, পরে হাঁজি নামাইয়া শীত্র হইলে ঔষধ বাহির ক্রিবেন, এই ঔষধ চুন হইবে জানিবেন পরিমাণ ৪ র্ভি

শন্পান মরীচ চূর্ণ ১০ রতি ঔষধ দেবন করিয়া এক গু-তিকা মুখে রাখিবেন।

গুডিকা প্রকার। প্রকাশণ ১০ তোলা আর্দ্ধ ছেঁচা করিয়া এক সের জলে পাক করিয়া দশ পল থাকিতে দেই জলে ২৬০ রতি পিপুলচ্ব এবং ঐ পরিমাণ মরীচ চ্ব আর বামনহাটিরপত্র চ্ব ১০ তোলা নি জ্জাল মধু ১০ তোলা লকল একতে খলে মদন করিয়া ১০ রতি পরিমাণ গুডিকা করিবেন পরে ছায়াতে শুষ্ক করিবনে, পথ্য গবাছত ছক্ষ তক্র ছাগমাংস কুম্বাপ্ত ডুমূর প্রেলি গুল মানকচু।

ইতি সারকৌমুভাং যক্ষাধিকার সমাপ্তঃ।

मर्भगः।

অয়োদশাঙ্গ পাচন। ধন্যা পিপুল শুণ্ঠী দশমূল এষাং প্রতি ২ মাষা পাকার্থ জল ১ সের শেব ১ ছটাক প্রক্রেপ মধু ৪ মাষা।

পঞ্চশাঙ্গ পাচন। দশ্ল বাট্যালামূল রায়া কুজ দেবদার শুগুী এষাংপ্রতি ২মাষা পাকার্থ জল ১সের শেষ ১ ছটাক প্রফেপ মধু।

অবলেহ। পিপুলরোয়া দ্রাক্ষা চিনি এই তিন দ্রব্য অব লেহ করিবে।

যভালাবলেছ। বাসকয়ল অশ্বগন্ধায়ল পিপুলয়ল চিনি মধু ঘৃত এই সকল ডব্য সমভাগে অবলেছ করিবে।

বাসাবলেই। বাসকপত্তরেস ৪ সের চিনি ১ সের পিপুল রোয়া চূর্ব ১৬ তোলা গবাঘৃত ১৬ তোলা এই কয় অব্য ঘন করিয়া পাক করিবে তদনন্তর তাহাতে এক সের মধূ একত্র করিয়া অবলেই, ভাপ্তে রাথিবে ভক্ষণ ৮ মাধা অন্থ-পান বাসকমূল ছাল ২ তোলা পাকার্য জলু ১ সের শেষ ১ ছটাক ইহাতে বাত যক্ষা কাস শ্বাস পার্য শূল হচ্ছ্লরজ পত্তিহার এই সকল নট করে।

ছাগলাত হত। নপূংসক ছাগনাৎস ১২॥॰ দের পা-কার্ম জল ৬3 সের শেষ ১৬ সের গব্য হত ৪ সের কল্ক জ্বে নীয়গণ ১৬ খান প্রতি ১৭॥০ মাষা চূর্ন করিয়া ঘৃত দিয়া পাক করিবে। অনুপান ছাগছখা ভক্ষণ ১ তোলা ইহাতে কাস শ্বাস যক্ষা পার্শ শূল হুচ্ছূল রক্ত পিত জ্বর অতিসার শোথ এই সকল পীড়া শান্তি হয়।

চন্দনাদি ভৈলা। তিলতেল ১৬সের দধিরমাত ৬৪ সের কাঁচালাহা ৮ সের জল ৬৪ সের পাক শেষ জল ১৬ সের কক্ল রক্তদদন বালা লখী জ্যেষ্ঠমধ্ শৈলক পদাকাঠ ম-জ্লিতা সলকাঠ দেবদার শঠী এলাইচখোলা নাগেশ্বরতে-জপত্র শিলাজতু মুরামাৎসী কাকুলি প্রিয়ক্ষ্মথা হরিজা দারহার্ত্রা মালতা চিরাতা কটকী লতা কন্ত্র বিষ্টুছল লবঙ্গ পিপুল কুরুম ওড়জক বেণুক লালুকা এষাংপ্রতি ৪ ভোলা চুর্ণ করিয়া তৈলের সহিত পাক করিবে। ইহাতে অপস্মার জ্বর যুক্ষা রক্তপিত্ত উরক্ষত এই সকল নফ করে জার ধাতু ও বল ইজি করে।

ইতি দর্পণে যত্মাধিকার স্মাপ্তঃ।

কান মাতের চিকিৎনা।

কণ্টকারি পাচন। কণ্টকারী ২ ভোলা জল ৩২ ভোলা পাক শেষ ৮ভোলা প্রক্ষেপ নৈন্ধব চূর্ব ২মাষা হিঙ্গ ৫রতি কিন্তু হিঙ্গ স্থতে ভর্জন করিয়া চূর্ব দিবেন।

যুক্তিযোগ। বাসকপত রস ২ তোলা সধু ৪ মাধা প্র-

. क्लश मित्रा थोहेरवन।

হরীতকী মোদক। হরীতকী শুণ্ডী পিপুল মরীচ এই চারি জব্য স্থাছণ করিয়া সমভাগে যত ইইবে পুরাতন গুড় তাহার দ্বিশ্ব লইয়া পাক করিবেন যথন মোদকের উপবৃক্ত পাক হইবে তথন ঐ দকল চুর্ন ইহাতে দিয়া চুলা হইতে নামাইবেন পরে ভাড় দারায় নাড়িতে২ শীতল হ-ইলে ১তোলা পরিমাণ বটি বাদ্ধিবেন প্রত্যহ প্রাতঃকালে দেবন করিবেন।

নামান্য কান। কিঞ্চিৎঅসাধ্য হইলেতাহার মুন্তিযোগ ননছাল হরিতাল জলের সহিত ঘর্ষণ করিয়া কুলের পাক্ষ-পত্তে মাথাইয়া রৌজে শুক্ত করিবে পরে সেই পত্ত সকল চুর্ন করিয়া স্কল বস্ত্রে চাঁকিয়া ১০ রতি অনুপান চুর্ন সেবন করিয়া তদনন্তর ঘুই বলকের ঘুকা এক পোয়া তাহাতে কি-ঞিৎ মধু দিয়া থাইবেন, তাহাতে মৃত ঘুকা মাৎসাদি গুরু-পাক অব্য থাইতে পারিবেন কাঁচাজল পান কর্ত্ব্য নহে, এই উষধ অভি বালক ও রজের সেবন নহে।

সমশর্করাছ্র । লবঙ্গ ২ তোলা জায়কন ২ তোলা পিপুল ২ ভোলা মরীচ ৪ ডোলা শুগুী ৪ ভোলা এই সকল
অব্যের ছুর্বে যত হইবে তাহার সমান চিনি সকল একত্তে
উত্তমরূপে মিশ্রিত করিয়া এক কাচেরপাতে অথবা বাঁদের
চোঙ্গায় রাখিবে, দেবন ১০ রতি পরিমাণ পরে শুগুী সুক্ষ
ছুর্ব স্বিৎ তপ্ত ছুপ্রের একত্ত করিয়া খাইবে।

ব্যান্ত্রী হরীতকী। কণ্টকারি ১০পল জল ৬৪লের হরীভকী ১০০পল প্রক্ষেপ শুণ্ঠী পিপুল মরীচ এবাংপ্রতি ১৬
তোলা দারুচিনি তেজপত্র এলাইচ নাগেশ্বর, এবাংপ্রতি
২ তোলা মধু ৬ পল, পাকের প্রকার রহৎ পাকপাত্রে ৬৪
লের জল দিয়া ভাহাতে কন্টকারি কিঞ্ছিৎ ছেচিয়া পুটলি
করিয়া দিবেন আর হরীতকীর বীজ ত্যাগ করিয়া ১.০পল
তোহা এক পুটুলি বন্ধ করিয়া পাক করিবেন শোষ ১৬ মের
থাকিবে ঐ জলে ১০০ পল পুরাতন গুড় পাক করিয়া অবলেহের উপবুক্ত হইলে পাক পাত্র চুলা হইতে নামাইবেন
পারে উক্ত শুণ্ঠাদি প্রব্যের চুর্ন ইহাতে দিয়া উত্তমকপ্রে

মিত্রিন্ত করিবেন। দেবন ১ তোলা পরিমাণ পরে শুগী চুর্নের সহিত উষ্ণ ধ্রু পান করিবেন।

ষ্পেরসেত্র গুড়িকা। শোধিত রস ২ তোলা তাহাতে জয়ন্তী পত্র রস ১তোলা নিজ্জল আদার রস ১তোলা দিয়া মর্দন করিতে করিতে ঘন হইলে তাহাতে জলস্ত কাঁকড়ার রস ১ তোলা গুড়কামাযেরপাতার রস ১ তোলা দিয়া ৪ প্রহর রৌত্রেও ৪ প্রহর শিশিরে রাখিবেন, শোধিত গল্পক ১ পল ইহাতে ভাবনা ভূঙ্গরাজের রস ১ তোলা পরে খলে মর্দন্ করিতে ক্রিতে, ভূঙ্গরাজের রস শুদ্ধ হইলে এবং পারা অতি পরিস্থার হইলে কজ্জলী করিবে সেই কজ্জনীতে ১ পল ছাগ্রন্ধ দিয়া খল করিতে২ বটি পাক হইনার মতহইলে ২রতি পরিমাণ বটি বান্ধিবে অনুপান ছাগ্রন্থ উবধ পান করিয়ে থাইতে হইবে তদনন্তর শুঠী চুপ্রের সহিত উব্ধ হক্ষ পান করিবে, পথ্য ঘৃত মাংসাদি। ইতি সারকৌম্নাং কালাধিকার সমাপ্তঃ।

দর্পণ । । উরুক্ষত চিকিৎসা।

কানড়াদিচ্ব। কানড়গুল মরীচ মুথ। বচ আকা শত-মুলি তালিশপা তিক টু চিনি, এবা প্রতি সমচ্ব ভক্ষণ ৪ মাধা অনুপান তিক টুজল।

রহন্তালিশাদি মোদক। তালিশপত ২ তোলা অভ্রহ্ম
৪ তোলা সরীচ, ৬তোলা শুণ্ঠী ৮ তোলা পিপুল ১০ তোলা
বচ কুড় তিজাতক তিমদ এবা পপ্রতি প্রত্যেকে ১ তোলা
এই সকল প্রব্য সমভাগে চুর্ব করিয়া সকলের সমান চিনি
এবং মধু দিরা, মর্দন করিবেন স্থন্যর রূপে মর্দিত হইলে ৮
মাষা পরিমাণ মোদক করিবেন অন্মপান জল এই ঔষধ
সেবন দিসন্ত্র্যা করিবেন, ইহাতে পঞ্চ প্রকার কাম স্থাম
রাজ্যক্ষা উরুক্ষত জ্বর দাহ তৃঞ্চা ভ্রম ছর্দি অ্রুচি অম্লপিত্ত অগ্রিমানদ্য সংগ্রহগৃহিণী এই স্কল রোগ নাশ হয়।

অশ্বণকাদি অবলেই। নাগরী অশ্বণকা ত্রিকটু বংশ-লোচন ত্রিজাতক পিশু খর্জ্জুর তালিশপত্র নাগেশর জায়-কল লবক জরতী পিপুলম্ল পান্নীজ জীয়া রুফ্জীরা বেলন্ডেঠা থাতকীপুষ্প ত্রিকলা খদিরকান্ত মধুরি মহাবরি বচ বালা অভ্রত্ম জটামাংসী বক্ষত্রম জ্যেন্তমধু শতমূলি ব্যাকৃড়বীজ আলকুষি বীজ ত্রিমদ শঠী কপুর কর্জ্জনী স্ববর্ণ তাম কড়ি তাম এষাংপ্রতি সমতাগে চুর্ণ করিবে সকলের দিশুণ চিনি পাকার্থ মহিষ্থে ৪ সর গব্যম্ত ॥০ সের পাক সমাপ্তি হইলে ।০ সের মধু দিয়া উত্তম রূপে তাজু ঘারা নাড়িতে নাড়িতে নিশ্রিত ইইলে ঔষধ ভাল হইবে ৮ নাষা পরিমাণে মোদক বান্তিবে অনুপান ছাগ্রেশ্ব পথ্য ছাগমাংস ইহাতে উক্লকত রাজ্যক্মা জ্বর দাই কামলা রক্তপিত্ত অর্শ অগ্নিমান্দ্য গৃহিনী অতিসার রক্তাতিসার রক্ত

বাদাথগু। বাদকয়ল ১২।। সের পাকার্থ জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের চিনি এক সের এই ক্লাথে চিনি পাক কারয়া ঘন হইলে পারে পুরাভন বুদ্ধাপ্ত শশু চুর্ব কেসের ঘৃতে ভ-জ্জন করিয়া লইবেন এবং রজচন্দন তালিষপাত বচ কুড় কুল হরীতকী ত্রিকটু ত্রিফলা ত্রিদ ত্রিজাতক দ্রাফা জ্যেন্ঠ-মধু পিশুখর্জ্জুর এষা প্রাত ২ তোলা চুর্ব ইহাতে দিরা পাক করিবেন পারে দেড়পোয়া মধু দিরা তাড়ু ঘারায় নাড়িতে নাড়িতে নিশ্রিত হইলে ঘৃতভাপ্তে, রাখিবেন ভক্ষণ দ্রামা অনুপান কুদ্মাগু জল, এই উষধ আয়ি বলহীন ব্যক্তিও শুক্র হীণ ব্যক্তি ভক্ষণ করিবে ইহাতে রাজ্যক্মা বিকার রক্ত পিশু উদ্দক্ষত সকল প্রকার কাস সক্ষ প্রকার শোথ জ্বর নানা প্রকার অতিনার গৃহিণী এই সকল রোগ নাশ করে।

ইতি দৰ্পণে ,উক্লত চিকিৎনা সমাপ্তঃ।

কাস চিকিৎসা।

পঞ্মলাদি পাচন। শালপানি চাকুল্যা ব্যাকুড কণ্ট-কারি গোকুরি, এষাং প্রতি ৪ মাষা পাকার্থ জল ১ সের শেষ এক ছটাক প্রক্ষেপ মধু ২ রতি।

শঠ্যাদিচুন। গন্ধশঠী কাঁকড়।শ্লি পিপুল বামনহাটী মূল পুরাতন গুড় বাদক ছাল এবাংপ্রতি সমভাগে চুন্ করিবে ভক্ষণ ৪মাবা অনুপান ভিল তৈলে গুলিনা থাইবে, ইহাতে বাত কাদ নট করে।

-- বলাদিপাচন। বাট্যানাস্ত্ৰ কণ্টীকারী ব্যাকুড় বাদক স্থল ডাক্ষ এবা প্রতি ৪ মাঘা পাক শেষ পূর্ববং প্রকেপ মধু ৪ মাঘা চিনি ৪ মাঘা, ইহাতে পিতুকাদ নইট করে।

ডাক্ষান্তবলেই। জাক্ষা কামলা পিণ্ডবর্জ্জুর পিপুল ময়ীচ, এষা প্রতাত সমভাগে চুর্ব করিয়া ঘৃত মধু দ্বারায় অবলেই করিবে, ইহাতে পিত্তকাম নউ করে।

পুদ্ধরাদি। কুড় কর্ফল ভালীয়ল হাণ্ডী পিপুল, এবাং-প্রতি ৫ মাষা পাক শেষ পূর্বেৎ প্রক্ষেপ উদ্ধান্ত সক-লের চূর্ব করিয়া ৪ মানা দিবেন, ইহাতে কফ কাস নষ্ট্র করে। দশমূলাদি।

দশহলের পাচন পরিমাণ ক্কাথে পিপুল চুর্ণ ৪ মাধা দিয়া নেবন করিবেন ইহাতে কফ কাম নন্ট করে।

কটকলাদি পাচন। কর্ফল বুশা কেশা থাকডা শরব-রাটি বামনহাটী মূল মুখা খন্যা বচ হরীতকী কাঁকডাশৃঙ্গী যব পর্পতি ভণ্ডী দেবদার মৃত, এষা প্রতি ১৮০ মাখা পাক শেব পুর্ববৎ প্রক্রেপ মধু ৪ মাখা হিঙ্গু ১ রতি, ইহাতে বাত ক্ষ জন্য কাশ কণ্ডরোগ শূল খাস হিক্কা জ্বর এই স্কল প্রীডানাশ করে।

দশমূলাদি ঘৃত। ঘৃত ৪ দের পাকার্থ দশস্থল প্রতি ৩ পোয়া পাকার্থ জ্বল ৬৪ দের শেষ ১৬ দের, কক্ল কুড় বামনখানী মূল শঠী বেলমূল দেবদারু ত্রিকটু হিন্দু, এযাং প্রতি ৪:তালা চূর্ব করিয়া ইহার সহিত একর করিবে অন্ত-পান হক্ষা

কণ্ডকারি মৃত ৪ সের কণ্টকারি রস ১৬ সের দশমূল পত্ত শাখা একতে ৮ সের জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের কক্ল বাট্যালামূল ত্রিক টু বিড্ঙ্গ শঠী চিতামূল সচল লবে যব-ক্লার বেলশুঠা আমলা কুড় বিছটিমূল ব্যাকুড়মূল হরীতকী যসানী দাড়িয়কল আকা খেতপুনর্বা মূল চঞি তুরালভা অম্লবেত্দ কাঁক ড়াশ্লী তালিশপত্র বামনহাটী হল রায়া গোক্রি, এষাংপ্রতি ২ তোলা চুর্ব ক্রিবে ঔষধ সেবন দ্বিসন্ত্র্যা পরিমাণ এক ভোলা, ইহাতে সকল কাম খাদ হিক্লা নাশ হয়।

রায়াদি লৌছ রায়। তালিশপত কপূর থুলকুড়িনূল শিলাজতু তিকটু তিকলা তিখদ, এষা প্রতি ৪ মাধা সর্ব তুল্য লৌহভন্ম নধুতে মর্দন করিয়া ১ মাধা পরিমাণ বটি বাজিবে অনুপান মধু। ইহাতে সকল উপত্রের সংযুক্ত কাস স্বর্ভক্ত ক্ষয়কাস ইত্যাদি সকল নাশ হয়।

া বাসাদি চুর্ব। বাসকমূল ছাল বালা মুথা গুলঞ্চেরছাল শুগী ধাতকীপুষ্প আতইচ বেলগুঠা অভ্ৰত্য কৃষজীরা ক-কল কুড় জায়কল হিন্দু লবঙ্গ সোহাগা বচ গুড়ুত্বক এলাইচ বীজ মরীচ বামনহাটীমূল, এষাংপ্রতি ১ তোলা সকল চুর্ব করিয়া একত্রে পোষণ করিবে ভক্ষণ ৪ মাষা অনুপান ছাগ ছক্ষ কুল্লাগুল্ল মধু, ইহাতে স্থান কান বিষম জ্বর পঞ্জ-কান ইত্যাদি রোগ নট করে এবং অগ্রিয় জি হয় ও বল আর দেহ পৃথ্টি করে।

কককেশরি রস। কর্ফার কুড কাঁকডাশৃঙ্গী রস তালি-পাত্র কজ্জলী এ সকলের সমান ত্রিকটু চুর্ন দকল চুর্ন একত্র করিয়া স্থবন্ন পাত্র সরে ও দিবস ভাবনা দিবে মটরাকৃতি বটি অনুপান আদার রস মধু।

कानभःशंद्रवि । चंगािक शांद्रा भन्नक ज्यशांन तमा-

ঞ্জন নোহাগা আফিক শ্লি কুঁচিলা, এই সকল জব্য শো-ধন করিবে, বচ চিতামূল তালিশপত নিম্ববীজ তিকটু তি-ফলা এই সকল জব্য সমভাগে চুৰ্ব করিয়া বেগুৰা পত রুদে ভাবনা দিয়া গুঞ্জাকতি বটি করিবেন অনুপান আদা ও পানের রুম, ইহাতে সকল প্রকার কাস বিকার স্থ প্রকার শূল সকল বাত নানা প্রকার অতিসার অম্ল পিত সকল স্থা প্রকার শোথ এই সকলরোগ নই হয় এবং দেহ পুটি অগ্নি ইজি ও উত্তম ৰূপ অক্লিচি নইট হয়।

রুদেন্দ্রবিদ্ধা। পারা গল্পক অন্তেম লোইভাম তমুভাম হরিতাল শৃক্ষি মনঃশিলা ধৃন্তুরবীল এই সকল শোধিত করিয়া সকল ভসা প্রতি ২ তোলাতে যত হইবে তাহার সমান মরীচচুর, ভাবনা জায়ফল ক্লাথ জয়ন্তীপত রস চি-ভাছল রস মানদণ্ড রস ঘঁটু পাতার রস নিদিপ্রিকা রস ঘোডাসিজ পত্র রস দন্তিমুল বেগুণাপত রস আদার রস নাচিপারের রস, এবাংপ্রতি এক দিবস, সার্হপ পারমান বটি অনুপান, মধু, ইহাতে সকল প্রকার কাস স্থাস কাস পুণক দ্বন্দ্র কাস ঘোরজ্বর ভল্লা অগ্রিমান্দ্য ইত্যাদির রোগ নাশ হয়।

ইতি দৰ্পণে কাদ চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

হিক্কা চিকিৎসা।

চন্দনাদি তৈল প্রভৃতি কাস রোগ উজ যে যে তৈল আছে তাহা শরীরে মর্দন করিয়া অগ্নির উত্তাপ গ্রহণ ক-রিলে এবংলবণের পুটলি করিয়া ব্রহ্মতালুতে তাপ দিলে আর নিশ্বাস কিঞ্ছিৎ কাল রোধ করিলে এবং কোন কপে রোগীকে চিন্তাযুক্ত করাইলে ও শীতল জল পান করাইলে এবং মনোহর বাকা কহিলে আর যাহাতে শোকোৎপত্তি হয়, কিয়া প্রস্রাব অধিক হয় এনত কোন উষ্ধাদি দিবেন অর্থাৎ বায় উর্জাত হইয়া হিক্কা হয়, অধোবায় হইলে প্রস্রাব হয়, তাহাতে হিক্কা নট হয়, আর জ্যেষ্ঠ মধু চূর্ণ মধু সং--যোগ করিয়া নম্ভ দিবেন, এবং শ্বেত সর্বপ পিপুল চূর্ণ ক-রিয়া নম্ভ দিবেন, আর পিপুল চূর্ণ পুরাত্ম গুড়ের সহিত নম্ভ দিবেন।

যুক্তিযোগ। পিপুল আমলকী শুণ্ঠী চূর্ব সমভাগ এবং স্থৃত মধু চিনি সমভাগ এই ছয় দ্রব্য মিলিত করিয়া মুখে রাখিলে হিকা নিবারণ হয়।

ইতি সারকৌমভাং হিক্কাধিকার সমাপ্তঃ।

শ্বাস রোগের চিকিৎনা।

চন্দনাদি তৈল মৰ্দন করিয়া বড় লৌহ একথান অগ্নির ন্যায় উত্তপ্ত করিয়া উভয় কক্ষে উভয় হত্তে এব করের উভয় পূর্চে তাপ দিবেন, আর কণ্ঠ কুপো লৌহ পালা উত্তপ্ত ক-রিয়া পুনঃ২ তাপ দিবেন।

য়ক্তিযোগ। পুরাতন গুড় সর্বপ তৈল সমভাগ মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে খান নই হয়।

পাচন। বিল্ছাল নোণাছাল গান্তারিছাল পারুলছাল গণিরারিছাল শালপানি চাকুল্যা কন্টিকারি গোছুরী ব্যাকুড, এযাংপ্রতি ১৬ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল
কাপড়ে ছাঁকিয়া তাহাতে পুরাতন গুড় ৪ মাষা প্রক্রেপ
দিয়া ঈষ্টফ সেবন করাইবেন, আর কুল্থা কলাই অগুরু
কন্টকারি এষা প্রতি জল ৪পল শেষ ১পল কাপড়ে ছাকিয়া কুড় স্ক্র চুর্ন করিয়া ৪রতি প্রক্ষেপ দিয়া নেবন করাইবেন, ইহাতে খাস হিক্কা নিবারণ হয়।

পুচ্ছাবলেই। ময়ূরপুচ্ছ ভক্ষ ৪০ রতি মধু ৪০ রতি মি-ভাত করিয়া দেবন করিলে খাল নইট-হর কিন্তু বালকের প্রতিবিশেষ উপকার হয়। শিধিপুচ্ছ ভন্ম করিবার বিধি, মৃত্তিকা পাতের মধ্যে দিয়া তাহার মুথ রুদ্ধ করিয়া জ্বাল দিবেন, সেই পাত অগ্নি তুল্য হইলেই ভন্ম হয়।

্ভাগীগুড়। বামনহাটির হল ১০০ পল বিল্ছাল সোণার ছাল গাস্তারির ছাল পাক্ষলপাল গণিয়ারিছাল শালপানী চাকুল্যা কল্টিকারি গোহ্মরী ব্যাকুড়, এষাংপ্রতি ১০ পল আন্ত হরীতকী ১০০ পল জল ১৪৪ দের শেষ ৩৬ দের পু-রাতন গুড় ১০০ প্রাল গুড় অবলেহের উপযুক্ত পাক হইলে শুঠী পিপুল মরিচ দাক্ষচিনি তেজপত্র এলাইচ এই সকল হল্ম চুর্ন করিয়া এবাংপ্রতি ১ পল যবক্ষার ৪ ভোলা গুড় ৪ তোলা সেবন করিবেন কিন্তু হরীতকীচুর্ন সম্ভব পরে সেবন করিয়া শশ্চাৎ গুড় ৪ তোলা ভক্ষণ করিতে হয়।

গুড় পাক করিবার বিধি। রুহৎ এক পাতে ১৪৪ সের জল দিয়া বামনহাটির মূল ১০০পল ছেঁচিয়া এবং বিলু ছালাদি ১০ জব্য ১০ পল করিবা ছেঁচিয়া তাহাতে দিবেন আর আন্ত হরীতকী বত্রের পুটল করিবা তাহাতে দিবেন, পরে জাল দিয়া ৩৬ সের জল থাকিতে বস্তে ছাকিরা জল পুনর্বার জালে চড়াইয়া ঐ শত পল গুড় তাহাতে দিরা অবলেহের ন্যায় পাক ছইলে নামাইয়া গুঠী আদিচুর্ব সকল ভাহাতে দিবেন এবং যবক্ষার চারি তোলা দিয়া ভাড়ু ছারা নাড়িতেই শীতল হইলে মধু ১৬ পল দিবেন, পথ্য থকা মাংসাদি মংছের যুষ ঈষ্টক থাকিতে দেবন করিবে।

মুর্যাবর্ত্ত রস। পারা ২ তোলা গন্ধক ৪ তোলা ঘৃতকুমারীর রসে ১ প্রহর থলে মাড়িয়া তামুপাতে ঐ ২ তোলা
পারা গন্ধক মৃতকুমারীর রসে মাথিয়া শুদ্ধ হইলে মৃতিকার
কৌটাতে যন্ত্রপুর্কক রাখিয়া কৌটা উত্তমনপে বদ্ধ করিয়া
বালির হাঁড়ির মধ্যে রাথিয়া হাঁছির মুখ বদ্ধ করিয়া চারি
প্রহর জাল দিয়া পরে হাঁড়ি শীতল হইলে কৌটা বাহির
করিয়া সেই তামুপাতে চুর্ব দিয়া ২ রতি ম্থুদিয়া মাড়িয়া

ভাহাতে বাসকপতের রস সম্ভব পর দিয়া সেবন করিবেন পরে রাখালসশারমূল দেবদার শুণ্ঠী পিপুল মরীচ চূর্ব সমভাগ এবং চিনি মিলিভ করিয়া সাধ্যামূরপ সেবন ক-রিবেন। পথ্য স্থত ছক্ষ মাংসাদি এবং অভিশয় রিক বা রুক্ষ ভবা গ্রহণ করিবেন না।

ইতি সারকৌয়স্তাং শ্বাসাধিকার সমাপ্তঃ।

স্বরভঙ্গ চিকিৎসা।

স্বরভঙ্গ তিন প্রকার হয় বাতজ পিওজ কফ্র।
বাতজে মুটিযোগ। নৈদ্ধর চুর্ন সংযুক্ত তিল তৈল হিত
কারী হয়, পিওজ মধু যুক্ত ঘৃত উপকারী হয়, কফজে তেঁছুল ছালাদি কার শুঠী পিপুল মরীচ এই সকল জ্বা এ-

কত করিয়া সেবন করিবেন।

কল্যাণ মৃত। হরিতা কুড় বচ পিপুল শুণ্ঠী রক্ষজীরা বন্যমানী জ্যেষ্ঠমধু দৈল্পব এই দকল জব্য মুজ্ম চূর্ণ করিয়া সমস্থাগে একত করিয়া ঘৃতের সহিত অবলেহ করিয়া থাই বেন, স্বরভঙ্গে তপ্তজল কিঞ্ছিফ অন্ন ব্যঞ্জনাদি ভোজন আর হিমকলে স্নান ও ভাহা পান কর্ত্ব্য নহে।

ব্রহ্মীয়ত। ঘৃত ৪ সের ব্রহ্মীরস ১৬ সের কল্কার্থ হরিজা জাতিপুপ্প কুড় রহতী হরীতকী এই সকল জব্য প্রতেকে ১ পল পিপুল বিড়ঙ্গ সৈন্ধব চিনি বচ এই সকল
প্রত্যেকে ২ তোলা ঘৃত পাকের প্রকার, উত্তম পাকপাতে
ব্রহ্মীরস ১৬ সের দিরা তাহাতে হরিজাদি চারি জব্য ছেচিয়া এবং জাতিপুপ্প না ছেচিয়া একত্রে এক পুটলি বাক্রিয়া পাক করিলে ৪ সের ব্রহ্মীরস থাকিতে পুটলি নিঙ্গডিয়া রস লইবেক পরে ঘৃতের সহিত পাক্রকরিবেন যথন
রস নিঃশেষ প্রায় হইবে তথন পিপুলাদি জব্যের স্কর্ম্বর্
ও সৈন্ধব এবং চিনি এই সকল জব্য প্রভ্যেকে ২ তোলা
স্কৃতে দিরা নাজিতে ২ যথন শীতল হইবে তথন জন্য পাতে

রাখিবেন। সেবন ১ তোলা অন্তপান উষ্ণ হক্ষ এবং হার ভঙ্গে ৰক্ষান্তক লৌহ সেবন বিধি আছে এই উষধ স্থানান্তরে পাইবেন।

ইতি সারকৌমুভাং স্বরভঙ্গ চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

बङ्गि हिकिएमा।

इस्टियोश । मोर्क्सानि मुथा अनोहेन धन्या अहे नकन দ্রা ফুলচুর্ন করিয়া মুখে রাথিলে অরুচি নট হর এবং মুথা আমলকী দারুচ়িনি সমভাগে হুক্মচূর্ণ করিয়া সর্বাদা হথে রাখিবে আর, দারুচিনি দেবদারু আমলকী পিপুল চঞি এই করেক দ্রব্যের স্থক্ষাচূর্ন সমভাগে মুখে রাখিবে কফের ক্রতা ব্যতিরেকে অরুচি হয় না আর যদি চিকিৎ দার দৌষে নানা প্রকার বিরস সামগ্রী ভোজনদারা অরুচি জয়ে তবে রোগীকে শীতল সামগ্রী ভোজন করাইবেন কিন্তু কফ জন্য অরুচিতে শীতল এব্য ভোজন নিষ্ধে, কফ স্বত্তে নানা প্রকার তিক্ত ক্যায় ঔষধ দারা যদ্যুগি হয় তবে কাট থোলার রজরর্ব ধানোর থই করিয়া তাহাকে চুর্ব করিবে দেই চুর্ণ মিছরির র**নে পাক করিয়া তাহাতে মরীচুধ**-ন্যার চাউল এলাইচ কুন্ধুম নাগেশ্বর পুষ্প এই সকল জ-ব্যের চুব দিয়া সদ্যন্ত গব্যবৃত দ্বারার লাজু বালিবেন পারে রোগীকে খাওয়াইবেন। ক্যায়ন অরুচিতে গৃহজাত উত্তম তক্র জীরার কোড়নে সম্ভন্ন করিয়া খাইবে আর মৌরলা মাছের যূষে আদার রস এবং আমরুলের রস দিয়া খাইবে ভোজনান্তর কওু রবাসিত জল পান করিবে।

মোদক। মবের হল চ্ব চিনি কিয়া মিছরির রসে পাক করিয়া তাহাতে লবক জায়কল জয়িতী দাক্তিনি কপুর শুগু পিপুল মরীচ যমানী মহুরি ধন্যা এলাইচ অপ্প ভালা মেথি জীয়া এই সকল জব্য চুব করিয়া মোদক কুরিবেন মোদক পাকের প্রকার, শুজবর্গ চিনি কিয়া মি- ছরি তাহাতে সম্ভব মত জল দিয়া নূতন পাতে পাক করিয়া জলের চতুর্থা শের একাংশ থাকিতে তাহাতে যব
চূর্ণ দিয়া মোদক পাকের মত হইলে পাক নামাইয়া উজ
অব্য সকলের চূর্ণ তাহাতে দিবেন চিনি কিয়া মিছরি ১°
সের কাঁচা যব চূর্ণ আধনের লবঙ্গাদি অব্যের প্রত্যেক ৫৮০
রাত দিয়া তাডুর দারা নাড়িতে২ লাডু বান্ধিবারমত হইলে
বান্ধিবেন স্থসেব্য মত রোগীকে ভোজন করিতে দিবেন।

আমলকী চূর্ব। মটকা তেতুল চুর্ব সমভাগে মিলিত। করিয়া থাইবেন অথবা ঐ ছই চুর্বের সহিত সৈন্ধ্রব চুর্ব মি-লিত করিয়া সেবন কবিবেন কিয়া মিছরি চুর্ব দিবেন।

ইতি অক্লচি চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

व्यथ इकि विकिल्मा।

শেতচন্দন জল দিয়া ঘর্ষণ করিয়া ২ তোলা আমলকীর রস ৪ তোলা মধু ৪ মাষা মিলিত করিয়া খাইবেন খেতচন্দন বেণামূল বালা শুণ্ঠী বাসকছাল এই সকল অব্যের
মুক্ষচুর্ব সমভাগে চালুয়ানি এবং মধু দিয়া খাইবেন অথবা
ঐ সকল জন্য চালুয়ানি দিয়া বাটিয়া মধুর সহিত সেবন
করিবেন, ভাজামুগ ২ তোলা জল ৪ পল শেষ ১ পল খই
চুর্ব ৪ মাষা দাজচিনি ৪ মাষা দিয়া খাইবে হরীতকী চুর্ব
২ তোলা মধুর সহিত মিল্লিত করিয়া খাইবেন ক্ষেত্রপাপড়া ২ তোলা ৪ পল জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া ১ পল
খাকিতে ৪ মাষা মধু প্রক্ষেপ দিয়া উফ থাকিতে খাইবে
আমন্তর্চা বেলশুচা উভয়োঃ প্রতি ১ তোলা জ্বলন্ধ পল শেষ
১ পল মধু ৪ মাষা প্রক্ষেপ দিয়া খাইবেন।

এলাচাদি চূর্। এলাইচ লবক নাগেশ্বর কুল কুলআন টিব্ল শৃশু খই প্রিয়ক মুখা রক্তচন্দন পিপুল এই সকল জব্য শুমভাগ স্কাচ্ব একতে ক্রিয়া মধু এবং চিনি তাহাতে দিয়া মাতগুড়ের মত চাটিয়া থাইবেন। স্থান্ধি জব্যের ভ্রাণ লইবেন।

रें जिल्ला मार्थि । कि जिल्ला नमार्थः।

অথ তৃষ্ণ চিকিৎসা।

পদকার্থাবলেই। ঘৃত ৪ সের কল্কার্থ পদকার্থ গুল্পু নিম্বছাল ধন্যা রক্তচন্দ্র এই পাঁচ অব্য প্রত্যেকে ১ পল ৩ মাষা ২ রুজি জল ১৬দের শেষ কল্কার্থ পলকার্ছ ১পল ২ তোলা ২ মাষা '২ রতি গুলঞ্চ পুল ২ তোলা ২ মাষা ২ রতি নিষ্ছাল ১ পল ২ তোলা ২ মাষা ২ রতি ধন্যা ১ প্ৰ ২ তোলা ২ মাধা ২ রতি রক্তচন্দ্ৰ ১ প্ৰ ২ তোলা ২ মাষা ২ রতি পাকের প্রকার ক্কাথ জব্য ১৬ সের জল শেষ ৪ সের কল্ক ডব্য সকল শেষ ৪ সের ক্রাথে সিদ্ধ ক-রিয়া শেষ ১ সের থাকিবে তাহা ৪:সর ঘৃতের সহিত পাক করিবে আর তৃঞা বিশেষে সুশীতল জল দারা থইমপ্ত ক-রিয়া মধুর সহিত থাইতে থই সিদ্ধ করিয়া মও খাইবে না আর তৃষ্টত মধু গণ্ড ষ্থারণ করিবে অর্থাৎ স্বৃহত্তে মধু আরু সমান শীতল জল একতে লইয়া খাইবে। খই চুর্ব ২ তোলা মধু ৪ মাবা পক্ত গাস্তারি ছাল চূর্ব ২:তালা ৪ মাবা মাধুর সহিত খাইলে তৃষ্ণা নিবারণ হয়। দাড়িয় রস কিয়া আমলকীর রূদ অথবা আমরুলের রূদ মুথের উপরে লে-পৰ করিলে পিপানা দুর হয়।

ইতি সারকৌমৃত্তাং ভৃষ্ণধিক্রি সমাপ্তঃ।

व्यथ ग्रव्हाधिकात्र।

মুচ্ছ হিইলে অত্যে নাড়ী পরীক্ষা করিয়া বোধ করি-বেন যদি বায় প্রবল থাকে তবে বায় নিবারক বিষ্ণু তৈ-ল্যাদি,মঞ্চাকে মর্দন করাইবেন তাঁহা করাইলে যদি শীভ্র মুচ্ছা না যায় তবে সকাঞ্চেশীতল জল-দিবেন তাহাতে বায়ুদমন হইয়া মুচ্ছা দূর হয়।

প্রছাতে পিত প্রকোপ বোধ ছইলে পিত নিবারক গুড়চ্যাদি তৈল মর্দন করাইবেন অথবা গুলঞ্চের রস মর্দন কিয়া পটোলপত্র রস সর্বাঙ্গে মাথাইবেন অথবা রক্তচননে ঘর্ষণ করিয়া মর্দন করাইবেন মুচ্ছা কিঞ্চিত দূর ছইলে ঘন চন্দনাদির ক্রাথ খাইতে দিবেন এবং পটোলপত্রের রস সেবন করাইবেন এই সকল প্রকরণ করিলে পিত জন্য মুচ্ছা দূর হয়।

আর মূচ্ছ তে যদি ককের প্রবলতা বোধ হয় তবে কফ নিবারক দশস্লাদি তৈল মর্দন ও সিদ্ধিরপত তাদিয়া হৃত্য চূর্ণ করিয়া সর্বাঙ্গে ঘর্যণ অথবা তাজা শঠির স্থল চূর্ণ কিয়া ভাজা হরিতা স্থলচূর্ণ স্বাঙ্গে ঘর্ষণ এই স্কল প্রকার করা-ইলে রোগীর কফ জন্য সূত্য্য নিবারণ হয়।

ইতি সারকৌয়ভাৎ মূচ্ছবিধকারঃ সমাপ্তঃ।

অথ দাহ চিকিৎসা।

দাহ হইলে পিন্ত জ্বরের যে সকল পাচনাদি আছে, তাহা পান করাইবেন এবং রাঙ্গা নারিকেলরে মুখ কাটিয়া তাহার ভিতরে ইক্ গুড় পূর্ণ ক'রয়া খাইতে দিবেন এবং চিনির পানাতে ধন্যার চাউল বাটিয়া দিবেন আর গুলপ্পের ক্কাথ অথবা ক্ষেত্রপাবড়ার ক্কাথ মধু দিরা পান করিবেন আর মুগের দাল ভিজা বাডাস্থার লহিত খাইবেন এই সকল প্রকার ক্রিয়াতে দাহ নি ারণ হয় রোগে অত্যন্ত দীতকিয়া উচিত নহে।

ইতি দারকৌয়ভা ९ দাহাধিকার সমপ্তঃ।

व्य डेबामाधिकात ।

উমাদ হইলে শীতল জব্য ভোজন ও ভেদক ঔষধ ছা-রায় ভেদ করাইবেন পথ্য যব চুর্ব ও গোধুম চুর্ব সিজ ক-রিয়া দিবেন আর গাভী দোহন করিবা মাত্র দেই ছক্ষ ঈর্ষ ছুফ্ থাকিতে পান, শত ধৌত ঘুত এবং পুরাতন ঘুত শ-রীরে মর্দন, ছাগমাংস কছপমাৎস পটোল পুরাতন কু-আও বাস্ত্ৰকশাক পল্তা হিঞাশাক শুশুনি কলয়ী চাঁ-পানটিয়া হৃষ্টি জল উটের হুত্ত এবং গৰ্দত হুত্ত শীতল না-রিকেল জল শতমূলি রুস মিছ্রির সহিত এই সকল জব্য পথ্য করাইবেন ঔষধ সোনাজারা চতুর্থ প্রভৃতি আতা আনারস কত্বেল দাড়িয় কাঁঠাল এই সকল অব্য ভোজন এবং কটু তৈল সর্বাঙ্গে মর্দ্দন করাইয়া বন্ধন করিয়া রৌজে শয়ন করাইয়া কটু তৈলের নশু দিবেন, শুগী পিপুল ম-রীচ হিন্দু সৈন্ধাৰ কটকি শিরীষবীজ দরকরঞ্জবীজ খেত সর্বপ এই সকল দ্রব্য সমভাগে গোমূতে পেষ্ণ করিয়া শ-द्वीरत मर्कन, ब्यात मन्यवस्मरतत घृष्ठ मर्कन कत्राष्ट्रेया अवः ভোজন করাইয়া নির্জ্জন স্থানে শয়ন করাইবেন কিয়া কো-কিলের মাংস ভোজন করাইায়া নির্বাত স্থানে শয়ন করা-ইবেন,মধু খেত বাট্যালার রস সমভাগ একত করিয়া খা-ইবে, ব্ৰহ্মীরস ৪ মাধা কুড় চুর্ব ২ মাধা মধু ছই মাধা একত ্করিয়া পান করিবে, কুমাওরন চিনি কিয়া মিছিরর সহিত একত করিয়া সেবন, বচের ক্লাথ অথবা বালার ক্লাথ খাইবে এষাং কল্যাণ ছত মহাকল্যাণ ছত চৈত্ৰ ঘৃত নারায়ণ তৈল মহা নাবায়ণ তৈল আর ভৃতাদি সঙ্গ হেড় যে উন্নাদ হয় তাহা নিবারণকরা ভূত বিস্তাবিদ্যাক দ্বারায় কওব্য এবং পিপুল মরীচু সৈত্রৰ মধু গোরোচনা এই সৰুল ভব্য সম-ভাগে মধু দিবেন।

कन्यान घृठ । द्राथानम्मात मृत इती क्वी वामनकी व-ग्रेष्ठा दिन्का त्रवनाक विन्यानुक मान्यानी सूथा इत्र পাহকা হরিতা দারুহরিতা অন্ত্র্যুল আমালতা পিয়স্থ্র নীলেৎপল এলাইচ দন্তিনুল মঞ্জিগা দাড়িষ্বীক্ত নাগেশ্বর ফুল তালিশপত -রহতী মালতীক্ল বিড়ঙ্গ চাবুল্যা কুড় রক্তব্দন পালকার্ছ, এই সকল কল্ক অব্য প্রত্যেকে ২ তোলা মৃত ৩২ পল কল ১৬ দের, ঘৃত পাকপ্রকার কল্ক অব্য সকল ছেঁচিয়া ১৬ সের জলে পাক করিয়া ৪ সের থা-কিতে ঘৃত্রের সহিত পাক করিয়া নির্দ্ধন করিবে।

ক্ষীরকল্যাণ ঘৃত। কল্যাণ স্তের কল্ক জব্য সকলে ১৬ সের জল দিয়া শেষ ৪ সের থাকে ইহাতে ৮ সের জ্বল দিয়া ৪ সের ক্কাথ থাকিবে এবং স্তের সমান এক দিয়া ক্কাথের সহিত স্তুত পাক করিবেন, এই বিশেষ।

মহাকল্যাণ মৃত। ক্লাথার্থ শালপানি তুরণ পাতৃকা হরিদ্রা দারুহরিদ্রা অনস্তম্ন শানালতা প্রিয়ঙ্গু নীলোৎপল
কলাইচ মঞ্জিণ দন্তি দাড়িয় নাগেশ্বর তালিশপত্র রহতী
জাতিপুপ্প বিভঙ্গ চাকুল্যা কুড় রক্তচন্দন পদ্মকান্ঠ এই স
কল প্রত্যেকে ও পল ৬ মাধা ম রতি জল ৬৪ দের মৃত ৩২
পল আর একবার প্রসব ইইয়াছে এমত সবংসাগানীর রুগ্ধ
১৬সের কল্কার্থ চাকুল্যা বনমাযকলাই বনমুগ কাকোলী
আলবুশীমূল ঋষিবক ঋজিভেদ এই সকল অব্য প্রত্যেক
১পল লইবেন পাকের প্রকার। রহৎ পাকপাত্রে ৬৪ দেরু
জল দ্রিয় কাথ অব্য নিজ হইলে ১৬ সের থাকিবে এ১৬সের
কাথে কল ক অব্য নকল নিজ করিয়া শেষর সের থাকিতে
মৃত্রের মহিত পাক করিয়া নির্দ্রল হইলে পাক নিজ
হয় ব্রিত রোগীকে থাইতে এবং মর্দ্ধন করিতে দিবেন।

চৈত্ৰ ঘৃত। কৃথিৰ কণ্টিকারি বহুতি সালপানি চা-কুল্যা গোহুরি শীকলছাল লোনাছাল পার্ললছাল গণিয়ারি ছাব রামা এরগুমূল তেউড়ি বাট্যালা মুর্কা শতস্থলী এই দুক্ল দুব্য প্রত্যেকে ২ পল স্থান্ত ৬৪ দের শেষ ১৬ সের রুত ৪ দের কল্কার্থ রাথালসদা রহতী বয়ড়া আমলকী রেণুকা দেবদারু এলবালুকা দালপানী তুরগ পাওকা হ-রিদু দারুহরিদা অনন্তমূল আমালতা প্রিয়ঙ্গু নীলোৎপল এলাইচ মঞ্জি দন্তি দাড়িয় নাগেশ্বর তালিশ পত্র রহতী জাতিকুল বিড়ঙ্গ চাকুল্যা বুল রক্তচন্দন পদ্মকার্ছ এই দ-কল দুন্য ২ তোলা ২ মাবা ৪ রতি, মৃত পাকের প্রকার, ১৬ সর ক্রাথে কলক দুব্য সকল ছেঁচিয়া দিয়া মধ্যম রূপে জাল দিয়া শেষ ৪ সের থাকিবে তাহার সহিত মৃত পাক করিয়া নিজ্জল হইলে পাক সিদ্ধ হয়।

শিব'ঘৃত। মৃত ৪ দের জ্ঞা ৮ দের সালপানী চাকুলা।
কণিটকারি গোক্ষরি ব্যাকুড় বেলছাল দোনাছাল গান্তারি
ছাল পারুলি ছাল গণিয়ারি ছাল, এযাংপ্রতি ৫ পল
কাথার্থ জল ৬৪দের শেষ ১৬ দের নগুংসক শৃগালের মাংস
৫• পল জল ৬৪ সেরের সহিত ২২ দিনে ২২বার পাক করিয়া ১৬ সের কাথ থাকিবে এই ছই কাথ একতা ঘৃতের নহিত পাক হইবে এবংজেও কাথের সহিত পাক হইবে
জল নিঃশেষ হইলে পাক সিদ্ধ হয় এই মৃত থাইতে এবং
মর্দ্দন করিতে হয়।

শিবাঘৃত প্রাকের অন্য প্রকার। দশস্ত্র এবং কল্ক ব্রার্থীয়ে চৌষা উ সের জলে পাক করিয়া শেষ ১৬ সের এবং মাৎসের কাথ ১৬ সের একত করিয়া ঘৃতের সহিত পাক করিতে হয়, কল্ক দুব্য জ্যেন্তমপু মজিছা কুড় রক্তচলন পালকার্থ হরীতকী বয়ড়া আমলকী রহতী হুরগ পাদুকা বিড়ঙ্গ দাভিষ্ব ফল দন্তি দেবদারু রেণুকা ভালিশপত না-গেশ্বর খামালভা রাখালসনারস্থল সালপানী প্রিয়ঙ্গ মান্ লভী পুলা বিকলা নীলোইপল ইরিনা দার্ভারিদ্রা অনন্ত মূল মেদ এলাইচ এলবালুকা চাকুল্যা এই সকল দুব্য প্র-ত্যেকে ২ তোলা পাকের অন্য প্রকার মথা উক্ত মসলায় ১৬ সের কাথে মাংস পাক করিয়া ৪ সের যে কাথ থাকিবে তাহার সহিত ঘৃত পাকু করিবে।

ইতি সারকৌমুতাং উত্থাদাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ অপাতার চিকিৎনা।

মুক্তিষোগ। গোমূত রাইসর্যা সজিনা ছাল এই তিন দুবোর ধুম দিবেন, বচ্চুর্ ১ তোলা ৪০ রতি মধুর সহিত খাইবে।

পুরাতন কুমাও রস ৮:তালা জ্যেষ্ঠ নধু ২:তালা ব্দী-রস ২ তোলা মধু ২তোলার সাহত মিল্রিত করিয়া খাইবে ব্দ্ধীম্ভ, পুরাতন মৃত্য দের ব্দ্ধীর রস ১ সের কল্কার্থ বচ ২পল ৷ তোলা ২ মাবা ৭ রতি কুড ও বালা উক্ত পরি-মানে লইবেন,পাকের প্রকার সকল একত্রে পাক করিয়া ব্দ্ধীর রস নিংশেষ হইলে পাক সিদ্ধ হয় ইহাতে অপসার রোগ নই হয়।

ইতি সারকৌমুতা ও অপন্মার চিকিৎনা সমাপ্তঃ।

অথ ছদিত বায় চিকিৎসা

বাট্যালা যূব। সালপানি চাবুল্যা কণ্ঠীকারি গোহুরি
ব্যাকুড বাট্যালা এই সকল দুব্য প্রত্যেকে.২ মাধা ৭ রতি
পাক প্রকার সালপান্যাদি ৬ দুব্য কুচা করিয়া ১পল হ শের সহিত পাক করিয়া চড়চড়ির ন্যার হইলে তাহাতে গের জল দিয়া পাক করিবেন মুখসেব্য মত জল থাকিতে নামাইয়া সেবন করিবেন এবং ঐ ৬ দুব্য বাটিয়া থাইবেন, কিঞ্ছিৎকাল বিল্যে নবনীতের সহিত্ সাধকলাই বাটিয়া লাডুর মত করিয়া থাইবেন।

মুক্তিযোগ। বিলুছাল যোনাছাল গাড়ারি ছাল পারুল। ছাল গণিয়ারি ছাল সালপানি চাকুলা। কণ্ঠীকারি গো-স্থার ব্যাকুড়, এই সকল দুব্যর রস প্রত্যেকে ১০ ভোলা ওপ্র ১..ভোলা এই ২০ ভোলা এককে পাক করিয়া ১৫ ভোলা থাকিতে দেবন করিবেন।

পাচন। সালপানি চাকুল্যা কণ্ঠীকারি গোল্ধরি ব্যা-কৃত্ত এবাংপ্রতি ৩২ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ সিছরি কিয়া চিনি ৪০ রতি বেলছাল সোনাছাল গান্তারি ছাল পারুলছাল গণিয়ারি ছাল সালপানি চাকুল্যা কণ্ট-কারি গোল্থরি ব্যাকৃত্ত এষাংপ্রতি ১৬ রতি জল ২পল শেষ ১ পাল প্রক্ষেপ তিনি কিয়া মিছরি ৪০ রতি।

অথ গৃতিনি বায়ুর চিকিৎসা।

মাষকলাই বাট্যালা। আমলুকী মূল রাল্লা এরঙা হল অশ্বাদ্ধা এরগুতিল এই সকল ডব্য প্রত্যেকে ২ মাষা ও রভি জল ৪পল শেষ ১ পল প্রক্রেপ হিঙ্গু চুর্ব এবং সৈল্লব চুর্ব ৪০ রভি এই ঐবধ পক্ষাঘাতেও দেওয়া যায়।

বেলছাল সোণাছাল গাস্তারিছাল গণিয়ারিছাল পা-রুলছাল সালপানি চাকুল্যা কণ্টকারি গোকুরি ব্যাকুড় এযা প্রতি ১ রতি জল ৪পল শেষ ১পল ঈষদ্বয় থাকিতে ৪০ রতি এরগু তৈল দিরা খাইবেন।

হরীতকী বচ রামা সৈদ্ধব বন্যওল, এষাংপ্রতি ৬২ রতি জল ৪ পাল শেষ ১ পাল প্রক্ষেপ ঘৃত ৪° রতি অংশ উষ্ণ শ্যাকিতে খাইবেন।

এই হৃদীতক্যাদি পঞ্জবেয়র ঔষধ গৃহিনীবায় রোগে লিশিত হৃষ্ণাও অপতালক বায় রোগেও যোগ করিবেন।

বিলুছাল সোণাছাল গাস্তারি ছাল পারুলছাল গণিয়ারিছাল সালপানি চাকুল্যা কন্টকারি গোছরি ব্যাকুড্
বাট্যালা রাদ্ধা গুলঞ্চ, এবাংপ্রতি তা রতি জল ৪ পল
শেষ ১ পল প্রক্ষেপ সৈন্ধ্ব লবণ চুর্ন ৪ রতি জলপ তপ্ত
থাকতে থাইবেন।

(50) :

ি বিলুছাল সোণাছাল গান্তারিছাল পারুলছাল গণিরারি ছাল সালপানি চাকুল্যা কণ্টকারি গোক্ষার ব্যাকুড়, এষাং প্রতি ১৬ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল, অনুপান নির্দ্ধল সেফালিকা পত্রস ২ তোলা ঈষ্পুঞ্চ থাকিতে থাইরেন, যদি কটিদেশ বেদনা থাকে তবে শুঠী ২তোলা জল ৪পল শেষ ১ পল ইহাতে এরও তৈল ৪ মাষা দিয়া অলপ তপ্ত থাকিতে থাইবে।

তিদোষরী গুণ্ওল। আতইচ অশ্বসন্ধা হবুষ গুলঞ্চ শত-মূলি গোলুরিবীজ বীরতাক বীজ রামা সলুড়া শণ্ডী ঘমানী ভূগী এবাংপ্রতি ১ তোলা মহিমাক্ষি গুণ্ওল সকলের সমান মৃত্ত পল।

অথ গুগ্ল পাকের প্রকার।

গুণ্ণল গতোলা দিল করিয়া পরে পৌত করিয়া লইবে
তদনন্তর রৌডেশুক করিবে এই রূপে শোধন করিয়া পরে
লৌই কড়াতে ঘৃতের সহিত পাক করিতে করিতে মোহনভোগের ন্যার হইলে শীঘ্র নামাইয়া ঐ সকল জব্যের স্থল
চুর্ণ তাহাতে দিয়া যে পর্যান্ত উত্তন রূপে মিশ্রিত না হর
সেই পর্যান্ত তাড়ু দিরা নাড়িবে নেবন ১০০ রাত পরিমান
কিঞ্ছিৎকাল পরে জল্প উষ্ট গুলান করিবে, পথ্য ট্পা
মুভ মাংল পুরাতন তণ্ডুলের অন্ন কটি ছোলার দাউল
মানকচু পটোল ভূষুর ইত্যাদি, ইহাতে স্কল বাঙ্
নাই হয়।

ছাগলাদি ঘৃত।

নপুংসক ছাগমাংস বেলছাল সোণাছাল গান্তারিছাল গণিয়ারিছাল সালপানি চাকুল্যা কণ্ঠীকারি গোল্ফরি ব্যা-কুড় বাট্যালা, এযাংপ্রতি ১০০ পল এই সকল প্রস্ত্যেক বস্তুর প্রতি ক্কাথার্থ জল ৬৪ সর শেষ ১৮ সের মৃত ১৬ সের হুস্ক ১৬ সের শত্র্লিরস ১৬ সের কল্কার্থ জীবন্তি জ্যেত-মধু দ্রাক্ষা কাকোলী ক্ষীরকাকে লৌ নীলোৎপল ম্থা রুজ্চনদন রাম্য সালপানি চাকুল্যা আমালতা অনন্তম্ল মেদ মহামেদ কুড় জীবক ঋষিবক শঠী দারুহ্রিতা প্রি-য়ঙ্গ হরীতকী বর্ড়া আমলকী তগর পাহকা তালিশপত পদাকাঠ এলাইচ তেজপত্র শতমূলী নাগেশ্বর জাতিপুষ্প ধন্যা.মঞ্জিষ্ঠা দাভিষ্ব দেবদারু এলবালুকা রেণ্কাবিড্ঞ জীরা এষাংপ্রতি ৪ তোলা প্রক্ষেপ চিনি ১৬ পল পাকের প্রকার, প্রথমত, মাংলের ক্কাথ করিয়া বেলছালের ক্কাথ ক রিবে পরে ঐ মাংদের ক্কাথের সহিত একতে পাক করিয়া কিঞিৎ শেষ থাকিতে দোণা ছালের ক্রাথ এইকপ পর পার ক্রমে দশয়লাদি ক্রাথ করিয়া মাংস ক্রাথের সহিত ক্রমে ক্রমে পাক করিয়া মাংস ক্কাথ ১৬ দেরের কিঞ্ছিৎ অধিক থাকিতে উক্ত পরিমাণ মৃত ১ ধা ও শতমূলি রস এই চারি **ভব্য এক রহৎ পাকপা**তে লইয়া পাক করাতে সকলরস নিঃশেষ হইলে ঘৃত না দাইয়া বস্ত্রে চাঁকিবে পরে জীবন্ধি প্রভৃতি জব্যের ফুলচুৰ মৃতে দিয়া তাড় দারায় নাড়িতে নাড়িতে শীতল প্রায় হইলে ১৬ পল চিনি প্রফেপ দিয়া ঘূ**ত যত্ন পূক্ষক রাখিবেন সেবন ৫ তে**লা পরিমাণ এবং শরীরে মর্দন করিবেন, পাথ্য পূব্যবং কিন্তু গৃহিণী বাত ভিন্ন ব'য়ুরোগে যবছুর্ প্রকার ভেদ করিয়া পথ্য দিবেন আর পঙ্গুবাত ভিন্ন অন্য বায়ু রোগে রুক্ষ ভব্য পথ্য বিধি নহে, বাত্তন্ত বাতে ঐ শুন্তিত হত্তে ক্ল্ স্বেদ করিবেন ोंव ९ क्रक नस्य निट्दन बांत कलागि हुन थोहेट उ निट्दन এই ঘৃত পূর্ণ মাতা করিতে অশক্ত হইলে অন্ধ কিয়া পাদ কি অফীভাগের একভাগ করিলেও গুণের নূন্যতা হইবে না।

নকুলাদি ঘৃত। নকুল মাংস ১৬ সের কাথার্থ জল ৬৪ সের শেষ ৪:সর বেলছাল সোনাছাল গাস্তারিছাল গণিয়ারি ছাল পারুল ছাল সালপানি চাকুল্যা কণ্ঠীকারি গোক্ষরি ব্যাকুড়, এষাংপ্রতি ১ লপ ৪ তোলা ৭॥ মাষা মাষকলাই ১৬ পল বাট্যালা ১৬ পল পাকার্থ জল প্রত্যেকে ১৬ সের শেষ ৪ সের মৃত ৪ সের হুগা ৪ সের শতমূলি রস ৪ সের ক- ল্কার্থ জীবক ঋষিবক মেদ মহামেদ ঋজির্জি বন্য কলাই বন্যুথ্য কাকোলী কীর্কাকোলী জীবান্ত জ্যেষ্ঠমধু এলা-ইচ দারুচিনি তেজপত্র শুণ্ঠী পিপুল মরীচ হরীতকী ব্রুড়া আমলকী মুখা অনন্তয়ল এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ২ তোলা, ঘৃত পাকের প্রকার, প্রথমতঃ ৬৪ সের জলে নকুলমাংসাদজ করিয়া ৬৪সের শেষ থাকিতে নামাইবে পরে দশ্মলাদির ক্লাথ করিয়ে পরে মাৎসের ক্লাথে দশ্মলাদির ক্লাথ কিঞ্জিৎ শেষ থাকিতে মাবকলাই ও বাট্যালার ক্লাথ ক্রমে মাৎসের ক্লাথের সহিত কিঞ্জিৎ অধিক থাকিতে ঘৃত ৮ক্ষ ও শতমূলির রম একত্রে পাক করিয়া সম্দায় রম নিঃশেষ হইলে ঘৃত নামাইবে তানত্র জীবক আদি জ্বোর স্ক্রেচ্ব ইহাতে দিয়া নাভিতে নাড়িতে শীতল হইলে উত্তম পাতে যত্ন প্রকার বাভিতে নাড়িতে শীতল হইলে উত্তম পাতে যত্ন প্রকার বাভিতে নাড়িতে শীতল হইলে উত্তম পাতে যত্ন প্রকার বাভিতে নাড়িতে শীতল হইলে উত্তম পাতে যত্ন প্রকার বাভিবে পথ্য প্রকার ।

ষশ্পবিকু তৈল। তিল তৈল ৪ সের দ্বা ১৬ সের কল্কার্থ সালপানি চাকুল্যা বাট্যালা গোল্ধরি এরগুামূল রংতী কণ্ঠীকারি নাটা করঞ্জ শতমূলী শঠী, এযাংপ্রতি ১ পল এবং প্রাচীন বৈদ্যের মতে শতমূলীর রস সমান দেওয়া বিধি।

অথ পাকের প্রকার।

তৈল যুদ্ধ কিরিয়া পারে কলক জব্য তদনন্তর ওপ্ধ দিয়া পাক করিবেন। এই তৈল রোগীকে মাথাইবে এবং উষ্ণ তুপ্পের সহিত খাইতে দিবে, এই তৈলে শতমূলীর রস প্র-মাণ মত দিবে ইহা প্রাচীন মতে কথিত আছে।

মহাবিষ্ণু তৈল। তিল তৈল ১৬ সের শতমূলীর রস ১৬ সের গব্য থক্ষ ১৬সের কল্কার্থ,মুথা অশ্বগন্ধা জীবক ঋষি-বক শঠী কাকোলা জীরকাকোলা জীবন্তি জ্যেষ্ঠমধুম-ভূরি দেবদারু পদ্মকান্ঠ সৈন্ধ্ব শৈলজ জটামাৎসী এলা- ইচ দারুচিনি কুড় রক্তচন্দন মঞ্জিপ্ঠা কস্তুরী চন্দন কুমকুম সালপাতি কুন্দরু শঠী গাটালা লখী, এবাংপ্রতি > পল খাটাসি কপুরাদি স্থান্ধ জব্য সকল দিবে, তৈল পাকের প্রকার পুরুষত সাবধান হইয়া পাক করিবেন, এই তৈল মর্দন এবং উষ্ণ দ্বপ্রের সহিত ভক্ষণ করিতে হয়,ইহাতে স্কল বায়ুরোগ এবং নানা প্রকার শ্ল নিবারণ হয়।

মধ্যম নারায়ণ তৈল। তিল তৈল ১৬ সের, গব্যহ্ম অথবা ছাগহ্ম ১৬ সের শতমূলীরস ১৬ সের, ক্কাথার্থ বেল ছাল গাণয়ারি ছাল সোণাছাল পারুল ছাল তেপালতে ছাল গলভাদালী অশ্বগলা রুহতী কণ্ঠীকারি বাট্যালা গোরক্ষ চাকুল্যা গোক্ষ্রি, পুনর্না,এবাংপ্রতি ১০ পাল ২৫৬ সের শেষ ৬৪ সের কল্কার্থ স্তলুফা দেবদারু জাটামাংসী শৈলজ রক্তচলন পুরগপাছকা ইহার অভাবে সেকালিকা ছাল কুড় এলাইচ সালপানি চাকুল্যা বন্যমুগ বন্যকলাই অশ্বগল্পা রাম্লা সৈল্পর পুনর্না, এবাংপ্রতি ২ পাল, যথা শক্তি গল্প তব্য দিবেন।

বুজাপ্রসারণী তৈল। তিল তৈল ১৬ সের ওথা ৩২ সের দিনিরমাত ১৬সের কাঁজি ১৬ সের,কাথার্থ গল্পভাদালী ১০০ পাল ৬৪ সের শোষ ১৬ সের কাথার্থ চিতার্ল পিপুল জ্যোন্ত কার্মা গলপিপুল গঞ্জান দালীমূল জ্যামাৎগী রক্তচন্দন এষাৎপ্রতি ২ পাল গল্প জ্ব্য দিবেন।

তৈল পাকের প্রকার। প্রথমতঃ মুচ্ছ। করিয়া পরে গহাভাদালীর ক্রাথ তৈলের সহিত পাক করিয়া কিঞ্ছিৎ শেষ থাকিতে হুক্ষ দিবেন এই রূপ স্নেহ দ্ব্য সকল পর পর ক্রমে কিঞ্ছিৎশেষ থাকিতে দেওয়া বিধি তদনত্তর ক-লক দ্বেরের সহিত পাক সমাপ্তি করিবেন,এই তৈল স্কল বাতে উপকারী হয় কিন্তু বাত দারায়হন্ত পদাদির বক্রতা হইলে বিশেষ উপকারী হয়, তৈল মর্দন করিয়া অগ্নি উ-ভাপ লইলে বিশেষ গুণ বোধ হয়।

ষশেষ হলে। পরিজ্ত মাষকলাই ১৬ পল জল ১৬ সের শেষ ৪ সের তিল তৈল ৪ সের এক ১৬ সের, কল্কার্থ জীবক অধিবক মেদ মহামেদ খাজি রাজি কাকোলী ক্লীর-কাকোলী সলুকা সৈন্ধব রাম্না আলকুষিরবীজ জ্যেত্বসমু বাট্যালা শুণ্ডী পিপুল মরীচ গোলুরীবীজ । এষাংপ্রতি ২ তোলা পাকের প্রকার । তৈল মুক্তা করিয়া কলাইয়ের ক্লাথ এবং হক্ষ তৈলের সহিত পাক করিয়া কিঞ্জিৎ শেষ থাকিতে কল্ক জব্য সকলের মুক্ষাহ্ল তৈলে দিয়া চুলা হ ইতে নামাইয়া তাড় রম্বারায় নাড়িতে ২ জুড়াইলে পাক সিজি হয় পরে গল্পজ্ব্য দিবেন।

ব্রুৎমাষ ভৈল। মাযকলাই ৪ংগর বেলছাল সোণাছাল গান্তারি ছাল পারুলছাল গণিয়ারিছাল দালপানি ছাল চাবুল্যা কণ্ঠীকারি গোহুরি ব্যাকুড়। এষাংপ্রতি ৫ পল ছাগমাংস ৩০ পাল এই ঘাদশ জব্যে জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের তিল তৈল ৪/সর ছক্ষ ১৬ সের কল্কার্থ আলকুষি এর-ध्यून मन्का रेमकाव विष्नवर्ग महन ने बन राम मेहाराम श्रीक द्राक्त कीवक श्रीववक कारकानी कीव्रकारकानी वना-কলাই বন্যন্থ জীবন্তী জ্যেষ্ঠমধু মঞ্জিষ্ঠা চঞ্জি চিতান্ত্ৰ কটফল শুণ্ঠী পিপুলমরীচ পিপুলমূল রায়া দেবদারুগুলঞ্চ কুড় অশ্বগন্ধা বচ শঠী। এষা প্রতি ২তোলা ইহার মধ্যে জে গমধু এবং দৈল্লব প্রতি ৪ তোলা প্রাচীন বৈভেরমতে, যথা লাভ মুগন্ধি ডব্য, তৈল পাকের প্রকার প্রথমত তৈল মুচ্ছা করিয়া ক্রাথ এবং হক্ষ তৈলের সাহত পাক করিবে পারে তৈল নির্দ্রল হইলে তাহাতে কল্ক দুব্যের স্থলচুর বস্ত্রে ছাঁকিয়া দিবামাতে চুলা হইতে নামাইয়া তাড়ুদারা नाष्ट्रि नाष्ट्रि भैजन श्रेल शांक श्रिक श्रु, এই रेजन ্মর্দ্ধন করিয়া অগ্নির উত্তাপ হইলে গুণাধিক্য হয়।

সপ্তপ্রসাধ তৈল। তিল তৈল ৪ সের ক্লাথার্থ সাধকলাই বাট্যালা রামা দশমূল কুলতাকলাই ছাগসাৎস এষাং
প্রভের্বক ৬ পল এবং কাথের জল প্রত্যেকে ১৬ সের শেষ
৪ সের কলকার্থ রামা আলকাষ্যল সৈদ্ধার সল্কা এরগুমূল
মুথা জীবক ঋষিবক মেদ মহামেক ঋদ্ধির্দ্ধি কাকোলী
ক্ষীরকাকোলী বচ শুগু পিপুল মরীচ এষাৎপ্রতি ২
তোলা যথালাত গ্রহাদুব্য।

পাকের প্রকার। তৈলমূচ্ছা করিয়া পর পর ক্রমে স-কল কাথের সহিত সম্বন্ধ এই ৰূপে কাথ খাওয়াইবে নি-চর্জাল হইলে তৈল নামাইয়া কল্ক অব্যের কাপড় ছাঁকা মুল্লচূর্ল তৈলে দিয়া নাড়িতেই শীতল হইলে পাক সিদ্ধি হয়। এই তৈলে সকল বাত নাশ হয়, পথ্য হক্ষ ঘৃত মাংস্প্রভৃতি।

বাত রজ চিকিৎসা।

নানা প্রকার মুফিযোগ। বাত রজের বেদনাতে গম চূর্ণ এবং ছাগাঃকা মিশ্রিত করিয়া প্রলেপ দিবে বেদনা নি-রতি হয় এবং শত ধৌত গব্যঘৃত মর্দনে উপকার হয় আর ক্লফতিল জলেতে পেয়ন করিয়া প্রদেপ উপকারি, কিন্তু তিল ভাজিয়া লইবেন।

ক্লিয়া উঠে পুনকার মিলিরা যায় এই সকল প্রকার বিলি

্রহৎ গুড়চী তৈল। তিল তৈল ৮ সের কাথার্ওল্ঞ

১০০ পল পাকার্থ জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের কল্কার্থ সল্লুকা হরীতকী শুগুটি পিপুল মরীচ রায়া মুথা বনষমানী হরিছা দারুহরিছা কুড় ধন্যা পলকার্ছ বিড়ক্ত তেলপজ জটামাংসী রক্তদন্দন এবাংপ্রতি ৪ তোলা পাকের প্রকার মুচ্ছিত তৈলে কল্ক জব্য সকল ছেঁচিয়া দিয়া ক্তাথের স্বিত একজে পাক করিবে পরে গল্ধ জব্য দিবে। এই তৈল মর্দনে বাতর্জ জন্য এবং পিত্জন্য শ্রীরের নানাপ্রকার চুলকানি ও জালা এবং ডুমাই বিবর্ণতা সকল দূর হয়।

কৈশোর গুণ্গুল। মাহিষা,ক গুণ্গুল ১৬ পল গুল্গু
১২ পল হরীতকী ১৬ পল আমলকী ১৬ পল পাকার্থ জল
১৬ সের শেষ ৪৮ সের ইলা গুড়ের ন্যায় পাক হইলে প্রক্ষেপ সিদ্ধিচুর্গ হরীতকী বর্ড়া আমলকা শুণী পিপুল মরীচ বিড়ঙ্গ এবাৎপ্রতি ৪ তোলা গুল্গু ৮ তোলা তেউড়ি
২ তোলা দান্ত ২ তোলা ঘৃত ১৬ পল পাকের প্রকার পাক্রিয়া রীজে কি করেবে পরে গুলগুদি তিন জন্য কিগুল্গু ছেচিয়া নিজ সের জলে সিদ্ধা করিয়া ৪৮ সের ক্রাথ
পুনকার পাক করিয়া গুড়ের মত হইলে সিদ্ধা প্রভাত জন
ব্যের চুর্গ এবং ঘৃত ১৬ পল তাহাতে দিবেন সেবন অন্ধ্র
ভোলা পরিমাণ অন্ধ্রপান উষ্ণ হুন্ধ কেবল সেবন করিলে
পারে কিঞ্ছিৎ বাসিজ্ঞল পান করিবেন।

বজ্গগ্রন। শুণী পিপুল মরীচ হরীতকী বয়ড়া আম লকী দন্তী চিভাইল তেউড়ি শাঁচ বিড়ঙ্গ মথা বাগুচি বীজ ইন্দ্রখব বচ আকলদমূল কুড় সোন্ধালি। এষাংপ্রতি ১ পল সকলের সমান গুণ্ওল ভেলার আটা ৬৪ সের শুদ্ধ হরিতাল ১ পল তাম ১ পল এই সকল জব্য ঘৃতের সহিত পেষণ ক-রিয় পিগু, ৎ করিবে ৪ মাবা পরিমাণে সেবন পথ্য হুন্ধ ঘৃত মাংস ইহাতে বাত বুকু মাতেই নাশ হয়।

खणुठापि लोह। धनदक्त भाग छ्ठी भिथून मतीह

হরীতকী বয়ড়া আমলকী বিড়ঙ্গ চিতামূল মূথা এবাংপ্রতি ১ তোলা লৌহ ১০ তোলা এই সকল অব্যের বস্তে ছাকা স্বাৰুচ্ব এবং লৌহ একত্তে খলে মর্দ্দন করিরা ৪ রতি পরি-মাণ বটি করিবেন, সেবন ঘৃতের সহিত। পথ্য পূর্বামত।

তালক। শুদ্ধ হরিতাল ৮ তোলা শুদ্ধ গল্পক ৮ তোলা তামু ১৬ তোলা এই তিন অব্য বালুকা যন্ত্রে একদিন পাক করিয়া ১ রতি পরিমাণ ঔবধ গুলঞ্চের পালোর সহিত অ-থবা নিম্নপাত্রের স্কাথের সহিত সেবন করিবেন ইহাতে উজ রোগ নাশ করে এবং কুপ্ঠ রোগেরও নাশ হয়।

হরিতাল শোখন ৷ লখনাহরিতাল দোয়াতের মধ্যে পুরিয়া এক হাঁড়িতে বুযুড়ার জল দিয়া দোলা যন্ত্রে পাক করিবেন পুনর্কার চুণের জলে দোলা যন্ত্রে পাক করিয়া পারে দধির সহিত কিঞিৎকাল মর্জন করিবেন ভদনন্তর পরিফার কারজলে ছই প্রহর কাল মর্দ্দন করিলা ঘন হইলে ভাহাতে কিঞ্জিৎ দ্ধি দিয়া রাখিবে শক্ষ্ণ প্রায় ইউলে পুন-বার ক্ষারের জলে মর্দন করিয়া হরিতাল শুদ্ধ করিয়া শক্ত হইলে চূর্ণ করিয়া পুনর্ফার পূর্বোক্ত প্রকারে চুনের জলে দোলাযন্ত করিয়া এক প্রদার পাক করিবে আর কুমাও জলে এক প্রহর এবং ডিল তৈল এক প্রহর পরে ক্ষ হ-ইলে অপ্প দ্ধিতে হরিতাল গুলিয়া খলে ; প্রহর মর্দন ক-রিতে২ শুক্ষ প্রায় হইনে তাহাতে দধি এবং পুনর্নবা কা-রের জলে পূর্বামত দোলাযন্তে পাক করিলেই শোধন হয়। দোরাতের মধ্যে পুরিয়া যে দোলাযত্তে পাক লিখিত হ-ইল তাহাতে দোয়াতের মুখ খোলা রাখিবেন আর তীম-রাজের রসে গন্ধক শোধক I

েই ঔবধ পাকের প্রকার। উজ্প্রমাণ গলক তামু হ-রীতাল একতে মিশ্রিত করিয়া মৃত্তিকার মুচর ভিতর পু-রিয়া তাহার মুখ বদ্ধ করিবে ভদনন্তর তাহাতে মৃত্তিকার লেপ দিয়া তালের ন্যার করিয়া শুক্ষ করিবে পরে বাল্ কাতে আৰ্দ্ধ পুরিত হাড়ির মধ্যে ঐ যন্ত্র রাখিবে তদনস্তর ঐ হাড়ির বালুকা দারা পূর্ণ করিয়া তাহার মুখ সরা দিয়া হাড়ি আটিবে পরে এক দিবস জাল দিবে তদনস্তর শীতল হইলে ঔষধ হইবে।

ইতি সারকৌমভাং বাতরক্তাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ উরুস্তন্তা ধিকার।

দশহল পাচনে ৪ মাষা শিলাজভু চূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিবে এবং ঐ পাচনে ৪ মাষা গুগ্তল চূর্ণ আর ৪ মাষা শুঠী চূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিবে।

প্রলেপ। হরীতকী বয়ড়া আমলকী চঞি শুণ্ঠী পিপুল মরীচ পিপুলয়ল দরিষা উইনাটী এই সকল তব্য সমভাগে লইয়া মধুর সহিত মর্দন করিয়া উক্তক্ষতে প্রলেপ দিবে।

আর সৈন্ধবাদি তৈল এবং গুগ্গল উরুন্তন্তে প্রয়োগ করিবেন।

হাত উরু ফন্তাধিকার সমাপ্তঃ।

व्यथ वामवाक्रीधकात्रः।

রামাসপ্তক। রামা সোন্ধালি গুলঞ্চ দেবদারু গোন্ধার এরগু ভৈল পুনর্না। এষা প্রাতি ৩২ রতি জ্বল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ এরগুতিল ৪ মাষা শুঠী ১ ভোলা গোন্ধার ১ তোলা পাক শেষ পূর্ববিৎ প্রক্ষেপ এরগুতিল ৪ মাষা ঈষহুষ্ণ থাকিতে পান করিবেন।

প্রক্ষেপ। কাঁচাগুড়কামাই কেঁউ সজিনাছাল উইমাটি এই চারি জব্য গোহতে পেষণ করিয়া প্রলেপ দিবে। বা-র্ত্তাকু ব্যাকুন্ডি ফল সমভাগে কাঞ্জির সহিত পেষণ তপ্ত ক-রিয়া প্রলেপ দিবে বাস্তকশাক ভূমিকুম্বাঞ্জশাক এবং পুন-র্নবাশাক এই রোগে থাইবে।

-বোগরাজ গুণ্ওল। চিতামূল পিপুল যমানী রুক্ষজীরা

বিড়ক বনযমানী জীরা দেবদার চঞি এলাইচ সৈল্লব কুড় রালা গোক্ষার বীজ ধন্যা হরীতকী বয়ড়া আমলকী মুখা শুণ্ঠী পিপুল মরীচ দারু চিনি বেণায়ল যবক্ষার তালিশ পার তেজপত এই সকল জব্য সমভাগে যত গুগুল তত উপাবুজমত মৃত দ্বারায় এই সকল জব্য মর্দ্দন করিয়া পিশুবং করিবে ভদনন্তর পূরাতন জলের হাড়ি কিয়া কল্সীর মধ্যে এক দিন রাখিয়া আপনার সাধ্যমত মৃতের সহিত্য মর্দ্দন করিয়া খাইবেন।

শালা বিদ্যু । কুঁচুই আদি তোলা গোক্ষরি ১ তোলা হয়ীতকী ২ তোলা বম্ড়া ৪ ভোলা আমলকা ৮ তোলা শুপু । ১৬ তোলা গুন্পু ১২ তোলা প্রিফ ৬৪ ভোলা এই সকল অব্যের স্থাচুর্ল বস্তে ছাকিয়া উত্তলাকে মোদ্রত করিবেন, সেবন হ্রাপ ব্যক্তির স্থার সহিত অন্য ব্যক্তির কাঞ্জি অথবা তপ্ত গলের সহিত।

বাতশার্দ্রল গুগ্রন। হরীতকী ৮ পল বর্জা ৮ পল আমলকী ৮ পান গুগ্রল ২ পল কটু তৈল ২ পল জল ২৪ সের শেষ ৬ সের পাক সিদ্ধে প্রকেপ ভগ্গী মরীচ হরী-তকী বর্জা আমলকী মথা বিজঙ্গ চিতামূল গুলঞ্চ বিছাজি হল তেউজি দতি চঞি বন্যওল নানরস গন্ধক এবাং প্রাত ১ তোলা শুদ্ধ জয়পালবীক ২০০ টা, পাকের প্রকার, প্রক্রাক্ত প্রকার গুগ্রুল শোধন করিয়া ২৪ পল তিফলা ক্রাথ করিবার সময় জয়পাল তাহাতে দিয়া সিদ্ধ করিবে তদন্দন্দন ২ পল তৈলে গুগ্ গুল সিদ্ধ করিয়া ঐ ক্রাথে পাক করিছেই গুড়বং ইইলে শুগ্রী প্রভৃতি অব্যের কাপড় ছাকা স্ক্রাইন পাক নানাইয়া তাহাতে দেয়া নাড়িতেই শীতল হইলে পাক সিদ্ধি সেবন অন্ধিতালা পরিমাণ। অনুপান উষ্ণ হক্ষাইহাতে আমবাত মাতেই ভাল হয় এবং পোয়ের গাটি যদি ফুলে তাহাও ভাল হয়।

হুহ্ৎ দৈল্কবাদি তৈল। এরগুতৈল ৪ সের দ্ধির মাত

৮ দের সল্কা ১৬ সের ক্ক থার্থ জল ১৬ সের শেষ ৪ সের কল্কার্থ সৈত্বব হরিতকী বয়ড়া আমলকী রামাপিপুল সাচিকার গজপিপুল মরীচ কৃড শুগুী সচললবা বিটলবা যমানী বন্যমানী ক্ষজীরা জ্যেগ্রমণু সল্কা এষা প্রতি ৪ তোলা পাকের প্রকার তৈল হুছ্ছা করিয়া কলক দুব্য সকল তাহাতে ছে চিরা দিয়া পরে দ্ধির মাত এবং সল্কা ক্রাথ দিয়া পাক করিয়া নিজ্জল হইলে পাক সিদ্ধ হয়।

আমবাতারি গুড়কা। পারা গন্ধক লৌহ ভামু তৃতিয়া দোহাগার থই দৈল্লব এষা প্রতিচ তোলা গুগ গুল ১৪ তোলা হরীতকী বর্ডা আমলকী এষাংপ্রতি ৩০ তোলা চিতাহল চুর্ব ৩ ভোলা এই সকলা দুব্য গৃত মর্দন করিয়া ২০ রভি পরিমান বটি করিবে অনুপান মৃত কিঞ্ছিৎ পরে সমভাগ তিফলাজলা ভপ্ত করিয়া খাইবেন এই উব্ধ যত সেবন করিবেন তত দিন দ্ধি মৎস্য গুড় ভোজন করি-বেন না।

ইতি সারকৌম্ভাৎ আমবাতাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ খুলচিকিৎসা।

ল্পেন ব্মন স্থান ক্রিয়া শ্লারোগে নিবেধ কারণ শ্লা-রোগে বায়ু প্রধান হেতু উপ্রক্রিয়া কর্ত্তব্য নছে।

রফিযোগ। তেঁতুলছালের ক্ষার অপাক্ত কার জল দিয়া থাইবেন।

পাচন। শুণী ভেরেপ্তামূল উভয়োঃপ্রতি ১ তোলা জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ হিন্দু চুর্ন ২ রতি সচল-লাবণ ৪ মাযা ঈষৎ উঞ্থাকিতে খাইবে।

প্রলেপ। মওলার ফল কঁ:জির দারা পেয়ণ করিয়া নাজিতে পুনঃ২ প্রলেপ দিলে বেদনা ভাল হয়।

পাচন। শুগী এরওয়ল যবের চাউল এষাংপ্রতি ৫০। রতি কল ৪ গল শেব ১ পল প্রকেপ সৈন্ধব চূর্ণ ৪০ রতি। শতমূলী রস ৪ তোলা মধু ৪ মাঘা মিভিত করিয়া খাইলে বেদনা নিবারণ হয়।

যমানী দৈহাব হরীতকী শুণ্ঠী এষাংপ্রতি ৪০ রতি জল ৪ পাল শেষ ১ পাল প্রক্ষেপ মধু ৪০ রতি কিঞ্ছিৎ তপ্ত থাকিতে থাইবেন। গোমূত্র শুদ্ধ মণ্ডুর হরীতকী রয়তা আমলকী। এই সকল তব্য একত্রে চূর্ন করিয়া স্থত এবং মধুর সহিত মিশ্রিত করিয়া থাইলে ত্রিদোষজ্ঞ শূল নম্ভ হয়।

চতুংসম লৌহ। অভ তামু কলজ্জী লৌহ এবাং প্র-ত্যেকে ১ পল মৃত ১২ পল হক্ষ ১২ পল ইহার সহিত পাক করিয়া সমাপ্তি হইলে বিভঙ্গ হরীতকী বয়ড়া আমলকী চি তামূল শুণ্ঠী পিপুল মরীচ। এবাং প্রত্যেকে ফুল্ম চুর্ন ১ পল মৃত ৪ মাবা ও মরু ৪ মাবা অনুপানে দেবন ১ মাবা পরিমাণ। ঔবধ পাকের প্রকার অভ্র তামু লৌহ এই তিন জব্য ২৪ পল মৃত হুক্ষের সহিত পাক করিয়া বিভ্লাদির ফুল্মুর্ন এবং কর্জ্জলী ভাহাতে দিয়া তাজুরদ্বারা নাড়িতেই বটি বান্ধিবার মত হইলে ঔবধ হয়।

উষধ সেবনের পার. উষ্ণ হক্ষ অথবা ক্না নারিকেল জল পান করিবে। শ্লরোগে দ্রুতবে: গ গমন স্ত্রীসঙ্গ মন্তপান কাঁচা লবেণ লক্ষা মরীচ দাউল এই সকল অহিতকারী হয়। ইতি সারকৌম্তাং শ্লাধিকার সমাপ্তঃ।

পরিণাম শ্ল চিকিৎমা।

পরিশ'ন শুল বমন ক্রিয়া কণ্ডব্য এবং তিক্ত মধু দ্রায় পথ্য আর রক্তমোক্ষণ ও ভেদ করাইবেন, যব গম কেদো এবং নরস চাউলের অন্ন পুরাতন মৃত মদিন ও ভক্ষণ বা-স্তুক ভূমি বুলাও পুনর্মবা পাঁচ অঙ্গুলে কাকমাছি এই স-কল শাক থাইবে শুগী ১ ভোলা গুড় ২ ভোলা তিল ৪০ ভোলা হক্ষের মহিত পাক করিয়া খাইবেন। বেদনা নিবারক মুক্তিযোগ। সামুক ভাষ ৪০ রতি আদি
পোয়া জলের সহিত তপ্ত করিয়া থাইবে জল থাকে এমত
ঝুন নারিকেলের ভিতরে সৈন্ধবলবণ চূর্ণ পুরিয়া তাহার
মুখ ঐ মুখীর দারা বদ্ধ করিয়া তাহাতে মৃতিকা লেপা দিয়া
বিলম্টের অগ্নিতে দক্ষ করিয়া সেই লবণ কিঞ্জিৎ ২ খাইবে
পারে কিঞ্জিং বাসিজল পান করিবে এই ঔষধ পিতৃশলে
বিশেষ উপকারী হয়।

নারিকেল খণ্ড। ঝুনা নারিকেল শশু ৮পল মৃত ১ পল চিনি ৮ পল ভাব নারিকেলের জল ৪ সের পাক নিজে প্রক্রেপ ধন্যা পিপুল মুখা বংশলোচন জীরা রুঞ্জীরা দারুচিনি তেজপত্র এলাইচ নাগের এই সকল ভায় প্র-ভোকে ৪ মাধা ঔষধ পাকের প্রকার নারিকেল কোরা ধৌত উত্তমরূপে করিয়া শুজ করিবে পরে মৃতভর্জন তদ-মন্তর শিলে পেষণ করিয়া পিগুরুৎ হইলে এক পাত্রে চিনি নারিকেলজল এবং ঐ পিগুরুৎ নারিকেল মন্দ জল দারা পাক করিছেই সন্দেশ পাকের নাায় হইলে চুলা হইতে নামাইয়া ধন্যা প্রভৃতি ভবেয়র ফুল্ল চুর্ন উহাতে দিয়া না-ভিত্তেই জুড়াইলে উত্তম পাত্রে রাখিবে সেবন ১ তোলা ভারুমান, অনুপান উষ্ণুক্ত অথবা ঔষধ সেবনের পর উষ্ণু-ধুজ পান ইহাতে জন্ম ভ্রা গাইবে না।

আনলকী। পুরাতন ক্রাণ্ড শশু ৫০ পাল,ঘৃত ২ সের
চিনি ৫০ পল আনলকী ৪ সের তাহার অপ্রাপ্তি হইলে শুদ্ধ
আমলকী ২ সের জল ১৬ সের শেষ ৪ সের কুর্মাণ্ড রম ৪
সের পাক হইবার কিঞ্ছিৎকাল পূর্বে পিপুল ২ পল কৃষ্ণজীরা ২ পল শুণ্ডী ২ পল মরীচ ১ পল তালিশপত ধন্যা
জীরা ২ পল শুণ্ডী ২ পল মরীচ ১ পল তালিশপত ধন্যা
জীরা ২ পল শুণ্ডী ২ পল মরীচ ১ পল তালিশপত ধন্যা
জীরা ২ পল শুণ্ডী ২ পল মরীচ ১ পল তালিশপত ধন্যা
জীরা ২ পল শুণ্ডী ২ পল মরীচ ১ পল তালিশপত ধন্যা
জারা ২ পল শুণ্ডী ২ পল মরীচ ১ পল তালিশপত ধন্যা
ভারি বিল্পাত এগাইচ নাগেশ্বর মুখা এবাংপ্রতি ২
ভোলা পাক শেষ মধু ১ সের, পাকের প্রকার, পুরাতন
ভুষাণ্ড তুরিয়া শশু ধৌত এবং শুক্ত করিয়া লইবে ঘৃতে
পাক করিয়া চিনির সহিত এবং আমলকীর রুগে এবং কু-

ঘাণ্ড জলের সহিত একত্রে পাক করিবেন মৃত্জালে পাক করিয়া তাড়ুর দারা নাড়িতে২ এইকপ সন্দেশের ন্যায় ং-ইলে মরীচাদি অব্যের স্থাচ্ব তাহাতে দিরা ভণক্ষণে না-মাইয়া তাড়ুর দারা নাড়িতে২ তালের ন্যায় হইলে তাহাতে মধু দিয়া পুনকার নাড়িতে২ মিশ্রিত হইলে পাক সিদ্ধি হয়। এই ঔষধ সেবন করিয়া শাক আয়ল ত্যাগ করিবে।

শতাবরী মণ্ডুর । গোমূত ১৬ তোলা ৫০। রতি হস্ত্র এবং শতন্থলীর রম ঐ পরিমাণ হক্ষ ঘৃত দধি এবাংপ্রতি ৮ পল শুজ মণ্ডুর ১৬ পল যব ৪ পাল পাকার্থ জল ১॥। দের ॥। দের ঔষধ পাকের প্রকার যবের ক্কার ॥। দের লইয়া ঘৃত ক্ষ করিয়া শুজ মণ্ডুর ৬ পল ঘৃতের সহিত মিলিত করিয়া পাক করিবেন তদনন্তর জীরকাদি অব্যের স্থাছর্ণ পাক নামাইয়া দিবেন তদনন্তর নাড়িতেই বটিকার ন্যায় পাক হইলে পাক মিজি সেবন অর্দ্ধ তোলা অনুমান, অনু পান উফ হুলা কিয়া ঔষধ দেবনের পর উফ হুল্ক পান করি বেন।

শুণী ৪ পল চিনি ১৬ পল ঘৃত ৪ পল ছক্ষ ৮ পল পাক সিদ্ধে প্রক্ষেপ। আমলকী ধন্যা মুথা কৃষ্ণজীরা পি-পুল বংশলোচন দারুচিনি তেজপত্র এলাইচ শতমূলী হরী তকী এবাংপ্রতি ১০ তোলা মরীচ নাগেশ্বর এবাংপ্রতি ৬ মাষা ৬ পল। পাক করিবার প্রকার, শুণী ৪ পল চিনি ১৬ পল আর মৃত ৪ পল এবং হক্ষ ৮ পলের সহিত পাক করিয়া গুড়বং ইইলে তদনন্তর আমলকী প্রভৃতি জব্যের স্কার্চ্ব পাক নামাইয়া তাহাতে দিয়া তাঁজুরছারা নাজিতে নাজিতে পিশুবং ইইলে দেই পিশু শীতল ইইলে তাহাতে মধু তিন পল মিলিত করিলেই পাক নিদ্ধি হয় ঔষধ মেনবন পর তোলা পরিমাণ তপ্ত দৃক্ষ অথবা ঔষধ মেবনের পর উষ্পুক্ষ পান করিবেন শাক অম্বল খাইবে না।

इर् भीवकामि भामक। स्रोता क्रमसीवा क्ष स्थी

পিপুল মরীচ হরীতকী বয়ড়া আমলকী দারুচিনি ভেজপত্র এলাইচ নাগেশ্বর বংশলোচন লবঙ্গ শৈলজ্ব রুজ্চন্দন
কাকোলা ক্ষারকাকোলা জয়তি জায়ফল জ্যেষ্ঠ মধু মন্ত্রী
জটামাংসী গাট্যালা লখী ধন্যা দেব দারু মুরামাংসী দ্রাক্ষা
স্থলফা পাত্রকার্ড মেথি দেতাড়া বালা লালুকা সৈন্ত্রব সোহাগার খই কন্দরকুট প্রিয়ঙ্গু কপূর এষাংপ্রতি সমন্তাগে
যত জীরা তত এবং জীবার সহিত ঐ কলক জব্য যত চিনি
তত আর চিনির সহিত যত দুগ্ধ তত্য পাকের প্রকার।
জীরকাদি কপূর পর্যান্ত জব্যের স্কল্প্র বিজে ছাকিয়া সম,
ভাগে লইয়া তদনন্তর চিনি এবং দূই জব্য একত্রে পাক
করিলে সন্দেশ পাকের ন্যায় হইলে ভাহাতে ঐ চুর্ণ সকল
দিয়া শীত্র পাক নামাইয়া তাজুর দারা নাড়িতেং শীতল
হইলে লাডু করিয়া রাখিবেন।

বিভাধরাত্র। মুখা হরী তকী বয়ড়া আমলকী গুলঞ্চ দন্তী তেউড়ি চিতা শুগী পিপুলমরীচ এবাংপ্রতি ২ তালা মপ্তুর অথবা লৌহ ৪ পল চট্কা ৪ পল তামুজারা ১ পল পারা শোধন ১॥০ তোলা গন্ধক ২ তোলা এই সকল জ্বব্যের সমভাগ যত এবং মধু দিয়া চারি প্রহর মর্দ্দন করিবনে ঔষধ সেবনের বিধি,রোগন্যুনাতিরিক্ত বৃঝিয়া১ মাযা কিষা ৩ মাবা অনুপান উষ্ণভূষা।

যুক্তিযোগ। তেউড়ি ২ তোলা পিপুল ২ তোলা হরী। তকী ৫ তোলা এই সকল জব্য চূর্ণ করিয়া ইহার সমভাগ গুড় তাহাতে মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে শুল নই হয়।

তেউড়ি ২ তোলা পিপুল ২ তোলা চূর্ণ করিয়া ভাল চিনি ২ পল মধু ২ তোলা মিশ্রিত করিয়া লেপন করিলে খুল নিধারণ হয়।

ময়নাফল ঝুল বিটলবল শুণ্ঠী পিপুল মরীচ এই ছয় জবেরর সমভাগ পুরাতন গুড় গোমূত্রের সহিত বাটিয়া উষ্ণ ক্রিয়া থণ্ড বস্ত্রে মাথিয়া র্জাঙ্গু প্রমাণ দীপা ক্রিয়া ঈ্যদুষ্ণ থাকিতে মলদারে প্রবিষ্ট করিয়া রাথিলে শ্স কটিশ্ল মলদারে বেদনা তিনের নিবারণ হয়। ইতি সারকৌম্ভাৎ শ্লচিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ গুল্ম চিকিৎসা।

দন্তী হরীত্রী। হরীত্রী দন্তিমূল চিতামূল এবাংপুতি
২৫ পল জল ৬3 সের শেষ ৮ সের পুরাতন গুড় ২৫ পল
পাক হইলে প্রেজপ তেউড়ি ৪ পল পিপুল ১ পল শুঠী
১ পল তিল তৈল ৪ পল উষ্ধি শীভল হইলে মধু ৪ পল
দারুচিনি তেজপত্র এলাইচ নাগেশ্বর এবাৎপ্রতি ৮তোলা
হরীত্রী ৪০ রতি প্রমাণ চুর্ন দিয়া সেবন করিবেন, পাথে
উষ্দুধ্ব পান করিবেন ইচাতে গুলা রোগ নিবারণ হয়।

পাক করিবার ক্রম। অথগুইরীতকী দন্তিমূল চিতা-মূল এবাংপ্রতি ২৫ পল লাইয়া বস্ত্রে বন্ধন করিয়া ৬৪ সের জলে পাক করিয়া ৮ সের থাকিতে ঐ অব্য সকল নিজ্জিলা করিবেন। ঐ অবশিষ্ট জলে পুরাতন গুড় ২৫ পল ভিলা তৈলা ৪ পল দিয়া পাফ করিবেন আর তৈউডি আদি ম-কল অব্য চূর্ণ প্রমাণ মত দিয়া পাক নামাইবেন।

বিদ্যাপর রম। শুদ্ধ গন্ধক শুদ্ধ হরিতালৈ স্বর্গাদিক মণ্ডুর তামু শুদ্ধরস এবাৎপ্রতি ২ তোলা ৮ প্রাহর মদ্দিন করিয়া ২ মাবা প্রমাণ বটিকা উক্ষ দুন্ধের সহিত সেবন ক-রিবেন ইহাতে গুলা রোগ নিবারণ হয়।

ইতি मात्रको प्रमार गुल्याधिकां व ननाश्वः।

অথ হৃদ্যোগ চিকিৎসা।

হৃত্যোগে রক্ত মেকিণ করি এবা ভোজ দাঁতন করা নদী জলে মানাদি করা এই সকল কর্ম করিতে নিষেধ আছে। মুন্ধিবোগ। ময়দা অ্র্জুন গাছের ছাল চূর্ব ছার্গ ছুঞ্জ ঘূত মধু চিনে এই সকল জব্য সমভাগে মিশ্রিত করিয়া ভোজন করিলে হুজোগ নিবারণ হয় এবং গোরক চাকু-ল্যার মূল চূর্ব ২ ভোলা দুক্ষের সহিত মিশ্রিত করিয়া খাই বেন। অর্জুন ঘূত।

গব্য ঘৃত ৪ সের অর্জ্রন গাছেন ছালের রস ৪ সের। কলকার্থ অর্জ্রন গাছের ছাল ১ সের আর ঐ গাছের ছা-লের রস ৪ সের একতে পাক করিয়া নিরস হইলে ১ ভোলা কিয়া ২ ভোলা পরি মাণ সেবন ক্রিবেন ইহাতে হডোগ িনাশ হয়।

ইতি সারকৌমুদ্যাৎ হৃজোগ চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ উরগ্রহ চিকিৎসা।

উরগ্রহরোগের লাক্ষণ। বুক্কুরের জিহ্বা যে প্রকার মুখ মধ্যে সর্ব্বদা থাকে না তদ্ধৎ জিহ্বা হয়। এবং এই রোগে জ্বর এবং অক্লচি থাকে আর শোথ হয়।

র্ফিযোগ। জিয়াপুতার ফল শাখা পল্লব সজিনাছাল।
ভডভডিয়ার পাতা এই সকলের রস প্রত্যেকে ২ ভোলা।
হিঙ্গু পাঁচ রভি অথবা পঞ্চলবণ ৪ মাধা এই সকল মিলিত করিয়া সেবন করিলে উরগ্রহ রোগ ন্ট হয়।

তেউরি চূর্ব। ২ তোলা পুরাতন গৃত্ত ৪ মাষা একত । ক্রিয়া খাইবেন আর প্রীহাধিকারের ঔষধি সকল প্রয়োগ ক্রিলে উরগ্রহ রোগ বিনাশ হয়।

ইতি সারকৌমুদ্যাং উর্গ্রহাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ মূত্রকুছ। চিকিৎদা।

মুন্টিযোগ। হরীতকী গৌহ্বরি সোন্দালি কুলথকলাই বিলুছাল দ্রালভা এয়াংপ্রতি ২৭ রতি এই সকল জব্য সূজ্য চূর্ণ করিয়া ৪ পল জল মৃত্ব আগ্রতে পাক করিয়া ১ পল শেষ থাকিতে ছাঁকিয়া ঈ্ষত্রফ থারিতে ৪০ রতি মধু প্র-ক্ষেপ দিয়া পান করিবেন।

অথবা পুরাতন বুজাণ্ডের রস ২তোলা যবক্ষার ২সাধা চিনি ১তোলা মিলিড করিয়া সেবন করিলে এই রোগ বি-নাশ হয়, কিয়া যবকার চিনি সমভাগে শীতল জলের স-হিত পান করিলে উক্ত রোগের উপশম হয়।

তিকণাদি মৃত। শত্মালর রস ১৩ পাল ২তোলাও মাধা ৩ রতি, কাঁকুড়ের রস ১৩ পাল ২ তোলাও মাধা ৩ রতি ঘৃত ৪ সের পাক সমাপন হইলে প্রক্ষেপ পুরাতন গুড় ২ সের, গোক্ষরি এরগুয়ল কুশার্ম্ন উল্রেম্ন রুফর্ণ ইক্ষুর্মূল এই সকল জব্য প্রত্যেক ১৪ পাল ১৫ তোলা ৭ রতি জ্লা ৪৪ সের শেষ ১১ সের।

পাকের ক্রমঃ। ৪৪ নের জলে উক্ত তিন জব্যের রম দিয়া পাক করিবেন ১১ সের থাকিতে গোছুরি আদি ৭ জব্য আর স্থত নির্দ্ধাল হইলে ছই সের পুরাতন গুড়ের সহিত মিলিত করিলে পাক সিদ্ধ হয়।

মৃত পানের প্রকার। এক তোলা প্রমাণ, এবং এই রোগে চন্দ্রপ্রভা বটিকা দেবন করাইবেন।

ইতি সারকৌমুভাং মূত্রকুছু । থিকার সমাপ্তঃ।

অথ মুত্রাঘাত চিকিৎসা।

মুর্ফিযোগ। সসাবীজ ২ তোলা সৈন্ধব ৪ মাবা কাঁজি দিয়া বাটিয়া দেবন করিলে সুতীঘাত নফ ছয়।

গোক্রি ঘৃত। ঘৃত ৪ সের কল্কার্থ ধন্যা ২ সের গো-ক্রি ২ সের জল ১৬ সের শেষ ৪ সের কলকার্থ ধন্যা ৪ পাল . গোফুরি ১৬ সের জলের সহিত মিদ্ধ করিয়া ৪ সের থাকিতে ছাঁকিয়া মৃতের সহিত পাক নির্দ্ধল হইলে ৪ পল ধন্যা ৪ পল গোফুরি হুল্মচূর্ব করিয়া তাহাতে দিয়া শীত্র নামা-ইবেন।

ইতি সারকৌমভাং মুত্রবাতাধিকার সমাপ্ত।।

অথ বহুমুত্র চিকিৎসা।

মুফ্টিংযোগ। ধ্বপক্ত চাটিমরন্তা ভূমিকু আণ্ডের মূল চূর্ণ শতাবরী চূর্ণ পাক করা ৬ গ্ধ সমভাগে লইয়া মিলিত ক-রিয়া থাইলে উক্ত রোগ বিনাশ হয়।

ক্লফ তিল ভাজা এ ৭ পুরাতন গুড় এই ৫ই দ্ব্য প্রতি দিন ভোজন করিলে বহুমূত ভাল হর।

ধাতীঘৃত। আমলকীর রন ঘৃত ভূমি কুমাণ্ডের রন
তবাংপ্রতি ৪ সের মৃদু পল শতমূলীর রম ৪ সের হন্ধ ৪
সের কুশারমূল কেশেরমূল সবেরমূল উলারমূল রুক্ত ইক্র
মূল এবাংপ্রতি ৬পল ৩ তোলা ৩ মাবা জল ১৬ সের শেষ
৪ সের শীতল ইইলে প্রক্ষেপ জ্যেতি মৃদু বৃত্তেউড়ি যুক্তমার এই
সকল চূর্ব প্রত্যেকে ১ পল চিনি ৮ পল ঘৃত ৪ সের দিরা
পাক করিবে মৃত্ত পাকের প্রকার, কুশাদি পঞ্চ্ছল প্রমান
পার্মারে লইরা ১৬ সের জন দিরা মিজ করিরা ৪ সের জল
থাকিতে জব্য নকল ছাঁকিরা এ জলে আমলকীর রনাদি
হন্ধ পর্যন্ত সকল জন্য আর এ পঞ্চাণের ক্ক. থ ৪ সের মৃত
৪ সের পাক করিয়া নির্দ্ধল ইইলে পাক সিজ হয়, মৃত
শীতল ইইলে জ্যেতিমর্ আদি ৩ জন্য চুর্ব করিয়া দিবেন ১
তোলা কিয়া ২ তোলা সেবন করিবেন।

য়ফিযোগ। মাষকলাই হুৰ জ্যেষ্ঠ মধু হুৰ আর মধু সম ভাগে লইরা থাইলে বছু মুক্ত নিবারণ হয়, যজ্জতুরুর চুৰ্ব আর মধু সমভাগ লইয়া লেপন করিলে উক্ত রোগে বি- নাশ হয়, আর আহির পত্তের রস আর মধু সমভাগে মি-আিত করিয়া লেপন করিলে এই বোগ নট হয়। ইতি সারকৌমুখাং বছমূত্র চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ পাথরী রোগ্যে চিকিৎসা। বাতপিত কফোল তিন প্রকার পাথরী হয়। চতুর্থ প্র-কার শুক্র বদ্ধ হইয়া হয়, কিন্তু এই রোগের আ্লান্স কফ

হয়েন।

মুক্তিযোগ। বরুণ হক্ষের ছাল ছেই তোলা ৪ পল জল দিয়া দিজ করিয়া এক পল থাকিতে ছাঁকিয়ায়মাযা পুরাভ্তন গুড প্রক্ষেপ দিরা ঈষ্তৃঞ্চ থারিতে পান করিলে উক্তরোগ নই ছয়, অথবা বরুণ ছাল ছের্ন ২ তোলা আর পুরাভ্তন গুড় ২ তোলা মিলিত করিয়া থাইলে পাথরীভাল হয়, সজিনার ছাল ছই তোলা ছর্ন পুরাতন গুড়ের মহিত সেবন করিলে এই রোগ বিনাশ হয়, গোছরে ভেরেগুপিত শুগী বরুণছাল এযাংপ্রতি ৪০ রতি ৪ পল জল দিয়া মৃরুজালে দিজ করিয়া ১ পল জল থাকিতে ছাঁকিয়া তাহাতে শত্মুলির রস দিয়া ছই তোলা পান করিবেন, অথবা রাখাল স্বার রস ২ তোলা মিলিত করিয়া ঐ ৪ জব্যের কাথের সহিত পান করিলে উক্ত রাগ নিবারণ হয়।

বুল্পাদি ঘৃত। ঘৃত ৪ দের বরুণ ছাল ৪ দের জাল ১৬ দের শেষ ৪ দের কল কার্থ কুল্প কলাই দৈলার বিড়ঙ্গ চিনি দিউলিছাল যবকার কুমড়ার বিচি এই সকল অব্য প্রস্তুত প্রত্যেকে ৮ তোলা, ঘৃত পাক করিবার ক্রমণ ছাল ৪ দের ছেঁচিয়া ১৬দের জলের সহিত সিদ্ধ করিরা ৪:দর জল থাকিতে বস্ত্রেণ্ড কিয়া ৪ দের ঘৃতের সহিত পাক করিয়া নির্দ্ধেল হইলে পাক নামাইরা কল্কার্থ কুল্থকলাই আদি চুর্ব করিয়া মৃত্রের সহিত মিলিত করিলে পাক সমাপন হয় ঘৃত সেবনের ক্রম ১ ভোলা কিয়া ২ তোলা।

বরণ গুড়। বরণ ছাল ১০০ পল জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের পুরাতন গুড় ১০০ পল প্রকেপ কুমড়ার সমার ও কারুড়েরবিচি মনছাল সজিনাছাল কুলথকলাই কিস্মিস্ এলাইচ শিলাজতু হরীতকী পিপুল বিড়ঙ্গ বেতোশাকের বিচি গোক্রবীজ নিউলি ছোপ এই সকল দুব্য প্রত্যেকে ১ পল, গুড় পাক করিবার ক্রম, ঐ বরণ ছাল একশত পল চৌষ উদের জলের সহিত পাক করিয়া বোল সের থাকিতে ছাঁকিয়া ১০০ পল পুরাতন গুড়ের সহিত পাক করিয়া জল শূন্য হইলে কুমাণ্ডের বীজাদি সিউলি ছোল পর্যান্ত সকল জব্য চূর্ণ এক পল প্রমাণ গুড় নামাইয়া তাহাতে দিবেন, ভক্ষণ করিবার ক্রম ৪ তোলা।

ইতি সারকৌম্ভাও পাথরী চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ প্রনেহ চিকিৎসা।

মুক্তিযোগ। আমলকী রস ২ তোলা হরিছা চূর্ব ২ মাধা মধু ২ মাধা মিলিত করিয়া অবলেছ করিলে প্রানেছ ভাল হয়। দাড়িয়া দি ঘৃত।

হরীতকী বয়ড়া আমলকী দারুহরিডা মুথা এষাংপ্রতি ৩২ রতি জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রক্ষেপ মধু ৪ মাধা মৃত ৪ দের কলকার্থ দাড়িয় বীজ বিড্লু হরিডা চঞি রুক্জীরা শুঠী হরীতকী বয়ড়া আমলকী পিপুল গোক্ষরিবীল যমানী ধন্যা ময়দা কুল দৈল্লব বন্যওল কিস্মিস জ্যেতমধু কুড় দারুহরিজা দারুচিনি শিলাজ হু নীলোৎপল রসাঞ্জন এষাংপ্রতি ২ তোলা পাকার্থ জল ১৬ দের পাকের প্রকার, গব্যমূত ৪ দের ১৬ সের জলে পাক করিয়া ৪ দের থাকিতে দাড়িয় বীজাদি ২৫ জব্য স্ক্রত্র প্রত্যেক ১ পল ঘৃতের সহিত মিলিত করিলে পাক দিছি হয়, এই ঘৃত অমের সহিত অথবা শুদ্ধ দেবন করিলে প্রমেহ নিবারণ হয়।

দন্তিঘৃত ও দের দন্তিমুল ৮পলু চিতামূল ৮ পলু হরী-

তকী ২০ পল দেবদার ৬ পল কেলীকদম্ব বরুণ দোনদানি পুননবা বিল্ এই সকল জব্যের ছাল প্রভাত ক পল দোণাছাল পারুলছাল গণিয়ারিছাল সালপানি চাকুল্যা কণ্টকারি গোল্ছরি ব্যাকুড, এষা প্রতি ৬ পল জন:৩২ সের শেব ৮ সের কল্কার্থ পঞ্চলবন পিপুলমূল চঞি চিতা মূল গুণ্ঠী এষা প্রেডি তিলা পাক করিবার ক্রম, ন্ত-দি মূলাদি সপ্তদশ জব্য সেই সেই প্রমাণারুলারে ছেচিয়া দাজিংসের জলের রহিত সিদ্ধ করিয়া৮ সের থাকিতে ছাঁকিয়া ঘুত ছয় সেরের সহিত পাক নিজ্লিল হইলে পঞ্চলবনাদি ও জা্য স্কাচ্ন উক্ত প্রমাণ মত ঘুতে দিরা মিলিত করিলে পাক সিদ্ধ হয়, ভক্ষণ এক ভোলা প্রমাণ করিবেন, ইহাতে প্রেম্ব নাট হয়।

পারামৃত রাঙ্গ অর্জ্জুন ছাল চিনি এই ৪ জব্য ২ তোলা শাল্মালির রস আটতোলা সভিত ৮ প্রহর মর্দন কার্য়া ৪ রতি প্রমাণ বটি করিবেন, গুল্পের পালো ১ ভোলা মধু এক তোলা দিয়া মর্দন করিয়া লেপন করিবেন।

ইতি সারকৌয়তাং প্রমহাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ শরীর হুর্গন্ধ টিকিৎসা।

বিজ্ঞাদি লৌহ। বিজ্ঞ শুগী যবক্ষার এষাৎপুতি ২ ভোলা লোহ ওঁতোলা এই সকল দুব্য ৪ পুছর মৰ্দন করিয়া ৪ রতি পুমান বটিকা মধু দিয়া সেবন করিলে রোগ নি-বারণ হয়।

মুক্টিযোগ। মধু ৪ তোলা জল ৪ তোলা পুতি দিন প্রাতে পান করিলে দুর্গন্ধ ভাল হর, অথবা নাগেশ্বর গল্ঞক বেণারগুল লাে্গছাল শিরিষছাল এই চারি দুবা সমভাগে লইয়া জলের সহিত মদ্দন করিয়া গাতে লেপন করিলে দুর্গন্ধন্ট য়হ।

হতি সারকে। যুক্তাং শরীর দুর্গলাধিকার সমাপ্তঃ।

व्यथ छेपती हिकि थम।

মুষ্টিযোগ। গাস্তারি সচল দৈশ্বব বন্যমানী ষবকার বিজ্ঞাহিন্স পিপুল চিতামূল শুণ্ঠী এই নকল দুব্য সমভাগে চুর্ব করিয়া ১ তোলা পুমার্ব ঘৃতের সহিত ভক্ষণ করিলে উ-দ্রী মায়ত্রই মুক্ত হয়।

সামূদ্যদিচ্ব। শুণী পিপুলমরীচ হরীতকী বয়ড়া আমলকী দন্তিমুলতে উড়ি তেলা তেলার আটা এই দকল দুব্য
প্রত্যেকে ২ তোলা দৈলাব ১৮ তোলা পাকে করিবার ক্রম,
শুণী আদি দকল দুব্য চ্ব করিয়া ভেলার আটার দহিত
কিঞ্ছিৎকাল খলে মর্দন করিয়া ছাত্রেরে আটার ভাবনা
দিয়া প্রদিন মর্দন করিয়া কর্দমের ন্যায় চইলে মৃত্রকা
ভাও মধ্যে ঐ দলা দিয়া ছাত্রের আটায় ঐ দলা ভুবাইয়া ভাওের মুখ উত্তমকপে বদ্ধ করিয়া ঘুটের পোড়ে
পোড়াইবেন ঔষধ না দক্ষ হয়, বিংশতি রভি উষ্জলের
সহিত পান ক্রিলে উক্ত রোগ চইতে মুক্ত হয়।

পুনর্বা অন্তম।পুনর্বা নিষ্টালপটলপত শুণী হরীতকী গুলঞ্চ দেবদার দারহারদা এষাংপুতি ২৫ রতি লইয়া ৪ পল জলের সহিত মৃদু অগ্নিতে শিক্ষ করিয়া ১ পল
থাকিতে ছাকিয়া পুক্ষেপ ৪ মাধা দৈন্দ্রব দিয়া উষ্ণ থাকিতে পান করিবেন।

নারাচচূর্ব।শুদ্ধ পারা কাঁচা সোহাগা মরীচ এবাংপুতি। ১ ভোলা গন্ধক শুঠী পিপুল এবাৎপুতি ২ তোলা দন্ধি-বীজ ৮ তোলা জল দিয়া থলে মর্দ্দন করিয়া ২ রতি পু-মাণ উষ্ণ জলের সহিত ভক্ষণ করিবেন ইহাতে অত্যন্ত ভেদ হয় আর আমোদরী শোথ বুজোদরীর প্রতিকার হয়।

য়ক্তিযোগ। মানকুল চুর ১ পল তগুল চুর ২ পল চুগা ৬পল জল ছয় পলের সহিত পাক করিবেন আর ২তোলা পুনাণ সেব্ন করিবেন ইহার পথ্য শুদ্ধ পারস হইতে শোথ যুক্তোদরী মুক্ত, হয়।

অথ ষক্ত প্লীহা চিকিৎসা।

মান গুড়িকা। মানকচুর শিক্ত আপাঞ্চ গুলঞ্চ বাক্ষ ছাল সালপানী চিতামূল সৈন্ধব শুগী তালজটার ক্ষার এষাংপ্রতি ৬ তোলা বিটলবণ যবক্ষার লবণ পিপুল এষাং প্রতি ২ তোলা সকল চূর্ব করিয়া গোমুত্র ১৬ সেরের সহিত পাক করিয়া শীতল হইলে মধু ৩ পল প্রক্ষেপ দিয়া ৩ রতি প্রমাণ সেবন করিবেন।

অথ যক্তারি লৌহ। লৌহ ৪ তোলা অত্র ৪ তোলা তামু ২ তোলা পাতিলেবুর ছাল ৮ তোলা হরিণ চর্ম ভঙ্ম ৮ তোলা এই সকল তাঞা জলের সহিত থলে মর্দন করিয়া ৯ রতি প্রমাণ বটিকা তপ্ত জলের সহিত পান করিবে য-কৃত প্লীহা নইট হরা।

অভ্যালবণ। পালিতামাদারের ছাল পলাশছাল আ
কল্ছাল মনসাসিজ আপাঙ্গ চিত বরণ গণিরারী রহৎ
গোলুরি রহতি কণ্টকারি যাটাযুল গল্গভাদালী কানচটা
হাপরমালী কুরচিছাল ঘোষালকল পুনর্নবা এবাংপ্রতি সম
ভাগ ছেঁচিয়া হাঁড়ির ভিতর পুরিয়া উত্তমনপে বন্ধ করিয়া
জাল দিয়া ভত্ম হইলে তাহার ১৬ পল ভত্ম লইয়া ৬৪ দের
জলের সহিত জাল দিয়া ১৬ দের থাকিতে তাহাতে ১৬
দের গোমূল বিটলবন্ ৪ দের হরীতকী ৯ পল চুর্ব করিয়া
মকল দ্বেরের সহিত পাক করিয়া। আনা অংশ থাকিতে
প্রক্রেপ রুফজীরা ভুগী পিপুল মরীচ হিঙ্গ যমানী রুড়
শার্মি এবাৎপ্রতি স্কল চুর্ব দিয়া গুঞ্জের ন্যার হইলে ১ তোলা
প্রমাণ ভক্ষণ করিলে যক্ত প্লীহা নক্ট হয়ণ

লোকনাথ রস। পারা গন্ধক অজ্র এষাংপ্রতি ২ তোলা লৌহ ৬ তোলা তাম ৪ তোলা কড়িভনা ৬ তোলা এই সকল জব্য পাণের রনের সহিত্ত মর্দন করিয়া পিগুাক্কত হইলে মৃত্তিকা যন্তে রাখিয়া তাহার মুগ বন্ধ করিয়া ২ হস্ত প্রি- মিত গর্ভের মধ্যে ঐ যন্ত্র রাখিরা যুট্যা দিয়া গর্ভ পরিপূর্ণ করিরা অলি দিবেন পরে নির্বাণ হইলে পাক সিদ্ধ ইর ব্যক্তি বিশেষে ৪রতি ২ রভি ১ রতি প্রমাণ দেবন করাইলে যুক্তং প্রীহা হইতে মুক্ত হয়।

ইতি সারকৌয়দ্যা বয়ৎ গ্লীহাধিকার সম.প্রঃ।

অথ শোগ চিকিৎসা।

কংশাহরীতকী। বিলুছাল দোণাছাল গান্তারিছাল
প্রাক্তাল সালপানী চাকুল্যা কণ্টকারি গোন্থরি ব্যাকুড়
এবাংপ্রতি ৬ পল ৩ তোলা সাত নাবা জল ৬৪ দের শেষ
১৬ দের আন্ত হরীতকী ১০০ পল পুরাতন গুড় ১০০ পল
শুগী পিপুল মরীত প্রত্যেকে ১ পল দক্ষিতিনি এলাইত
তেজপত্র প্রত্যেকে ২ ভোলা প্রক্রেপ মরু ৬ পাল, পাকের
ক্রম। পাকপাত্রে ৬৪ দের জল দিয়া বিলুছালাদি ন অব্য
ক্রজ এমান মত দিয়া মিজ করিবেন সেই সময় হরীতকী
দিবেন ১৬ দের খাকিতে ছেকিয়া পুরাতন গুড় ১০০ পল ঐ
কর্যে দিয়া গুডেরমত পাক হইলে নানাইয়া পিপুলাদি ৩
দের গ্রিত মিজিত করিয়া শীতল হইলে মধু ১৬ পল দিথেন ১ ভোলা অথবা ২ ভোলা সেবন করিবেন।

শুষ্ট্রাদি তৈল। তিল তৈল ৪ সের কল্কার্থ শুদ্দ হলা পুনন্বা দেবদারু রায়া শুণ্ডী এবাৎপ্রতি ৫ তোলা ৬॥ মাবা পাকার্য জল ১৬ সের পাকের ক্রম, পাকপাতে ৪ সের তৈবাদি পাক করিতে২ কেণা গুন্য হইলে শুদ্ধ হলা আদি তব্য সকল ছেচিয়া ১৬ সের জলের সহিত পাক করিয়া জল শুন্য হইলে পাক সিদ্ধ হয়।

ইতি সারকৌম্ভাং শোধাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ কোযুর্দ্ধি চিকিৎসা।

শতপুষ্পা ঘৃত। মৃত্রাসক পত্রের রস নিধি রা রস নিম্নপত্রের রস কণ্টকারির রস ধ্বে এবাং প্রতি ৪ লের ক-ল্কার্থ শুল্ফা গুলঞ্জ জটামাং সী কুড় তেজপত্র এলাইচ এষাং প্রতি ২ তোলা পাক করিবার ক্রম, পাকপাতে ঘৃত আদি ৬ জব্য পাক করিয়া ৪ সের থাকিতে শুল্ফাদি ৬ জব্য দিয়া মিলিত হইলে পাক সিদ্ধ হয় নেব্যমত সেবন করিবেন। ইহাতে উক্ত রোগ নট হয়।

অথ নিত্যানন্দ রস। হিন্দ পারা জরিত্তামু জরিত কাসা জরিতরাঙ্গ শোধিত হরিতাল শুদ্ধ ভূঁতে শশু ভন্ম শুষ্ঠী পিপুল মরীচ হরীতকী বয়ড়া আমলকী লৌহ বিড়ঙ্গ পঞ্চলবন চঞি পিপুলমূল হবুম রাম্না শঠি আক্লাদি দে-বদাক্ব এলাইচ বিচতাভক এযা প্রতি ২ তোলা এই সকল জন্য হরীতকী রসে মর্দন করিয়া নির্দ্দল হইলে পাঁচ রাভ করিয়া বটিকা করিবেন এবং হরীতকী রস. দিয়া উন্ধ সে-বন করিবেন ইহাতে কোষ রাদ্ধ নই হয়।

ইতি সারকৌমুদ্যাং কোষরুদ্যা^{পি}ধকার সমাপ্তঃ।

অথ গলগগু চিকিৎসা।

তুলিভিল। তৈল ৪ দের তিতলাউরের রস ১৬ দের কল্কার্থ বিড়ল যবক্ষার সৈন্ত্র বচ শুণ্ঠী পিপুল মরীচ দেবদার এবাংপ্রতি ৮ তোলা পাক করিবার ক্রম। রাই-সরিষের তৈল ৪ সের ফেণা রহিত হইলে কল্কার্থ অব্যস-কল দিয়া পাক নির্প হইলে তিতলাউয়ের রস ১৬ সের দিয়া নির্প হইলে সেই তৈল মর্দন করিয়া অগ্রির উত্তাপা দলে গ্লগ্রু নিবারণ হয়।

ইতি সারকোমদ্যাৎ গলগও চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

व्यथ भिन्निम किकिएमा।

মুন্টিযোগ। কনকগুন্ড,রারমূল ভেরাভারমূল নিষিক। মূল পুনর্নবা হল সজিনামূলের ছাল রাইসরিষা এই সকল দ্রব্য সমভাগে লইয়া জল দিয়া মর্দ্দন করিয়া প্রলেপা দি-বেন ইহাতে উজ্রোগ শার্মি হয়।

অথ সৌরেশ্বর ঘৃত। ঘৃত ৪ দের বিলু সোণা গাস্তারি পারুল গণিয়ারি এবাং ছাল সালপানি চাবুল্যা কণ্টকারি ব্যাকুড় এবাংপ্রতি ১২ তোলা ৬॥। মাবা জল ১৬ সের কাঁজি ৪ সের কল্কার্থ নিষিন্দা দেবদারু শুণ্ডী পিাপুল মারীচ হরিতকী বয়ড়া আমলকী পঞ্চলবগ বিড়ঙ্গ চিতা চঞ্চি পিপুলমূল গুণ্ডল হবুষ বচ যবক্ষার আলকুশিমূল শঠি এলাইচ বিচতাড়ক এবাংপ্রতি ২ তোলা ১৬ সের জলের সহিত বিলুছালাদি সিদ্ধ করিয়া ৪ সের থাকিতে কাঁজি ৪ সের স্বত ৪ সের দিয়া নির্দ্ধল ইইলে পাক নামাইয়া নিষিস্কাদি জব্য সকল ফুল্র্ড করিয়া তাহার সহিত মিলিত ইইলে পাক সিদ্ধ হয় ভক্ষণ ২ তোলা মাত্র ইহাতে উজ্বোগ বিনাশ হয়।

ইতি সারকৌমুন্তাং শিম্পদাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ বিভাবণাধিকার।

ত্রণাদি দ্বারার খ্যাত হইলে নিজায়ণ কহা যায় শ্বেত পুনর্নবায়ল ২ তোলা জল ৪ পালের সহিত সিদ্ধি করিয়া ১ পাল থাকিতে ৪ মাষা বরুণছালচুর্ন প্রক্ষেপ দিয়া ঈ্ষৎ উষ্ণ পান করিবেন ইহাতে উক্ত রোগ নই হয়।

ইতি সারকৌমভাং বিজাবণাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ ত্রণ চিকিৎসা।

র্ফিযোগ। ত্রণ হবার সময় ধুস্তুরা পতের বেঁটো ল্বণ সংযুক্ত করিয়া লেপ্ন করিলে ত্রণ নফ হয়। ছণভৈল। তিল তৈল ৪ সের কল্কার্থ বাট্যালামূল ৪ তোলা আপাক্ষ ৪ তোলা জল ১৬ সের একতে পাক ক-রিয়া জল ব্ন্য হইলে পাক সিদ্ধ হয় ইহাতে ক্ষত নিবারণ হয়।

ইতি সারকৌমুদ্যাং ত্রণ চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ অন্তর্ত্ত প চিকিৎসা।

হরীতকী বয়ড়া স্থামলকী শুণ্ঠী পিপুল মরীচ এষাৎ-প্রতি ৪ ভোলা গুণ্গুল ২৪ ভোলা সম্ভব মত ঘৃতের সহিত মর্দন করিয়া সেবনে উক্ত রোগ বিনাশ হয়।

ইাত সারকৌম্ভাং অন্তর্ণাধিকার সঁমাপ্তঃ।

অথ ভগন্দর চিকিৎস।।

মুফিবোগ। মনসাসিজের আঠা শ্বেত আকন্দের আঠা দারু হরিদ্রা তিন অব্যু সমভাগ ছিন্ন বস্ত্রে লেপন করিয়া বাতি দিবে তিল হরী তকী নিম্নপত্র হরিদ্রা দারুহরিদ্রা বচ ঝুল এই সকল দুব্য সমভাগ বাটিয়া প্রলেপ দিলে উজ্ রোগ নফী হয়।

শুণী পিপুল মরীচ হরীতকী বয়তা আমলকী মুথা বিভঙ্গ গুলঞ্চ চিতামূল শঠি এলাইচ পিপুলমূল হবুদা দেব-দারু ধন্যা কুড় চঞি রাখালসদার মূল হরিদ্যা বিটলবন্দ দচললবন যবকার দৈল্পব গজপিপুল এযাংপ্রতি ১ তোলা গুণগুল ৫৪ তোলা এই দকল দ্ব্য মধু দিয়া মর্দন করিয়া ১ তোলা প্রমান দেবন করিলে ২১ দিবসে শান্তি হয়।

অথ বিশ্বানন্দ তৈল।

তিল তৈল ৪ সের জল ১৬ সের কল্কার্থ চিতায়ল আকন্মল তেউজিয়ল কাঁকরোলেয়ল কেতৃকীরমূল জুয়ৣর স্লু খ্রেভকরবীর পত্রের রসু মন্সাসিজের আঠা বচ বিষ অঙ্গলিয়া হরীতাল গাজিমাটি নাকটিকিমূল এষাংপ্রতি ও মাধা ৬রতি।

পাকের প্রকার। ৪ সের তৈলে ১৬ সের জল দিয়া কল্কার্থ দূব্য সকল তাহাতে দিয়া পাক করিবেন নির্দ্ধল
হইলে পাক সিদ্ধ হয়।

এই তৈল ক্ষতদেশে পুরাতন তুলার সহিত দিবেন। তথ্য তগন্দরহর রস। ··

পারা ২ তোলা গন্ধক ৪ তোলা ঘৃতকুমারির রসে ৩
দিবস থলে মর্দন হইলে ৬ তোলা তামুচুর্ব একতে করিয়া
একটা ইাড়িতে পলাশের ছাই অর্চ্চেক পুরিয়া তাহার
মধ্যে ঐ ঔষধু রাথিয়া মুখ বদ্ধ করিয়া পালাশকার্চের জাল
হুই প্রহর দিবেন পরে নিম্নছালের রসের সহিত ঐ প্রকার
পাক করিবেন আর পুনঃ২ থলে মর্দন করিয়া ধূলীর ন্যায়
হুইলে পাক দিদ্ধ হয়। এক রতি প্রমাণ নিম্নছালের রসের
সহিত মধু দিয়া সেবন করিলে উজাময় নইট হয়।

ইতি সারকৌমুদ্যা । ভগন্দরাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ উপদংশ চিকিৎসা।

য়য়িযোগ। কুলপতের কুঁড়ি ১ তোলা আকলপতের বন ১ তোলা আপাঙ্গপতের রস বাসসহানীর রস হিন্দুল এই সকল দুবা ১ তোলা প্রমাণে বাটিয়া ছিন্ন বস্ত্রে লেপন করিয়া বাতি করিবেন সেই বাতি জালিয়া রোগীকে ভা-বনা দিলে উপদংশ রোগ শান্তি হয়। আর ত্রণাধিকারে যে যে ঔষধি উজ আছে তাহা এ রোগে প্রয়োগ করিলে শান্তি হয়।

ইতি সারকৌম্ভাং উপদংশ চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ কুণ্ঠাদিকার চিকিৎসা।

হক্তিযোগ। হরিতা চিতামূল বুল মরীচ বালা হকা

মাকন্দখাঠা মনসাসিজের আঠা এষা প্রতি সমভাগে খলে । মদিন করিয়া গাতে লেপন করিলে সামান্য কূষ্ঠ নট হয়।

অথ পঞ্চিক মৃত।

নিয়ছাল পটোলপত কণ্টকারি গুলঞ্ বাসকছাল এষাংপ্রতি ১ পল জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের ঘৃত ৪ সের কল্কার্থ হরীতকী বয়ড়া আমদ্কী এষাংপ্রতি ২ পদ ৫ তোলা ২ মাষা ৭ রতি।

পাকের প্রকার। • নিম্বছালাদি ৫ জব্য ৬৪ সের জ্বলের সহিত সৈদ্ধ করিয়া ১৬ সের থাকিতে মৃত দিয়া নির্দ্ধল হ-ইলে কল্কার্থ হরীতকী বয়ড়া আমলকী ক্রুপ্তী চূর্ন উক্ত প্রমাণ মত ঘৃতে দিয়া শীভ্র নামাইবেন, ২তোলা পরিমিত সেবন করিবেন।

পঞ্জিত গুণ্ডল। ছত ৪ সের নিষ্ঠাল গুলঞ্ বাসক ছাল পটোলপত কণ্টকারি এযাংপ্রতি ১ পল জল৬৪সের শেষ ৮ সের,কল্কার্থ আলকাদি মূল বিড়ঙ্গ দেবদারু গজ-পিপুলী যবক্ষার সাজিমাটি শঠী হরিছা মৌরি গুলফা চঞিকুড় নফ্টকী মরীচ বুরুচিছাল জীরা চিতায়ল কণ্টকি ভেলা বচ পিপুলয়ল মঞ্জিঠা এলাইচ বন্যমানী এযাংপ্রতি ই তোলা গুণ্ডল ও পল, পাকের প্রকার, ৬৪ সের জলে দিরছাদি ৫ জব্য এবং গুণ্ডল পুটলি করিয়া দিয়া পাক করিবেন ৮ সের থাকিতে ছাঁকিয়া ঐ গুণ্ডল এবং ৪ সের মৃত কল্কার্থ জব্যাদি ছেচিয়া দিয়া পাক জল শ্ন্য হইলে ছাঁকিয়া ১ ভোলা প্রমাণ ভোক্ষণ করিবেন।

অমৃত ভলাতক। ভলা ১৬ সের ৬৪ সের জলের সহিত পাক হইলে ১৬ সের জল থাকিতে ছাঁকিয়া হৃত ৪ সের হুন্ধ ১৬সের চিনি ১৬পল দিয়া পাক গুড়ের ন্যায় হৃইলে সিদ্ধ হ্যু, ৬ তোলা প্রমাণ ভক্ষণ করিবেন।

্দিন্রাদি তৈল। রাইসরিষার তৈল ৮ পল কল্কার্থ

রুষ্ণলীরা৮ ভোলা সিন্দুর ৪ তোলা জল ৪ সেরের সহিত পাক করিয়ানিজ্জল হইলে পাক সিদ্ধ হয়।

রহৎমরীচাদি তৈল। মরীচ তেউড়ি দন্তিমূল আকল্দ আঠা গোময়ের রস দেবদারু হরিজা দারুহরিজা জ্ঞ টামাংসী কুড় রক্তচন্দন রাখাল সসারমূল করবীরপত হরিভাল মন-ছাল চিতামূল বিষলাঙ্গলা বিড়চাকুন্দা শিরীষ্ছাল কুরুচি-ছাল নিম্বছাল ছা।তমছাল মনসাসিজ গুলগু সোন্দালি ছাল হাপরমালী মুথা খাদরকার্গ পিপুল বচ নফ্টকী এ-যাংপ্রতি ৮ ভোলা বিষ ২ পাল- সার্মপতৈল ১৬ সের গোমুত্ত ৬৪ সের।

পাকের প্রকার। তিল নিজেণ হইলে মরীচাদি বিষ পর্যান্ত ভ্রাব্য সকল কুটিয়া গোসুত্তের সহিত পাক করিয়া নামাইবেন। ইহাতে ৮০ প্রকার বুঠ শান্তি হয়।

কন্দর্পদার তৈল।

ছাতিমছাল ক্ষনাড়া গুল্ফ নিষ্ছাল শিরীবছাল ঘোড়ানিষ জয়ন্তী ভিতলাউ রাখালনদার ছল হরিজা এবাংপ্রতি ১০ পল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের সোন্দালি ছাল ভীমরাল জয়ন্তীপত্র ধৃন্তুরারপত্র আমলকী সিদ্ধিপত্র থক্ত্র্ররপত্র আমলকী সিদ্ধিপত্র থক্ত্রর পত্র গোময় আকন্দপত্র শিল্পপাতা এই সকল ত্রেরে রস্প্রত্যকে ৪ সের, কল্কার্থ মাকালকল বচ ব্রন্ধী তিতলাউ
কিতানূল গোয়ালিয়ালতা কুড়ালি মনছাল আমলকী চাকুল্যা নাটা গাঁট্যালা সোনালি আকন্দআঠা কালকেম্ন্দ্রা
ইসেরমূল মঞ্জিষ্ঠা ঘোড়ানিষ রাখালসদার হল বিছটি গল্পভাদালী হাপরমালা মুরা ছাতিমছাল শিরীবছাল কুড়চিছাল নিষ্টাল গুলুফ হাকুচবীল ধন্যা দারুচিনি জ্যেষ্ঠ
মধু কন্দর কুট কট্কি শঠী দারুহরিজা তেউড়ি পাল্কাষ্ঠ
পিপুলমূল অগুরু কুড় কটফল জটামাংনী কপুর ভাল
প্রত্বিরাইচ গুয়া হরীতকী বয়্ডা,এষাংপ্রতি ২তোলা, পাকের ক্রম, ছাতিম ছালাদি হরিজা প্র্যন্ত অব্যক্তর কুটিয়া ১০ পাল প্রমাণান্দারে ৬৪ সের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া ১৬ সের থাকিতে ছাঁকিয়া৪:সর তৈলের সহিত পাক হইলে কিঞ্ছিৎ ক্কাথ থাকিতে গোস্ত্র উক্ত প্রমাণমত দিবেন'ক-ল্কার্থ মাকালফলাদি বয়ড়া পাইান্ত কুটিয়া দিয়া আর আ-কন্দআঠা সোন্দালি আদি ১০ দুব্যের সহিত পাক করিলে সিদ্ধ হয়, এই তৈল গাত্রে মর্দ্দন করিলে কুণ্ঠ শান্তি হয় এবং কন্দর্পের ন্যায় কলেবর হয়, য়নিবাক্য।

অমৃতাক্ষর লোই। পারা গন্ধক ভামু লোই অন্দ্র গুণ্ডল এষাংপ্রতি ৮ তোলা হরীভকী বয়ড়া আমলকী এযাংপ্রতি ও পল- ২-ভোলা ৫ মাধা ৩ রতি পাকার্য জল
১৬ সের শেষ ৪ সের মৃত ১৬ পল প্রক্ষেপ হরীভকী বয়ড়া
৫ ভোলা আমলকী ১২ ভোলা, পাকের প্রক্রার গুণ্ডল তুধ্বের সহিত মৃত্ব অগ্নিতে সিদ্ধ হইলে জ্বলে ধৌত করিয়া
শুকাইবেন আর হরীভকী আদি ওদুব্য চুর্ণ করিবেন ভেলা
জ্বলে সিদ্ধ করিয়া শুকাইলে ভগ্ন করিয়া আঠা লইবেন,
পাকের ঘৃত চড়াইয়া কেণা রহিত হইলে তামুাদি ৫ দুব্য
দিয়া মিলিভ হইলে হরীভক্যাদির ক্রাথ ৪ সেরের সহিত
পাক করিবেন গুড়ের ন্যার হইলে প্রক্রেন আদি
৩ দ্ব্য দিয়া এবং কর্জ্রলী দিয়া সন্দেশের পাকের ন্যায়
হইলে পাক সিদ্ধ হয় ৬ ভোলা লোই ঘৃত মধুর সহিত মাভিয়া লেপন করিলে বুর্গরোগ নইট হয়।

ইতি সারকৌরতাৎ কুণ্ঠাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ শিতপিত চিকিৎগা।

মুষ্টিযোগ। হরিতা চাকুল্যাবীশ কৃষ্ণতিল সমভাগ জল দিয়া বাটিয়া পত্তে লেপন করিলে উজ রোগ নট হয়, য-মানী ২ তোলা পুরাতন গুড় ২ তোলা মিলিভ করিয়া খা-ইলে উক্ত রোগ শান্তি হয়।

ইতি সারকৌমুক্তাং শিতপিত চিকিৎষা সমাপ্তঃ।.

অথ অমূলপিত চিকিৎসা।

যুক্তিযোগ। আমলকী রস ১ তোলা মধু ১ তোলা নি -লিভ করিয়া পান করিলে অমলপিত নট হয়। অথ নারিকেলামুত।

নারিকেল শশু ৩ পাল মৃত ৩২ পাল শুণ্ঠী চুর্ব ১৬ পাল নারিকেল জল ৩২ সের হক্ষ ৩২ সের আমলকী রস ৪ সের চিনি ২। সের শুণ্ঠী পিপুল মরীচ দারু চিনি এলাইচবীজ্ব তেজপাত নাগেশ্বর এবা শুভি ১ তোলা চুর্ন প্রক্রেপ আন্ মলা জীরা ধন্যা কৃষ্ণজীরা গাঁট্যালা বংশলোচন মুখা এ-বাংপ্রতি ৬ তোলা মধু ৪ তোলা, পাক করিবার প্রকার, নারিকেলের কোরা জলে ধৌত করিয়া নির্দ্ধল করিয়া রৌত্রে শুদ্ধ হইলে ৩২ পাল ঘৃতে ভাজিয়া তাহাতে শুণ্ঠী চুর্ন জাব নারিকেল জল আদি ৩ জন্য শক্ত প্রমাণাক্র নারে মৃত্ব আগ্রতে পাক করিয়া সন্দেশের পাকের ন্যায় হইলে নামাইয়া প্রক্রেপ আমলাদী জব্যের সহিত সিলিত করিয়া শীতল হইলে মধু ৪ পাল দিবেন, ভক্ষণ ১ তোলা কিয়া ২ ভোলা অনুপান তপ্ত হুন্ধ, ইহাতে উক্ত রোগ নাশ হয়।

অধিপিত চুর্। হ্রীতকী বর্ণ আমলকী শুণী পি পুল মরীচ মুথা ইন্দ্রয়ব বিড়ঙ্গ এলাইচ তেজপত এবাংপ্রতি যত লবঙ্গ চুর্ন তাহার সমভাগ,উভর চুর্ন যত হইবেক তা-হার দ্বিংগ তেউড়িয়ল সকল চুর্নের সমভাগ চিনি সকল দুব্য মিলিত করিয়া নারিকেল জল দিয়া খাইবেন ১তোলা প্রমাণ।

শিভামগুর।

মণ্ডুর ১২ তোলা চিনি পাঁচ পল ঘৃত আট পল হক্ষ ১৬ পল শুণ্ঠী পিপুল মরীচ জ্যেন্ঠমগু এলাইচ ছরালভা বিড়ঙ্গ হরীতকী বয়ড়া আমলকী কুড় এযাংপ্রতি ২ তোলা মধু ২ পল, পাকের ক্রম, ঘৃতের মণ্ডুর চুর্ন দিয়া মনদমনদ জালে জিলিত হইলে ভাষতে চিনি হক্ষ দিয়া পাক ক- রিবেন গুড়ের ন্যায় হইলে শুগু আদি ১০দুর্য দিয়া পাক নামাইয়া অর্দ্ধ তোলা প্রমাণ সেবন করিবেন।

· ইতি সারকৌমুভাং অনুলপিতাদিকার সমাপ্তঃ i

অথ বিষর্ক চিকিৎসা।

ক্ষত দোষে তলে সংযোগ ইলে বিষয় হয়। শিরীষ্ ছাল গুড়কামাই সমভাগে বাঁটিয়া প্রলেপ দিলে উজ্বোগ বিনাশ হয়,গুলঞ্ বানকতাল মুখা তাতিমতাল খদি-রক্তি কাল্যলভাশিশ্বপত হরিছা এষা প্রতি - ০ পল জল ৪ পল শেষ ১ পল প্রজেপ মধু ৪০ রতি।

ইতি সারকৌমুভাং বিষক্ষাধিকার সময়প্ত।

অথ বিস্ফোটক চিকিৎসা।

শিরীবছাল বেণার্যুল নাগেশ্বর এই ৪'ডায় বাঁটিয়া প্র-লেপ দিবেন।

ইতি সারকৌমতাং বিজ্ফোটকাধিকার সমাপ্তঃ।

वाश अनल किंकिएना।

্ কাঞ্নকুলের গাছের ছাল ৪ ভোলা **ষ**ামাকি প্রলেপ দিয়া কিঞ্ফি থাইবেন।

ইন্টিষোগ। সোহাগা হাপরমালির ন্ল ২ জব্য সন-ভাগে লইরা বাটিয়া প্রলেপ দিবেন ইহাতে উজ রোগ বি-নাশ হয়

ইতি লারকৌম্ভাং ওদজ চিকিৎনা নমাপ্তঃ।

অথ টাক'রোগ চিকিৎসা।

মালতী তৈল। কটুতৈল ৪সের মালতীপত করবীরপত ভাকরমচাফল চিতামুল এবাংপ্রতি ২তোলা জল ১৬ গের গোমুত্র ৪ সের পাক করিয়া ৪ সের থাকিতে পাক লিছ হয় ইহাতে টাক রোগ বিনাশ হয়।

ু কুঠাদি তৈল। কটু তৈল ৪ সের গোমূত ৮ সের ছাগ
যুত্ত ৮ সের কলকার্থ সিজ আটা আকন্দ আটা ভীমরাজের
রস বিষ্লাঙ্গলা এষাংপ্রতি ১২ পল ৬ মাষা পাক করিয়া
৪ সের থাকিতে নামাইবেন, এই তৈল মুর্দ্দন করিলে উক্ত রোগ বিনাশ হয়।

ইতি সারকোয়তা প্টাকাধিকার সমাপ্তঃ।

অথ দন্তরোগ চিকিৎসান-

য়ফিঁযোগ। কুত দাক্তরিদ্রা লোধ মুথা আকনাদিয়ল চঞি নফটকি হরিদ্রা হুঁতিয়াভক্ষ গৃত পিপুল এবাংপ্রতি সমভাগ ঘ্তের সহিত মুখে রাখিলে দন্তরোগ শান্তি হয়।

খদিরবটিকা। খদিরকার্ছ চূর্ব ১০ পাল জল ৬৪. সেরের সহিত পাক করিরা৮ সের থাকিতে ছাঁকিয়া তাহাতে জয়ত্রী কপূর গুরাক জায়কল চূর্ব এবাংপ্রতি ৮ তোলা খদির ৮ তোলার সহিত পাক করিয়া মুখে রাখিলে এবং দুস্তে দিলে উক্ত রোগ নাশ হয়।

ইতি সারকৌমুভাৎ দন্তরোগ চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

वश कर्न हिकि देश।

রুফিযোগ। রহ্বের রস আদার রস, সজিনাছালের রস রঙ্গ মূলার ছালের রস কদলীমূলের রস ইহার মধ্যে যে রস ইচ্ছা তাহার সমভাগ, মনসাপত্রের রস মিলিভ করিয়া কর্নিধ্যে দিবেন তাহাতে নানা প্রকার কর্মশুল নিবারণ হয়।

মূলারকার বিঙ্গ শঠী শুলুকা বচ কুড় দেবদারু সজি-নাছাল রসাঞ্জন সচল যবকার সাকিমৃত্তিকা সৈন্ধব ভূর্জ্জ-প্রক বিটলবণ মুখা এবাং প্রতি ৪ তোলা ভিল তৈল ৪ সের টা বালেবুররস ৪ সের কলার এটের রস ৪ সের পুশুল মূল চুর্ণ আদুসের মধু ১ সের গোঁড়ালের রস ৪ সের পাক করি বার ক্রম্য স্থার ক্ষারাদি মুখাচুর্ব পর্যন্ত তৈলে দিয়া পাক কিঞ্ছিৎকাল হইলে টাবালেবুর রস প্রভৃতি সকল রস দিয়া ৪ সের থাকিতে পাক সিদ্ধ হয়। তৈলভাও ধান্য মধ্যে রাখিবেন প্রতি দিন ১ মাধা প্রমাণ ঈষ্পুষ্ণ করিয়া কর্বে দিবেন ইহাতে কর্বপীভা সকল নিবারণ হয়।

দশমূলী তৈক। তিল তৈল ৪ সের বিল্ছাল ৩২ ভোলা সোণাছাল গান্তারিছাল কণ্টকারি পারুল গণিয়ারিছাল সালপানী চাকুল্যা-গ্রেক্রি ব্যাক্ত্, এষাংপ্রতি ৩২ ভোলা জল ১৬ সের শেষ ৪ সের কল্কার্থ ঐ সকল ছালাদি প্র-ভ্যেকে ৬৪ ভোলা পাকের প্রকার, তৈল ৪ সের ফেণা শ্ন্য হইলে বিল্ছালাদি ১০ অব্য ছেচিয়া ১৬ সের জলের সহিত পাক করিয়া ৪ সের থাকিতে কল্কার্থ ঐ সকল জব্য ৬৪ ভোলা দিয়া পাক নির্জ্জল হইলে সিদ্ধ হয় এই তৈল কর্ণে

জাতিমৃত। মৃত ৪ সের জাতিপুপের পাতের রস ১৬ সের কল্কার্থ জাতিপাত ১ সের পাকের প্রকার, ৪ সের মৃতে ১৬ সের রস দিয়া কিঞ্ছিৎকাল পাক হইলে ৪ সের থাকিতে পাক সমাপন হয়।

ইতি শারকৌমুত্তাৎ কর্ণাধিকার সমাপ্তঃ।

. वय नामिका हिकिৎमा।

চিত্রহরীতকী। চিতা আমলকী গুর্প্ণ বিল্ছাল নো-ণাছাল গাস্তারিছাল পারুলছাল নালপানী চারুল্যা কণ্ট-কারি গোক্ষরি ব্যাকুড় এষা প্রতি ১০ পল চিতামূল ৫০ পল জল ৫০ সের শেষ ১২॥০ সের এবং আমলকী ৫০ পল ০জল ৫০ সের শেষ ১২॥০ সের গুরু ৫০ পল পুরাতন গুড় তিও পল হরীতকী চুর্ ৬৪ ভোলা প্রজ্ঞেপ মধু শুণ্ঠী পিপুল মরীচ দারুচিনি তেজপত এলাইচ এবাংপ্রতি ১৬
ভোলা যবক্ষার ৫ ভোলা মধু ২ সের পাকের প্রকার।
ভিতামূল ৪০ পল চিতাদি ১২ জব্য উজ প্রমাণ মৃত লইয়া
৫০ সের জলের সহিত পাক করিয়া ১২॥ সের থাকিতে
ভাকিয়া এবং আমলকী ৫০ পল ৫০ সের জলের সহিত পাক
করিয়া ১২॥০ সের থাকিতে ছাকিয়া ছই জল, গুলঞ্জ ৫০
পালের সহিত পাক করিয়া ১২॥০ সের প্রাক্রিতে ছাকিয়া
ভাহাতে পুরাতন গুড় ১০০ পল হরীতকী চুর্ন ৬৪ ভোলা
দিয়া গুড়ের ন্যায় পাক হইলে শুণ্ঠী আদি মধু পর্যন্ত
প্রমাণানুসারে দিবেন ভক্ষণশক্তি অনুসারে করিবেন। ইভাতে নাদিকা রোগ শান্তি হয়।

য় ফিৰোগ। গুণ্গুল মম সমভাগে বাতি করিয়া গাতে এবং নাসিকারকো ধুম লাগাইবেন।

গৃহধুমাদি তৈল। বুল পিপুল দারুহরিতা যবক্ষার ভারকরমচারবিচি সৈন্ধব বামনহাটি বিচি, এবাংপ্রতি ২ তোলা ৪ মাধা ৬ রতি তিল তৈল ১ দের পাকের ক্রম, তৈল্ অগ্রিত্লা হইলে বুলাদি অবা সকল দিয়া পাক ক-রিতে হ রুফবর্ন হইলে পাক সমাপ্ত হয় তৈল তুলার সহিত নাদিকার ভিতর দিবেন।

ইতি সারকৌমতা । নাসিকা রোগাধিকার সমাপ্তঃ।

प्थ हक्द्रांग हिकि हमा।

যুক্তিযোগ। হরীত্কী ঘৃতে তাজিয়া জলের সহিত বা-টিয়া চক্ষের পাশ্বে প্রজেপ দিলে পীড়া শান্তি হয় গেরি-মানী রক্তচন্দন শুগুী খড়ি বচ এয়া প্রতি সমভাগ জলের সহিত ঘ্রণ করিয়া চক্ষ্ উঠিলে প্রলেপ দিবেন।

হৃৎবাদকাদি পাছন। বাদক্ষাল মুখা নিষ্টাল প-

টোলপত কট্কী গুলঞ্ রক্তচন্দন বুরুচিছাল ইন্দ্রবর্তি দীরুছরিতা চিতামূল শুণ্ঠী চিরাতা আমলকী বয়ড়া যব এবাংপ্রতি ন রতি, ৪ পল জলের সহিত মৃত্ব অগ্নিম্পূর্ণ করিবেন ১ পল থাকিতে প্রক্রেপ মধু ৪ রতি দিয়া পান করিলে উক্ত রোগ শান্তি হয়।

চল্ডোদর বটি। হরীতকী বচ মরীচ বয়ড়া পিপুল নাতিশন্ত মনছাল এবাংপ্রতি সমতাগ ছপ্তের সহিত থলে মর্দ্ধন করিয়া বটিশ্ছলৈ মধুর সহিত নয়নে দিবেন।

ত্রিকলামত। ঘৃত ৩২ পাল হারীতকী বয়ড়া আমলকী এষাংপ্রতি ৫ সের-২-পাল ৫ মাষা ৩ রতি জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের হক্ষা ৪ সের কল্কার্থ হ্রীতকী বয়ড়া আম-লকী এষাংপতি ৮ পাল

পাকের প্রাকার। হরীত্রকী আদি ও দ্রব্য উক্ত পরি-মাণ ৬৪ দের জলের সহিত পাক করিয়া ১৬ দের থাকিতে ছাঁকিয়া ঘৃতে দিবেন পরে নির্দ্ধান হইলে কলকার্থ দ্রব্য সকল ফুল্লচুর্গ করিয়া তাহাতে দিলে পাক সিচ্ছ হয়, সেব্য মত দেবন করিবেন।

ইতি স্থারকৌমুভাং নেত্ররোগ চিকিৎসা সমাপ্তঃ ১

অথ শিররোগ চিকিৎসা।

দশমূল তৈল। বিলুছাল, সোণাছাল, গাস্তারিছাল, পারুলছাল, গণিয়ারি ছাল, সালপানী চাকুল্যা কর্থ-কারি গোক্রি ব্যাকুড় নাটামূল নিবিন্দা জয়ন্তী খুই রা এষাংপ্রতি ৬ পল জল ৬৪ সের শের ১৬ সের সাবপ তৈল ৪ সের কল্কার্থ দশমূল নাটা জয়ন্তী খুন্ত রা এষা ২-প্রতি ৬ তোলা।

রহদশন্ত তৈল । সার্ধপ তৈল ১৬ সের বিল্ছাল দোণাছাল মান্তারিছাল পারুছাল গণিয়ারি দালপানী চাকুল্যা কণ্ঠকারি গোহুরি একা প্রতি ১০ পল জল ৬৪ লের শেষ ১৬ লের গোঁড়ালেবর রস ধৃন্ত রারস আদার রস এবাংপ্রতি ১৬ সের কলকার্থ পিপুল গুলঞ্চ শুলকা পুনন্বা সজিনা ছাল পিপুলমূল নাটা রুফজীরা রাইস-রিফাবচ শুণ্ঠী চিভামূল শঠী দেবদারু বাট্যালা রারা ছড়ছড়ে কট্ফল নিবিন্দা চঞি গেরি শুন্ধমূলা যমানী-বীজ দড়ক এবাংপ্রতি ৮ পল, পাকের প্রকার, প্রথমত মূল্ডা করিয়া পরে দশমূল ১০ পল ৬৪ সের জ্বলের সহিত সিদ্ধ করিয়া ১৬ সের আকিতে সেই ক্বার্থ ইতলে দিয়া কল্কার্থ দ্ব্য সকলের সহিত পাক করিবেন, নির্দ্ধল হইলে পাক সিদ্ধ হয়।

ষড়বিন্দু তৈল। তিলতৈল ৪ সের ভীমরাজ রম ১৬ সের ছাগছন্ধ ৪ সের কলকার্থ ভেরেগুামুল তুরগ পাছকা শুলকা জীবন্তি রামা সৈত্বব দারুচিনি বিড়ঙ্গ জ্যেগুমধু শুণ্ঠী এবাংপ্রতি ৭ তোলা ৯ রতি, পাকের প্রকার, তৈল মুছ্ছা করিয়া ভাহাতে কলক দ্রব্যাদি সকল দিয়া পাক করিলে ৪ সের থাকিতে নামাইবেন।

ইতি সারকৌমুভাৎ শিররোগ চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ প্রদর চিকিৎসা।

শিতকল্যাণ স্ত। বাট্যালায়ল গোরক চাকুল্যা উৎপল তালেরমাতি তুমিরুমাণ্ড দশয়ল সালপানী জীরা রক্তোৎপল পদ্মল বেশমুল গম ধন্যা বনমুগ ক্ষীরকা-কোলী গাস্তারিছাল জ্যেষ্ঠমধু হরীতকী বয়ড়া আমলকী সমবীজ কাঁচাকলা, এবাংপ্রতি ৪ ভোলা হক্ষ ১৬ সের স্ত ৪ সের জল ৮ সের, পাকের প্রকার, স্ত অধিবৎ করিয়া তাহাতে বাট্যালাদি সকল অব্য ছেঁচিয়া দিয়া ঐ প্রমাণ মত জল ছক্ষের সহিত পাক করিয়া ৪ সের থাকিতে পাক সমাপ্তি হয়, ঘৃত শক্তি মত ভক্ষণ করিবেন ইহাতে প্রদ্র শান্তি হয়। ত আশোকঘৃত। ঘৃত ৪ সের আশোকছাল ১৬ পাল জল ।
১৬ সের শেষ ৪ সের কল্কার্থ পোরালকার্গ জীবন্তি জ্যেষ্ঠমধু বনমুগ বনকলাই সালপানী চাকুল্যা কাকোলী ক্রীরকাকোলী মেধ মহামেধ জীবক ঋষিবক রজি পার্মকল রসাঞ্জন জ্যেগ্রমধু আশোকমূল ভাক্ষা শতমূলী চাঁপনট্যার মূল এষাংপ্রতি ৪ তোলা প্রক্রেপ চিনি ৮ পাল,
পাক করিবার ক্রম, ঘৃতাদি জল পর্যান্ত একত্রে পাক
করিয়া নিরস হইলে কল্কার্থ অব্যাসকল স্ক্রচ্ব
তাহার সহিত মিলিত করিয়া ঈ্যত্র্যু থাকিতে, চিনি
দিবেন।

ইতি সারকৌমুদ্যাং প্রদরাধি সমাপ্তঃ।

ত্ৰখ যোনি চিকিৎসা।

মুষিক তৈল। তিলতৈল ৪ সের মুষিক মাংস ১ সের তৈলের সহিত পাক করিয়া মিলিত হইলে পাক সিদ্ধ হয় এই তৈল যোনিতে লেপন করিলে যোনির কঠি-নতা হয়।।

ফলতৃত। যে গাভির বাছ্র না মরিয়া থাকে এমন একবর্ণা গাভির ঘৃত ৪ সের শতস্থলির রস ১৬ সের, কল্-কার্থ মঞ্জিণা জ্যেষ্ঠমধু কুড় হরীতকী বর্ডা আমলকী চিনি বচ কণ্ঠকারি শুদ্ধভূমিকুমাণ্ড কাকলা অশ্বগন্ধানল বন্যমানী হরিতা দারুহরিতা হিন্দ কট্কী ভূঁদিপুষ্প ডাক্ষা ক্ষীরকাকোলী চন্দন এষাংপ্রতি ২ তোলা, পাঁকের প্রকার, এই সকল জব্যের সহিত্মত পাক করিয়া প্রকেপ লক্ষণায়ল ২ তোলা দিবেন, ভক্ষণ ২ মাষা ই-হাতে সন্তান অব্য হয়।

নোমঘৃত। উজ মত গব্য ঘৃত ৮ দের কল্কার্থ রাইনরিষা বচ কণ্ঠকারি খেত পুনর্মণ ভূমিকুমাণ্ড হরীতকী
বয়ড়া ব্যুক্ত কট্কী অন্তিম্ল শ্বান্তা জ্যেষ্ঠ-

মধু জাতিপুষ্প বাসকপুষ্প মঞ্জিতা দেবদার শুণ্ডী পিপুল ভীমরাল হরিছা বীলদড়ক বিলুছাল সোণাছাল পারল ছাল গণিয়ারিছাল সালপানী চাকুল্যা কণ্ঠকারি গোছরি ব্যাকুড় আপাঙ্গ অশ্বগন্ধা শতমূলী এষা প্রতি ২ পল পা-কার্থ জল ৬৪ দের শেষ ১৬ দের, পাকের প্রকার, ঘুঁটের জালে ঘৃত অগ্নি হুল্য করিয়া তাহাতে রাইসরিষা আদি ৬৪ জব্য উক্ত প্রমাণ ঘৃতের সহিত পাক নির্দ্ধল হইলে পাক সিদ্ধ হয়, ভক্ষণের ক্রম, এই ছই ঘৃতে খুত্র স্নানের প্র দিন অব্ধি অন্টাহ প্রস্ত ভক্ষণ করিলে সন্তান হয়, আরে, ত্রীপুরুষে সদাচালের থাকিবেন গর্ত্ত হলৈ উদরে বেদনাদির প্রতিকার চন্দন প্রেরম্বাল সমভাগ জলের সহিত বাটিয়া থাইলে বেদনা নিবা-রণ হয়।

ইতি সারকৌমুন্তাৎ গর্ৱ চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

অথ স্থতিকা চিকিৎসা।

পঞ্কুল মিশ্রিত দশমূল পাচন দিবেন, অথবা কে-বন্ধ দশমূল পাচন, আর আমশূল হইলে ধনা। পঞ্ক লংমুক্ত দশমূলের ক্লাথ প্রফেপ পিপুল চূর্ব হৈ তি দিয়া লেখন করিবেন, আর এই রোগ গৃহিণী অধিকারের নারিকাচ্ব জাতিকলাতা মহাজবটিকা মহাগন্ধ প্রয়োগ করিবেন।

ইতি সারকৌমুভাং স্থতিকাধিকার সম:শুঃ।

व्यथ वालरकत्र किंकिएन।।

যুক্তিযোগ। কুড় আতইচ কাঁকড়াশ্রি দুরালভা পি-পুল এবা প্রতি সমভাগে স্ব্রচ্ব মধুর সহিত মিলিত করিয়া বালকের জিহ্বায় দিবেন তাহাতে কানি নিবা-রণ হয়। হরিজা লোধভাল প্রিয়কু জ্যেষ্ঠ মধু এবাৎপ্রতি সম- ভাগ তৈলের সহিত পাক করিয়া নাভিদেশে দিলে শুফ হয়।।

অথ চত্তত অবলেহ। মুথা পিপুল আতইচ শ্লি এ-যাংপ্রতি সমভাগ মধু দিয়া অবলেহ করিলে, জ্বর অতি-সার শান্তি হয়।

হরীতকী বচ কুঁড় ৩ জব্য চূর্ব মধুর সহিত ভক্ষণ করা। ইলে বালকের ংশ্ম তোগা ভাল হয়।

অথ অন্তমকল ঘৃত। স্বত ৪ দের জাল ১৬ দের কল্কার্থ বচ বুজ ব্রহ্মী রাইন দিবা অনস্তম্ল দৈন্ধব পিপুল এবাং-প্রতি ৯ তোলা ১'• মাধা এই সকল অব্য ছেঁচিয়া ঘৃতের সহিত পাক নিয়েলি হইলে পাক সিদ্ধ হয়, সেব্য মত সেবন করাইলে দড়কাদি সকল রোগ শাস্তি হয়।

ইতি সারকৌমুভাং বালক চিকিৎসা সমাপ্তঃ।

मांतरको यमी नामक अद ममांखः।